प्राकृत भारती पुष्प - ३

प्राकृत स्वयं-शिक्षक

प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन
पूर्व आचार्य, जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग
पूर्व अधिष्ठाता, कला महाविद्यालय
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्राकृत भारती अकादमी
जयपुर

प्रकाशक:

देवेन्द्रराज मेहता
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक,
प्राकृत भारती अकादमी
१३-ए, मेन मालवीय नगर,
जयपुर-३०२०१७
दूरभाष : ०१४१- २५२४८२७, २५२४८२८

प्रथम संस्करण १९७९
पुनर्मुद्रित संस्करण १९८२
तृतीय संस्करण १९९८
चतुर्थ संशोधित व संवर्धित संस्करण २००५

मूल्य : **१२०/- रुपये**

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

लेजर टाइप सेटिंग
श्याम अग्रवाल,
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

मुद्रक:
राज प्रिन्टर्स, जयपुर
फोन नं. 0141-2621774
मोबाईल - 9314511068

PRAKRIT SVAYAM SHIKSHAK (Grammar)
by
Prem suman Jain/Jaipur/79
Reprint in 1982
Third Edition, 1998
Fourth Edition 2005

प्रकाशकीय

प्राकृत भाषा एवं साहित्य के महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन एवं प्राकृत भाषा का प्रचार तथा प्रसार प्राकृत भारती अकादमी का प्रमुख उद्देश्य है। इसी दिशा में **प्राकृत स्वयं-शिक्षक** का इस संस्थान की तरफ से प्रकाशन करने में अत्यधिक प्रसन्नता है। प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन प्राकृत के प्रमुख विद्वान् हैं। इस क्षेत्र में उनके विस्तृत ज्ञान एवं अनुभव का लाभ प्राकृत के पाठकों को उपलब्ध होगा। उन्होंने प्राकृत के सीखने-सिखाने में एक वैज्ञानिक एवं नवीनतम शैली का प्रयोग इस पुस्तक में किया है। साधारणतया प्राकृत, संस्कृत की मदद से सीखी-सिखाई जाती रही है। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि सामान्य हिन्दी जानने वाला पाठक भी बिना किसी कठिनाई के प्राकृत स्वयं सीख सकता है। नई प्रणाली के उपरान्त भी लेखक ने प्राकृत व्याकरण की परम्परा को पृष्ठभूमि में बनाये रखा है। इस तरह संस्थान का उद्देश्य एवं पाठकों की उपयोगिता के संदर्भ में यह एक बहुत ही समसामयिक प्रकाशन कहा जा सकता है। संस्थान इस पुस्तक के लेखक के प्रति विशेष आभार प्रकट करता है कि प्राकृत के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी कमी को उन्होंने यह पुस्तक लिखकर पूरा किया है।

प्रस्तुत पुस्तक की प्रथमावृत्ति सन् १९७९ में प्रकाशित की गई थी किन्तु अल्पकाल ही में इसकी समस्त प्रतियाँ बिक गईं और जैन साधु समाज तथा सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के छात्रों व अन्य पाठकों की मांग इसके लिए नियमित रूप से बनी रही, अतः संस्थान द्वारा १९८२ में इसका पुनमुर्द्रण किया, किन्तु यह संस्करण भी शीघ्र ही बिक गया। इस बहु उपयोगी पुस्तक का तृतीय संस्करण १९९८ में प्रकाशित किया, जिसका पाठकों ने पूरा उपयोग किया। अब चतुर्थ संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए इसके लेखक प्रोफेसर प्रेम सुमन जैन ने प्राकृत के विभक्ति एवं कारक और प्राकृत के कुछ पाठों का हिन्दी अनुवाद इस संस्करण में और जोड़ दिया है।

आशा है, इस नवीन संस्करण के माध्यम से प्राकृत भाषा को सीखने और समझने की दिशा को गति मिलेगी तथा सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के समान अन्य विश्वविद्यालयों में भी प्राकृत भाषा के पठन-पाठन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ है, जिससे कि इस भाषा में निबद्ध साहित्य अधिक से अधिक प्रकाश में आ सकेगा। उसके लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों के प्रति अकादमी आभार प्रकट करती है।

देवेन्द्रराज मेहता
संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
प्राकृत भारती अकादमी
जयपुर

प्रस्तावना

प्रथम संस्करण

विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों एवं अनुसंधान के क्षेत्र में विगत कुछ वर्षों में प्राकृत भाषा एवं साहित्य को विशेष महत्व प्राप्त होने लगा है। परिणाम-स्वरूप राजस्थान के विश्वविद्यालय में भी विभिन्न स्तरों पर प्राकृत के पठन-पाठन का शुभारम्भ हुआ है। उदयपुर विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग में इस समय बी०ए०, एम०ए०, डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट पाठ्यक्रमों में प्राकृत भाषा का शिक्षण हो रहा है। प्रसन्नता की बात है कि महाराष्ट्र एवं गुजरात के माध्यमिक शिक्षा बोर्डों की तरह राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर ने भी सैकण्डरी परीक्षा में प्राकृत को एक वैकल्पिक विषय के रूप में स्वीकार किया है। इससे राजस्थान में प्राकृत के पठन-पाठन को बहुत बल मिलेगा।

प्राकृत के शिक्षण की ये सब व्यवस्थाएँ तभी कारगर हो सकती हैं जब सरल-सुबोध शैली में प्राकृत भाषा का कोई व्याकरण उपलब्ध हो तथा आधुनिक अभ्यास पद्धतियों से युक्त प्राकृत की पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित हों। इस दिशा में प्राकृत विद्वानों का प्रयत्न अभी नगण्य ही कहा जायेगा। प्राकृत व्याकरण की जो पुस्तकें वर्तमान में उपलब्ध हैं वे परम्परागत होने से संस्कृत भाषा को मूल में रखकर प्राकृत सीखने-सिखाने का प्रयत्न करती हैं, इससे प्राकृत का कभी स्वतंत्र भाषा के रूप में अध्ययन नहीं किया गया। प्राकृत स्वयं समृद्ध होते हुए भी नगण्य बनी रही। प्रायः यह मिथ्या धारणा प्रचलित हो गयी कि संस्कृत में निपुणता प्राप्त किये बिना प्राकृत नहीं सीखी जा सकती। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश ये सब भाषाएँ एक दूसरे के ज्ञान में पूरक अवश्य हैं, किन्तु इनका शिक्षण और मनन स्वतंत्र रूप से भी किया जा सकता है। तभी उनकी समृद्धि का उचित मूल्यांकन हो सकता है। किन्तु इसके लिए आवश्यक है कि प्राकृत-शिक्षण का सरलतम एवं सारगर्भित मार्ग प्रशस्त हो। प्राकृत के विद्वान् शोध-अनुसंधान के कार्यों के अतिरिक्त प्राकृत भाषा एवं उसकी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में भी थोड़ा श्रम और समय लगायें।

प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार को दृष्टि में रखते हुए विगत वर्षों में हमने कतिपय सोपान पार किये हैं। १९७३ में आदर्श साहित्य संघ, चूरू से हमारी **प्राकृत-चयनिका** प्रकाशित हुई। १९७४ में **प्राकृत काव्य-सौरभ** एवं **अपभ्रंश काव्यधारा** प्रकाश में आयी। इनसे पाठ्यक्रम के अन्य उद्देश्य तो पूरे हुए, किन्तु वह संतोष नहीं हुआ, जो प्राकृत भाषा के शिक्षण के लिए आवश्यक था। १९७८ में ''तीर्थंकर'' मासिक में **प्राकृत सीखें** के पाठ धरावाहिक रूप से प्रकाशित हुए (अब पुस्तिका रूप में प्रकाशित)। उसका यह परिणाम हुआ कि प्राकृत के कई प्रेमियों ने मुझे प्राकृत भाषा की और अधिक सरल-सुबोध पुस्तक लिखने की प्रेरणा दी। उदयपुर के मेरे विद्वान् मित्र डॉ० कमलचंद सोगाणी मुझसे घंटों इस सम्बन्ध में चर्चा करते कि प्राकृत सिखाने की कोई नयी शैली निकालो। उनके साथ विभिन्न भाषाओं के व्याकरणों की कई पुस्तकें देखी गयीं किन्तु प्राकृत भाषा के अनुरूप एक नयी शैली ही तय करनी पड़ी, जिसमें सीखने वाले पर कम से कम रटने आदि का भार पड़े। वह अभ्यास से ही बहुत कुछ सीख जाये। उस नवीन शैली का आकार रूप है - प्रस्तुत - **प्राकृत स्वयं-शिक्षक खण्ड १** ।

प्राकृत स्वयं-शिक्षक खण्ड १ में यह मानकर प्राकृत का अभ्यास कराया गया है कि सीखने वाले को प्राकृत बिल्कुल नहीं आती। संस्कृत से वह परिचित नहीं है। अत: उसे प्राकृत के सामान्य नियमों का ही विभिन्न प्रयोगों और चार्टों द्वारा अभ्यास कराया गया है। सर्वनाम, क्रिया, संज्ञा आदि के नियम पाठों के अन्त में दिये गये हैं ताकि सीखने वाले के अभ्यास में बाधा न पहुँचे। प्राकृत वैयाकरणों के मूल सूत्र नियमों में नहीं दिये गये हैं क्योंकि प्राकृत के प्रारम्भिक विद्यार्थी का शिक्षण उनके बिना भी हो सकता है।

इस पुस्तक में इस बात का ध्यान भी रखा गया है कि पाठक जिन प्राकृत शब्दों, क्रियाओं, अव्ययों एवं सर्वनामों से परिचित हो चुका है उन्हीं का अभ्यास करे। उसने शब्दकोष या क्रियाकोश से जो नयी जानकारी प्राप्त की है, उसका अभ्यास वह आगे के पाठ द्वारा करता है। इसी तरह आगे के पाठों में उसे पीछे सीखे गये पाठों का भी अभ्यास करने को कहा गया है। इस तरह उसका अर्जित ज्ञान ताजा बना रहता है। पूरी पुस्तक के अभ्यास कर लेने पर पाठक लगभग ६०० प्राकृत शब्दों, २०० क्रियाओं, ५० अव्ययों,

१०० विशेषण शब्दों, ५० तद्धित शब्दों तथा प्रमुख सर्वनामों के प्रयोग का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

प्राकृत में शब्दरूपों एवं क्रियारूपों में विकल्पों का प्रयोग बहुत होता है। प्राकृत जनभाषा होने से यह स्वाभाविक भी है। इस पुस्तक में पाठक को प्राय: शब्द या क्रिया के एक ही रूप का ज्ञान कराया गया है ताकि वह प्राकृत भाषा के मूल स्वरूप को पहिचान जाय। विकल्प रूपों का अध्ययन वह बाद में भी कर सकता है। इस अध्ययन की रूपरेखा भी प्रस्तुत पुस्तक में दे दी गयी है। पुस्तक के अन्त में प्राकृत के गद्य-पद्य पाठों का संकलन दिया गया है। इस संकलन में जो वैकल्पिक रूप प्रयुक्त हुए हैं उन्हें एक साथ संकलन के पूर्व दे दिया गया है और उनके सामने पाठक ने जिन प्राकृत रूपों की जानकारी प्राप्त की है वे दे दिये गये हैं। इस चार्ट से पाठक आसानी से समझ लेता है कि **कमलानि** के स्थान पर **कमलाई, गच्छइ** के स्थान पर **गच्छेइ, जाणिऊण** के लिए **णच्चा** आदि के प्रयोग भी प्राकृत में होते हैं। संकलन पाठ बी०ए० एवं डिप्लोमा के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर दिये गये हैं तथा उनके शब्दार्थ देकर पाठों को समझने में सरलता प्रदान की गयी है। इस तरह इस पुस्तक में थोड़े में सरल ढंग से प्राकृत भाषा को हृदयंगम कराने का विनम्र प्रयत्न किया गया है। वस्तुत: प्राकृत का पूरा ज्ञान तो उसके साहित्य के अनुशीलन और मनन से ही आ सकता है।

प्राकृत स्वयं-शिक्षक खण्ड २ में प्राकृत के वैकल्पिक और आर्ष प्रयोगों का विस्तार से वर्णन होगा। अर्धमागधी, मागधी, शौरसेनी आदि प्रमुख प्राकृतों का यह हिन्दी में प्रामाणिक व्याकरण होगा। इसके अभ्यास से प्राकृत आगम एवं व्याख्या साहित्य का अध्ययन सुगम हो सकेगा। प्राकृत-शिक्षण के प्रयत्न का तीसरा सोपान है - **हिन्दी प्राकृत व्याकरण।** इस व्याकरण में पहली बार प्राकृत के प्राचीन व्याकरणों की सामग्री को व्यवस्थित एवं सुबोध शैली में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें प्राकृत वैयाकरणों के सूत्र भी संदर्भ में दिये जायेंगे एवं प्राकृत के वर्तमान ग्रंथों से उदाहरण एवं प्रयोग आदि देने का प्रयत्न रहेगा। ये दोनों पुस्तकें यथाशीघ्र प्राकृत के जिज्ञासु पाठकों के समक्ष पहुँचाने का प्रयास है।

आभार :

प्राकृत स्वयं-शिक्षक के इन तीनों खण्डों के स्वरूप एवं रूपरेखा आदि को निखारने में जिन विद्वानों का परामर्श एवं प्रोत्साहन मिलो है उनमें प्रमुख हैं- आदरणीय डॉ० कमलचंद सोगाणी (उदयपुर), डॉ० जगदीश चंद्र जैन (बम्बई), पं० दलसुख भाई मालवणिया (अहमदाबाद), डॉ० आर०सी० द्विवेदी (जयपुर), डॉ० गोकुलचंद्र जैन (बनारस) एवं डॉ० नेमीचंद्र जैन (इंदौर)। इन सबके सहयोग के लिए मैं आभारी हूँ और कृतज्ञ हूँ उन समस्त प्राचीन एवं अर्वाचीन प्राकृत भाषा के लेखकों का, जिनके ग्रंथों के अनुशीलन से प्राकृत-व्याकरण सम्बन्धी मेरी कई गुत्थियाँ सुलझी हैं तथा पाठ-संकलन में जिनसे मदद मिली है। प्राकृत भाषा के मर्मज्ञ मुनिजनों के आशीष का ही यह फल है कि प्राकृत के पठन-पाठन की दिशा में कुछ प्रयत्न हो पा रहा है। उनके प्राकृत अनुराग को सादर प्रणाम है।

पुस्तक के प्रकाशन की व्यवस्था आदि में राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान के सक्रिय सचिव श्रीमान् देवेन्द्रराज मेहता, संयुक्त सचिव महोपाध्याय विनयसागर एवं फ्रैण्ड्स एण्ड स्टेशंनर्स जयपुर के प्रबन्धकों का जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं इन सब का हृदय से आभारी हूँ। अन्त में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज जैन के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिनके सहयोग से मुझे अध्ययन-अनुशीलन के लिए पर्याप्त समय प्राप्त हो जाता है। अग्रिम आभार उन जिज्ञासु पाठकों एवं विद्वानों के प्रति भी है जो इस पुस्तक को गहरायी से पढ़कर मुझे अपनी प्रतिक्रिया, सम्मति आदि से अवगत करायेंगे तथा इसके संशोधन-परिवर्द्धन में वे समभागी होंगे।

प्रेम सुमन जैन

''समय''
२९, सुन्दरवास (उत्तरी)
उदयपुर,
१ अगस्त, १९७९

तृतीय संस्करण

प्राकृत स्वयं-शिक्षक (खण्ड १) का पुनर्मुद्रित संस्करण (१९८२) की प्रतियाँ थोड़े ही समय में समाप्त हो गयीं, इसके लिए प्रकाशक और पाठकों का लेखक आभारी है। प्राकृत भाषा के अध्ययन के प्रति अभिरुचि बढ़ रही है, यह संतोषप्रद है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा राजस्थान के स्कूलों में ''प्राकृत भाषा'' विषय प्रारम्भ हो चुका है। उससे प्राकृत सीखने के नये आयाम खुलेंगे। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लेखक ने **प्राकृत काव्य-मंजरी** एवं **प्राकृत गद्य-सोपान** ये दो पुस्तकें और तैयार की थीं। प्राकृत के जिज्ञासु पाठकों ने इन्हें भी स्नेह के साथ अपनाया है। ऐसी पुस्तकें पाठकों तक पहुँचाने में प्राकृत भारती लगन के साथ जुटी हुई है, इसके लिए उसके कार्यकर्ताओं को बधाई है।

विगत वर्षों में कई विश्वविद्यालयों एवं परीक्षा बोर्डों के पाठ्यक्रमों में इस प्राकृत स्वयं-शिक्षक को स्वीकृत किया गया है। अत: उसकी आवश्यकता की दृष्टि से इस तृतीय संस्करण के आरम्भ में **प्राकृत भाषा: स्वरूप एवं विकास** शीर्षक से प्राकृत के उद्‌भव, भेद-प्रभेद, विकास आदि पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। इसी में प्राकृत-शिक्षण के लिए कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं, जिनका प्रयोग हम यहाँ कक्षाओं में कर रहे हैं और उनका संतोषजनक परिणाम प्राप्त हो रहा है। आशा है, इससे प्राकृत के शिक्षण को एक नयी दिशा मिलेगी। इस संस्करण में **प्राकृत के प्रमुख वैयाकरण** शीर्षक से प्राकृत व्याकरण शास्त्र की परम्परा का परिचय दिया गया है। सूक्ष्म अध्येता पाठकों के अध्ययन को इससे गति मिलेगी। विद्वानों एवं प्राकृत के जिज्ञासु पाठकों के सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी, ताकि आगे के संस्करण को और उपयोगी बनाया जा सके। प्राकृत-शिक्षण और उसके अध्ययन के विभिन्न आयामों के साथ जुड़े हुए सभी महानुभावों एवं मित्रों के प्रति सादर आभार।

२९, विद्या विहार कॉलोनी **प्रेम सुमन जैन**
सुंदरवास (उत्तरी)
उदयपुर - ३१३ ००१
श्रुतपंचमी, १० जून १११७

चतुर्थ संस्करण

प्राकृत स्वयं-शिक्षक (खण्ड १) पुस्तक १९७९ से प्राकृत भाषा एवं साहित्य के प्रेमी पाठकों, स्वाध्यायियों, साधु-संतों के बीच समादृत हो रही है यह संतोष का विषय है। पुस्तक के विगत तीन संस्करणों ने प्राकृत के शिक्षण अध्ययन को गति प्रदान की है। अब यह चतुर्थ संस्करण पाठकों के समक्ष है। सुधी पाठकों एवं मित्रों के सुझाव के अनुसार पुस्तक के इस संस्करण को अधिक उपयोगी एवं भाषा की दृष्टि से निर्दोष बनाने का प्रयत्न रहा है। पुस्तक में संग्रहीत **पाइय पज्ज-गज्ज संगहो** के पाठों में से अंजणासुंदरीकहा तथा लीलावईकहा पद्य पाठों का तथा गामल्लिओ सागडिओ, विउसीएपुत्तबहूएकहा चउजामयराणंकहा, अमंगलपुरिसस्सकहा, पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा, सिप्पिपुत्तस्स कहा छह गद्य पाठों का हिन्दी अनुवाद भी इस संस्करण मे जोड़ दिया गया है, ताकि विभिन्न पाठ्यक्रमों में इनका उपयोग किया जा सके। शेष पाठों का अनुवाद पाठक अपने स्वयं के अभ्यास से करने का प्रयत्न करेंगे। इस संस्करण में **विभक्ति एवं कारक** पाठ जोड़कर प्राकृत में कारकों के कुछ विशिष्ट प्रयोगों को भी स्पष्ट कर दिया गया है।

यह पुस्तक १९७९ में **प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड १)** के नाम से प्रकाशित हुई थी तब यह भी योजना थी कि इस पुस्तक का **खण्ड २** एवं **हिन्दी प्राकृत व्याकरण** पुस्तकें भी मुझे लिखकर प्रकाशित करनी हैं, ताकि प्राकृत को हिन्दी के माध्यम से पूरी तरह सीखा जा सके। किन्तु इस लम्बे समय के अन्तराल में हिन्दी के माध्यम से प्राकृत को सिखाने का काम हमारे वरिष्ठ विद्वान् प्रो० कमलचन्द सोगाणी, जयपुर ने भी अपनी पुस्तकों के माध्यम से सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है। अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर एवं प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर संस्थानों के द्वारा प्रो० सोगाणी ने १. प्राकृत रचना सौरभ, २. प्राकृत अभ्यास सौरभ, ३. प्रौढ़ प्राकृत रचना सौरभ भाग १-२, ४. प्राकृत गद्य-पद्य सौरभ आदि पुस्तकें प्रकाशित की हैं। प्राकृत पत्राचार पाठ्यक्रमों में इन पुस्तकों का अभ्यास कराया जाता है। इससे प्राकृत पढ़ाने वाले शिक्षक भी तैयार हुए हैं। अत: अब प्राकृत स्वयं शिक्षक खण्ड-२ लिखने और प्रकाशित करने की आवश्यकता नहीं रही। इस **प्राकृत स्वयं शिक्षक** पुस्तक का अभ्यास करने के बाद प्राकृत के प्रेमी पाठक प्रो० सोगाणी की उक्त पुस्तकों

के अध्ययन-मनन से प्राकृत के वैकल्पिक प्रयोगों और प्राकृत व्याकरण के सूत्रों का ज्ञान आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के प्राकृत/संस्कृत/जैन दर्शन के शिक्षकों को भी इन पुस्तकों का अभ्यास करना चाहिए। बी.ए. पाठ्यक्रम के लिए हमारे द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित पुस्तक **प्राकृत भारती** भी उपयोगी है।

हमारा एक संकल्प और था कि प्राकृत के सिद्धान्त ग्रंथों/आगम ग्रंथों में प्रयुक्त प्राकृत वाक्यों के प्रयोग द्वारा प्राकृत के प्रौढ़ अभ्यासियों/साधु-संतों को हिन्दी के माध्यम से प्राकृत में निष्णात बनाया जाए, जिससे सिद्धान्त ग्रंथों की प्राकृत शब्दावली और प्रयोगों से वे अभ्यस्त हो जांय। इसके लिए प्रयोग के रूप में हमारी एक पुस्तक **शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण,** भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली से २००१ में प्रकाशित हुई है। विश्वविद्यालयों में इस पुस्तक का अच्छा प्रयोग हो रहा है, किन्तु समाज के प्राकृत प्रेमियों का ध्यान इस ओर अभी नहीं गया है। मुझे आशा है, पाठक इस पुस्तक के प्रयोग से प्राकृत का नया अनुभव एवं ज्ञान प्राप्त करेंगे।

इसी प्रकार प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए **प्राकृत प्रवेशिका (पागद पवेसिआ)** नामक मेरी एक पुस्तक १९९६ में श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) के प्राकृत संस्थान से प्रकाशित हुई थी। ज्ञात हुआ है कि वहाँ ५वीं से ८वीं कक्षा के ७-८ सौ विद्यार्थी कन्नड़ भाषा के माध्यम से इस पुस्तक से प्राकृत सीख रहे हैं। वहाँ के प्राकृत संस्थान ने कन्नड़ में इस प्राकृत प्रवेशिका को ३-४ भागों में सचित्र प्रकाशित किया है। ऐसा प्रयत्न हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में कोई प्राकृत संस्थान करे तो प्राकृत भाषा के पठन-पाठन का ज्ञान बच्चों को प्रारम्भ से दिया जा सकता है। प्राकृत भाषा को जीवित रखने पर ही हम तीर्थंकरों की श्रमण संस्कृति को जीवित बना सकेंगे। प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के १९७९ में प्राकृत स्वयं शिक्षक प्रकाशित कर जो पौधा लगाया था इन २५ वर्षों में उसी की शाखा-प्रशाखाओं ने आज प्राकृत भाषा के शिक्षण को यह गति प्रदान की है। इसमें निरन्तर प्रगति हो, नयी पीढ़ी के प्राकृत प्रेमियों से यही आकांक्षा है। प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर के संस्थापक श्री देवेन्द्रराज मेहता, सचिव प्रो० के.सी. सोगाणी, निदेशक म. विनयसागर, प्रबन्ध सम्पादक श्री सुरेन्द्र बोथरा एवं प्राकृत शिक्षिका डॉ० श्रीमती तारा डागा के

प्रोत्साहन एवं सहयोग के लिए आभार साथ ही प्राकृत शिक्षण और उसके अध्ययन के विभिन्न प्रकल्पों/प्रयासों के साथ जुड़े हुए अन्य सभी महानुभावों एवं मित्रों को सादर नमन एवं स्वजनों के प्रति हार्दिक धन्यवाद। सहधर्मिणी डॉ. श्रीमती सरोज जैन को सप्रेम स्मरण।

श्रुत पंचमी

२४ मई, २००४

प्रेम सुमन जैन

अनुक्रम

१.	प्राकृत भाषा : स्वरूप एवं विकास			१-२४
२.	प्राकृत के प्रमुख वैयाकरण			२५-३६
३.	सर्वनाम			
	पाठ	१-९	: (अहं, अम्हे, तुमं, तुम्हे, सो, ते, सा, ताओ, इमो आदि)	३८-४६
	पाठ	१०	: नियम (सर्वनाम, क्रिया-अभ्यास)	४७-४८
	पाठ	११	: अभ्यास (क्रिया, संज्ञा, अव्यय)	४९
४.	क्रियाएँ			
	पाठ	१२	: वर्तमानकाल	५०-५१
	पाठ	१३	: भूतकाल	५२-५३
	पाठ	१४	: अस धातु एवं सम्मिलित अभ्यास	५४-५५
	पाठ	१५	: भविष्यकाल	५६-५७
	पाठ	१६	: इच्छा/आज्ञा	५८-५९
	पाठ	१७-१९	: सम्बन्ध कृदन्त, हेत्वर्थ कृदन्त, अभ्यास	६०-६२
	पाठ	२०-२१	: नियम (क्रियारूप, मिश्रित अभ्यास)	६३-६५
	पाठ	२२	: अभ्यास (क्रियाकोश, शब्दकोश, अव्यय)	६६-६७
५.	संज्ञा शब्द			
	पाठ	२३-२८	: प्रथमा विभक्ति (पु०, स्त्री०, नपुं०)	६८-७३
	पाठ	२९	: नियम (प्रथमा विभक्ति, स्त्री० नपुं०)	७४
	पाठ	३०-३३	: द्वितीया विभक्ति	७५-८१
	पाठ	३४	: नियम (द्वितीया)	८२
	पाठ	३५-३८	: तृतीया विभक्ति	८३-८९
	पाठ	३९	: नियम (तृतीया)	९०
	पाठ	४०-४३	: चतुर्थी विभक्ति	९१-९७
	पाठ	४४	: नियम (चतुर्थी)	९८
	पाठ	४५-४८	: पंचमी विभक्ति	९९-१०५

पाठ ४९ : नियम(पंचमी) १०६
पाठ ५०-५३ : षष्ठी विभक्ति १०७-११३
पाठ ५४ : नियम (षष्ठी) ११४
पाठ ५५-५८ : सप्तमी विभक्ति ११५-१२१
पाठ ५९ : नियम (सप्तमी एवं मिश्रित अभ्यास) १२२
पाठ ६०-६२ : सम्बोधन १२४-१२६
पाठ ६३ : नियम (सम्बोधन तथा चार्ट सर्वनाम एवं संज्ञा शब्द) १२७

६. विभक्ति एवं कारक

पाठ ६४ : प्रथमा से सप्तमी विभक्ति एवं कारकों का परिचय १३०-१३४

७. संज्ञार्थक क्रियाएँ

पाठ ६५-६८ : पु०, स्त्री०, नपुं० एवं अन्य संज्ञाएँ १३५-१३९

८. विशेषण

पाठ ६९-७२ : गुणवाचनक, तुलनात्मक, संख्यावाचक, प्रकार एवं क्रमवाचक विशेषण १४०-१४६
पाठ ७३-७५ : कृदन्त-विशेषण १४७-१५१
पाठ ७६ : तद्धित विशेषण १५२-१५३
क्रियारूप एवं कृदन्त विशेषण चार्ट १५४-१५५

९. कर्मणि प्रयोग

पाठ ७७ : कर्मवाच्य (सामान्य क्रियाएँ) १५६-१५८
पाठ ७८ : भाववाच्य (सामान्य क्रियाएँ) १५९
पाठ ७९ : नियम (कर्मवाच्य-भाववाच्य) १६०
पाठ ८० : कृदन्त प्रयोग (कर्म एवं भाव वाच्य) १६१-१६२
पाठ ८१ : नियम (वाच्य कृदन्त प्रयोग एवं कर्मणि प्रयोग चार्ट) १६३

१०. प्रेरणार्थक क्रिया-प्रयोग

पाठ ८२-८५ : प्रेरक सामान्य क्रियाएँ, कृदन्त क्रियाएँ प्रेरक वाच्य प्रयोग तथा प्रेरणार्थक क्रिया के अन्य प्रयोग १६५-१७१

पाठ ८६ : नियम (प्रेरणार्थक क्रियाएँ एवं चार्ट) १७२-१७३

११. क्रियातिपत्ति के प्रयोग

पाठ ८७ : नियम (क्रियातिपत्ति प्रयोग-वाक्य) १७५-१७६

१२. संधि-प्रयोग

पाठ ८८ : विभिन्न संधि प्रयोग १७७-१७८

१३. समास

पाठ ८९ : विभिन्न समास-प्रयोग १७९-१८०

१४. वैकल्पिक प्रयोग

पाठ ९० : पाठ संकलन के वैकल्पिक प्रयोग १८१-१८५

१५. पाइय-पज्ज-संगहो १८७-२१४

(i) अंजणा सुंदरी कहा १८७

(ii) लीलावईकहा १९४

(iii) सिरिसिरिवालकहा २०१

१६. पाइय-गज्ज-संगहो २१५-२३७

१. गामिल्लओ सागडिओ २१५

२. विउसीए पुत्तबहूए कहा २१७

३. चउजामायराणं कहा २२०

४. अमंगलियपुरिसस्स कहा २२३

५. पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा २२४

६. सिप्पिपुत्तस्स कहा २२६

७. भारियासीलपरिक्खा २२८

८. नडपुत्तो रोहो २३२

९. अवियारिआएसे नरिंदस्स कहा २३४

१०. उज्जमस्स फलं २३५

१७. शब्दार्थ २३७-२४८

१८. हिन्दी अनुवाद २४९-२८५

(i) पद्य कथाएँ २४९

(ii) गद्य कथाएँ २६९

१९. सहायक ग्रन्थ २८५

◆

समर्पण

प्राच्यविद्याओं में
अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त
लेखक एवं अनुसंधानकर्ता
प्राकृत/पालि में
राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित
प्राकृत/पालि के अध्ययन के
क्षेत्र में मुझे प्रवेश कराने वाले
मेरे प्रारम्भिक समादरणीय गुरु
प्रोफेसर डॉ. एन.एच.साम्तानी
वाराणसी को
विनम्र चरणवन्दना-पूर्वक
समर्पित यह लघु कृति

– प्रेम सुमन जैन

१. प्राकृत भाषा : स्वरूप एवं विकास

प्राकृत : भारतीय आर्य भाषा

भाषाविदों ने भारत-ईरानी भाषा परिचय के अन्तर्गत भारतीय आर्य शाखा परिवार का विवेचन किया है। प्राकृत इसी भाषा परिवार की एक आर्य भाषा है। विद्वानों ने भारतीय आर्यशाखा परिवार की भाषाओं के विकास के तीन युग निश्चित किये हैं :-

१. प्राचीन भारतीय आर्यभाषाकाल (१६०० ई०पू० से ६०० ई०पू० तक)
२. मध्यकालीन आर्यभाषाकाल (६०० ई०पू० से १००० ई० तक) एवं
३. आधुनिक आर्यभाषाकाल (१००० ई० से वर्तमान समय तक)

प्राकृत भाषा का इन तीनों कालों से किसी न किसी रूप में सम्बन्ध बना हुआ है।

वैदिक भाषा प्राचीन आर्य भाषा है। उसका विकास तत्कालीन लोक-भाषाओं से हुआ है। भाषाविदों ने प्राकृत एवं वैदिक भाषा में ध्वनितत्त्व एवं विकास-प्रकिया की दृष्टि से कई समानताएँ परिलक्षित की हैं। अत: ज्ञात होता है कि वैदिक भाषा और प्राकृत के विकसित होने का कोई एक लौकिक समान धरातल रहा है। किसी जनभाषा के समान तत्त्वों पर ही इन दोनों भाषाओं का भवन निर्मित हुआ है, किन्तु आज उस आधारभूत भाषा का कोई साहित्य या बानगी हमारे पास न होने से केवल हमें वैदिक भाषा और प्राकृत के साहित्य में उपलब्ध समान भाषा-तत्त्वों के अध्ययन पर ही निर्भर रहना पड़ता है। इससे इतना तो स्पष्ट है कि वैदिक भाषा के स्वरूप को अधिक उजागर करने के लिए प्राकृत भाषा का गहन अध्ययन आवश्यक है। प्राकृत भाषा का स्वरूप भी बिना वैदिक भाषा को जाने-समझे स्पष्ट नहीं किया जा सकता है। फिर भी दोनों स्वतंत्र और समर्थ भाषाएँ हैं, इस कथन में कोई विरोध नहीं आता।

बोलचाल की भाषा अथवा कथ्य भाषा प्राकृत का वैदिक भाषा के साथ जो सम्बन्ध था, उसी के आधार पर साहित्यिक प्राकृत भाषा का स्वरूप

निर्मित हुआ है। अत: वैदिक युग से लेकर महावीर युग तक की प्राकृत भाषा ने ने तत्कालीन साहित्य को भी अवश्य प्रभावित किया होगा। यदि वैदिक ऋचाओं, उपनिषदों, महाभारत और आदि रामायण तथा पालि, प्राकृत आगमों की भाषा का तुलनात्मक अध्ययन किया जावे तो कई मनोरंजक तथ्य प्राप्त हो सकेंगे। इसी कड़ी को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध भाषाविद् वाकरनागल ने कहा है- ''प्राकृतों का अस्तित्व निश्चित रूप से वैदिक बोलियों के साथ-साथ वर्तमान था, इन्हीं प्राकृतों से पवर्ती साहित्यिक प्राकृतों का विकास हुआ है।[१]''

जनभाषा : मातृभाषा

प्राकृत भाषा अपने जन्म से ही जनसामान्य से जुड़ी हुई है। ध्वन्यात्मक और व्याकरणात्मक सरलीकरण की प्रवृत्ति के कारण प्राकृत भाषा लम्बे समय तक जन-सामान्य के बोल-चाल की भाषा रही है। प्राकृत की आदिम अवस्था का साहित्य या उसका बोल-चाल वाला स्वरूप तो हमारे सामने नहीं हैं, किन्तु वह जन-जन तक पैठी हुई थी। ''महावीर, बुद्ध तथा उनके चारों ओर दूर-दूर तक के विशाल जन-समूह को मातृभाषा के रूप में प्राकृत उपलब्ध हुई। इसीलिए महावीर और बुद्ध ने जनता के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्राकृत भाषा का आश्रय लिया, जिसके परिणाम-स्वरूप दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविधताओं से परिपूर्ण आगमिक एवं त्रिपिटक साहित्य ने निर्माण की प्रेरणा मिली।[२] इन महापुरुषों ने इसी प्राकृत भाषा के माध्यम से तत्कालीन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति की ध्वजा लहरायी थी। इससे ज्ञात होता है कि तब प्राकृत मातृभाषा के रूप में दूर-दूर के विशाल जनसमुदाय को आकर्षित करती रही होगी। जिस प्रकार वैदिक भाषा को आर्य संस्कृति की भाषा होने का गौरव प्राप्त है, उसी प्रकार प्राकृत भाषा को आगम-भाषा एवं आर्य-भाषा होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है।

प्राकृत जन-भाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे सम्राट् अशोक के समय में राज्यभाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ है और उसकी यह प्रतिष्ठा

---

१. एलटिंडिश्चे ग्रामेटिक - वाकरनागल (१८९६-१९०५) पृ० १८ आदि

२. द्रष्टव्य - ''प्राकृत शिक्षण की दिशाएँ'' - डॉ० कमलचंद सोगाणी एवं डॉ० प्रेम सुमन जैन का लेख (प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा १९८१ में आयोजित यू०जी०सी० सेमीनार में पठित)।

सैंकड़ों वर्षों तक आगे बढ़ी है। अशोक ने भारत के विभिन्न भागों में जो राज्यादेश प्रचारित किये थे उसके लिए उसने दो सशक्त माध्यमों को चुना। एक तो उसने अपने समय की जनभाषा प्राकृत में इन अभिलेखों को तैयार कराया ताकि वे जन-जन तक पहुँच सकें और दूसरे उसने उन्हें पत्थरों पर खुदवाया ताकि वे सदियों तक अहिंसा, सदाचार, समन्वय का संदेश दे सकें। इन दोनों माध्यमों ने अशोक को अमर बना दिया है। देश के अन्य नरेशों ने भी प्राकृत में लेख एवं मुद्राएँ अंकित करवायीं। ई०पू० ३०० से लेकर ४०० ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार लेख प्राकृत में लिखे गये हैं।[१] यह सामग्री प्राकृत भाषा के विकास-क्रम एवं महत्त्व के लिए ही उपयोगी नहीं है, अपितु भारतीय संस्कृति के इतिहास के लिए भी महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है।

अभिव्यक्ति का माध्यम

प्राकृत भाषा क्रमशः विकास को प्राप्त हुई है। वैदिक युग में वह लोकभाषा थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते-आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि वह अध्यात्म और सदाचार की भाषा बन सकी। इससे प्राकृत के प्रचार-प्रसार में गति आयी। वह लोक के साथ-साथ साहित्य के धरातल को भी स्पर्श करने लगी। इसीलिए उसे राज्याश्रय और स्थायित्व प्राप्त हुआ। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में प्रतीत होता है कि प्राकृत भाषा गाँवों की झोंपड़ियों से राजमहलों की सभाओं तक समादृत होने लगी थी, अतः वह अभिव्यक्ति का सशक्त माध्मय चुन ली गयी थी। महाकवि हाल ने इसी समय प्राकृत भाषा के प्रतिनिधि कवियों की गाथाओं का गाथाकोश गाथासप्तशती तैयार किया, जो ग्रामीण जीवन और सौन्दर्य-चेतना का प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

प्राकृत भाषा के इस जनाकर्षण के कारण कालिदास आदि महाकवियों ने अपने नाटक ग्रन्थों में प्राकृत भाषा बोलने वाले पात्रों को प्रमुख स्थान दिया। नाटक समाज का दर्पण होता है। जो पात्र जैसा जीवन जीता है, वैसा ही मंच पर उसे प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है। समाज में अधिकांश लोग दैनिक जीवन में प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे। अतः उनके प्रतिनिधि पात्रों ने भी

---

१. जैन पुरातत्त्व एवं कला (भाग १, २, ३) - सम्पा. घोष, ए.

नाटकों में प्राकृत में प्रयोग से अपनी पहिचान बनाये रखी। अभिज्ञानशाकुन्तलं की ऋषिकन्या शकुन्तला, नाटककार भास की राजकुमारी वासवदत्ता, शूद्रक की नगरवधू वसन्तसेना तथा प्राय: सभी नाटकों के राजा के मित्र, कर्मचारी आदि पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राकृत जन-सनुदाय की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी। वह लोगों के सामान्य जीवन की अभिव्यक्ति करती थी। इस तरह प्राकृत ने अपना नाम सार्थक कर लिया था। प्राकृत स्वाभाविक वचन-व्यापार का पर्यायवाची शब्द बन गया था। समाज के सभी वर्गों द्वारा स्वीकृत भाषा प्राकृत थी। इस कारण प्राकृत की शब्द-सम्पत्ति दिनोंदिन बढ़ रही थी। इस शब्दग्रहण की प्रक्रिया के कारण एक ओर प्राकृत ने भारत की विभिन्न भाषाओं के साथ अपनी घनिष्ठता बढ़ायी तो दूसरी ओर वह जीवन और साहित्य की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गयी।

काव्यात्मक सौन्दर्य

लोक भाषा जब जन-जन में लोकप्रिय हो जाती है तथा उसकी शब्द-सम्पदा बढ़ जाती है तब वह काव्य की भाषा बनने लगती है। प्राकृत भाषा को यह सौभाग्य दो तरह से प्राप्त है। प्राकृत में जो आगम ग्रंथ, व्याख्या-साहित्य, कथा एवं चरित ग्रंथ आदि लिखे गये उनमें काव्यात्मक सौन्दर्य और मधुर रसात्मकता का समावेश है। काव्य की प्राय: सभी विधाओं - महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य आदि को प्राकृत भाषा ने समृद्ध किया है। इस साहित्य ने प्राकृत भाषा को लम्बे समय तक प्रतिष्ठित रखा है। अशोक के शिलालेखों के लेखन-काल से आज तक इन अपने २३०० वर्षों के जीवन काल में प्राकृत भाषा ने अपने काव्यात्मक सौन्दर्य को निरन्तर बनाये रखा है।

प्राकृत भाषा की इसी मधुरता और काव्यात्मकता का प्रभाव है कि भारतीय काव्यशास्त्रियों ने काव्य के अपने लक्षण-ग्रन्थों में प्राकृत की सैकड़ों गाथाओं के उद्धरण दिये हैं।[१] अनेक सुभाषितों को उन्होंने इस बहाने सुरक्षित किया है। ध्वन्यालोक की टीका में अभिनवगुप्त ने प्राकृत की जो गाथाएँ दी हैं उनमें से एक उक्ति द्रष्टव्य है -

---

१. प्राकृत पुष्करिणी - डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

चन्दमऊएहिं णिसा, णलिनी कमलेहिं कुसुमगुच्छेहिं लआ।
हंसेहिं सरहसोहा, कव्वकहा सज्जणेहिं करइ गरुइ॥ (२-५० टीका)

– रात्रि चंद्रमा की किरणों से, नलिनी कमलों से, लता पुष्प के गुच्छों से, शरद् हंसो से (और) काव्यकथा सज्जनों से अत्यन्त शोभा को प्राप्त होती है।

अलंकारों के प्रयोग में भी प्राकृत गाथाएँ बेजोड़ हैं। प्राय: सभी अलंकारों के उदाहरण प्राकृत काव्य में प्राप्त हैं। अलंकारशास्त्र के पंडितों ने अपने ग्रंथों में प्राकृत गाथाओं को उनके अर्थ-वैचित्र्य के कारण भी स्थान दिया है। एक-एक शब्द के कई अर्थ प्रस्तुत करने की क्षमता प्राकृत भाषा में विद्यमान है। गाथासप्तशती में ऐसी कई गाथाएँ हैं जो शृंगार ओर सामान्य दोनों अर्थों को व्यक्त करती हैं। अर्थान्तरन्यास प्राकृत काव्य का प्रिय अलंकार है। सरस्वतीकण्ठाभरण का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

ते विरला सप्पुरिसा, जे अभणन्ता घडेन्ति कज्जलावे।
थोअ च्चिअ ते वि दुमा, जे अमुणिअ कुसुमणिग्गमा देन्ति फलं॥
(सं० कं० ४-१६२; सेतुबन्ध ३-६)

जो बिना कुछ कहते हुए ही काम बना देते हैं वे सत्पुरुष विरले हैं। वे वृक्ष भी थोड़े ही (है), जो फलों के निकलने को न जानते हुए फल देते हैं।

इस प्रकार काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते समय आनन्दवर्धन, भोजराज, मम्मट, विश्वनाथ, पंडितराज जगन्नाथ आदि अलंकारिकों द्वारा काव्य-लक्षणों के उदाहरणों के लिए प्राकृत पद्यों को उद्धृत करना प्राकृत के साहित्यिक सौन्दर्य का परिचायक है। इस प्रकार वैदिक युग, महावीर युग एवं उसके बाद के विभिन्न कालों में प्राकृत भाषा का स्वरूप क्रमश: स्पष्ट हुआ है और उसका महत्त्व विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ा है।

भारतीय भाषाओं के आदिकाल की जन-भाषा के विकसित होकर प्राकृत स्वतंत्र रूप से विकास को प्राप्त हुई। बोलचाल और साहित्य के पद पर वह समान रूप से प्रतिष्ठित रही है। उसने देश की चिन्तनधारा, सदाचार और काव्य-जगत् को अनुप्राणित किया है, अत: प्राकृत भारतीय संस्कृति की संवाहक भाषा है। प्राकृत ने अपने को किसी घेरे में कैद नहीं किया। इसके पास जो था उसे वह जन-जन तक बिखेरती रही और जनसमुदाय में जो कुछ

था उसे वह बिना हिचक ग्रहण करती रही। इस तरह प्राकृत भाषा सर्वग्राह्य और सार्वभौमिक भाषा है। प्राकृत के स्वरूप की ये कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो प्राचीन समय से आज तक लोक-मानस को प्रभावित करती रहीं हैं।

वैदिक भाषा और प्राकृत

प्राकृत भाषा के स्वरूप को प्रमुख रूप से तीन अवस्थाओं में देखा जा सकता है। वैदिक युग से महावीर युग के पूर्व तक के समय में जन-भाषा के रूप में जो प्राकृत प्रचलित थी उसे प्रथम स्तरीय प्राकृत कहा जा सकता है। महावीर युग में ईसा की द्वितीय शताब्दी तक आगम-ग्रंथों, शिलालेखों एवं नाटकों आदि में प्रयुक्त भाषा को द्वितीय स्तरीय प्राकृत नाम दिया जा सकता है और तीसरी शताब्दी के बाद ईसा की छठी-सातवीं शताब्दी तक प्रचलित एवं साहित्य में प्रयुक्त प्राकृत को तृतीय स्तरीय प्राकृत कह सकते हैं। इन तीनों स्तरों की प्राकृत के स्वरूप को संक्षेप में समझने के लिए पहले वैदिक भाषा और प्राकृत के सम्बन्ध को समझना होगा। प्राकृत की मूल भाषा वैदिक युग के समकालीन प्रचलित एक जन-भाषा थी। उसी से वैदिक एवं प्राकृत भाषा का विकास हुआ। अतः उस मूल लोकभाषा में जो विशेषताएँ थीं वे दाय के रूप में वैदिक भाषा और प्राकृत को समान रूप से मिली हैं। प्रथम स्तरीय प्राकृत के स्वरूप को जानने के लिए वैदिक भाषा में प्राकृत के जो तत्त्व प्राप्त होते हैं, उनका गहराई से अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

यद्यपि प्रथम स्तरीय प्राकृत का साहित्य अनुपलब्ध है, तथापि महावीर युगीन द्वितीय स्तरीय प्राकृत की प्रवृत्तियों के प्रमाण वैदिक भाषा (छान्दस्) के साहित्य में प्राप्त होते हैं। डॉ० गुणे के अनुसार - ''प्राकृतों का अस्तित्व निश्चित रूप से वैदिक बोलियों के साथ-साथ विद्यमान था।[१] वस्तुतः ऋग्वेद की भाषा में भी कुछ सीमा तक हमें प्राकृतीकरण देखने को मिलता है। आधुनिक भाषाविदों की व्याख्या के अनुसार यह मूल प्राकृत भाषाओं के कारण है जो कि प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (छान्दस्) की बोलियों के साथ-साथ उस समय निश्चित रूप से प्रचलित थीं जबकि वैदिक सूक्त रचे जा रहे थे।[२] यहाँ यह कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि साहित्यिक छान्दस् की जन-भाषा में

१. तुलनात्मक भाषा-विज्ञान - डॉ० पी०डी० गुणे, पृ० १५३

२. प्राकृत भाषाएँ और भारतीय संस्कृति में उनका अवदान-डॉ० कत्रे, पृ० ५९

छान्दस् भाषा और प्राकृत के तत्त्व मिले-जुले रूप में उपस्थित थे। यही कारण है कि ऋग्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण आदि छान्दस् साहित्य में प्राकृतीकरण के तत्त्व उपस्थित हैं। छान्दस् साहित्य में शब्दों के प्राकृतीकरण के साथ-साथ प्राकृत के व्याकरणात्मक तत्त्व भी महावीर युगीन प्राकृत के अनुसार प्राप्त होते हैं।[१] इसीलिए डॉ० पिशेल ने भी कहा है - ''सब प्राकृत भाषाओं का वैदिक व्याकरण और शब्दों का नाना स्थलों में साम्य है।[२] विद्वानों ने इस निष्कर्षों के परिप्रेक्ष्य में हमने अपने उपर्युक्त लेख में वैदिक भाषा में प्राकृत के जिन तत्त्वों की जानकारी दी है, उनमें से कुछ यहाँ द्रष्टव्य हैं।

१. समान स्वर-व्यंजन -

वैदिक भाषा और प्राकृत के स्वर तथा व्यंजनों के प्रयोग में कई साम्य देखे जाते हैं। यथा -

वैदिक भाषा	अर्थ	प्राकृत	वैदिक भाषा	अर्थ	प्राकृत
हरी	हरि	हरी	देवो	देव	देवो
दूलह	दुर्लभ	दूलह	ण	नहीं	ण
वायू	वायु	वायू	लोम	रोम	लोम
अमत्र	अमात्य	अमत्त	अच्छ	अक्ष (आँख)	अच्छ
महि	मही	महि	सूर्य्य	सूर्य	सुज्ज
सुवर्ण	स्वर्ग	सुवग्ग	पुव्व	पूर्व	पुव्वं
पितर	पिता	पिअर	उच्चा	ऊँचा	उच्चा
बुद	समूह	बुंद	भहा	महान्	महा
गेह	गृह	गेह	पक्क	पका हुआ	पक्क
सेन्य	सैन्य	सेन्नं	जज्ञ	यज्ञ	जण्ण
लोण	लवण	लोण	देवेहि	देवों के द्वारा	देवेहि

---

१. ''प्राकृत शिक्षण की दिशाएँ'' - डॉ० के०सी० सोगाणी एवं डॉ० प्रेम सुमन जैन का पूर्वोल्लिखित लेख।

२. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ० पिशेल (अनु०), पृ० ८

२. शब्दरूपों में समानता -

प्राकृत में कारकों की कमी तथा उनका आपस में प्रयोग प्राय: देखा जाता है। वैदिक भाषा में भी यह प्रवृत्ति उपलब्ध है। नाम रूपों में प्रयुक्त कई प्रत्यय दोनों भाषाओं के समान हैं। दोनों में कुछ शब्द विभक्ति रहित भी प्रयुक्त होते हैं। वैदिक भाषा में प्राकृत की तरह द्विवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग भी पाया जाता है। कुछ समान शब्द और सर्वनाम आदि इस प्रकार हैं:-

	वैदिक भाषा	अर्थ	प्राकृत
(क) समान शब्द			
	रायो	राजा	रायो
	छाग	बकरा	छाग
	जाया	पत्नि	जाया
	पिप्पलं	पीपल	पिप्पलं
	पूतं	पवित्र	पूअं
(ख) समान सर्वनाम	सो	वह	सो
	ते	वे	ते
	अहं	मैं	अहं
	मो	हम	मो
	मे	मेरे लिए	मे
	मयि	मुझ में	मयि
	तुवं	तुम	तुवं
	वो	तुमको	वो
(ग) समान अव्यय	इह	यहाँ	इह
	वा	अथवा	वा
	नहि	नहीं	नहि
	नमो	नमस्कार	नमो
	कया	कब	कया
	आणिं	इस समय	दाणिं
	जहि	जहाँ	जहि
(घ) समान क्रियारूप	हनति	मारता है	हनति, हणइ
	भेदति	भेदन करता है	भेदति

मरते	मरता है	मरते
गच्छहि	जाओ	गच्छहि
दह	जलाओ	दह
पाहि	पिओ	पाहि
कर	करना	कर
चर	चलना	चर
मुंच	छोड़ना	मुंच

इसी तरह प्राकृत एवं वैदिक भाषा के संधि रूपों में भी कई समानताएँ देखने को मिलती हैं। कृदन्त दोनों के समान हैं। इस तरह ये कुछ नमूने के तौर पर वे विशेषताएँ हैं, जिनकी ओर विद्वानों की दृष्टि जानी चाहिए। इससे यह स्पष्ट है कि वैदिक भाषा और प्राकृत किसी एक मूल जनभाषा के धरातल पर ही आगे चलकर विकसित हुई हैं। किसी एक भाषा को भी पूरी तरह समझने के लिए दूसरी भाषा का ज्ञान करना आवश्यक है। अत: प्राकृत भाषा का अध्ययन और पठन-पाठन प्राचीन भारतीय आर्यभाषा वैदिक भाषा के लिए कितना उपयोगी है, यह स्वयं समझा जा सकता है।

प्राकृत भाषा के व्याकरण सम्बन्धी नियम स्वतंत्र आधार को लिये हुए हैं तथा जन-भाषा में प्रयोगों की बहुलता को भी उसने सुरक्षित रखा है। प्राकृत ने अपने इन्हीं तत्त्वों के अनुरूप कुछ ऐसे नियम निश्चित कर लिये, जिनसे वह किसी भी भाषा के शब्दों को प्राकृत रूप देकर अपने में सम्मिलित कर सकती है। यही प्राकृत भाषा की सजीवता और सर्वग्राह्यता कही जा सकती है। इसी प्रवृत्ति का प्रयोग करते हुए प्राकृत कवियों ने अपने काव्य साहित्य को विभिन्न शब्द-भण्डारों से समृद्ध किया है। कोई भी प्रवाहमान भाषा प्राकृत की इस प्रवृत्ति से अछूती नहीं है। वैदिक युग से महावीर युग तक प्रचलित प्राकृत भाषा के स्वरूप को पुनर्जीवित करने के लिए एक ओर वैदिक भाषा में प्रयुक्त प्राकृत तत्त्वों की गहरायी से खोजबीन करनी होगी तो दूसरी ओर इस अवधि के अन्य उपलब्ध साहित्य का भाषा की दृष्टि से पुनर्मूल्यांकन करना होगा।

विकास के चरण

महावीर युग से ईसा की दूसरी शताब्दी तक प्रचलित साहित्यिक

(द्वितीय स्तरीय) प्राकृत के भाषा प्रयोग एवं काल की दृष्टि से तीन भेद किये जा सकते हैं -

(क) आदि युग, (ख) मध्य युग और (ग) अपभ्रंश युग।

आदि युग

प्राकृत भाषा जन-भाषा थी। अत: उसमें कुछ समय के उपरान्त जन-बोलियों की विविधता के कारण नये-नये परिवर्तन आते रहे हैं, किन्तु फिर भी कुछ विशेषताएँ समान बनी रही हैं। इस दृष्टि से अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि महावीर के समय से सम्राट् कनिष्क के समय तक जिस प्राकृत भाषा का प्रयोग हुआ वह प्राय: एक-सी थी। उसमें प्राचीन प्रयोगों की बहुलता थी। अत: ई०पू० छठी शताब्दी से ईसा की द्वितीय शताब्दी तक प्राकृत में लिखे गये साहित्य की भाषा को आदि-युग अथवा प्रथम युग की प्राकृत कहा जा सकता है। इस प्राकृत के प्रमुख पाँच रूप प्राप्त होते हैं - (१) आर्ष प्राकृत (२) शिलालेखी प्राकृत (३) निया प्राकृत, (४) प्राकृत धम्मपद की भाषा और (५) अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत।

आर्ष प्राकृत

द्वितीय स्तरीय प्राकृत का सब से प्राचीन लिखित रूप शिलालेखी प्राकृत में मिलता है। किन्तु शिलालेख लिखे जाने के पूर्व ही बुद्ध और महावीर ने अपने उपदेशों में जन-भाषा प्राकृत का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था, जिसका आगम साहित्य के रूप में आकलन परम्परा द्वारा बाद में किया गया है। आगमों की इस प्राकृत को पालि और अर्धमागधी नाम से जाना गया है। अत: रचना की दृष्टि से पालि, अर्धमागधी आदि आगमिक प्राकृत को शिलालेखी प्राकृत से प्राचीन स्वीकार किया जा सकता है। इस प्राचीनता और दो महापुरुषों द्वारा प्रयोग किये जाने की दृष्टि से आगमों की भाषा को आर्ष प्राकृत कहना उचित है।

(क) पालि - भगवान् बुद्ध के वचनों का संग्रह जिन ग्रन्थों में हुआ है, उन्हें त्रिपिटक कहते हैं। इन ग्रंथों की भाषा को पालि कहा गया है। पालि भाषा का गठन तत्कालीन विभिन्न बोलियों के मिश्रण से हुआ माना जाता है, जिसमें मागधी प्रमुख थी। पालि भाषा की जो विशेषताएँ है, उनमें अधिकांश प्राकृत तत्त्व हैं, अत: पालि को प्राकृत भाषा का ही एक प्राचीन रूप स्वीकार

किया जाता है। पालि भाषा बुद्ध के उपदेशों और तत्सम्बन्धी साहित्य तक ही सीमित हो गयी थी। इस रूढ़ता के कारण पालि भाषा से आगे चलकर अन्य भाषाओं का विकास नहीं हुआ, जबकि प्राकृत की सन्तति निरन्तर बढ़ती रही। किन्तु पालि का साहित्य पर्याप्त समृद्ध है।[१] अत: प्राचीन भारतीय भाषाओं को समझने के लिए पालि भाषा का ज्ञान आवश्यक है।

(ख) अर्धमागधी - आर्ष प्राकृत के अन्तर्गत पालि के अतिरिक्त अर्धमागधी और शौरसेनी प्राकृत भी आती है। यह मान्यता है कि महावीर ने अर्धमागधी भाषा में उपदेश दिये थे।[२] उन उपदेशों को अर्धमागधी और शौरसेनी प्राकृत में संकलित कर ग्रन्थ रूपों में सुरक्षित किया गया।

प्राचीन आचार्यों ने मगध प्रान्त के अर्धांश भाग में बोली जाने वाली भाषा को अर्धमागधी कहा है।[३] कुछ विद्वान् इस भाषा को अर्धमागधी इसलिए कहते हैं कि इसमें आधे लक्षण मागधी प्राकृत के और आधे अन्य प्राकृत के पाये जाते हैं।[४] वस्तुत: पश्चिम में शूरसेन (मथुरा) और पूर्व में मगध के बीच इस भाषा का व्यवहार होता रहा है। अत: इसे अर्धमागधी कहा गया होगा। इस भाषा का समय की दृष्टि से ई०पू० चौथी शताब्दी तय किया जाता है।

(ग) शौरसेनी - शूरसेन (व्रजमण्जल, मथुरा के आसपास) प्रदेश में प्रयुक्त होने वाली जनभाषा को शौरसेनी प्राकृत के नाम से जाना गया है। अशोक के शिलालेखों में भी इसका प्रयोग है। अत: शौरसेनी प्राकृत भी महावीर युग में प्रचलित रही होगी, यद्यपि उस समय का कोई शौरसेनी ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। किन्तु उसी परम्परा में प्राचीन आचार्यों ने षट्खण्डागम आदि ग्रन्थों की रचना शौरसेनी प्राकृत में की है और आगे भी कई शताब्दियों तक इस भाषा में ग्रन्थ लिखे जाते रहे हैं। अशोक के अभिलेखों में शौरसेनी के प्राचीन रूप प्राप्त होते हैं। नाटकों में पात्र शौरसैनी भाषा का प्रयोग करते हैं, अत: प्रयोग की दृष्टि से अर्धमागधी से शौरसैनी प्राकृत व्यापक मानी गयी है। इसका प्रचार मध्यदेश में अधिक था।

---

१. पालि साहित्य का इतिहास - डॉ० भरतसिंह उपाध्याय
२. ''भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्मं आइक्खइ'' - समवायांगसुत्त -२२.३४
३. ''मगहद्ध विसयभासानिबद्धं अद्धमागही'' - निशीथचूर्णि
४. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचंद्र शास्त्री, पृ० ३५

२. शिलालेखी प्राकृत

शिलालेखी प्राकृत के प्राचीनतम रूप अशोक के शिलालेखों में प्राप्त होते हैं। ये शिलालेख ई०पू० ३०० के लगभग देश के विभिन्न भागों में अशोक ने खुदवाये थे। इससे यह स्पष्ट है कि जन-समुदाय में प्राकृत भाषा बहु-प्रचलित थी और राजकाज में भी उसका प्रयोग होता था। अशोक के शिलालेख प्राकृत भाषा की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण हैं ही, साथ ही वे तत्कालीन संस्कृति के जीते-जागते प्रमाण भी हैं। अशोक ने छोटे-छोटे वाक्यों में कई जीवन-मूल्य जनता तक पहुँचाये हैं। वह कहता है -

प्राणानां साधु अनारम्भो, अपव्यया अपभाण्डता साधु। (तृतीय शिलालेख)

(प्राणियों के लिए की गयी अहिंसा अच्छी है, थोड़ा खर्च और थोड़ा संग्रह अच्छा है।)

सव पासंडा बहुसुता व असु, कल्याणागमा च असु। (द्वादश शिलालेख)

(सभी धार्मिक सम्प्रदाय [एक दूसरे को] सुनने वाले हों और कल्याण का कार्य करने वाले हों)

सम्राट अशोक के बाद लगभग ईसा की चौथी शताब्दी तक प्राकृत में शिलालेख लिखे जाते रहे हैं, जिनकी संख्या लगभग दो हजार है। खारवेल का हाथीगुफा शिलालेख उदयगिरि एवं खण्डगिरि के शिलालेख तथा आन्ध्र राजाओं के प्राकृत शिलालेख साहित्यिक और इतिहास की दृटि से महत्त्वपूर्ण हैं। प्राकृत भाषा के कई रूप इनमें उपलब्ध हैं।[१] खारवेल के शिलालेख में उपलब्ध **नमो अरहंतानं नमो सवसिधानं** पंक्ति में प्राकृत के नमस्कार मंत्र का प्राचीन रूप प्राप्त होता है। सरलीकरण की प्रवृत्ति का भी ज्ञान होता है। भारतवर्ष (**भरधवस**) शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख इसी शिलालेख की दशवीं पंक्ति में मिलता है। इस तरह प्राकृत के शिलालेख भारत के सांस्कृतिक इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रदान करते हैं।

---

१. द्रष्टव्य - पालि प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं का व्याकरण - डॉ० सुकुमार सेन

३. निया प्राकृत

प्राकृत भाषा का प्रयोग भारत के पड़ोसी प्रान्तों में भी बढ़ गया था। इस बात का पता निय प्रदेश (चीनी, तुर्किस्तान) से प्राप्त लेखों की भाषा से चलता है, जो प्राकृत भाषा से मिलती-जुलती है। निया प्राकृत का अध्ययन डॉ० सुकुमार सेन ने किया है, जिससे ज्ञात होता है कि इन लेखों की प्राकृत भाषा का सम्बन्ध दरदी वर्ग की तोखरी भाषा के साथ है।[१] अतः प्राकृत भाषा इतनी लोच और सरलता है कि वह देश-विदेश की किसी भी भाषा से अपना सम्बन्ध जोड़ सकती है।

४. धम्मपद की प्राकृत भाषा

पालि भाषा में लिखा हुआ धम्मपद प्रसिद्ध है। किन्तु प्राकृत भाषा में लिखा हुआ एक और धम्मपद भी प्राप्त हुआ है, जिसे बी० एम० बरुआ और एस० मित्रा ने सन् १९२१ में कलकत्ता से प्रकाशित किया है।[२] यह खरोष्ठी लिपि में लिखा गया था। इसकी प्राकृत का सम्बन्ध पैशाची आदि प्राकृत से है।

५. अश्वघोष ने नाटकों की प्राकृत

आदि युग की प्राकृत भाषा का प्रतिनिधित्व लगभग प्रथम शताब्दी के नाटककार अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत भाषा भी करती है। अर्धमागधी, शौरसेनी और मागधी प्राकृत की विशेषताएँ इन नाटकों में प्राप्त होती हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि इस युग में प्राकृत भाषा का प्रयोग क्रमशः बढ़ रहा था और आगम ग्रन्थों की भाषा कुछ-कुछ नया स्वरूप ग्रहण कर रही थी।

मध्ययुग

ईसा की दूसरी से छठी शताब्दी तक प्राकृत भाषा का प्रयोग निरन्तर बढ़ता रहा। अतः इसे प्राकृत भाषा और साहित्य का समृद्ध युग कहा जा सकता

---

१. ए कम्परेटिव ग्रामर ऑफ मिडिल इंडो आर्यन - डॉ० सेन

२. 'प्राकृत धम्मपद' नामक ग्रन्थ प्राकृत भारती के पुष्प - ७० के रूप में सन् १९९० में प्रकाशित हो चुका है।

है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इस समय प्राकृत का प्रयोग होने लगा था। महाकवि भास ने अपने नाटकों में प्राकृत को प्रमुख स्थान दिया। कालिदास ने पात्रों के अनुसार प्राकृत भाषाओं के प्रयोग को महत्त्व दिया। इसी युग के नाटककार शूद्रक ने विभिन्न प्राकृतों का परिचय कराने के उद्देश्य से मृच्छकटिक प्रकरण की रचना की। यह लोकजीवन का प्रतिनिधि नाटक है, अत: उसमें प्राकृत के प्रयोगों में भी विविधता है।

इसी युग में प्राकृत में कथा, चरित, पुराण एवं महाकाव्य आदि विधाओं में ग्रन्थ लिखे गये। उनमें जिस प्राकृत का प्रयोग हुआ उसे सामान्य प्राकृत कहा जा सकता है, क्योंकि तब तक प्राकृत ने एक निश्चित स्वरूप प्राप्त कर लिया था, जो काव्य-लेखन के लिए आवश्यक था। प्राकृत के इस साहित्यिक स्वरूप को महाराष्ट्री प्राकृत कहा गया है। इसी युग में गुणाढ्य ने बृहत्कथा नामक कथा-ग्रन्थ प्राकृत में लिखा, जिसकी भाषा पैशाची कही गयी है। इस तरह इस युग के साहित्य में प्रमुख रूप से जिन तीन प्राकृत भाषाओं का प्रयोग हुआ है वे हैं - १. महाराष्ट्री, २. मागधी और ३. पैशाची। इन तीनों प्राकृतों का स्वरूप प्राकृत के वैयाकरणों ने अपने व्याकरण-ग्रन्थों में स्पष्ट किया है।

(क) महाराष्ट्री प्राकृत

जिस प्रकार स्थान भेद के कारण शौरसेनी आदि प्राकृतों को नाम दिये जाते हैं उसी तरह महाराष्ट्र प्रान्त की जनबोली से विकसित प्राकृत का नाम महाराष्ट्री प्रचलित हुआ है। इसने मराठी भाषा के विकास में भी योगदान किया है। महाराष्ट्री प्राकृत के वर्ण अधिक कोमल और मधुर प्रतीत होते हैं, अत: इस प्राकृत का काव्य में सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। ईसा की प्रथम शताब्दी से वर्तमान युग तक इस प्राकृत में ग्रंथ लिखे जाते रहे हैं। प्राकृत वैयाकरणों ने भी महाराष्ट्री प्राकृत के लक्षण लिखकर अन्य प्राकृतों की केवल विशेषताएँ गिना दी हैं।

(ख) मागधी

मगध प्रदेश की जनबोली को सामान्य तौर पर मागधी प्राकृत कहा गया है। मागधी कुछ समय तक राजभाषा थी, अत: इसका सम्पर्क भारत की कई बोलियों के साथ हुआ। इसीलिए पालि, अर्धमागधी आदि प्राकृतों के विकास में मागधी प्राकृत को मूल माना जाता है। इसमें कई लोक-भाषाओं का समावेश

था। मागधी का प्रयोग अशोक के शिलालेखों में हुआ है और नाटककारों ने अपने नाटकों में इसका प्रयोग किया हे, किन्तु इस भाषा का कोई स्वतंत्र ग्रन्थ प्राप्त नहीं हुआ है।

(ग) पैशाची प्राकृत

देश के उत्तर-पश्चिम प्रान्तों के कुछ भाग को पैशाच देश कहा जाता था। वहाँ पर विकसित इस जनभाषा को पैशाची प्राकृत कहा गया है। यद्यपि इसका कोई एक स्थान नहीं है। विभिन्न स्थानों के लोग इस भाषा को बोलते थे। प्राकृत भाषा से समानता होने के कारण पैशाची को भी प्राकृत का एक भेद मान लिया गया है। इस भाषा में बृहत्कथा नामक पुस्तक लिखे जाने का उल्लेख है, किन्तु वह मूल रूप में प्राप्त नहीं है। उसके रूपान्तर प्राप्त हैं, जिनसे मूल ग्रंथ का महत्त्व सिद्ध होता है।

इस प्रकार मध्ययुग में प्राकृत भाषा का जितना अधिक विकास हुआ, उतनी ही उसमें विविधता आयी, किन्तु साहित्य में प्रयोग बढ़ जाने के कारण विभिन्न प्राकृतें महाराष्ट्री प्राकृत के रूप में ''एकरूपता को ग्रहण करने लगीं।'' प्राकृत के वैयाकरणों ने साहित्य के प्रयोगों के आधार पर महाराष्ट्री प्राकृत के व्याकरण के कुछ नियम निश्चित कर दिये। उन्हीं के अनुसार कवियों ने अपने ग्रन्थों में महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग किया। इससे प्राकृत भाषा में स्थिरता तो आयी, किन्तु उसका जन-जीवन से सम्बन्ध दिनोंदिन घटता चला गया। वह साहित्य की भाषा बनकर रह गयी। अतः जनबोली का स्वरूप उससे कुछ भिन्नता लिए हुए प्रचलित होने लगा, जिसे भाषाविदों ने अपभ्रंश भाषा नाम दिया है। एक तरह से प्राकृत ने लगभग ६-७ वीं शताब्दी में अपना जनभाषा अथवा मातृभाषा का स्वरूप अपभ्रंश को सौंप दिया। यहाँ से प्राकृत भाषा के विकास की तीसरी अवस्था प्रारम्भ हुई।

६. प्राकृत एवं अपभ्रंश

प्राकृत एवं अपभ्रंश इन दोनों भाषाओं का क्षेत्र प्रायः एक जैसा था तथा इनमें साहित्य लेखन की धारा भी समान थी। विकास की दृष्टि से भी दोनों भाषाएँ जनबोलियों से विकसित हुई हैं। व्याकरण की भी बहुत कुछ इनमें समानता है, किन्तु इस सब से प्राकृत और अपभ्रंश को एक नहीं माना जा

सकता। दोनों ही स्वतंत्र भाषाएँ हैं। दोनों की अपनी अलग पहिचान है। प्राकृत में सरलता की दृष्टि से जो बाधा रह गयी थी, उसे अपभ्रंश भाषा ने दूर करने का प्रयत्न किया। कारकों, विभक्तियों, प्रत्ययों के प्रयोग में अपभ्रंश निरन्तर प्राकृत से सरल होती गयी है।[१]

अपभ्रंश, प्राकृत और हिन्दी भाषा को परस्पर जोड़ने वाली कड़ी है। वह आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं (राजस्थानी, गुजराती, मराठी आदि) की पूर्ववर्ती अवस्था है। अपभ्रंश भाषा में छठी शताब्दी से १२वीं शताब्दी तक पर्याप्त साहित्य लिखा गया है।[२]

महाकवि स्वयंभू अपभ्रंश का आदिकवि कहा जा सकता है।[३] इसके बाद महाकवि रइधू तक कई महाकवियों ने इस भाषा को समृद्ध किया है। अपभ्रंश भाषा प्राकृत भाषा के विकास की तीसरी अवस्था मानी जाती है। ईसा की छठी शताब्दी से लगभग बारहवीं शताब्दी तक अपभ्रंश का उत्कर्ष युग रहा।[४] इस बीच प्राकृत भाषाओं में भी काव्य लिखे जाते रहे, किन्तु जनबोली के रूप में अपभ्रंश प्रयुक्त होती रही। इस तरह एह ही समय में समानान्तर रूप से प्रचलित इन दोनों भाषाओं में कई समानताएँ एकत्र होती रहीं। भाषा के सरलीकरण की प्रवृत्ति को अपभ्रंश ने प्राकृत से ग्रहण किया और कई शब्द तथा व्याकरणात्मक विशेषताएँ भी उसने ग्रहण कीं। इन सब प्रवृत्तियों को अपभ्रंश ने अपनी अंतिम अवस्था में क्षेत्रीय भाषाओं को सौंप दिया। इस तरह अपभ्रंश भाषा का महत्त्व प्राकृत और आधुनिक भारतीय भाषाओं के आपसी सम्बन्ध को जानने के लिए आवश्यक है।

प्राकृत और आधुनिक भाषाएँ

भारतीय आधुनिक भाषाओं का जन्म उन विभिन्न लोकभाषाओं से हुआ है, जो प्राकृत व अपभ्रंश से प्रभावित थीं, अत: स्वाभाविक रूप से ये

---

१. अपभ्रंश भाषा का अध्ययन - डॉ० वीरेन्द्र श्रीवास्तव
२. अपभ्रंश भाषा और साहित्य - डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन
३. पउमचरिउ की भूमिका - डॉ० एच० सी० भायाणी
४. अपभ्रंश भाषा और साहित्य की शोध-प्रवृत्तियाँ - डॉ० देवेन्द्र कुमार शास्त्री

भाषाएँ प्राकृत व अपभ्रंश से कई बातों में समानता रखती हैं। व्याकरणात्मक संरचना और काव्यात्मक विधाओं का अधिकांश भाग प्राकृत की प्रवृत्तियों पर आधारित हैं।[१] इसके अतिरिक्त शब्द समूह की समानता भी ध्यान देने योग्य है।[२] कुछ प्रमुख भाषाओं के उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं -

राजस्थानी	**प्राकृत**	**राजस्थानी**	**अर्थ**
	घडइ	घडै	बनाता है
	जाचइ	जाचै	मांगता है
	खण्डइ	खांडै	तोड़ता है
	धारइ	धारै	धारता है
	बीहइ	बीहै	डरता है
	कीदो	कीधौ	किया
	होसइ	होसी	होगा
	जोहर	जोहर	बलिदान
	कउण	कुण	कौन
	सीक	सीक	विदाई
गुजराती	**प्राकृत**	**गुजराती**	**अर्थ**
	ओइल्ल	ओलवु	ओढ़नी
	कटु	कठु	बदनाम
	गाहिल्ल	गहिल	मन्दबुद्धि
	कुक्कडी	कूकड़ी	मुर्गी
	मडय	मडु	मृत
	लीट	लीटी	रेखा
मैथिली	**प्राकृत**	**मैथिली**	**अर्थ**
	कच्चहरिअ	कचहरी	अदालत
	कद्दम	कादों	कीचड़
	लोहार	लोहार	लुहार
	सिक्खल	सिक्करी	सांकल

१. द्रष्टव्य-प्रोसीडिंग्स् आफ द सेमिनार इन प्राकृत स्टडीज-सं० आर० एन० दाण्डेकर

२. द्रष्टव्य-लेखक की ''प्राकृत अपभ्रंश तथा अन्य भारतीय भाषाएँ'' नामक पुस्तक

	टिलक	टिकुली	तिलक
	गोआल	गोआर	ग्वाला
उड़िया	**प्राकृत**	**उड़िया**	**अर्थ**
	मुह	मुह	मुंह
	सही	सही	सखी
	नाह	नाह	नाथ
	अग्गि	अगि	आग
	सवत्ति	सावत	सौत
बुन्देली	**प्राकृत**	**बुन्देली**	**अर्थ**
	चंगेड़ा	चंगेरी	डलिया
	चुल्लि	चूला	चूल्हा
	छेलि	छिरिया	बकरी
	डगलआ	डगला	ढेला
	ढोर	ढोर	पशु
	तित्त	तींतो	गीला
	नाहर	नाहर	शेर
	बाग्गुर	बगुर	समूह
	सुहाली	सुंहारी	पुड़ी

प्राकृत और मराठी का सम्बन्ध बहुत पुराना है। महाराष्ट्री प्राकृत ने मराठी भाषा के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है, अत: दोनों भाषाओं का अध्ययन एक दूसरे के लिए पूरक है। दक्षिण भारत की अन्य भाषाओं में भी प्राकृत के कई शब्द प्राप्त होते हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

मराठी	**प्राकृत**	**मराठी**	**अर्थ**
	गार	गार	पत्थर
	चिक्खल्ल	चिखल	कीचड़
	जल्ल	जाल	शरीर का मेल
	ढिंकुण	ढेंकूण	खटमल
	तुंड	तोंड	मुँह
	तक्क	ताक	मठा

	तूलि	तूली	सूती चादर
	दद्दर	दादर	सीढ़ी
	वाउल्ल	बाहुली	गुड़िया
	सुण्ह	सून	बहू
कन्नड़	**प्राकृत**	**कन्नड़**	**अर्थ**
	ओलग्ग	ओलग	सेवा करना
	कुरर	कुरी	भेड़
	कोट्ट	कोटे	किला
	देसिय	देशिक	पथिक
	पल्लि	पल्ली	गाँव
	पुल्लि	पुलि	बाघ

आधुनिक भाषाओं के विकास क्रम की अंतिम अवस्था हिन्दी भाषा है। हिन्दी का प्राकृत और अपभ्रंश से गहरा सम्बन्ध है, क्योंकि हिन्दी जनभाषा और साहित्य दोनों की भाषा है। अत: उसने प्राचीन जनभाषा प्राकृत आदि से कई प्रवृत्तियाँ ग्रहण की हैं। प्राकृत के अध्ययन से हिन्दी के कई शब्दों का सही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। कुछ शब्द द्रष्टव्य हैं –

प्राकृत	**हिन्दी**	**प्राकृत**	**हिन्दी**
उक्खल	ओखली	उल्लुट्टं	उलटा
कहारो	कहार	कोइला	कोयला
कुहाड	कुहाड़ा	खड्डा	खड्डा
चाउला	चांवल	चारो	चारा
चोक्ख	चोखा	छइल्लो	छैला
झाड	झाड़	डोरो	डोरा
डाली	डाली	भल्ल	भला
पोट्टली	पोटली	पत्तल	पतला
सलोणा	सलोना	बड्डा	बड़ा

बहुत सी हिन्दी की क्रियाएँ भी प्राकृत की हैं, जिनमें शब्द एवं अर्थ की समानता है। यथा –

प्राकृत	हिन्दी	प्राकृत	हिन्दी
उड्ड	उड़ना	कड्ढ	काढ़ना
कुद्द	कूदना	कुट्ट	कूटना
चुक्क	चूकना	चमक्क	चमकना
छुट्ट	छूटना	भुल्ल	भूलना
देक्ख	देखना	बुज्झ	बूझना
डंस	डंसना	लुक्क	लुकना

इस प्रकार प्राकृत भाषा का विकास किसी क्षेत्र या काल विशेष में आकर रुक नहीं गया है, अपितु प्राकृत ने प्रत्येक समय की बहुप्रचलित जनभाषा के अनुरूप अपने स्वरूप को ढाल लिया है। अर्थात् उस जनभाषा की संरचना, शब्द-सम्पत्ति एवं साहित्य के विकास में प्राकृत ने अपनी प्रवृत्तियाँ समर्पित कर दी हैं। यही कारण है कि प्राकृत देश की इन सभी भाषाओं से अपना सम्बन्ध कायम रख सकी है। अतः प्राकृत के अध्ययन एवं शिक्षण से देश की विभिन्न भाषाओं के प्रचार-प्रसार को बल मिलता है। देश की अखण्डता और चिन्तन की समन्वयात्मक प्रवृत्ति प्राकृत भाषा के माध्यम से दृढ़ की जा सकती है, किन्तु इसके लिए प्राकृत भाषा के शिक्षण की सही दिशाएँ खोजनी होंगी।

प्राकृत-शिक्षण[१]

प्राकृत भाषा का शिक्षण उसी तरह होना चाहिए जिस तरह हम किसी अपरिचित वस्तु का शिक्षण कराते हैं। हम अपरिचित का शिक्षण अपरिचित से नहीं कर सकते। यदि हम परिचित का सम्बन्ध अपरिचित से जोड़ दें तो अपरिचित धीरे-धीरे परिचित की कोटि में आ जाएगा। भाषा-शिक्षण के संदर्भ में भी हम यह कह सकते हैं कि यदि परिचित भाषा से अपरिचित भाषा का सम्बन्ध क्रमानुसार जोड़ दिया जाए तो अपरिचित भाषा परिचित भाषा बन जायेगी और तब यह कहा जा सकेगा कि एक नयी भाषा सीख ली गयी। मान

---

१. द्रष्टव्य - ''प्राकृत शिक्षण की दिशाएँ'' - डॉ० कमलचंद सोगाणी एवं डॉ० प्रेम सुमन जैन का लेख (प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा १९८१ में आयोजित यू०जी०सी० सेमिनार में पठित)।

लीजिए, हमें तमिल भाषा का शिक्षण उत्तरी भारत के कॉलेजों में करना है। हमें इसके लिए क्या पद्धति अपनानी होगी? वास्तव में इसके शिक्षण के लिए हमें भली प्रकार से परिचित किसी भाषा अथवा मातृभाषा का माध्यम ही अपनाना होगा। माध्यम के चुनाव में गलती करने पर तमिल भाषा का सीखना बोझिल हो जायेगा और वह भाषा भली प्रकार नहीं सीखी जा सकेगी। एक दृष्टि से मातृ-भाषा के माध्यम से ही नयी भाषा को सिखाया जाना चाहिए। इसी बात को हम प्राकृत शिक्षण के संदर्भ में कह सकते हैं। प्राकृत का शिक्षण मातृ-भाषा के माध्यम से किया जाना चाहिए। इससे हम सहजरूप से परिचित मातृ-भाषा से अपरिचित प्राकृत भाषा को सीख सकेंगे। जहाँ हमारी मातृभाषा हिन्दी है वहाँ प्राकृत भाषा का शिक्षण हिन्दी के माध्यम से होना चाहिए।

हम सभी जानते हैं कि भाषा का व्याकरण से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। व्याकरण भाषा को एक स्वरूप प्रदान करती है। यह बात प्राकृत के लिए भी उतनी ही सच है जितना किसी अन्य भाषा के लिए। वर्तमान में बोलचाल की भाषा का प्रयोग तो व्याकरण के शिक्षण के बिना भी संभव है, किन्तु प्राचीन जनभाषा प्राकृत का सही स्वरूप तो उसके सही ढंग से किये गये शिक्षण से ही प्रकट हो सकेगा। तभी प्राकृत एक स्वतंत्र और समृद्ध भाषा के रूप में सीखी जा सकेगी। इसके लिए निम्नांकित शिक्षण-सोपानों को अपनाना जरूरी है-

१. प्राकृत भाषा के शिक्षण के लिए प्राकृत व्याकरण का शिक्षण विशेष महत्त्व रखता है। अभी तक प्रचलित शिक्षण पद्धति में प्राय: प्राकृत व्याकरण के सूत्रों को रटाने, शब्दरूपों एवं क्रियारूपों को स्मरण कराने पर अधिक जोर दिया जाता रहा है। इससे भाषा की पकड़ नहीं आती। अत: यदि छात्रों को पहले व्याकरण के मूलभूत सिद्धान्त, प्रत्यय, विभक्ति-प्रयोग आदि का अभ्यास कराया जाए और उसके बाद उनके सीखे गये ज्ञान को सूत्रों से जोड़ दिया जाए तो वे प्राकृत के स्वरूप को हृदयंगम कर लेंगे। अत: प्राकृत व्याकरण-शिक्षण में विस्तार से संक्षेप की ओर जाने की प्रवृत्ति शिक्षार्थियों को सूत्रज्ञान का अधिक लाभ दे सकेगी।

२. विभक्ति ज्ञान, शब्दरूप, क्रियारूप आदि रटने से स्थायी नहीं होते, अपितु इससे विभिन्न रूपों में भ्रान्ति पैदा हो जाती है। इसके स्थान पर यदि पहले उपयोगी वाक्यों के प्रयोग द्वारा शिक्षार्थी को प्रत्येक रूप का बार-बार

अभ्यास कराया जाए तथा एक ही विभक्ति के विभिन्न रूपों को एक साथ रखकर उनकी तुलना करायी जाए तो वह शीघ्र ही मूल शब्द और विभक्ति-प्रत्यय को पहिचानने लगेगा। इसके बाद उसे व्याकरण के उन नियमों का ज्ञान कराया जाय तो शब्द और प्रत्यय को जोड़ने में सहायक हैं। प्रस्तुत **प्राकृत स्वयं-शिक्षक** में इसी पद्धति को अपनाया गया है। प्रयोग के अभ्यास से व्याकरण के नियमों तक शिक्षार्थी को ले जाने का यह विनम्र प्रयास है।

३. प्राकृत-शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम में निर्धारित प्राकृत साहित्य का भी उपयोग किया जा सकता है। साहित्य के पाठों का केवल भावार्थ या आशय समझाकर ही शिक्षण न किया जाए, अपितु पाठ के शब्दार्थ और शब्द-स्वरूप पर विशेष ध्यान दिया जाए। इससे छात्र व्याकरण का अभ्यास साहित्य-पठन में ही करता चलेगा। इस प्रक्रिया में समय अधिक लग सकता है। अत: पाठ्यक्रम में पाठों की संख्या कम रखी जा सकती है, किन्तु जितने भी पाठ पढ़ाये जाएँ, वे भाषाज्ञान को बढ़ाने वाले हों, इस पर जोर दिया जाए। भाषा सीख लेने पर छात्र साहित्य को स्वयं पढ़ने का प्रयत्न कर सकता है।

४. साहित्य-शिक्षण में भाषा-विश्लेषण के लिए भी चार्टों का प्रयोग किया जा सकता है। चार्ट का स्वरूप इस प्रकार का हो सकता है, जो अगले पृष्ठ पर दिया गया है। इस चार्ट द्वारा विद्यार्थी स्वयं शब्दकोष के माध्यम से प्राकृत गाथाओं या गद्यांशों का विश्लेषण कर ले या उसे शिक्षक द्वारा करा दिया जाए तो छात्र का व्याकरण ज्ञान पुष्ट हो जायेगा।

भाषा-विश्लेषण के इस चार्ट का प्रयोग जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में शोध-कार्यों एवं प्राकृत-अध्ययन के लिए किया जा रहा है। उसके अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। इन चार्टों को भरने वाला शिक्षार्थी तो लाभान्वित होता ही है, साथ ही वह चार्ट आगे के अध्येताओं के लिए भी भाषा-शिक्षण के रिकार्ड के रूप में काम आता है। इससे प्राकृत भाषा के विभिन्न प्रयोगों के निष्कर्ष निकालने में भी मदद मिलती है। पठनीय गाथा है -

अमयं पाइयकव्वं पढिउं सोउं अ जे ण आणंति।
कामस्स तत्ततन्तिं कुणंति ते कहं ण लज्जंति॥

इस गाथा का विश्लेषण चार्ट में इस प्रकार किया जायेगा :-

१	२			३			४			५			६			७		
संदर्भ	संज्ञा	मूल	अर्थ	विशे.	मूल	अर्थ	कृदन्त	मूल	अर्थ	क्रिया	मूल	अर्थ	सर्वनाम	मूल	अर्थ	अव्यय	अर्थ	संधि एवं समास
गाथा सत्त-शती १।२	पाइअ कव्वं (द्वि. ए.व.)	पागय कव्व (नपु.)	प्राकृत काव्य	अमयं (द्वि. ए.व.)	अमय	अमृत	पढिउं (हे.कृ)	पढ (सक)	पढ़ना	आणंति (अ.पु. ब.व.)	आण (सक)	जानना	जे (प्र.ब.व.)	जा(पु.)	जो	अ	और	ततस्स तंती = तत्ततंती (षष्ठी तत्पुरुष समास)
							सोउं (हे.कृ.) (अनियमित)	सुअ (सक)	सुनना				ते (प्र.ब.व.)	ता(पु.)	वे	कहं	क्यों	
	कामस्स (ष. ए.व.)	काम (पु.)	सुंदर विषय													ण	नहीं	पाइअस्स कव्वं पाइय-कव्वं (ष.त.पु. समास
	तत्त (द्वि. ए.व.)	तत्त (नपु.)	तत्त्व							कुणंति (अ.पु.)	कुण	करना (सक)						
	तन्ति	तंती (स्त्री)	चिन्ता (चर्चा)							लज्जंति	लज्ज (अक)	लज्जा	करना					

विशेष – **'पाइअ'** यद्यपि विशेषण है, किन्तु भाषा, व्याकरण एवं काव्य के साथ प्रयुक्त होने पर पाइअ को संज्ञा माना गया है।

५. उपर्युक्त प्रक्रिया से जब विद्यार्थी प्राकृत व्याकरण के प्रायः सभी नियमों एवं प्रयोगों से परिचित हो जाए तब उसके इस विस्तृत ज्ञान का व्याकरण से सूत्रों के माध्यम से संक्षेपीकरण करना है। इससे वह व्याकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया को सूत्र-संकेतों के माध्यम से प्रयोग करने में सक्षम होगा। इस पद्धति से छात्र को सूत्र-ज्ञान की उपयोगिता ज्ञात होगी। फलस्वरूप सूत्र उसे स्वयं ही कण्ठस्थ हो जावेंगे; क्योंकि सूत्रों में समाये हुए सभी कार्यों का वह बहुत प्रयोग कर चुका है। ऐसे विद्यार्थी के लिए शिक्षक को सूत्रों का ज्ञान नई पद्धति, चार्ट आदि के द्वारा कराना होगा। यथा - उसे बताना होगा कि सूत्र का निर्माण कैसे हुआ है? उसमें संधि, समास आदि क्या है? सूत्र में व्याकरण के किन प्रत्ययों और विभक्तियों का संकेत है? तथा वह सूत्र आगे-पीछे व्याकरण-ज्ञान में कहाँ-कहाँ काम आता है? इत्यादि।

प्राकृत-शिक्षण के इन सोपानों को यदि प्रारम्भिक कक्षाओं में सावधानी और परिश्रम पूर्वक अपनाया गया तो प्राकृत भाषा के विकास के लिए इससे दूरगामी एवं सार्थक परिणाम सामने आयेंगे। तब प्राकृत भाषा कई घेरों को छोड़कर उस जन-समुदाय के पास पहुँच सकेगी, जहाँ वह शताब्दियों तक व्याप्त और समादृत रही है। प्राकृत भाषा के पठन-पाठन से प्राकृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं का ज्ञान रखने वाले एक ऐसे उत्साही समाज का सृजन होगा जो भारतीय संस्कृति की समन्वयात्मक छवि को उजागर करेगा एवं ग्रन्थ-भण्डारों में छिपी देश की अमूल्य सम्पदा को विश्व के सामने प्रकट कर सकेगा। प्राकृत के एक कवि का यह कथन प्राकृत भाषा के महत्त्व को प्रकट कर देता है-

पर-उवयार-परेणं सा भासा होई एत्थ भणियव्वा।
जायइ जाए विबोहो सव्वाण वि बालमाइणं॥

[परोपकार में तत्पर लोगों के द्वारा इस (संसार) में वह भाषा पढ़ने योग्य होती है, जिसके द्वारा सभी (विद्वानों) के लिए एवं अल्पबुद्धि वालों के लिए भी ज्ञान प्राप्त होता है।]

❑❑

२. प्राकृत के प्रमुख वैयाकरण :

सभी प्राकृत व्याकरण ग्रंथ संस्कृत में लिखे प्राप्त होते हैं। प्राकृत वैयाकरणों एवं उनके ग्रन्थों का परिचय डॉ० पिशल ने अपने ग्रंथ में दिया है। डौल्ची नित्ति ने अपनी जर्मन पुस्तक **ले ग्रामेरिया प्राकृत** (प्राकृत के वैयाकरण) में आलोचनात्मक शैली में प्राकृत के वैयाकरणों पर विचार किया है।[१]

इधर प्राकृत व्याकरण के बहुत से ग्रंथ छपकर प्रकाश में भी आये हैं। उनके सम्पादकों ने भी प्राकृत वैयाकरणों पर कुछ प्रकाश डाला है। इस सब सामग्री के आधार पर प्राकृत वैयाकरणों एवं उनके उपलब्ध प्राकृत व्याकरणों का परिचयात्मक मूल्यांकन हमने अन्यत्र किया है।[२] उसकी संक्षिप्त जानकारी यहाँ प्रस्तुत है।

(१) आचार्य भरत :

प्राकृत भाषा के सम्बन्ध में जिन संस्कृत आचार्यों ने अपने मत प्रकट किये हैं, इनमें भरत सर्व प्रथम हैं। प्राकृत वैयाकरण मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-सर्वस्व के प्रारम्भ में अन्य प्राचीन प्राकृत वैयाकरणों के साथ भरत को स्मरण किया है। भरत का कोई अलग प्राकृत व्याकरण नहीं मिलता है। भरतनाट्यशास्त्र के १७वें अध्याय में ६ से २३ श्लोकों में प्राकृत व्याकरण पर कुछ कहा गया है। इसके अतिरिक्त ३२वें अध्याय में प्राकृत के बहुत से उदाहरण उपलब्ध हैं, किन्तु स्रोतों का पता नहीं चलता है।

डॉ० पी० एल० वैद्य ने त्रिविक्रम के प्राकृतशब्दानुशासन व्याकरण के १७वें परिशिष्ट में भरत के श्लोकों को संशोधित रूप में प्रकाशित किया है, जिनमें प्राकृत के कुछ नियम वर्णित हैं। डॉ० वैद्य ने उन नियमों को भी स्पष्ट

---

१. द्रष्टव्य; ई० बी० कावेल का मूल लेख तथा उसका अनुवाद - ''प्राकृत व्याकरण'' संक्षिप्त परिचय, भारतीय साहित्य, १० अंक ३-४, जुलाई - अक्टूबर १९६५

२. जैन संस्कृत - प्राकृत व्याकरण और कोश की परम्परा, छापर (राज.), १९७७

किया है। भरत ने कहा है कि प्राकृत में कौन से स्वर एवं कितने व्यंजन नहीं पाये जाते। कुछ व्यंजनों का लोप होकर उनके केवल स्वर बचते हैं। यथा -

वच्चंति कगतदयवा लोपं, अत्थं च से वहंति सरा।
खघथधमा उण हत्तं उवेंति उत्थं अमुंचंता।।८।।

प्राकृत की सामान्य प्रवृत्ति को भरत ने अंकित किया है कि शकार का सकार एवं नकार सर्वत्र णकार होता है। यथा - विष > विस, शंका > संका आदि। इसी तरह ट ड, ठ ढ प व, ड ल, च य, थ ध, प फ, आदि परिवर्तनों के सम्बन्ध में संकेत करते हुए भरत ने उनके उदाहरण भी दिये हैं तथा श्लोक १८ से २४ तक में उन्होंने संयुक्त वर्णों के परिवर्तनों को सोदाहरण सूचित किया है और अन्त में कह दिया है कि प्राकृत के ये कुछ सामान्य लक्षण मैंने कहे हैं। बाकी देशी भाषा में प्रसिद्ध ही हैं, जिन्हें विद्वानों को प्रयोग द्वारा जानना चाहिए -

एवमेतन्मया प्रोक्तं किंचित्प्राकृतलक्षणम्।
शेषं देशीप्रसिद्धं च ज्ञेयं विप्राः प्रयोगतः।।

प्राकृत व्याकरण सम्बन्धी भरत का यह शब्दानुशासन यद्यपि संक्षिप्त है, किन्तु महत्त्वपूर्ण इस दृष्टि से है कि भरत के समय में भी प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता अनुभव की गयी थी। हो सकता है, उस समय प्राकृत का कोई प्रसिद्ध व्याकरण रहा हो, अतः भरत ने केवल सामान्य नियमों का ही संकेत करना आवश्यक समझा है। भरत के ये व्याकरण के नियम प्रमुख रूप से शौरसेनी प्राकृत के लक्षणों का विधान करते हैं।

(२) चण्ड-प्राकृतलक्षण :

प्राकृत के उपलब्ध व्याकरणों में चंडकृत प्राकृतलक्षण सर्व प्राचीन सिद्ध होता है। भूमिका आदि के साथ डॉ० रुडोल्फ होएर्नले ने सन् १८८० में बिब्लिओथिका इंडिका में कलकत्ता से इसे प्रकाशित किया था।[१] सन् १९२९ में सत्यविजय जैन ग्रंथमाला की ओर से यह अहमदाबाद से भी प्रकाशित हुआ था। इसके पहले १९२३ में भी देवकीकान्त ने इसको कलकत्ता से प्रकाशित

१. द्रष्टव्य; ''द प्राकृतलक्षणम् एण्ड चंडाज् ग्रैमर आफ द एण्शिएन्ट प्राकृत''

किया था। ग्रंथ के प्रारम्भ में वीर (महावीर) को नमस्कार किया गया है तथा वृत्ति के उदाहरणों में अर्हन्त (सू. ४६ व २४) एवं जिनवर (सूत्र ४८) का उल्लेख है। इससे वह जैन कृति सिद्ध होती है। ग्रंथकार ने वृद्धमत के आधार पर इस ग्रंथ के निर्माण की सूचना दी है, जिसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि चण्ड के सम्मुख कोई प्राकृत व्याकरण अथवा व्याकरणात्मक मतमतान्तर थे। यद्यपि इस ग्रंथ में रचना काल सम्बन्धी कोई संकेत नहीं है, तथापि अन्त:साक्ष्य के आधार पर डॉ० हीरालाल जैन ने इसे ईसा की दूसरी-तीसरी शताब्दी की रचना स्वीकार किया है।[१]

प्राकृतलक्षण में चार पाद पाये जाते हैं। ग्रंथ के प्रारम्भ में चंड ने प्राकृत शब्दों के तीन रूपों - तद्भव, तत्सम एवं देश्य - को सूचित किया है तथा संस्कृतवत् तीनों लिंगों और विभक्तियों का विधान किया है। तदनन्तर चौथे सूत्र में व्यत्यय का निर्देश करके प्रथमपद के ५वें सूत्र से ३५ सूत्रों में स्वर-परिवर्तन, शब्दादेश और अव्ययों का विधान है। तीसरे पाद के ३५ सूत्रों में व्यंजनों के परिवर्तनों का विधान है। प्रथम वर्ण के स्थान पर तृतीय का आदेश किया गया है यथा -

एकं > एगं,   पिशाची > विसाजी,   कृतं > कदं आदि।

इन तीनों पादों में कुल ९९ सूत्र हैं, जिनमें प्राकृत व्याकरण समाप्त किया गया है। होएर्नले ने इतने भाग को ही प्रामाणिक माना है। किन्तु इस ग्रंथ की अन्य चार प्रतियों में चतुर्थ पाद भी मिलता है, जिसमें केवल ४ सूत्र हैं। इनमें क्रमश: कहा गया है - १. अपभ्रंश में अधोरेफ का लोप नहीं होता, २. पैशाची में र् और स् के स्थान पर ल् और न् का आदेश होता है, ३. मागधी में र् और स् के स्थान पर ल् और श् का आदेश होता है तथा ४. शौरसेनी में त् के स्थान पर विकल्प से द् आदेश होता है। इस तरह ग्रंथ के विस्तार रचना और भाषा स्वरूप की दृष्टि से चंड का यह व्याकरण प्राचीनतम सिद्ध होता है। परवर्ती प्राकृत वैयाकरणों पर इसके प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं। हेमचंद्र ने भी चंड से बहुत कुछ ग्रहण किया है।

---

१. जैन, भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान, पृ० १८२।

(३) वररुचि-प्राकृतप्रकाश :

प्राकृत वैयाकरणों में चण्ड के बाद वररुचि प्रमुख वैयाकरण है। प्राकृतप्रकाश में वर्णित अनुशासन पर्याप्त प्राचीन है। अत: विद्वानों ने वररुचि को ईसा की चौथी शताब्दी के लगभग का विद्वान् माना है। विक्रमादित्य के नवरत्नों में भी एक वररुचि थे। वे सम्भवत: प्राकृतप्रकाश के ही लेखक थे। छठी शताब्दी से तो प्राकृतप्रकाश पर अन्य विद्वानों ने टीकाएँ लिखना प्रारम्भ कर दी थीं। अत: वररुचि ने ४-५वीं शताब्दी में अपना यह व्याकरण ग्रंथ लिखा होगा। प्राकृतप्रकाश विषय और शैली की दृष्टि से प्राकृत का महत्त्वपूर्ण व्याकरण है। प्राचीन प्राकृतों के अनुशासन की दृष्टि से इसमें अनेक तथ्य उपलब्ध होते हैं।

प्राकृतप्रकाश में कुल बारह परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद के ४४ सूत्रों में स्वरविकार एवं स्वरपरिवर्तनों का निरूपण है। दूसरे परिच्छेद के ४७ सूत्रों में मध्यवर्ती व्यंजनों के लोप का विधान है तथा इसमें यह भी बताया गया है कि शब्दों के असंयुक्त व्यंजनों के स्थान पर विशेष व्यंजनों का आदेश होता है। यथा - (१) प के स्थान पर व - शाप > सावो; (२) न के स्थान पर ण - वचन > वअण; (३) श, ष, के स्थान पर, स - शब्द > सद्दो, वृषभ > वसहो आदि। तीसरे परिच्छेद के ६६ सूत्रों में संयुक्त व्यंजनों के लोप, विकास एवं परिवर्तनों का अनुशासन है। अनुकारी, विकारी और देशज इन तीन प्रकार के शब्दों का नियमन चौथे परिच्छेद के ३३ सूत्रों में हुआ है। यथा १२वें सूत्र **मोविन्दु:** में कहा गया है कि अंतिम हलन्तर म् को अनुस्वार होता है - वृक्षम् > वच्छं, भद्रम् > भद्दं आदि।

पाँचवें परिच्छेद के ४७ सूत्रों में लिंग और विभक्ति का अनुशासन दिया गया है। सर्वनाम शब्दों के रूप और उनके विभक्ति प्रत्यय छठे परिच्छेद के ६४ सूत्रों में वर्णित हैं। आगे सप्तम परिच्छेद में तिङन्तविधि तथा अष्टम में धात्वादेश का वर्णन है। प्राकृत का धात्वादेश सम्बन्धी प्रकरण तुलनात्मक दृष्टि से विशेष महत्त्व का है। नवम परिच्छेद में अव्ययों के अर्थ एवं प्रयोग दिये गये हैं। यथा - **णवर: केवले॥७॥** - केवल अथवा एकमात्र के अर्थ में णवर शब्द का प्रयोग होता है। उदाहरणार्थ - **एसो णवर कन्दप्पो, एसा णवर सा रई।** इत्यादि।

यहाँ तक वररुचि ने सामान्य प्राकृत का अनुशासन किया है। इसके अनन्तर दसवें परिच्छेद के १४ सूत्रों में पैशाची भाषा का विधान है। १७ सूत्र वाले ग्यारहवें परिच्छेद में मागधी प्राकृत का तथा बारहवें परिच्छेद के ३२ सूत्रों में शौरसेनी प्राकृत का अनुशासन है। प्राकृत व्याकरण के गहन अध्ययन के लिए वररुचिकृत प्राकृतप्रकाश एवं उसकी टीकाओं का अध्ययन नितान्त अपेक्षित है। महाराष्ट्री से साथ मागधी, पैशाची एवं शौरसेनी का इसमें विशेष विवेचन किया गया है।

प्राकृतप्रकाश की इस विषयवस्तु से स्पष्ट है कि वररुचि ने विस्तार से प्राकृत भाषा के रूपों को अनुशासित किया है। चंड के प्राकृतलक्षण का प्रभाव वररुचि पर होते हुए भी कई बातों में उनमें नवीनता और मौलिकता है।

(४) सिद्धहैमशब्दानुशासन :

प्राकृत व्याकरणशास्त्र को पूर्णता आचार्य हेमचंद्र के सिद्धहैमशब्दानुशासन से प्राप्त हुई है। प्राकृत वैयाकरणों की पूर्वी और पश्चिमी दो शाखाएँ विकसित हुई हैं। पश्चिमी शाखा के प्रतिनिधि प्राकृत वैयाकरण हेमचंद्र हैं (सन् १०८८ से ११७२)। इन्होंने विभिन्न विषयों पर अनेक ग्रंथ लिखे हैं। इनकी विद्वत्ता की छाप इनके इस व्याकरण ग्रंथ पर भी है। इस व्याकरण का अनेक स्थानों से प्रकाशन हुआ है। हेमचंद्र के इस व्याकरण ग्रंथ में आठ अध्याय हैं। प्रथम सात अध्यायों में उन्होंने संस्कृत व्याकरण का अनुशासन किया है, जिसकी संस्कृत व्याकरण के क्षेत्र में अलग महत्ता है। आठवें अध्याय में प्राकृत व्याकरण का निरूपण है। उसकी संक्षिप्त विषयवस्तु द्रष्टव्य है।

आठवें अध्याय के प्रथम पाद में २७१ सूत्र हैं। इनमें संधि, व्यजनान्त शब्द, अनुस्वार, लिंग, विसर्ग, स्वर-व्यत्यय और व्यंजन-व्यत्यय का विवेचन किया गया है। इस पाद का प्रथम सूत्र **अथ प्राकृतम्** प्राकृत शब्द को स्पष्ट करते हुए यह सूचित करता है कि प्राकृत व्याकरण संस्कृत के आधार पर भी सीखी जा सकती है। द्वितीय सूत्र **बहुलम्** द्वारा हेमचंद्र ने न केवल साहित्यिक प्राकृतों को, अपितु व्यवहार की प्राकृत के रूपों को ध्यान में रखकर भी अपना व्याकरण लिखा है। इस पद के तीसरे सूत्र **आर्षम्** ८।१ ।३ द्वारा ग्रंथकार ने आर्षप्राकृत और प्राकृत में भेद स्पष्ट किया है।

इसके आगे के सूत्र स्वर आदि का अनुशासन करते हैं। जिस बात को प्राचीन वैयाकरण चंड, वररुचि आदि ने संक्षेप में कह दिया था, हेमचंद्र ने उसे न केवल विस्तार से कहा है, अपितु अनेक नये उदाहरण भी दिये हैं। इस तरह प्राकृत भाषा के विभिन्न स्वरूपों का सांगोपांग अनुशासन हेमव्याकरण में हो सका है।[१]

द्वितीय पाद के २१८ सूत्रों में संयुक्त व्यंजनों के परिवर्तन, समीकरण, स्वर भक्ति, वर्णविपर्यय, शब्दादेश, तद्धित, निपात और अव्ययों का निरूपण है। यह प्रकरण आधुनिक भाषाविज्ञान की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। हेमचंद्र ने संस्कृत के कई द्व्यर्थ वाले शब्दों को प्राकृत में अलग-अलग दिया है, ताकि भ्रान्तियाँ न हों। संस्कृत के क्षण शब्द का अर्थ समय भी है और उत्सव भी। हेमचन्द्र ने उत्सव अर्थ में छणो (क्षण:) और समय अर्थ में खणो (क्षण:) रूप निर्दिष्ट किये हैं। इसी तरह हेम ने अव्ययों की भी विस्तृत सूची इस पाद में दी है।

तृतीय पाद में १८२ सूत्र हैं, जिनमें कारक, विभक्तियों, क्रियारचना आदि सम्बन्धी नियमों का कथन किया गया है। शब्दरूप, क्रियारूप और कृत प्रत्ययों का वर्णन विशेष रूप से ध्यातव्य है। वैसे प्राकृतप्रकाश के समान ही इसका विवेचन हेम ने किया है, कारक व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश डाला है। हेमप्राकृत व्याकरण का चतुर्थ पाद विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसके ४४७ सूत्रों में शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची और अपभ्रंश प्राकृतों का शब्दानुशासन ग्रन्थकार ने किया है। इस पाद में धात्वादेश की प्रमुखता है। संस्कृत धातुओं पर देशी अपभ्रंश धातुओं का आदेश किया है। यथा-संस्कृत कथ्, प्राकृत-कह धातु को बोल्ल, चव, जंप आदि आदेश।

मागधी, शौरसेनी एवं पैशाची का अनुशासन तो प्राचीन वैयाकरणों ने भी संक्षेप में किया था। हेम ने इनको विस्तार से समझाया है। किन्तु इसके साथ ही चूलिका पैशाची की विशेषताएँ भी स्पष्ट की हैं। इस पाद के ३२९ सूत्र से ४४८ सूत्र तक उन्होंने अपभ्रंश व्याकरण पर पहली बार प्रकाश डाला है। उदाहरणों के लिए जो अपभ्रंश के दोहे दिये हैं, वे अपभ्रंश साहित्य की

---

१. भायाणी, ''प्राकृतव्याकरणकारों (गुजराती), भारतीयविद्या, जुलाई ९४३, पृ० ४०१-१६''

अमूल्यनिधि हैं। आचार्य हेम के समय तक प्राकृत भाषा का बहुत अधिक विकास हो गया था। इस भाषा का विशाल साहित्य भी था। अपभ्रंश के भी विभिन्न रूप प्रचलित थे। अत: हेमचंद्र ने प्राचीन वैयाकरणों के ग्रन्थों का उपयोग करते हुए भी अपने व्याकरण में बहुत-सी बातें नयी और विशिष्ट शैली में प्रस्तुत की हैं।

आचार्य हेमचंद्र ने अपने प्राकृतव्याकरण पर ''तत्त्वप्रकाशिका'' नामक सुबोध-वृत्ति (बृहत्वृत्ति) भी लिखी है। मूलगंथ को समझने के लिए यह वृत्ति बहुत उपयोगी है। इसमें अनेक ग्रंथों से उदाहरण दिये गये हैं। एक लघुवृत्ति भी हेमचंद्र ने लिखी है, जिसको ''प्रकाशिका'' भी कहा गया है। यह सं. १९२९ में बम्बई से प्रकाशित हुई है। हेमप्राकृतव्याकरण पर अन्य विद्वानों द्वारा भी टीकाएँ लिखी गई हैं।

(५) पुरुषोत्तम-प्राकृतानुशासन :

हेमचंद्र के समकालीन एक और प्राकृत वैयाकरण हुए हैं पुरुषोत्तम। ये बंगाल क निवासी थे। अत: इन्होंने प्राकृत व्याकरणशास्त्र की पूर्वीय शाखा का प्रतिनिधित्व किया है। पुरुषोतम १२ वीं शताब्दी के वैयाकरण हैं। उन्होंने प्राकृतानुशासन नाम का प्राकृत व्याकरण लिखा है। यह ग्रंथ १९३८ में पेरिस से प्रकाशित हुआ है। एल० नित्ती डौल्ची ने महत्त्वपूर्ण फ्रैन्च भूमिका के साथ इसका सम्पादन किया है। १९५४ में डॉ० मनमोहन घोष ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ मूल प्राकृतानुशासन को ''प्राकृतकल्पतरु'' के साथ (पृ० १५६-१६९) परिशिष्ट १ में प्रकाशित किया है।

प्राकृतानुशासन में तीन से लेकर बीस अध्याय हैं। तीसरा अध्याय अपूर्ण है। प्रारम्भिक अध्यायों में सामान्य प्राकृत का निरूपण है। नौवें अध्याय में शौरसेनी तथा दसवें में प्राच्या भाषा के नियम दिये हैं। प्राच्या को लोकोक्ति-बहुल बताया गया है। ग्याहरवें अध्याय में अवन्ती और बारहवें में मागधी प्राकृत का विवेचन है। इसकी विभाषाओं में शाकारी, चांडाली, शाबरी और टक्कदेशी का अनुशासन किया गया है। उससे पता चलता है कि शाकारी में ''क'' और टक्की में उद् की बहुलता पाई जाती है। इसके बाद अपभ्रंश में नागर, ब्राचड, उपनागर आदि का नियमन है। अन्त में कैकय, पैशाचिक और शौरसेनी पैशाचिक भाषा के लक्षण कहे गये हैं।

(६) त्रिविक्रम-प्राकृतशब्दानुशासन :

त्रिविक्रम १३वीं शताब्दी के वैयाकरण थे। उन्होंने जैन शास्त्रों का अध्ययन किया था तथा वे कवि भी थे। यद्यपि उनका कोई काव्यग्रंथ अभी उपलब्ध नहीं है। त्रिविक्रम ने ''प्राकृतशब्दानुशासन'' में प्राकृत सूत्रों का निर्माण किया है तथा उनकी वृत्ति भी लिखी है -

प्राकृत पदार्थसार्थप्राप्त्यै निजसूत्रमार्गमनुजिगमिषताम्।
वृत्तिर्यथार्थ सिद्ध्यै त्रिविक्रमेणागमक्रमात्क्रियते॥

इन दोनों का विद्वत्तापूर्ण सम्पादन व प्रकाशन डॉ० पी०एल० वैद्य ने सोलापुर से १९५४ में किया है। यद्यपि इससे पूर्व भी मूलग्रंथ का कुछ अंश १८९६ एवं १९१२ में प्रकाशित हुआ था किन्तु यह ग्रंथ को पूरी तरह प्रकाश में नहीं लाता था।[१] अत: वैद्य ने कई पाण्डुलिपियों के आधार पर ग्रंथ का वैज्ञानिक संस्करण प्रकाशित किया है। इसके पूर्व वि० सं० २००७ में जगन्नाथ-शास्त्री होशिंग ने भी मूलग्रंथ और स्वोपज्ञवृत्ति को प्रकाशित किया था। इसमें भूमिका संक्षिप्त है, किन्तु परिशिष्ट में अच्छी सामग्री दी गई है।

प्राकृतशब्दानुशासन में कुल तीन अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में ४-४ पाद हैं। पूरे ग्रंथ में कुल १०३६ सूत्र हैं। यद्यपि त्रिविक्रम ने इस ग्रंथ के निर्माण में हेमचंद्र का ही अनुकरण किया है, किन्तु कई बातों में नयी उद्भावनाएँ भी हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय अध्याय के प्रथम पाद में प्राकृत का विवेचन है। तीसरे अध्याय के दूसरे पाद में शौरसेनी (१-२६), मागधी (२७-४२), पैशाची (४३-६३) तथा चूलिका पैशाची (६४-६७) का अनुशासन किया गया है। ग्रंथ के इस तीसरे अध्याय के तृतीय और चतुर्थ पादों में अपभ्रंश का विवेचन है।

त्रिविक्रम ने अपने प्राकृत व्याकरण में ह, दि, स और ग आदि नयी संज्ञाओं का निरूपण किया है। तथा हेमचंद्र की अपेक्षा देशी शब्दों का संकलन अधिक किया है। हेमचंद्र ने एक ही सूत्र में देशी शब्दों की बात कही थी, क्योंकि उन्होंने ''देशीनाममाला'' अलग से लिखी है। जबकि त्रिविक्रम ने ४

---

१. प्राकृत ग्रामर आफ त्रिविक्रम, सोलापुर १९५४

सूत्रों में देशी शब्दों का नियमन किया है। प्राकृतशब्दानुशासन में अनेकार्थ शब्द भी दिये गये हैं। यह प्रकरण हेम की अपेक्षा विशिष्ट है।

प्राकृतशब्दानुशासन पर टीकाएँ :

त्रिविक्रम के इस ग्रंथ पर स्वयं लेखक की वृत्ति के अतिरिक्त अन्य दो टीकाएँ भी लिखी गई हैं। लक्ष्मीधर की ''षड्भाषाचंद्रिका'' एवं सिंहराज का ''प्राकृतरूपावतार'' त्रिविक्रम के ग्रंथ को सुबोध बनाते हैं।

(१) षड्भाषाचंद्रिका :

लक्ष्मीधर ने अपनी व्याख्या लिखते हुए कहा है कि त्रिविक्रम के ग्रन्थ को सरल करने के लिए यह व्याख्या लिख रहा हूँ। जो विद्वान् मूलग्रंथ की गूढ़ वृत्ति को समझना चाहते हैं वे उनकी व्याख्यारूप ''षड्भाषाचंद्रिका'' को देखें -

वृतिं त्रैविक्रमीगूढ़ां व्याचिख्या सन्ति ये बुधा:।
षड्भाषाचंद्रिका तैस्तद् व्याख्यारूपा विलोक्यताम्॥

वस्तुत: लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रम के ग्रंथ को सिद्धान्त कौमुदी के ढंग से तैयार किया है तथा उदाहरण प्राकृत के अन्य काव्यों से दिये हैं। प्रस्तुत ग्रंथ में प्राकृत महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची और अपभ्रंश इन छह भाषाओं का विस्तार पूर्वक विवेचन किया है। आगे चलकर इन छह भाषाओं के विवेचन के लिए अन्य कई ग्रंथ भी लिखे गये हैं। उनमें भामकवि- ''षड्भाषा-चंद्रिका'', दुर्गाणाचार्य - ''षड्भाषारूपमालिका'' तथा ''षड्भाषामंजरी'', ''षड्भाषासुवन्तादर्श'', ''षड्भाषाविचार'' आदि प्रमुख हैं।

(२) प्राकृतरूपावतार :

सिंहराज (१५वीं शताब्दी) ने त्रिविक्रम प्राकृत व्याकरण को कौमुदी के ढंग से ''प्राकृतरूपावतार'' में तैयार किया है। इसमें संक्षेप में संज्ञा, संधि समास, धातुरूप, तद्धित आदि का विवेचन किया गया है।[१] संज्ञा और क्रियापदों की रूपावली के ज्ञान के लिए ''प्राकृतरूपावतार'' कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

---

१. हुल्श द्वारा सम्पादित, प्रका० रॉयल एशियाटिक सोसायटी, सन् १९०९।

कहीं-कहीं सिंहराज ने हेम और त्रिविक्रम से भी अधिक रूप दिये है। रूप गढ़ने में उनकी मौलिकता और सरसता है।

(७) क्रमदीश्वर-संक्षिप्तसार :

हेमचंद्र के बाद के वैयाकरणों में क्रमदीश्वर का प्रमुख स्थान है। उन्होंने ''संक्षिप्तसार'' नामक अपने व्याकरण ग्रंथ को आठ भागों में विभक्त किया है। प्रथम सात अध्यायों में संस्कृत एवं आठवें अध्याय ''प्राकृतपाद'' में प्राकृत व्याकरण का अनुशासन किया गया है। ग्रन्थ के इस स्वरूप में ही क्रमदीश्वर हेमचंद्र का अनुकरण करता है। अन्यथा प्रस्तुतीकरण और सामग्री की दृष्टि से उनमें पर्याप्त भिन्नता है। वस्तुत: वररुचि के ''प्राकृप्रकाश और संक्षिप्तसार'' में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध दिखायी देता है। किन्तु कई स्थलों पर क्रमदीश्वर ने अन्य लेखकों की सामग्री का भी उपयोग किया है। लास्सन ने क्रमदीश्वर के इस ग्रंथ पर अच्छा प्रकाश डाला है। ''प्राकृतपाद'' का सम्पूर्ण संस्करण राजेन्द्रलाल मिश्र ने प्रकाशित कराया था तथा १८८९ में कलकत्ता से इसका एक नया संस्करण भी प्रकाशित हुआ था।

(८) मार्कण्डेय-प्राकृतसर्वस्व :

प्राकृत व्याकरणशास्त्र का ''प्राकृतसर्वस्व'' एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके ग्रंथकार मार्कण्डेय प्राच्य शाखा के प्रसिद्ध प्राकृत वैयाकरण थे। १९६८ में प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी अहमदाबाद से प्रकाशित संस्करण में मार्कण्डेय की तिथि १४९०-१५६५ ई० स्वीकार की गयी तथा ग्रंथकार और उनकी कृतियों के सम्बन्ध में विस्तार से विचार किया गया है।[१]

मार्कण्डेय ने प्राकृत भाषा के चार भेद किये हैं - भाषा, विभाषा, अपभ्रंश और पैशाची। भाषा के पाँच भेद हैं - महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, अवन्ती और मागधी। विभाषा के शकारी, चाण्डाली, शबरी, अभीरी और ढक्की ये पाँच भेद हैं। अपभ्रंश के तीन भेद हैं - नागर, ब्राचड और उपनागर तथा पैशाची के कैकई, पांचाली आदि भेद हैं। इन्हीं भेदोपभेदों के कारण डॉ० पिशेल ने कहा है कि महाराष्ट्री, जैन महाराष्ट्री, अर्धमागधी और जैन शौरसेनी के

---

१. द्रष्टव्य, आचार्य के० सी० ''प्राकृतसर्वस्व'' भूमिका।

अतिरिक्त अन्य प्राकृत बोलियों के नियमों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मार्कण्डेय कवीन्द्र का प्राकृतसर्वस्व बहुत मूल्यवान है।

प्राकृतसर्वस्व के प्रारम्भ आठ पदों में महाराष्ट्री प्राकृत के नियम बतलाये गये हैं। इनमें प्राय: वररुचि का अनुसरण किया गया है। नौवें पाद में शौरसेनी और दसवें पाद में प्राच्या का नियमन है। विदूषक आदि हास्य पात्रों की भाषा को प्राच्या कहा गया है। ग्यारहवें पाद में अवन्ती वाल्हीकी का वर्णन है। बारहवें में मागधी के नियम बताये गये हैं। अर्धमागधी का उल्लेख इसी पाद में आया है। इस प्रकार ६ से १२ पादों को भाषा-विवेचन का खण्ड कहा जा सकता है। १३वें से १६वें पाद तक विभाषा का अनुशासन किया गया है। शकारी, चाण्डाली, शाबरी आदि विभाषाओं के नियम एवं उदाहरण यहाँ दिये गये हैं। एक सूत्र में ओड्री (उडिया) विभाषा का कथन है तथा एक-एक में आभीरी का। ग्रंथ के १७वें-१८वें पाद में अपभ्रंश भाषा का तथा १९वें और २०वें पाद में पैशाची भाषा का नियमन हुआ है। अपभ्रंश के उदाहरण स्वरूप कुछ दोहे भी दिये गये हैं। इस तरह मार्कण्डेय ने अपने समय तक विकसित प्राय: सभी लोक भाषाओं को, जिनका प्राकृत से घनिष्ठ सम्बन्ध था, अपने व्याकरण में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया है।

मार्कण्डेय ने प्राचीन वैयाकरणों के सम्बन्ध में भी कई तथ्य प्रस्तुत किये हैं। इनमें से शाकल्य एवं कौहल निश्चित रूप से प्राकृत के प्राचीन वैयाकरण रहे होंगे, जिनके प्राकृत सम्बन्धी नियमन से प्राकृत व्याकरण शास्त्र समय-समय पर प्रभावित होता रहा है। यद्यपि अभी तक इनके मूल ग्रंथों का पता नहीं चला है। इस तरह मार्कण्डेय का ''प्राकृतसर्वस्व'' कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। पश्चिमीय प्राकृत भाषाओं की प्रवृत्तियों के अनुशासन के लिए जहाँ हेमचंद्र का प्राकृत व्याकरण प्रतिनिधि ग्रंथ के रूप में प्रसिद्ध है, वहाँ पूर्वीय प्राकृत वैयाकरणों का प्रतिनिधित्व मार्कण्डेय करते हैं। पूर्वीय प्राकृत वैयाकरणों के सम्बन्ध में डॉ० सत्यरंजन बनर्जी ने अपनी पुस्तक में पर्याप्त प्रकाश डाला है।[१]

प्राकृत व्याकरण-शास्त्र के इतिहास में लगभग २-३री शताब्दी से १५-

---

१. बनर्जी, एस०आर० ''द ईस्टर्न स्कूल आफ प्राकृत ग्रेममिरियन्स'', कलकत्ता, १९६४

१६वीं शताब्दी तक में हुए इन प्रमुख प्राकृत वैयाकरणों के ग्रंथों से स्पष्ट है कि प्राकृत भाषा के विभिन्न पक्षों पर विधिवत् प्रकाश डाला गया है। प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से १६वीं से २०वीं शताब्दी तक अनेक प्राकृत के व्याकरण ग्रन्थ लिखे गये हैं। इन्हें दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। (१) १६वीं से १८वीं शताब्दी तक के परम्परागत प्राकृत व्याकरण तथा (२) १९वीं-२०वीं शताब्दी के आधुनिक सम्पादन से युक्त प्राकृत-व्याकरण। इनका परिचय विद्वानों ने प्रस्तुत किया है।[१]

□□

१. जैन भागचन्द्र "आधुनिक युग के प्राकृत व्याकरणशास्त्र का अध्ययन - अनुसंधान" नामक लेख।

प्राकृत स्वयं-शिक्षक

3. सर्वनाम :

पाठ (१)

उदाहरण वाक्य : **अहं** = मैं

अहं नमामि	= मैं नमन करता हूँ।	अहं पढामि	= मैं पढ़ता/पढ़ती हूँ।
अहं जाणामि	= मैं जानता/जानती हूँ।	अहं चिंतामि	= मैं चिंतन करता हूँ।
अहं इच्छामि	= मैं इच्छा करता हूँ।	अहं सुणामि	= मैं सुनता/सुनती हूँ।
अहं पासामि	= मैं देखता/देखती हूँ।	अहं भुंजामि	= मैं भोजन करता हूँ।
अहं पिबामि	= मैं पीता/पीती हूँ।	अहं चलामि	= मैं चलता/चलती हूँ।
अहं गच्छामि	= मैं जाता/जाती हूँ।	अहं भमामि	= मैं घूमता/घूमतो हूँ।
अहं धावामि	= मैं दौड़ता/दौड़ती हूँ।	अहं णच्चामि	= मैं नाचता/नाचती हूँ।
अहं खेलामि	= मैं खेलता/खेलती हूँ।	अहं जयामि	= मैं जीतता/जीतती हूँ।
अहं हसामि	= मैं हँसता/हँसती हूँ।	अहं सेवामि	= मैं सेवा करता हूँ।
अहं सयामि	= मैं सोता/सोती हूँ।	अहं लिहामि	= मैं लिखता/लिखती हूँ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं दौड़ता हूँ। मैं जानती हूँ। मैं नमन करता हूँ। मैं सुनती हूँ।
मैं पीता हूँ। मैं घूमता हूँ। मैं हँसती हूँ। मैं इच्छा करता हूँ।
मैं नाचता हूँ। मैं जीतता हूँ।

प्रयोग वाक्य :

अत्थ	= यहाँ	अहं अत्थ पढामि	= मैं यहाँ पढ़ता/पढ़ती हूँ।
तत्थ	= वहाँ	अहं तत्थ खेलामि	= मैं वहाँ खेलता/खेलती हूँ।
सइ	= एक बार	अहं सइ भुंजामि	= मैं एक बार भोजन करता हूँ।
मुहु	= बार-बार	अहं मुहु चिंतामि	= मैं बार-बार चिंतन करता हूँ।
सया	= सदा	अहं सया सेवामि	= मैं सदा सेवा करती हूँ।
दाणिं	= इस समय	अहं दाणिं सयामि	= मैं इस समय सोता/सोती हूँ।
सणिअं	= धीरे	अहं सणिअं चलामि	= मैं धीरे चलता/चलती हूँ।
झत्ति	= शीघ्र	अहं झति गच्छामि	= मैं शीघ्र जाता/जाती हूँ।
अग्गओ	= आगे	अहं अग्गओ पासामि	= मैं आगे देखता/देखती हूँ।
ण	= नहीं	अहं ण लिहामि	= मैं नहीं लिखता/लिखती हूँ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं एक बार पढ़ता हूँ। मैं वहाँ भोजन करती हूँ।
मैं इस समय खेलता हूँ। मैं यहाँ रहती हूँ। मैं आगे देखता हूँ।

पाठ २

उदाहरण वाक्य : **अम्हे** = हम/हभ दोनों/हम लोग

अम्हे नमामो	=	हम नमन करते हैं।
अम्हे जाणामो	=	हम जानते/जानती हूँ।
अम्हे इच्छामो	=	हम इच्छा करते हैं।
अम्हे पासामो	=	हम देखते/देखती हैं।
अम्हे पिबामो	=	हम पीते/पीती हैं।
अम्हे गच्छामो	=	हम जाते/जाती हैं।
अम्हे धावामो	=	हम दौड़ते/दौड़ती हैं।
अम्हे खेलामो	=	हम खेलते/खेलती हैं।
अम्हे हसामो	=	हम हँसते/हँसती हैं।
अम्हे सयामो	=	हम सोते/सोती हैं।
अम्हे पढामो	=	हम पढ़ते/पढ़ती हैं।
अम्हे चिंतामो	=	हम चिंतन करते हैं।
अम्हे सुणामो	=	हम सुनते/सुनती हैं।
अम्हे भुंजामो	=	हम भोजन करते हैं।
अम्हे चलामि	=	हम चलते/चलती हैं।
अम्हे भमामो	=	हम घूमते/घूमती हैं।
अम्हे णच्चामो	=	हम नाचते/नाचती हैं।
अम्हे जयामि	=	हम जीतते/जीतती हैं।
अम्हे सेवामो	=	हम सेवा करती हैं।
अम्हे लिहामो	=	हम लिखते/लिखती हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हम दौड़ते हैं। हम जानती हैं। हम नमन करते हैं। हम सुनती हैं।
हम पीते हैं। हम घूमती हैं। मैं हँसते हैं। हम इच्छा करते हैं।
हम नाचती हैं। हम नाचती हैं। हम जीतते हैं।

प्रयोग वाक्य :

अम्हे अत्थ पढामो	=	हम यहाँ पढ़ते/पढ़ती हैं।
अम्हे तत्थ खेलामो	=	हम वहाँ खेलते/खेलती हैं।
अम्हे सइ भुंजामो	=	हम एक बार भोजन करती हैं।
अम्हे मुहु चिंतामो	=	हम बार-बार चिंतन करते हैं।
अम्हे सया सेवामो	=	हम सदा सेवा करती हैं।
अम्हे दाणिं सयामो	=	हम इस समय सोते/सोती हैं।
अम्हे सणिअं चलामो	=	हम धीरे चलते/चलती हैं।
अम्हे झत्ति गच्छामो	=	हम शीघ्र जाते/जाती हैं।
अम्हे अग्गओ पासामो	=	हम आगे देखते/देखती हैं।
अम्हे ण लिहामो	=	हम नहीं लिखते/लिखती हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हम बार-बार चिंतन करती हैं। हम सदा सेवा करती हैं।
हम इस समय सोते हैं। हम धीरे चलते हैं। हम आगे देखते हैं।

पाठ ३

उदाहरण वाक्य : **तुमं** = तुम

तुमं नमसि	= तुम नमन करते हो।	तुमं पढसि	= तुम पढ़ते/पढ़ती हो।
तुमं जाणसि	= तुम जानते/जानती हो।	तुमं चिंतसि	= तुम चिंतन करते हो।
तुमं इच्छसि	= तुम इच्छा करते/करती हो।	तुमं सुणसि	= तुम सुनते/सुनती हो।
तुमं पाससि	= तुम देखते/देखती हो।	तुमं भुंजसि	= तुम भोजन करते हो।
तुमं पिबसि	= तुम पीते/पीती हो।	तुमं चलसि	= तुम चलते/चलती हो।
तुमं गच्छसि	= तुम जाते/जाती हो।	तुमं भमसि	= तुम घूमते/घूमती हो।
तुमं धावसि	= तुम दौड़ते/दौड़ती हो।	तुमं णच्चसि	= तुम नाचते/नाचती हो।
तुमं खेलसि	= तुम खेलते/खेलती हो।	तुमं जयसि	= तुम जीतते/जीतती हो।
तुमं हससि	= तुम हँसते/हँसती हो।	तुमं सेवसि	= तुम सेवा करती हो।
तुमं सयसि	= तुम सोते/सोती हो।	तुमं लिहसि	= तुम लिखते/लिखती हो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम दौड़ते हो। तुम जानती हो। तुम नमन करते हो। तुम सुनती हो।
तुम पीते हो। तुम घूमती हो। तुम हँसती हो। तुम इच्छा करते हो।
तुम नाचती हो। तुम जीतते हो।

प्रयोग वाक्य :

तुमं अत्थ पढसि	=	तुम यहाँ पढ़ते हो।
तुमं तत्थ खेलसि	=	तुम वहाँ खेलते हो।
तुमं सइ भुंजसि	=	तुम एक बार भोजन करते हो।
तुमं मुहु चिंतसि	=	तुम बार-बार चिंतन करते हो।
तुमं सया सेवसि	=	तुम सदा सेवा करती हो।
तुमं दाणिं सयसि	=	तुम इस समय सोते हो।
तुमं सणिअं चलसि	=	तुम धीरे चलती हो।
तुमं झत्ति गच्छसि	=	तुम शीघ्र जाते हो।
तुमं अग्गओ पाससि	=	तुम आगे देखते हो।
तुमं ण लिहसि	=	तुम नहीं लिखते हो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम एक बार पढ़ते हो। तुम वहाँ भोजन करती हो।
तुम इस समय खेलते हो। तुम यहाँ लिखते हो। तुम आगे देखते हो। ❑❑

पाठ ४

उदाहरण वाक्य : **तुमं** = तुम/तुम दोनों/तुम सब

तुम्हे नमित्था = तुम दोनों नमन करते हो।	तुम्हे पढित्था = तुम सब पढ़ते/पढ़ती हो।
तुम्हे जाणित्था = तुम सब जानते हो।	तुम्हे चिंतित्था = तुम दोनों चिंतन करते हो।
तुम्हे इच्छित्था = तुम सब इच्छा करते हो।	तुम्हे सुणित्था = तुम सब सुनते/सुनती हो।
तुम्हे पासित्था = तुम सब देखते हो।	तुम्हे भुंजित्था = तुम सब भोजन करते हो।
तुम्हे पिबित्था = तुम दोनों पीते हो।	तुम्हे चलित्था = तुम सब चलते/चलती हो।
तुम्हे गच्छित्था = तुम जाते/जाती हो।	तुम्हे भमित्था = तुम सब घूमते/घूमती हो।
तुम्हे धावित्था = तुम सब दौड़ते हो।	तुम्हे णच्चित्था = तुम सब नाचते/नाचती हो।
तुम्हे खेलित्था = तुम सब खेलती हो।	तुम्हे जयित्था = तुम सब जीतते/जीतती हो।
तुम्हे हसित्था = तुम सब हँसते हो।	तुम्हे सेवित्था = तुम सेवा करती हो।
तुम्हे सयित्था = तुम सोते/सोती हो।	तुम्हे लिहित्था = तुम सब लिखते हो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम सब दौड़ते हो। तुम सब जानती हो। तुम सब नमन करते हो।
तुम दोनों सुनती हो। तुम दोनों पीते हो। तुम सब घूमते हो। तुम सब हँसती हो।
तुम सब इच्छा करते हो। तुम सब नाचते हो। तुम सब जीतते हो।

प्रयोग वाक्य :

तुम्हे अत्थ पढित्था	=	तुम सब यहाँ पढ़ते हो।
तुम्हे तत्थ खेलित्था	=	तुम सब वहाँ खेलते हो।
तुम्हे सइ भुंजित्था	=	तुम दोनों एक बार भोजन करते हो।
तुम्हे मुहु चिंतित्था	=	तुम सब बार-बार चिंतन करते हो।
तुम्हे सया सेवित्था	=	तुम सब सदा सेवा करती हो।
तुम्हे दाणिं सेवित्था	=	तुम दोनों इस समय सोते हो।
तुम्हे सणिअं चलित्था	=	तुम सब धीरे चलती हो।
तुम्हे झत्ति गच्छित्था	=	तुम दोनों शीघ्र जाते हो।
तुम्हे अग्गओ पासित्था	=	तुम सब आगे देखते हो।
तुम्हे ण लिहित्था	=	तुम सब नहीं लिखते हो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम सब बार- बार चिंतन करती हो। तुम दोनों सदा सेवा करती हो।
तुम सब इस समय सोते हो। तुम दोनों धीरे चलते हो। तुम सब आगे देखते हो।

पाठ ५

उदाहरण वाक्य : **सो** = वह (पुल्लिंग)

सो नमइ	= वह नमन करता है।	सो पढइ	= वह पढ़ता है।
सो जाणइ	= वह जानता है।	सो चिंतइ	= वह चिंतन करता है।
सो इच्छइ	= वह इच्छा करता है।	सो सुणइ	= वह सुनता है।
सो पासइ	= वह देखता है।	सो भुंजइ	= वह भोजन करता है।
सो पिबइ	= वह पीता है।	सो चलइ	= वह चलता है।
सो गच्छइ	= वह जाता है।	सो भमइ	= वह घूमता है।
सो धावइ	= वह दौड़ता है।	सो णच्चइ	= वह नाचता है।
सो खेलइ	= वह खेलता है।	सो जयइ	= वह जीतता है।
सो हसइ	= वह हँसता है।	सो सेवइ	= वह सेवा करता है।
सो सयइ	= वह सोता है।	सो लिहइ	= वह लिखता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह दौड़ता है। वह जानता है। वह नमन करता है। वह सुनता है।
वह पीता है। वह घूमता है। वह हँसता है। वह इच्छा करता है।
वह नाचता है। वह जीतता है।

प्रयोग वाक्य :

सो अत्थ पढइ	=	वह यहाँ पढ़ता है।
सो तत्थ खेलइ	=	वह वहाँ खेलता है।
सो सइ भुंजइ	=	वह एक बार भोजन करता है।
सो मुहु चिंतइ	=	वह बार-बार चिंतन करता है।
सो सया सेवइ	=	वह सदा सेवा करती है।
सो दाणिं सयइ	=	वह इस समय सोता है।
सो सणिअं चलइ	=	वह धीरे चलता है।
सो झत्ति गच्छइ	=	वह शीघ्र जाता है।
सो अग्गओ पासइ	=	वह आगे देखता है।
सो ण लिहइ	=	वह नहीं लिखता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह एक बार पढ़ता है। वह वहाँ भोजन करता है।
वह इस समय खेलता है। वह यहाँ रहता है। वह आगे देखता है।

पाठ ६

उदाहरण वाक्य : **ते** = वे दोनों/वे सब (पुल्लिंग)

ते नमन्ति = वे दोनों/सब नमन करते है।	ते पढन्ति = वे दोनों/सब पढ़ते है।
ते जाणन्ति = वे जानते है।	ते चिंतन्ति = वे चिंतन करते हैं।
ते इच्छन्ति = वे इच्छा करते हैं।	ते सुणन्ति = वे सुनते हैं।
ते पासन्ति = वे सब देखते हैं।	ते भुंजन्ति = वे भोजन करते हैं।
ते पिबन्ति = वे दोनों पीते हैं।	ते चलन्ति = वे सब चलते हैं।
ते गच्छन्ति = वे जाते हैं।	ते भमन्ति = वे सब घूमते हैं।
ते धावन्ति = वे सब दौड़ते हैं।	ते णच्चन्ति = वे सब नाचते हैं।
ते खेलन्ति = वे दोनों खेलते हैं।	ते जयन्ति = वे दोनों जीतते हैं।
ते हसन्ति = वे सब हँसते हैं।	ते सेवन्ति = वे सेवा करते हैं।
ते सयन्ति = वे सब सोते हैं।	ते लिहन्ति = वे सब लिखते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वे सब दौड़ता हैं। वे सब जानते हैं। वे दोनें नमन करते हैं।
वे सब सुनते हैं। वे पीते हैं। वे सब घूमते हैं। वे दोनों हँसते हैं।
वे इच्छा करते हैं। वे सब जीतते हैं।

प्रयोग वाक्य :

ते अत्थ पढन्ति	=	वे सब यहाँ पढ़ते हैं।
ते तत्थ खेलन्ति	=	वे सब वहाँ खेलते हैं।
ते सइ भुंजन्ति	=	वे दोनों एक बार भोजन करते हैं।
ते मुहु चिंतन्ति	=	वे सब बार-बार चिंतन करते हैं।
ते सया सेवन्ति	=	वे सदा सेवा करते हैं।
ते दाणिं सयन्ति	=	वे सब इस समय सोते हैं।
ते सणिअं चलन्ति	=	वे दोनों धीरे चलते हैं।
ते झत्ति गच्छन्ति	=	वे सब शीघ्र जाते हैं।
ते अग्गओ पासन्ति	=	वे सब आगे देखते हैं।
ते ण लिहन्ति	=	वे दोनों नहीं लिखते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वे सब बार-बार चिंतन करते हैं। वे दोनों सदा सेवा करते हैं।
वे सब इस समय सोते हैं। वे दोनों धीरे चलते हैं। वे सब आगे देखते हैं।

पाठ ७

उदाहरण वाक्य : **सा** = वह (स्त्रीलिंग)

सा नमइ	=	वह नमन करती है।
सा जाणइ	=	वह जानती है।
सा इच्छइ	=	वह इच्छा करती है।
सा पासइ	=	वह देखती है।
सा पिबइ	=	वह पीती है।
सा गच्छइ	=	वह जाती है।
सा धावइ	=	वह दौड़ती है।
सा खेलइ	=	वह खेलती है।
सा हसइ	=	वह हँसती है।
सा सयइ	=	वह सोती है।
सा पढइ	=	वह पढ़ती है।
सा चिंतइ	=	वह चिंतन करती है।
सा सुणइ	=	वह सुनती है।
सा भुंजइ	=	वह भोजन करती है।
सा चलइ	=	वह चलती है।
सा भमइ	=	वह घूमती है।
सा णच्चइ	=	वह नाचती है।
सा जयइ	=	वह जीतती है।
सा सेवइ	=	वह सेवा करती है।
सा लिहइ	=	वह लिखती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह दौड़ती है। वह जानती है। वह नमन करती है। वह सुनती है।
वह पीती है। वह घूमती है। वह हँसती है। वह इच्छा करती है।
वह नाचती है। वह जीतती है।

प्रयोग वाक्य :

सा अत्थ पढइ	=	वह यहाँ पढ़ता है।
सा तत्थ खेलइ	=	वह वहाँ खेलती है।
सा सइ भुंजइ	=	वह एक बार भोजन करती है।
सा मुहु चिंतइ	=	वह बार-बार चिंतन करती है।
सा सया सेवइ	=	वह सदा सेवा करती है।
सा दाणिं सयइ	=	वह इस समय सोती है।
सा सणिअं चलइ	=	वह धीरे चलती है।
सा झत्ति गच्छइ	=	वह शीघ्र जाती है।
सा अग्गओ पासइ	=	वह आगे देखती है।
सा ण लिहइ	=	वह नहीं लिखती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह एक बार पढ़ता है। वह वहाँ भोजन करता है।
वह इस समय खेलता है। वह यहाँ रहता है। वह आगे देखता है।

पाठ ८

उदाहरण वाक्य : **ताओ** = वे दोनों/वे सब (स्त्रीलिंग)

ताओ नमन्ति	= वे दोनों नमन करती है।	ताओ पढन्ति	= वे सब पढ़ती है।
ताओ जाणन्ति	= वे सब जानती है।	ताओ चिंतन्ति	= वे चिंतन करती हैं।
ताओ इच्छन्ति	= वे इच्छा करती हैं।	ताओ सुणन्ति	= वे सुनती हैं।
ताओ पासन्ति	= वे सब देखती हैं।	ताओ भुंजन्ति	= वे भोजन करती हैं।
ताओ पिबन्ति	= वे दोनों पीती हैं।	ताओ चलन्ति	= वे सब चलती हैं।
ताओ गच्छन्ति	= वे सब जाती हैं।	ताओ भमन्ति	= वे सब घूमती हैं।
ताओ धावन्ति	= वे सब दौड़ती हैं।	ताओ णच्चन्ति	= वे सब नाचती हैं।
ताओ खेलन्ति	= वे दोनों खेलती हैं।	ताओ जयन्ति	= वे दोनों जीतती हैं।
ताओ हसन्ति	= वे सब हँसती हैं।	ताओ सेवन्ति	= वे सेवा करती हैं।
ताओ सयन्ति	= वे सब सोती हैं।	ताओ लिहन्ति	= वे सब लिखती हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वे सब दौड़ती हैं। वे सब जानती हैं। वे दोनों नमन करती हैं।
वे सब सुनती हैं। वे दोनों पीती हैं। वे सब घूमती हैं। वे हँसती हैं।
वे इच्छा करती हैं। वे सब नाचती हैं। वे सब जीतती हैं।

प्रयोग वाक्य :

ताओ अत्थ पढन्ति	=	वे सब यहाँ पढ़ती हैं।
ताओ तत्थ खेलन्ति	=	वे सब वहाँ खेलती हैं।
ताओ सइ भुंजन्ति	=	वे दोनों एक बार भोजन करती हैं।
ताओ मुहु चिंतन्ति	=	वे सब बार-बार चिंतन करती हैं।
ताओ सया सेवन्ति	=	वे सदा सेवा करती हैं।
ताओ दाणिं सयन्ति	=	वे सब इस समय सोती हैं।
ताओ सणिअं चलन्ति	=	वे दोनों धीरे चलती हैं।
ताओ झत्ति गच्छन्ति	=	वे सब शीघ्र जाती हैं।
ताओ अग्गओ पासन्ति	=	वे सब आगे देखती हैं।
ताओ ण लिहन्ति	=	वे दोनों नहीं लिखती हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वे सब बार-बार चिंतन करती हैं। वे दोनों सदा सेवा करती हैं।
वे सब इस समय सोती हैं। वे दोनों धीरे चलती हैं। वे सब आगे देखती हैं।

पाठ ९

(पु.) इमो = यह इमे = ये को = कौन के = कौन
(स्त्री.) इमा = यह इमाओ = ये का = कौन काओ = कौन

उदाहरण वाक्य :

एकवचन		बहुवचन	
इमो नमइ	= वह नमन करता है।	इमे नमन्ति	= ये नमन करते हैं।
इमो गच्छइ	= यह जाता है।	इमे गछन्ति	= ये जाते हैं।
इमो पढइ	= यह पढ़ता है।	इमे पढन्ति	= ये पढ़ती हैं।
इमो णच्चइ	= यह नाचती है।	इमाओ णच्चन्ति	= ये नाचती हैं।
इमा धावइ	= यह दौड़ती है।	इमाओ धावन्ति	= ये दौड़ती हैं।
इमा खेलइ	= यह खेलती है।	इमाओ खेलन्ति	= ये खेलती हैं।
को हसइ	= कौन हँसता है?	के हसन्ति	= कौन हँसते हैं।
को जाइ	= कौन जानता है?	के जाणन्ति	= कौन जानते हैं?
को सीखइ	= कौन सीखता है?	के सीखन्ति	= कौन सीखते हैं?
का णच्चइ	= कौन नाचती है?	काओ णच्चन्ति	= कौन नाचती हैं?
का सेवइ	= कौन सेवा करती है?	काओ सेवन्ति	= कौन सेवा करती हैं?
का पढइ	= कौन पढ़ती है।	काओ पढन्ति	= कौन पढ़ती हैं?

प्राकृत में अनुवाद करो :

कौन देखता है? यह पीता है। ये सोते हैं। कौन लिखता है। यह घूमती है। कौन चलता है? ये भोजन करती हैं। यह सुनता है। कौन जानती हैं? ये जीतते हैं। यह नमन करता है। कौन इच्छा करता है? यह दौड़ता है।

प्रयोग वाक्य :

इमो अत्थ पढइ	=	यह यहाँ पढ़ता है।
को तत्थ भुंजइ	=	कौन वहाँ भोजन करता है?
इमे अत्थ खेलन्ति	=	ये यहाँ खेलते हैं।
इमाओ सणियं चलन्ति	=	ये धीरे चलती हैं।
के ण लिहन्ति	=	कौन नहीं लिखते हैं?
इमा तत्थ गच्छइ	=	यह वहाँ जाती है।
काओ अग्गओ पासंति	=	कौन आगे देखती हैं।
का ण चिंतइ	=	कौन नहीं सोचती है?

पाठ १०

नियम : सर्वनाम (पु., स्त्री.) प्रथमा विभक्ति

सर्वनाम [1] (पु., स्त्री) :

नि. १. : प्राकृत में **अम्ह** (मैं) एवं **तुम्ह** (तुम) सर्वनाम के रूप पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में एक समान बनते हैं। प्रथमा विभक्ति में इनके रूप इस प्रकार याद कर लें-

एकवचन :	**अहं**	**तुमं**
बहुवचन :	**अम्हे**	**तुम्हे**

सर्वनाम(पु.) :

नि. २. : '**त**' (वह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में '**सो**' तथा बहुवचन में '**ते**' रूप बन जाता है।

नि. ३. : '**इम**' (यह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में '**ओ**' तथा बहुवचन में '**ए**' प्रत्यय लगकर ये रूप बनते हैं - **इमो, इमे।**

नि. ४. : '**क**' (कौन) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति ए.व. में '**ओ**' तथा ब.व. में '**ए**' प्रत्यय लगकर ये रूप बनते हैं - **को, के।**

सर्वनाम (स्त्री.) :

नि. ५. : '**ता**' (वह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में '**सा**' रूप तथा बहुवचन में '**ओ**' प्रत्यय लगकर **ताओ** रूप बन जाता है।

नि. ६. : '**इमा**' (यह) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन तथा बहुवचन में ये रूप बनते हैं - **इमा, इमाओ।**

नि. ७. : '**का**' (कौन) सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति ए.व. तथा ब.व. में ये रूप बनते हैं - **का, काओ।**

निर्देश : पिछले पाठों में आपने प्राकृत के कुछ प्रमुख सर्वनामों, क्रियाओं तथा अव्ययों की जानकारी प्राप्त की। इनके रूप इस प्रकार याद कर लें-

सर्वनाम	**प्रथम उत्तम पु.**	**मध्यम पु.**	**अन्य पु. (पु.)**	**अन्य पु. (स्त्री.)**
एकवचन :	**अहं**	तुमं	सो, इमो, को	सा, इमा, का
बहुवचन :	**अम्हे**	तुम्हे	ते, इमे, के	ताओ, इमाओ, काओ

---

१. प्राकृत में सर्वनामों के अन्य रूप भी प्रयुक्त होते हैं, जिनका विवेचन प्राकृत अभ्यास की अन्य पुस्तकों में किया गया है। यहाँ सर्वनाम के एक रूप को ही प्रयुक्त किया गया है।

क्रियाएँ[1] :

नम = नमन करना :

	एकवचन	**बहुवचन**
(प्र./उ. पु०)	नमामि	नमामो
(म. पु०)	नमसि	नमित्था
(अ. पु०)	नमइ	नमन्ति

निर्देश : इसी प्रकार निम्न क्रियाओं के रूप बनेंगे। इनको तीन पुरुषों एवं दोनों वचनों में लिखकर अभ्यास कीजिए :-

क्रियाकोश :

पढ	= पढ़ना	पिब	= पीना	जय	= जीतना
जाण	= जानना	चल	= चलना	हस	= हँसना
चिंत	= चिंतन करना	गच्छ	= जाना	सेव	= सेवा करना
इच्छा	= इच्छा करना	भम	= घूमना	सय	= सोना
सुण	= सुनना	धाव	= दौड़ना	लिह	= लिखना
पास	= देखना	णच्च	= नाचना	वस	= रहना
भुंज	= भोजन करना	खेल	= खेलना	बंध	= बाँधना

अव्यय :

नि. ८. : जिन शब्दों के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता उन्हें अव्यय कहते हैं।

यथा :-

अत्थ = यहाँ, **सया** = सदा, **ण** = नहीं, **झत्ति** = शीघ्र आदि।

अभ्यास

उपयुक्त सर्वनाम लिखो :

(क) ....पढन्ति

..............गच्छामो

.............नमसि

..............पिवित्था

उपयुक्त क्रियारूप लिखो :

(ख) सा..............(हस)।

अहं..............(धाव)।

ताओ.............(णच्च)।

ते................(इच्छ)।

उपयुक्त अव्यय लिखो :

(ग) इमो........पढइ।

के...........खेलन्ति।

सो......... भुंजइ।

ताओ.............चलन्ति।

अम्हे.............पासामो।

ते...................लिहन्ति।

---

२. प्राकृत में क्रियाओं के अन्य रूप भी प्रयुक्त होते हैं, जिनका विवेचन प्राकृत अभ्यास की अन्य पुस्तकों में किया गया है। यहाँ क्रियाओं के एक रूप को ही प्रयुक्त किया गया है।

पाठ ११

निर्देश : आगे के क्रिया-पाठों के अभ्यास के लिए निम्न सभी क्रियाओं, संज्ञाओं एवं अव्ययों को याद कर लें।

अकारान्त क्रियाएँ :

पास	=	देखना	कर	=	करना
गच्छ	=	जाना	गिण्ह	=	ग्रहण करना
इच्छ	=	इच्छा करना	नम	=	नमन करना
खेल	=	खेलना	जाण	=	जानना
पढ	=	पढ़ना	धाव	=	दौड़ना
सुण	=	सुनना	हस	=	हँसना
भुंज	=	भोजन करना	णच्च	=	नाचना
पुच्छ	=	पूछना	सेव	=	सेवा करना
कह	=	कहना	सय	=	सोना
खण	=	खोदना	अच्च	=	पूजा करना

आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएँ :

दा	=	देना	पा	=	पीना
गा	=	गाना	ठा	=	ठहरना
खा	=	खाना	णे	=	ले जाना
झा	=	ध्यान करना	हो	=	होना

कर्म संज्ञाएँ :

विज्जालयं	=	विद्यालय	कहं	=	कथा
चित्तं	=	चित्र	पत्तं	=	पत्र
जसं	=	यश	पण्हं	=	प्रश्न
दव्वं	=	धन	कज्जं	=	कार्य
कन्दुअं	=	गेंद	गीअं	=	गीत
सत्थं	=	शास्त्र	रोटिअं	=	रोटी
पोत्थअं	=	पुस्तक	फलं	=	फल
जलं	=	पानी	अप्पं	=	आत्मा
दुद्धं	=	दूध	वत्थं	=	वस्त्र
वागरणं	=	व्याकरण	पुण्णं	=	पुण्य

अव्यय :

पइदिणं	=	प्रतिदिन	अंत	=	भीतर
अज्ज	=	आज	बहि	=	बाहर
कल्लं	=	कल	किं	=	क्या
अवस्स	=	अवश्य	कत्थ	=	कहाँ

4. क्रियाएँ :

पाठ १२

(क) अकारान्त क्रियाएँ : **वर्तमानकाल**

एक वचन			बहु वचन		
अहं पासामि	=	मैं देखता हूँ।	अम्हे पासामो	=	हम सब देखते हैं।
तुमं पाससि	=	तुम देखते हो।	तुम्हे पासित्था	=	तुम सब देखते हो।
सो पासइ	=	वह देखता है।	ते पासन्ति	=	वे देखते हैं।

उदाहरण वाक्य :

अहं विज्जालयं गच्छामि	=	मैं विद्यालय जाता हूँ।
तुमं जसं इच्छसि	=	तुम यश को चाहते हो।
सो तत्थ कन्दुअं खेलइ	=	वह वहाँ गेंद खेलता है।
अम्हे वागरणं पढामो	=	हम व्याकरण पढ़ते हैं।
तुम्हे सत्थं सुणित्था	=	तुम सब शास्त्र सुनते हो।
ते अत्थ भुंजति	=	वे यहाँ भोजन करते हैं।
सा किं करइ?	=	वह क्या करती है?
सा पत्तं लिहइ	=	वह पत्र लिखती है।
ताओ कहं कहन्ति	=	वे (स्त्रियाँ) कथा कहती हैं।
ते पण्हं पुच्छन्ति	=	वे प्रश्न पूछते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हम सब नमन करते हैं। वह धन ग्रहण करता है। तुम क्या करते हो? मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। वे सब वहाँ दौड़ते हैं। वह यहाँ नाचती है। तुम सब प्रतिदिन सेवा करते हो। वे (स्त्रियाँ) आत्मा को जानती हैं। वह वहाँ खेलता है। वे भीतर पूजा करते हैं।

क्रियाकोश :

भण	=	कहना	आगच्छ	=	आना
पेस	=	भेजना	कीण	=	खरीदना
जिण	=	जीतना	बीह	=	डरना
कंद	=	रोना	पाल	=	पालन करना
जिंघ	=	सूंघना	सीख	=	सीखना
अड	=	घूमना	घोस	=	घोषणा करना
गम	=	व्यतीत होना	जंप	=	बोलना
घाय	=	मारना	दह	=	जलना
चिट्ठ	=	बैठना	णिम्म	=	बनाना
छुट्ट	=	छूटना	तुल	=	तौलना

निर्देश : इन क्रियाओं के तीनों पुरुषों और दोनों वचनों में वर्तमान काल के रूप लिखो और वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएँ :

एक वचन			बहु वचन		
अहं दामि	=	मैं देता हूँ।	अम्हे दामो	=	हम देते हैं।
तुमं दासि	=	तु देते हो।	तुम्हे दाइत्था	=	तुम देते हो।
सो दाइ	=	वह देता है।	ते दन्ति	=	वे देते हैं।

उदाहरण वाक्य :

अहं गीअं गामि	=	मैं गीत गाता हूँ।
तुमं तत्थ ठासि	=	तुम वहाँ ठहरते हो।
सो फलं खाइ	=	वह फल खाता है।
ते किं णेन्ति	=	वे क्या ले जाते हैं?
अहं अप्पं झामि	=	मैं आत्मा को ध्याता हूँ।
अम्हे दुद्धं पामो	=	हम सब दूध पीते हैं।
तत्थ किं होइ	=	वहाँ क्या होता है?

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं वहाँ ठहरता हूँ। तुम यहाँ गाते हो। वह इस समय ध्यान करता है। वे नहीं देते हैं। हम सब वहाँ ले जाते हैं। तुम सब यहाँ खाते हो। यहाँ क्या होता है? मैं धन देता हूँ।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) सो......................(पेस)।
अहं....................(बीह)।
ते......................(भण)।
सा...................(जिण)।
अम्हे................(सीख)।

(ख) ....आगच्छसि।
..............................कीणइ।
............................कन्दामो।
............................जिंघामि।
............................पालित्था।

(ग) अहं..................कहामि।
सो......................खाअइ।
ते........................णेन्ति।
तुमं............................पासि।
ताओ.....................णच्चन्ति।
तत्थ..........................होइ।

पाठ १३

(क) अकारान्त क्रियाएँ : **भूतकाल**

एक वचन			बहु वचन		
अहं पासीअ	=	मैंने देखा।	अम्हे पासीअ	=	हम सबने देखा।
तुमं पासीअ	=	तुमने देखा।	तुम्हे पासीअ	=	तुम सबने देखा।
सो पासीअ	=	उसने देखा।	ते पासीअ	=	उन सबने देखा।

उदाहरण वाक्य :

अहं तत्थ गच्छीअ	=	मैं वहाँ गया।
तुमं दव्वं इच्छीअ	=	तुमने धन को चाहा।
सो कल्ल कन्दुअं खेलीअ	=	उसने कल गेंद खेली।
अम्हे पोत्थअं पढीअ	=	हम सबने पुस्तक पढ़ी।
तुम्हे अज्ज सत्थं सुणीअ	=	तुम सबने आज शास्त्र सुना।
ते रोटिअं भुंजीअ	=	उन्होंने रोटी खायी।
सा कज्जं करीअ	=	उस (स्त्री) ने कार्य किया।
सो वागरणं लिहीअ	=	उसने व्याकरण लिखी।
ते कहं कहीअ	=	उन्होंने कथा कही।
अम्हे अज्ज पण्हं पुच्छीअ	=	हमने आज प्रश्न पूछा।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम सबने नमन किया। उसने धन ग्रहण किया। तुमने क्या किया? मैंने पुस्तक पढ़ी। हम सब वहाँ दौड़े। वह (स्त्री) कल नाची। उन्होंने सेवा नहीं की। उन (स्त्रियों) ने नहीं जाना। उसने गेंद खेली। उन्होंने प्रतिदिन पूजा की।

क्रियाकोश :

फास	=	छूना	उड्ड	=	उड़ना
गज्ज	=	गर्जना	जग्ग	=	जागना
थुण	=	स्तुति करना	तर	=	तैरना
कलह	=	झगड़ना	कस्स	=	जोतना
लज्ज	=	लजाना	खम	=	क्षमा करना
जण	=	उत्पन्न करना	जूर	=	खेद करना
ढक	=	ढकना	दूस	=	दूषण लगाना
तक्क	=	तर्क करना	पच	=	पकाना
दरिस	=	दिखलाना	पहर	=	प्रहार करना
तिप्प	=	संतुष्ट होना	पत्थर	=	बिछाना

निर्देश : इन क्रियाओं के तीनों पुरुषों और दोनों वचनों में भूतकाल के रूप लिखो और वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

(ख) **आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएँ :**

एक वचन			**बहु वचन**		
अहं दाही	=	मैंने दिया।	अम्हे दाही	=	हम सब ने दिया।
तुमं दाही	=	तुमने दिया।	तुम्हे दाही	=	तुम सब ने दिया।
सो दाही	=	उसने दिया।	ते दाही	=	उन्होंने दिया।

उदाहरण वाक्य :

अहं कल्ल गीअं गाही	=	मैंने कल गीत गाया।
तुमं तत्थ ठाही	=	तुम वहाँ ठहरे।
सो रोटिअं खाही	=	उसने रोटी खायी।
सा अप्पं झाही	=	उस (स्त्री) ने आत्मा को ध्याया।
ते किं णेही	=	वे क्या ले गये?
अम्हे दुद्धं पाही	=	हमने दूध पीया।
तत्थ किं होही	=	वहाँ क्या हुआ?

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह कहाँ ठहरा? तुमने यहाँ गीत गया। उसने कल ध्यान किया। उन्होंने धन नहीं दिया। हम सब ने यहाँ दूध पीया। तुम वस्त्र वहाँ ले गये। कल यहाँ क्या हुआ? मैंने यहाँ रोटी खायी।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) अहं......................(थुण)।
सो तत्थ.............(कलह)।
ते वत्थं................(कीण)।
सा ण..................(लज्ज)।
तुमं खेत्तं.............(कस्स)।
ते..........................(पा)।

(ख) ....कस्सीअ।
तुम्हे.........................तरीअ।
सा........................फासीअ।
.....................झत्ति जग्गीअ।
..........................ण खमीअ।
..............................झाही।

(ग) सो......................भुंजीअ।
ताओ.................पुच्छीअ।
अम्हे..................सुणीअ।
तुम्हे.......................लिहीअ।
अहं.........................करीअ।
तुम......................कलहीअ।

□□

पाठ १४

अस धातु = विद्यमान होना :

वर्तमान काल

	एक वचन		बहु वचन	
(प्र./उ.पु.)	अहं अम्हि	= मैं हूँ।	अम्हे म्हो	= हम हैं।
(म.पु.)	तुमं असि	= तुम हो।	तुम्हे थ	= तुम सब हो।
(अ.पु.)	सो अत्थि	= वह है।	ते संति	= वे हैं।

भूतकाल

एक वचन		बहु वचन	
अहं अहेसि/आसि	= मैं था।	अम्हे अहेसि/आसि	= हम थे।
तुमं अहेसि/आसि	= तुम थे।	तुम्हे अहेसि/आसि	= तुम सब थे।
सो अहेसि/आसि	= वह था।	ते अहेसि/आसि	= वे सब थे।

उदाहरण वाक्य :

अहं अत्थ अम्हि	=	मैं यहाँ हूँ।
तुमं तत्थ असि	=	तुम वहाँ हो।
सो कत्थ अत्थि	=	वह कहाँ है।
अहं तत्थ अहेसि	=	मैं वहाँ था।
सो तत्थ ण आसि	=	वह वहाँ नहीं था।
ते कल्ल तत्थ अहेसि	=	से सब कल वहाँ थे।
सो अत्थ अत्थि	=	वह यहाँ है।
सा तत्थ अत्थि	=	वह (स्त्री) वहाँ है।
ताओ कत्थ संति	=	वे स्त्रियाँ कहाँ हैं?
ते अत्थ संति	=	वे यहाँ हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वहाँ पुस्तक है। यहाँ दूध है। मैं वहाँ हूँ। वह कहाँ है? वे सब यहाँ थे। तुम वहाँ थे। हम सब यहाँ है। वह वहाँ नहीं है। तुम यहाँ नहीं थे। कया वह वहाँ था? वह स्त्री कहाँ थी?

हिन्दी में अनुवाद करो :

अत्थ विज्जालयं अत्थि। तत्थ चित्तं नत्थि। पत्तं कत्थ आसि? सो तत्थ अहेसि। ते अत्थ ण संति। ताओ कत्थ आसि। तुम्हे तत्थ थ। अम्हे कल्ल तत्थ अहेसि। अहं अत्थ अम्हि।

अभ्यास

रिक्त स्थान भरिए :

(क) सर्वनाम :

......................अत्थ पढामि। ....तत्थ भुंजइ।

......................सया णच्चंति। ....ण गच्छामो।

....................सणिय चलसि। ....तत्थ खेलित्था।

(ख) अव्यय :

अहं......................भुंजामि। ते......................गच्छन्ति।

सो........................खेलइ। तुमं......................सेवसि।

अम्हे....................पासामो। तुम्हे...................सयित्था।

(ग) क्रिया (वर्तमान) :

सो कन्दुअं......................। अम्हे वागरणं..................।

ताओ कहं.......................। ते पण्हं.........................।

तुम्हे पइदिणं....................। अहं अत्थ.......................।

अहं गीअं........................। सो अप्पं.........................।

(घ) क्रिया (भूतकाल) :

ते वागरणं........................। अम्हे रोटिअं....................।

सा कल्ल..........................। अहं पोत्थअं.....................।

तुमं दुद्धं.........................। तुम्हे दव्वं........................।

हिन्दी में अनुवाद करो।

अम्हे दाणिं सयामो। तुमं अग्गओ पाससि। सा मुहु चिंतइ। ते सइ ण भुंजन्ति। ताओ कत्थ वसन्ति? काओ अत्थ पढन्ति।

क्रियाकोश :

कड्ढ	= खींचना	विरम	= अलग होना
छिन्न	= काटना	संचय	= इकट्ठा करना
तूस	= संतुष्ट होना	सज्ज	= सजाना
दुह	= दुहना	सिह	= चाहना
पत्थ	= प्रार्थना करना	सोह	= शोभित होना

निर्देश : इन क्रियाओं के वर्तमान एवं भूतकाल के रूप बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो।

❑❑

पाठ १५

(क) अकारान्त क्रियाएँ : भविष्यकाल

एक वचन			बहु वचन		
अहं पासिहिमि	=	मैं देखूँगा।	अम्हे पासिहामो	=	हम देखेंगे।
तुमं पासिहिसि	=	तुम देखोगे।	तुम्हे पासिहित्था	=	तुम सब देखोगे।
सो पासिहिइ	=	वह देखेगा।	ते पासिहिंति	=	वे देखेंगे।

उदाहरण वाक्य :

अहं विज्जालयं गच्छिहिमि	=	मैं विद्यालय जाऊँगा।
तुमं दव्वं इच्छिहिसि	=	तुम धन चाहोगे।
सो तत्थ कन्दुअं खेलिहिइ	=	वह वहाँ गेंद खेलेगा।
अम्हे अवस्स पोत्थअं पढिहामो	=	हम अवश्य पुस्तक पढ़ेंगे।
तुम्हे पइदिण सत्थं सुणिहित्था	=	तुम लोग प्रतिदिन शास्त्र सुनोगे।
ते तत्थ किं भुंजिहिंति	=	वे वहाँ क्या खायेंगे?
सा किं कज्जं करिहिइ	=	वह क्या कार्य करेगी?
सो पोत्थअं लिहिहिइ	=	वह पुस्तक लिखेगा।
ते अज्ज कहं कहिहिंति	=	वे आज कथा कहेंगे।
अम्हे वागरणं पुच्छिहामो	=	हम व्याकरण पूछेंगे।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम सब नमर करोगे। वह धन ग्रहण करेगा। तुम वहाँ क्या करोगे? मैं आज पुस्तक पढूँगा। हम वहाँ दौड़ेंगे। वह (स्त्री) आज नाचेगी। वे अवश्य सेवा करेंगे। वे (स्त्रियाँ) क्या जानेंगी? वह प्रतिदिन गेंद खेलेगा। वे वहाँ पूजा करेंगे।

क्रियाकोश :

पड	=	गिरना	हिंस	=	हिंसा करना
हिण्ड	=	घूमना	रूस	=	क्रोधित होना
तव	=	तप करना	धर	=	पकड़ना
मुच्छ	=	मूर्छित होना	मग्ग	=	मांगना
धोव	=	धोना	मुंच	=	छोड़ना
पविस	=	प्रवेश करना	फल	=	फलना
पलाय	=	भाग जाना	बोह	=	समझना
फुल्ल	=	फूलना	भंज	=	तोड़ना
पास	=	पीसना	बोल्ल	=	बोलना
पेच्छ	=	देखना	मन्न	=	मानना

निर्देश : इन क्रियाओं के तीनों पुरुषों और दोनों वचनों में भविष्यकाल के रूप लिखो और वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

(ख) आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाएँ :

एक वचन			बहु वचन		
अहं दाहिमि	=	मैंने दूँगा।	अम्हे दाहामो	=	हम देंगे।
तुमं दाहिसि	=	तुम दोगे।	तुम्हे दाहित्था	=	तुम सब दोगे।
सो दाहिइ	=	वह देगा।	ते दाहिंति	=	वे देंगे।

उदाहरण वाक्य :

अहं तत्थ गीअं गाहिमि	=	मैं वहाँ गीत गाऊँगा।
तुमं अत्थ ठाहिसि	=	तुम यहाँ ठहरोगे।
सो रोटिअं खाहिइ	=	वह रोटी खायेगा।
सा अप्पं झाहिइ	=	वह आत्मा का ध्यान करेगी।
ते सत्थं णेहिंति	=	वे शस्त्र ले जायेंगे।
अम्हे दुद्धं पाहामो	=	हम दूध पीयेंगे।
तत्थ किं होहिइ	=	वहाँ क्या होगा?

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह कहाँ ठहरेगा। तुम आज गीत गाओगे। वह प्रतिदिन ध्यान करेगा। वे विद्यालय को धन देंगे। हम सब वहाँ दूध पीयेंगे। तुम वहाँ पुस्तक ले जाओगे। वहाँ क्या होगा? मैं यहाँ रोटी खाऊँगा।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क)	सो......................(पड)।	(ख) ....धेणुं (गाय) दुहिहिइ।
	तुमं.....................(तव)।	.........................जिणिहिमि।
	अहं...................(धोव)।	.........................खमिहित्था।
	ते.....................(मग्ग)।	......................ण हिंसिहामो।
	अम्हे...................(धर)।	..........................सिहिहिसि।
	अहं.....................(ठा)।	...............................होहिइ।
(ग)	सो..................लिहिहिइ।	ताओ...................भुंजिहिंति।
	अम्हे................पडिहामो।	अहं.....................पढिहिमि।
	ते....................दुहिहिंति।	तुम.....................मग्गहिसि।

❑❑

पाठ (१६)

(क) **अकारान्त क्रियाएँ :** इच्छा/आज्ञा

एक वचन			बहु वचन		
अहं पासमु	=	मैं देखूँ।	अम्हे पासमो	=	हम सब देखें।
तुमं पासहि	=	तुम देखो।	तुम्हे पासह	=	तुम सब देखो।
सो पासउ	=	वह देखे।	ते पासंतु	=	वे सब देखें।

उदाहरण वाक्य :

अहं विज्जालयं गच्छमु	=	मैं विद्यालय जाऊँ।
तुमं दव्वं इच्छहि	=	तुम धन को चाहो।
सो अत्थ न खेलउ	=	वह यहाँ न खेले।
अम्हे अज्ज वागरणं पढमो	=	हम आज व्याकरण पढ़ें।
तुम्हे तत्थ सत्थं सुणह	=	तुम सब वहाँ शास्त्र सुनो।
ते तत्थ भुंजंतु	=	वे वहाँ भोजन करें।
सा अत्थ कज्जं करउ	=	वह (स्त्री) यहाँ कार्य करे।
सा पत्तं लिहउ	=	वह पत्र लिखे।
ताओ अत्थ कहं कहंतु	=	वे (स्त्रियाँ) यहाँ कथा कहें।
ते वागरणं पुच्छंतु	=	वे व्याकरण पूछें।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हम सब नमन करें। वह धन ग्रहण करे। तुम आज कार्य करो। मैं पुस्तक को पढ़ूँ। वे सब वहाँ न दौड़ें। वह (स्त्री) यहाँ नाचे। तुम सब प्रतिदिन सेवा करो। वे (स्त्रियाँ) यह न जानें। वह प्रतिदिन वहाँ खेले। वे भीतर पूजा करें।

क्रियाकोश :

हव	=	होना	रम	=	रमण करना
ताड	=	पीटना	विहर	=	विहार करना
हण	=	मारना	सद्दह	=	श्रद्धान करना
वड्ड	=	बढ़ना	निन्द	=	निन्दा करना
गुंथ	=	गूंथना	लंभ	=	प्राप्त करना
णिसेह	=	मना करना	तिम्म	=	भीगना
साह	=	कहना	लंघ	=	लांघना
अच्छ	=	ठहरना	सक्क	=	समर्थ होना
अक्कोस	=	आक्रोश करना	सर	=	याद करना
आसंक	=	संदेह करना	हरिस	=	खुश होना

निर्देश : इन क्रियाओं के तीनों पुरुषों और दोनों वचनों में विधि (इच्छा) और आज्ञा के रूप लिखो और वाक्यों में उनका प्रयोग करो।

(ख) आकारान्त एकारान्त एवं ओकारान्त क्रियाएँ :

एक वचन			बहु वचन		
अहं दामु	=	मैं दूं।	अम्हे दामो	=	हम सब दें।
तुमं दाहि	=	तुम दो।	तुम्हे दाह	=	तुम सब दो।
सो दाउ	=	वे दे।	ते दंतु	=	वे सब दें।

उदाहरण वाक्य :

अहं तत्थ गीअं गामु = मैं वहाँ गीत गाऊँ।
तुमं अत्थ ठाहि = तुम यहाँ ठहरो।
सो पइदिण रोटिअं खाउ = वह प्रतिदिन रोटी खावे।
सा अप्पं झाउ = वह (स्त्री) आत्मा का ध्यान करे।
ते चित्तं णेन्तु = वे चित्र ले जाएँ।
अम्हे दुद्धं पामो = हम दूध पियें।
अज्ज तत्थ किं होउ = आज वहाँ क्या हो?
अत्थ गीअं ण गाहि = यहाँ गीत न गाओ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह कहाँ ठहरे। तुम आज गीत गाओ। वह प्रतिदिन ध्यान करे। वे धन दें। हम सब आज दूध न पियें। तुम वहाँ पुस्तक ले जाओ। आज वहाँ क्या हो? क्या मैं यहाँ रोटी खाऊँ।

अभ्यास

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) सो ण..................(हण)।
तुमं पइदिणं...........(वड्ढ)।
तत्थ किं..............(हव)।
ते ण..................(ताड)।
सा.....................(गुंथ)।

(ख) ....तत्थ रमउ।
....................अत्थ विहरंतु।
...........................सद्दहमु।
.......................ण निन्दमो।
.......................जसं लंभह।

(ग) सो.....................चिट्ठउ।
अम्हे.................णच्चमो।
तुमं.....................पाहि।

ताओ.......................सेवंतु।
सो..........................ठाउ।
तुम्हे........................झाह।

□□

पाठ १७

सम्बन्ध कृदन्त

पासिऊण	=	देखकर	करिऊण	=	करके
गच्छिऊण	=	जाकर	गिण्हिऊण	=	ग्रहणकर
इच्छिऊण	=	इच्छाकर	नमिऊण	=	नमनकर
खेलिऊण	=	खेलकर	जाणिऊण	=	जानकर
पढिऊण	=	पढ़कर	धाविऊण	=	दौड़कर
सुणिऊण	=	सुनकर	हसिऊण	=	हँसकर
भुंजिऊण	=	भोजनकर	णच्चिऊण	=	नाचकर
लिहिऊण	=	लिखकर	सेविऊण	=	सेवाकर
पुच्छिऊण	=	पूछकर	सयिऊण	=	सोकर
कहिऊण	=	कहकर	अच्चिऊण	=	पूजाकर
दाऊण	=	देकर	णेऊण	=	ले जाकर
गाऊण	=	गाकर	पाऊण	=	पाकर
खाऊण	=	खाकर	ठाऊण	=	ठहरकर
झाऊण	=	ध्यानकर	होऊण	=	होकर

उदाहरण वाक्य :

सो चित्तं पासिऊण लिहइ	=	वह चित्र को देखकर लिखता है।
तुमं विज्जालयं गच्छिऊण पढसि	=	तुम विद्यालय जाकर पढ़ते हो।
अहं जसं इच्छिऊण सेवामि	=	मैं यश की इच्छाकर सेवा करता हूँ।
अम्हे पढिऊण खेलामो	=	हम सब पढ़कर खेलते हैं।
तुम्हे भुंजिऊण सयिहित्था	=	तुम सब भोजन करके सोओगे।
ते लिहिऊण पच्छिहिंति	=	वे लिखकर पूछेंगे।
सा धाविऊण नमीअ	=	उसने दौड़कर नमन किया।
सो तत्थ ठाऊण अच्चीअ	=	उसने वहाँ ठहरकर पूजा की।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं हँसकर नमन करता हूँ। वह जानकर क्या करेगा? तुम देखकर पढ़ो। हम सब ध्यानकर पूजा करेंगे। वे सब व्याकरण पढ़कर क्या करेंगे? वह नाचकर सो गयी। मैंने वहाँ जाकर पत्र लिखा। वह पुस्तक पढ़कर प्रश्न पूछे।

हिन्दी में अनुवाद करो :

सो पुच्छिऊण जंपइ। ते अच्छिऊण आगच्छीअ। अम्हे पोत्थअं कीणिऊण पढामो। तुमं जिणिऊण जूरसि। अहं तुलिऊण पेसामि। सा पासिऊण कंदइ।

❑❑

पाठ १८

हेत्वर्थ कृदन्त

पासिउं	=	देखने के लिए	करिउं	=	करने के लिए
गच्छिउं	=	जाने के लिए	गिण्हिउं	=	ग्रहण करने के लिए
इच्छिउं	=	इच्छा करने के लिए	नमिउं	=	नमन करने के लिए
खेलिउं	=	खेलने के लिए	जाणिउं	=	जानने के लिए
पढिउं	=	पढ़ने के लिए	धारिउं	=	दौड़ने के लिए
सुणिउं	=	सुनने के लिए	हसिउं	=	हँसने के लिए
भुजिउं	=	भोजन के लिए	णच्चिउं	=	नाचने के लिए
लिहिउं	=	लिखने के लिए	सेविउं	=	सेवा करने के लिए
पुच्छिउं	=	पूछने के लिए	सयिउं	=	सोने के लिए
कहिउं	=	कहने के लिए	अच्चिउं	=	पूजा करने के लिए
दाउं	=	देने के लिए	णेउं	=	ले जाने के लिए
गाउं	=	गाने के लिए	पाउं	=	पीने के लिए
खाउं	=	खाने के लिए	ठाउं	=	ठहरने के लिए
झाउं	=	ध्यान करने के लिए	होउं	=	होने के लिए

प्रयोग वाक्य :

अहं पढिउं विज्जालयं गच्छामि	=	मैं पढ़ने के लिए विद्यालय जाता हूँ।
तुमं खेलिउं तत्थ गच्छीअ	=	तुम खेलने के लिए वहाँ गये।
सो पुण्णं करिउं अच्चिहिइ	=	वह पुण्य करने के लिए पूजा करेगा।
ते धणं दाउं इच्छंति	=	वे धन देने के लिए इच्छा करते हैं।
अम्हे लिहिउं पढीअ	=	हम सब ने लिखने के लिए पढ़ा।
तुम्हे नमिउं धावीउ	=	तुम सब नमन करने के लिए दौड़े।
सा गाउं पुच्छइ	=	वह गाने के लिए पूछती है।
सो दुद्धं पाउं इच्छइ	=	वह दूध पीने के लिए इच्छा करता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह खेलने के लिए वहाँ जाये। तुम चित्र देखने के लिए जाओगे। क्या मैं पढ़ने के लिए जाऊँ? वे सब पूजा करने के लिए वहाँ ठहरते हैं। हम सब कार्य करने के लिए वहाँ गये। वह गाने के लिए इच्छा करती है। तुम सब यहाँ क्या कहने के लिए ठहरे हो? मैं भोजन करने के लिए वहाँ जाऊँगा।

हिन्दी में अनुवाद करो :

सो तविउं पुच्छइ। ते धोविउं वत्थं णेंति। सा पासिउं तत्थ गच्छइ।
अहं मुंचिउं भणामि। अम्हे बोहिउं आगच्छीअ।

पाठ ११

अभ्यास

निर्देश : इन नियमों के सम्बन्ध कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(क)	रंज	=	आसक्त होना	गण	=	गिनना
	वंच	=	ठगना	उज्जम	=	प्रयत्न करना
	उवदिस	=	उपदेश देना	आदिस	=	आज्ञा देना
	अवगण	=	अपमान करना	उट्ठ	=	उठना
	फाड़	=	फाड़ना	लव	=	कहना
	मोत्त	=	छोड़ना	दट्ठ	=	देखना

निर्देश : इन नियमों के हेत्वर्थ कृदन्त के रूप बनाइये और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

(ख)	सिंच	=	सींचना	परिहा	=	पहिनना
	आणे	=	ले आना	ठव	=	स्थापना करना
	चक्ख	=	स्वाद लेना	वस	=	रहना
	वण्ण	=	वर्णन करना	वह	=	बहना
	निमंत	=	निमंत्रण करना	सिव्व	=	सीना

(ग) सम्बन्ध कृदन्त की क्रियाएँ बनाकर भरिए :

सो...............(वंच) गच्छीअ।	अहं....................(दट्ठ) कहिहिमि।
ते..................(रंज) भमंति।	तुमं.......................(गण) गिण्हहि।
...................अवगुणं खामइ।	सो वत्थं...................(फाड) णेही।
सो...............(उट्ठ) दुद्धं पाइ।	तुम्हे............(मोत्तं) न गच्छिहित्था।
अम्हे..........(उज्जम) भुंजमो।	तुम्हे..................(हिण्ड) सयित्था।

(घ) हेत्वर्थ कृदन्त की क्रियाएँ बनाकर भरिए :

सो जलं..........(सिंच) पुच्छइ।	अहं....................(चक्ख) भुंजामि।
ते...............(वण्ण) लिहन्ति।	अम्हे..................(निमंत) गच्छामो।
सा फल........(आणे) गच्छीअ।	सो वत्थं...............(परिहा) गच्छइ।
सो...............(वस) पुच्छीअ।	अहं चित्तं.................(ठव) अम्हि।
सो वत्थं.......(सिव्व) आणेइ।	अहं अत्थ............(वस) ठाहिमि।

□□

पाठ २०

नियम : क्रियारूप

क्रिया-प्रत्यय :

नि. ९ : मूल क्रिया या शब्द में जो अन्य अक्षर या स्वर जुड़ते हैं उन्हें प्रत्यय कहा जाता है। यथा – "**पासइ**" क्रिया के रूप में "**पास**" मूल क्रिया है एवं "**इ**" प्रत्यय है। इसी तरह प्रत्येक काल की क्रियाओं के अलग-अलग प्रत्यय होते हैं, जो सभी क्रियाओं में प्रत्येक व काल के अनुसार जुड़ते रहते हैं।

वर्तमानकाल :

	एक वचन	**बहुवचन**
(प्र.पु.)	मि	मो
(म.पु.)	सि	इत्था
(अ.पु.)	इ	न्ति

नि. १० : प्र.पु. के प्रत्यय मि, मो क्रिया में जुड़ने के पूर्व क्रिया के 'अ' का दीर्घ **आ** हो हो जाता है। यथा – पास + मि = पास् + आ + मि = पासामि, पास + मो = पासामो

भूतकाल :

नि. ११ : भूतकाल में सभी अकारान्त क्रियाओं में तीनों पुरुषों एवं दोनों वचनों में '**ईअ**' प्रत्यय जुड़ता है। यथा – पास + ईअ = पासीअ।

नि. १२ : आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाओं में **सी, ही, हीअ** प्रत्यय जुड़ते हैं। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में '**ही**' प्रत्यय वाले रूप प्रयुक्त हुए हैं। यथा – दा + ही = दाही, णे + ही = णेही।

भविष्यतकाल :

नि. १३ : भविष्यकाल की क्रियाओं में कई प्रत्यय जुड़ते हैं। किन्तु यहाँ निम्न एक प्रत्यय को ही प्रयुक्त किया गया है। इस प्रत्यय के जुड़ने के पूर्व क्रिया के 'अ' का 'इ' हो गया है। यथा – पास् + इ + हिमि = पासिहिमि।

	एक वचन	**बहुवचन**
(प्र.पु.)	हिमि	हामो
(म.पु.)	हिसि	हित्था
(अ.पु.)	हिइ	हिंति

इच्छा (विधि)/ आज्ञा :

नि. १४ : विधि एवं आज्ञा वाली क्रियाओं में निम्न प्रत्यय जुड़ते हैं :-

(प्र.पु.)	मु	मो
(म.पु.)	हि	ह
(अ.पु.)	उ	न्तु

सम्बन्ध कृदन्त :

नि. १५ : जब कर्ता एक कार्य को समाप्त कर दूसरा कार्य करता है तो पहले किये गये कार्य के लिए सम्बन्ध कृदन्त का व्यवहार होता है।

नि. १६ : क्रिया से सम्बन्ध कृदन्त रूप बनाने के लिए प्राकृत में तुं, तूण आदि आठ प्रत्यय लगते हैं। यहाँ केवल 'तूण' प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है। तूण (ऊण) प्रत्यय लगाने के पूर्व क्रियाओं के 'अ' को 'इ' हो जाता है। यथा -

पास + इ + ऊण = पासिऊण (देखकर)

नि. १७ : आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाओं में 'ऊण' प्रत्यय लगाकर रूप बनाये जाते हैं। यथा -

दा + ऊण = ऊण दाऊण, णे + ऊण = णेऊण, हो + ऊण = होऊण।

हेत्वर्थ कृदन्त :

नि. १८ : जब कर्ता किसी अभीष्ट कार्य के लिए कोई दूसरी क्रिया करता है तो वहाँ अभीष्ट कार्य को सूचित करने के लिए हेत्वर्थ कृदन्त का प्रयोग होता है।

नि.१९ : इस अभीष्ट कार्य वाली क्रिया में **तुं (उं)** प्रत्यय जुड़ जाता है तथा अकारान्त क्रियाओं के 'अ' को 'इ' हो जाता है। यथा -

पास् + इ + उं = पासिउं (देखने के लिए)।

निर्देश : उपर्युक्त पाठों के क्रिया-कोश में आपने जो नयी क्रियाएँ सीखी हैं, उनके विभिन्न कालों में रूप लिखिए और उनका एक चार्ट बनाइये। यथा -

मूल क्रिया	व.	भू.	भवि.	आज्ञा	स.कृ.	हे.कृ.
पास	पासइ	पासीअ	पासिहिइ	पासउ	पासिऊण	पासिउं
गच्छ	-	-	-	-	-	-
सुण	-	-	-	-	-	-

क्रियाओं का परिचय दीजिए :

	मूल क्रिया	काल	पुरुष	वचन
पढिहिइ	पढ	भविष्य	अन्य पुरुष	एक वचन
भुंजउ	-	-	-	-
नमिऊण	-	-	-	-
हसिउं	-	-	-	-
जंपहि	-	-	-	-
कीणित्था	-	-	-	-
पढमु	-	-	-	-

❑❑

पाठ २१

मिश्रित अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो :

सो भणिहिइ।
अहं चित्तं पेसिहिमि।
तुमं वागरणं सीखिहिसि।
ते अज्ज आगच्छिहिंति।
अम्हे वत्थं कीणामो।
सा तत्थ कलहइ।
ताओ लज्जंति।
अहं थुणामि।
सो पडिऊण उट्ठइ।
अहं वत्थं धोविऊण गच्छामि।
ते मग्गिऊण भुंजंति।
अम्हे रूसिऊण गच्छीअ।
सो ताडीअ।
अहं दव्वं लंभीअ।
तत्थ किं हवीअ?
ते ण सद्दहीअ।
तुमं जलं सिंचहि।
अहं फलं चक्खमु।
सा वत्थं सिव्वउ।
ते तत्थ वसन्तु।
सो उवदिसिउं भणइ।
अहं हिण्डिउं गच्छामि।
ते दट्ठिउं आगच्छीअ।
सो चित्तं फाडिउं ण गच्छिहिइ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह कल रोया।
मैं नहीं डरूँगा।
वे पालन करेंगे।
तुम अवश्य जीतोगे।
मैं वहाँ तैरता हूँ।
वे यहाँ जोतते हैं।
वह वहाँ गर्जता है।
वह गाय (धेणु) दुहेगी।
मैं वहाँ तप करूँगा।
वे हिंसा नहीं करते हैं।
तुम सब धन को चाहते हो।
तुम प्रतिदिन बढ़ते हो।
वह यहाँ विहार करता है।
वे निन्दा नहीं करते हैं।
वस्त्र यहाँ लाओ।
तुम वस्त्र पहिनो।
वे निमंत्रण करें।
मैं यहाँ आसक्त होता हूँ।
वह अपमान नहीं करता है।
वे सदा प्रयत्न करते हैं।
वह आज्ञा देता है।
वे वहाँ खुश होंगे।

पाठ २२

निर्देश : संज्ञा शब्दों के आगामी पाठों के अभ्यास के लिए निम्नलिखित क्रियाओं, संज्ञाओं एवं अव्ययों को याद कर लें।

क्रियाकोश :

अभिरुय	=	अच्छा लगना	णीसर	=	निकलना
उप्पन्न	=	उत्पन्न होना	पच्चाअ	=	विश्वास करना
मोड	=	मोड़ना	पराजय	=	हारना
चिण	=	चुनना	मुण	=	जानना
जाय	=	पैदा होना	पसंस	=	प्रशंसा करना
जुज्झ	=	युद्ध करना	रोअ	=	पसन्द करना
झर	=	झरना	लिप्प	=	लिप्त होना
दुगुञ्छ	=	घृणा करना	विक्कीण	=	बेचना

शब्दकोश :

पुल्लिंग शब्द

अग्गि	=	अग्नि	पव्वअ	=	पर्वत
अवगुण	=	अवगुण	पाइय	=	प्राकृत
आवण	=	दुकान	पासाय	=	महल
गुण	=	गुण	पीअ	=	पीला
जण	=	लोग	भंडाआर	=	भंडार
जम्म	=	जन्म	भमर	=	भौंरा
जीव	=	जीव	भिच्च	=	नौकर
तड	=	तट	मंदिर	=	मंदिर
तन्तु	=	धागा	महुर	=	मधुर
तिलय	=	तिलक	मुक्ख	=	मूर्ख
तेअ	=	तेज	मुल्ल	=	कीमत
देस	=	देश	रंग	=	रंग
दोस	=	दोष	रत्त	=	लाल
पइ	=	पति	ववहार	=	व्यापार
पंडिअ	=	पंडित	वाउ	=	हवा
परिग्गह	=	परिग्रह	विणय	=	विनय
परिणअ	=	विवाह	संजम	=	संयम
सामि	=	स्वामी	पंथ	=	रास्ता

नपुंसक लिंग शब्द :

अण्णाण	=	अज्ञान	रस	=	रस
अभिहाण	=	नाम	लावण्ण	=	लावण्य
आकड्ढण	=	आकर्षण	वर	=	अच्छा
उववण	=	उपवन	विचित्त	=	विचित्र
कसिण	=	काला	संवेयण	=	संवेदन
घय	=	घी	संगहण	=	संग्रह
जीवण	=	जीवन	सच्च	=	सत्य
धिज्ज	=	धैर्य	सच्छ	=	स्वच्छ
तिण	=	तृण (घास)	सढ	=	शठता
णाण	=	ज्ञान	समप्पण	=	समर्पण
पत्त	=	बर्तन	सम्माण	=	सम्मान
पाण	=	प्राण	सर	=	तालाब
रज्ज	=	राज्य	सासण	=	शासन

स्त्रीलिंग शब्द :

आसत्ति	=	आसक्ति	लआ	=	लता
खमा	=	क्षमा	लज्जा	=	लज्जा
तारगा	=	तारे	विज्जा	=	विद्या
भत्ति	=	भक्ति	सड्ढा	=	श्रद्धा
भासा	=	भाषा	सत्ति	=	शक्ति
रज्जु	=	रस्सी	सोहा	=	शोभा

अव्यय :

अणेअ	=	अनेक	जं	=	जो
अम्मो	=	आश्चर्य	जहा	=	जैसे
अलं	=	बस	जहिं	=	जहाँ
अवस्स	=	अवश्य	जाव	=	जब तक
इत्थं	=	इस प्रकार	तहा	=	उस प्रकार से
एगया	=	एक बार	तहिं	=	वहाँ
कल्ल	=	कल	तारिसो	=	वैसा
कहिं	=	कहाँ	ताव	=	तब तक
किं	=	क्यों	दुट्ठु	=	खराब
केरिसो	=	कैसा	धुव	=	निश्चय
केवल	=	केवल	तओ	=	उसके बाद
खिप्पं	=	शीघ्र	पच्छा	=	बाद में
पुणो	=	फिर से	पुव्व	=	पहले

5. संज्ञा शब्द :

पाठ

२३

अकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिंग) : **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
बालअ	=	बालक	बालओ	बालओ
पुरिस	=	आदमी	पुरिसो	पुरिसा
छत्त	=	छात्र	छत्तो	छत्ता
सीस	=	शिष्य	सीसो	सीसा

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

बालओ सीखइ	=	बालक सीखता है।
पुरिसो दाणिं लिहइ	=	आदमी इस समय लिखता है।
छत्तो पण्हं पुच्छइ	=	छात्र प्रश्न पूछता है।
सीसो सया झाइ	=	शिष्य सदा ध्यान करता है।
णरो दव्वं गिण्हइ	=	मनुष्य धन ग्रहण करता है।

बहुवचन

बालआ सीखन्ति	=	बालक सीखते हैं।
पुरिसा दाणिं लिहन्ति	=	आदमी इस समय लिखते हैं।
छत्तो पण्हं पुच्छन्ति	=	छात्र प्रश्न पूछते हैं।
सीसो सया झान्ति	=	शिष्य सदा ध्यान करते हैं।
णरा दव्वं गिण्हन्ति	=	मनुष्य धन ग्रहण करते हैं।

शब्दकोष (पु.) :

निव	=	राजा	मेह	=	बादल
बुह	=	बुद्धिमान	मिअ	=	मृग
भड	=	योद्धा	सीह	=	सिंह
देव	=	देवता	मोर	=	मोर
आयरिअ	=	आचार्य	चोर	=	चोर

प्राकृत बनाओ :

राजा पालन करता है। बुद्धिमान पुस्तक पढ़ता है। योद्धा जीतता है। देवता सन्तुष्ट होता है। आचार्य कथा कहता है। बादल गरजता है। मृग डरता है। सिंह वहाँ रहता है। मोर नाचता है। चोर यहाँ आता है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों की बहुवचन में प्राकृत बनाइए।

पाठ २४

इकारान्त एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिंग) : **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
सुधि	=	विद्वान्	सुधी	सुधिणो
कवि	=	कवि	कवी	कविणो
कुलवइ	=	कुलपति	कुलवई	कुलवइणो
सिसु	=	बच्चा	सिसू	सिसुणो
साहु	=	साधु	साहू	साहुणो

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

सुधी उवदिसइ	=	विद्वान् उपदेश देता है।
कवी पत्तं लिहइ	=	कवि पत्र लिखता है।
कुलवई दव्वं गिण्हइ	=	कुलपति धन ग्रहण करता है।
सिसू तत्थ खेलइ	=	बच्चा वहाँ खेलता है।
साहू पण्हं पुच्छइ	=	साधु प्रश्न पूछता है।

बहुवचन

सुधिणो उवदिसन्ति	=	विद्वान् उपदेश देते हैं।
कवणिो लिहन्ति	=	कवि लिखते हैं।
कुलवइणो किं गिण्हन्ति	=	कुलपति क्या ग्रहण करते हैं?
सिसुणो तत्थ खेलन्ति	=	बच्चे वहाँ खेलते हैं।
साहुणो किं पुच्छन्ति	=	साधु क्या पूछते हैं?

शब्दकोष (पु.) :

सेट्ठि	=	सेठ	नाणि	=	ज्ञानी	जन्तु	=	प्राणी
हत्थि	=	हाथी	पक्खि	=	पक्षी	गुरु	=	गुरु
जोगि	=	योगी	उदहि	=	समुद्र	तरु	=	वृक्ष
मुणि	=	मुनि	भिक्खू	=	भिक्षु	धणु	=	धनुष
तवस्सि	=	तपस्वी	पिउ	=	पिता	पसु	=	पशु
भूवइ	=	राजा	पहु	=	स्वामी	बाहु	=	भुजा
गहवइ	=	मुखिया	रिउ	=	शत्रु	फरसु	=	कुल्हाड़ा

प्राकृत बनाओ :

तपस्वी कहाँ तप करता है? राजा क्रोध नहीं करता है। मुखिया प्रशंसा करता है। ज्ञानी लिप्त नहीं होता है। पक्षी प्रतिदिन उड़ता है। शत्रु निन्दा करता है। धनुष टूटता है। वृक्ष गिरता है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों की बहुवचन में प्राकृत बनाइए।

पाठ २५

नियम : प्रथमा (पु. संज्ञा शब्द)

नि. २० : पुरुषवाचक संज्ञा शब्दों में अकारान्त शब्द के आगे प्रथम विभक्ति में -

(क) एक वचन में 'ओ' प्रत्यय लगता है।' जैसे -
पुरिस = **पुरिसो**, णर = **णरो**, देव = **देवो** आदि।

(ख) बहुवचन में 'आ' प्रत्यय लगता है। जैसे -
पुरिस = **पुरिसा**, णर = **णरा**, देव = **देवा** आदि।

नि. २१ : इकारान्त शब्दों के आगे प्रथमा विभक्ति में -

(क) एक वचन में 'इ' प्रत्यय लगता है। अतः शब्द की 'इ' दीर्घ 'ई' हो जाती है। जैसे - कवि = **कवी**, सेट्ठि = **सेट्ठी**, हत्थि = **हत्थी**, आदि।

(ख) बहुवचन में शब्दों के साथ 'णो' जुड़ जाता है। जैसे -
कवि = **कविणो**, सेट्ठि = **सेट्ठिणो**, हत्थि = **हत्थिणो**, आदि।

नि. २२ : उकारान्त शब्दों का 'उ' प्रथमा एकवचन में -

(क) दीर्घ 'ऊ' हो जाता है। जैसे
सिसु = **सिसू**, विउ = **विऊ**, साहु = **साहू**, आदि।

(ख) उकारान्त बहुवचन में शब्द के साथ 'णो' जुड़ जाता है। जैसे -
सिसु = **सिसुणो**, विउ = **विउणो**, साहु = **साहुणो**, आदि।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो :

निवो खमीअ। मेहा गजन्ति। मोरा णच्चन्ति। देवा तूसीअ। भूवइणो भविहिइ। मुणिणो ण हिंसीअ। पक्खिणो उड्डेहिंति। नाणी सया जिणइ। पहू पसंसइ। रिउणो निन्दिहिंति। गुरुणो कहं भणीअ। पिऊ तत्थ णच्चिहिइ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मृग काँपता है। सिंह गर्जन करेगा। आचार्य उपदेश देंगे। योद्धा वहाँ लड़े। कुलपति प्रश्न पूछेगा। तपस्वी ने वहाँ तप किया। मुखिया वहाँ रहते हैं। प्राणी उत्पन्न होंगे। वे आज वृक्षों को काटेंगे। तुम धनुष तोड़ो। पशु वहाँ जायेंगे।

निर्देश : प्राकृत वैयाकरणों ने प्राकृत शब्दों के एकवचन एवं बहुवचन में कई प्रत्ययों का विकल्प से विधान किया है। किन्तु इस पुस्तक में सरलता की दृष्टि से केवल एक-एक प्रत्यय का ही प्रयोग किया गया है। यही दृष्टिकोण आगे की सभी विभक्तियों में रखा गया है।

पाठ २६

अकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
बाला	=	बालिका	बाला	बालाओ
माआ	=	माता	माआ	माआओ
सुण्हा	=	बहू	सुण्हा	सुण्हाओ
माला	=	माल	माला	मालाओ

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

बाला वड्ढइ	=	बालिका बढ़ती है।
माआ अच्चइ	=	माता पूजा करती है।
सुण्हा लज्जइ	=	बहू लजाती है।
माला सोहइ	=	माला शोभित होती है।

बहुवचन

बालाओ वड्ढन्ति	=	बालिकाएं बढ़ती हैं।
माआओ अच्चन्ति	=	माताएं पूजा करती हैं।
सुण्हाओ लज्जन्ति	=	बहुएं लजाती हैं।
मालाओ सोहन्ति	=	मालाएं शोभित होती हैं।

शब्दकोष (स्त्री.) :

विज्जुला	=	बिजली	कमला	=	लक्ष्मी
सरिआ	=	नदी	गोवा	=	ग्वालिन
नावा	=	नाव	छालिया	=	बकरी
कन्ना	=	कन्या	भज्जा	=	पत्नी
धूआ	=	पुत्री	निसा	=	रात्रि

प्राकृत बनाओ :

बिजली चमकती है। नदी बहती है। नाव तैरती है। कन्या कहती है। पुत्री गीत गाती है। लक्ष्मी यहाँ आती है। ग्वालिन दूध दुहती है। बकरी डरती है। पत्नी वस्त्र सीती है। रात्रि बीतती है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों को बहुवचन में प्राकृत बनाइए।

पाठ २७

इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
जुवइ	=	युवति	जुवई	जुवईओ
नई	=	नदी	नई	नईओ
साडी	=	साड़ी	साडी	साडीओ
धेणु	=	गाय	धेणू	धेणूओ
बहू	=	बहू	बहू	बहूओ
सासू	=	सास	सासू	सासूओ

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

जुवई पइदिणं अच्चइ	=	युवति प्रतिदिन पूजा करती है।
नई सणिअं बहइ	=	नदी धीरे बहती है।
साडी सोहइ	=	साड़ी अच्छी लगती है।
धेणू दुद्धं दाइ	=	गाय दूध देती है।
बहू सया सेवइ	=	बहू सदा सेवा करती है।
सासू वत्थं कीणइ	=	सास वस्त्र खरीदती है।

बहुवचन

जुवईओ पइदिणं अच्चन्ति	=	युवतियाँ प्रतिदिन पूजा करती हैं।
नईओ सणिअं बहन्ति	=	नदियाँ धीरे बहती हैं।
साडीओ सोहन्ति	=	साड़ियाँ अच्छी लगती हैं।
धेणूओ दुद्धं दान्ति	=	गायें दूध देती हैं।
बहूओ न सेवन्ति	=	बहूएं सेवा नहीं करती हैं।
सासूओ न लज्जन्ति	=	सासें नहीं लजाती हैं।

शब्दकोष (स्त्री.) :

कुमारी	=	कुंआरी	धाई	=	धाय
बहिणी	=	बहिन	लच्छी	=	लक्ष्मी
इत्थी	=	स्त्री	नडी	=	नटी (नर्तकी)
रत्ति	=	रात्रि	मऊरी	=	मोरनी
दासी	=	नौकरानी	विज्जु	=	बिजली

निर्देश : इन्हीं शब्दों के एक वचन और बहुवचन में प्राकृत के वाक्य बनाइए।

□□

पाठ २८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) : **प्रथमा विभक्ति**

शब्द		अर्थ	एकवचन	बहुवचन
णयर	=	नगर	णयरं	णयराणि
फल	=	फल	फलं	फलाणि
पुप्फ	=	फूल	पुप्फं	पुप्फाणि
कमल	=	कमल	कमलं	कमलाणि
घर	=	घर	घरं	घराणि
खेत्त	=	खेत, मैदान	खेत्तं	खेत्ताणि
सत्थ	=	शास्त्र	सत्थं	सत्थाणि
वारि	=	पानी	वारिं	वारीणि
दहि	=	दही	दहिं	दहीणि
वत्थु	=	वस्तु	वत्थुं	वत्थूणि

सर्वनाम (नपुं.) :

इम	=	यह	इमं	इमाणि
त	=	वह	तं	ताणि

उदाहरण वाक्य :

एक वचन			बहुवचन		
इमं णयरं अत्थि	=	यह नगर है।	इमाणि णयराणि संति	=	ये नगर हैं।
तं फलं अत्थि	=	वह फल है।	ताणि फलाणि संति	=	वे फल हैं।
पुप्फं अत्थि	=	फूल है।	पुप्फाणि संति	=	फूल हैं।
कमलं अत्थि	=	कमल है।	कमलाणि संति	=	कमल हैं।
घरं अत्थि	=	घर है।	घराणि संति	=	घर हैं।
खेत्तं अत्थि	=	खेत है।	खेत्ताणि संति	=	खेत हैं।
सत्थं अत्थि	=	शास्त्र है।	सत्थाणि संति	=	शास्त्र हैं।
वरिं अत्थि	=	पानी है।	वारीणि संति	=	पानी हैं।
दहिं अत्थि	=	दही है।	दहीणि संति	=	दही हैं।
वत्थुं अत्थि	=	वस्तु है।	वत्थूणि संति	=	वस्तुएं हैं।

शब्दकोष (नपुं.) :

भय	=	भय	सद्द	=	शब्द	कम्म	=	कर्म
सर	=	तालाब	सुह	=	सुख	वण	=	जंगल
सअड	=	गाड़ी	दुह	=	दुःख	कव्व	=	काव्य
सच्च	=	सत्य	रिण	=	कर्ज	धण	=	धन

निर्देश : इन शब्दों के नपुं. एकवचन एवं बहुवचन में प्राकृत के वाक्य बनाइए।

पाठ २१

नियम : प्रथमा (स्त्री., नपुं.)

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. २३ : (क) स्त्रीलिंग आकारान्त शब्द प्रथमा विभक्ति में एकवचन में यथावत् रहते हैं। उनमें कोई प्रत्यय नहीं जुड़ता।
जैसे - बाला = **बाला**, सुण्ह = **सुण्हा** इत्यादि।

(ख) बहुवचन में शब्द के आगे 'ओ' प्रत्यय जुड़ता है।
जैसे - बाला = **बालाओ**, सुण्हा = **सुण्हाओ** आदि।

नि. २४ : इकारान्त शब्दों की 'ई' प्रथमा विभक्ति : **(क)** एकवचन में दीर्घ 'ई' हो जाती है।
यथा - जुवइ = **जुवई** आदि। तथा ईकारान्त शब्द यथावत् रहते हैं।
जैसे - नई = **नई**, साडी - **साडी** आदि।

(ख) बहुवचन में दीर्घ 'ई' होकर 'ओ' प्रत्यय जुड़ता है।
जैसे - जुवइ = **जुवईओ**, नई = **नईओ**, साडी = **साडीओ** आदि।

नि. २५ : (क) उकारान्त शब्द प्रथमा विभक्ति एकवचन में दीर्घ 'ऊ' वाले हो जाते हैं।
यथा - धेणु = **धेणु**, सासू = **सासू** आदि।

(ख) बहुवचन में इनमें दीर्घ 'ऊ' होकर 'ओ' प्रत्यय लगता है।
यथा - धेणु = **धेणूओ**, सासु = **सासूओ** आदि।

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. २६ : (क) नपुंसकलिंग के अ, इ एवं उकारानत शब्दों के आगे प्रथमा विभक्ति में एकवचन के अनुस्वार (ं) प्रत्यय लगता है।
जैसे - नयर = **णयरं**, वारि = **वारि**, वत्थु = **वत्थुं** आदि।

(ख) बहुवचन में अ, इ, एवं उ दीर्घ हो जाते हें तथा 'णि' प्रत्यय जुड़ता है।
जैसे - णयर = **णयराणि**, वारि = **वारीणि**, वत्थु = **वत्थूणि** आदि।

(ग) नपुं. सर्वनामों में भी यही प्रत्यय लगते हैं।
यथा - इम = **इमं**, त = **तं**, इम = **इमाणि**, त = ताणि।

हिन्दी में अनुवाद करो :

तत्थ विज्जुला चमक्कीअ। छालियाओ कत्थ गच्छन्ति। दासी पइदिणं सेविहिइ। तत्थ नडीओ णच्चीअ। सअडाणि सन्ति। रिणं अत्थि। धूआओ तत्थ पढन्ति। भारिया वत्थं कीणिहिइ। कुमारीओ अच्चन्ति। सुहाणि सन्ति।

पाठ ३०

सर्वनाम (पु., स्त्री.) : **द्वितीया विभक्ति** = को

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	ममं	=	मुझको	अम्हे	=	हम सब/हम दोनों को
	तुमं	=	तुमको	तुम्हे	=	तुम सब/तुम दोनों को
(पु.)	तं	=	उसको	ते	=	उन सब/उन दोनों को
(स्त्री.)	तं	=	उसको	ताओ	=	उन सब/ उन सब को
(पु.)	इमं	=	इसको	इमे	=	इनको/इन दोनों को
(स्त्री.)	इमं	=	इसको	इमाओ	=	इनको/इन दोनों को
(पु.)	कं	=	किसको	के	=	किनको/किन दोनों को
(स्त्री.)	कं	=	किसको	काओ	=	किनको/किन दोनों को

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

ते ममं पासन्ति	=	वे मुझको देखते हैं।
अहं तुमं जाणामि	=	मैं तुमको जानता हूँ।
तुमं तं पुच्छसि	=	तुम उसको पूछते हो।
सो तं पासइ	=	वह उसको (स्त्री) देखता है।
अहं इमं नमामि	=	मैं इसको नमन करता हूँ।

बहुवचन

ते अम्हे पासन्ति	=	वे हम सबको देखते हैं।
अहं तुम्हे जाणामि	=	मैं तुम सबको जानता हूँ।
तुमं ते पुच्छसि	=	तुम उन सबको पूछते हो।
सो ताओ नमइ	=	वह उन सबको (स्त्री) नमन करता है।
अहं इमे नमामि	=	मैं इनको नमन करता हूँ।
तुमं काओ पाससि	=	तुम किन (स्त्रियों) को देखते हो?

प्राकृत बनाओ :

मैं तुमको देखता हूँ। बालक मुझको जानता है। राजा उसको पूछता है। वह हम सबको नमन करता है। तुम हम दोनों को देखते हो। वह तुम सबको जानता है। मैं तुम दोनों को नमन करता हूँ। तुम उस (स्त्री) को देखते हो। साधु उन सबको जानता है। कुलपति उन दोनों को पूछता है। तुम उन सब (स्त्रियों) को जानते हो। मैं उस दोनों (स्त्रियों) को देखता हूँ।

पाठ ३१

अ. इ. एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु.,) : द्वितीया विभक्ति = को

शब्द	द्वितीया एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअं	बालआ
पुरिस	पुरिसं	पुरिसा
छत्त	छत्तं	छत्ता
सीस	सीसं	सीसा
णर	णरं	णरा
सुधि	सुधिं	सुधिणो
कवि	कविं	कविणो
कुलवइ	कुलवइं	कुलवइणो
सिसु	सिसुं	सिसुणो
साहू	साहुं	साहुणो

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

पिऊ बालअं पालइ	=	पिता बालक को पालता है।
पहू पुरिसं पेसइ	=	स्वामी आदमी को भेजता है।
गुरू छत्तं उवदिसइ	=	गुरु छात्र को उपदेश देता है।
आयरिओ सीसं खमइ	=	आचार्य शिष्य को क्षमा करता है।
भूवई णरं बंधइ	=	राजा मनुष्य को बाँधता है।
निवो सुधिं जाणइ	=	नृप बुद्धिमान को जानता है।
सो कविं पासइ	=	वह कवि को देखता है।
कुलवइं को ण जाणइ	=	कुलपति को कौन नहीं जानता है?
माआ सिसुं गिण्हइ	=	माता बच्चे को लेती है।
बुहा साहुं पुच्छन्ति	=	बुद्धिमान साधु को पूछते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह बालक को जानता है। मैं आदमी को देखता हूँ। गुरु शिष्य को उपदेश देता है। वे मनुष्य को बाँधते हैं। बालक देव को नमन करते हैं। राजा योद्धा को बाँधता है। वह कुलपति को नहीं जानता है। आचार्य तपस्वी को जानते हैं। माता शिशु को पालती है। साधु को कौन नहीं जानता है?

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (पु.)

पिऊ बालआ पालइ	=	पिता बालकों को पालता है।
पहू पुरिसा पेसइ	=	स्वामी आदमियों को भेजता है।
गुरू छत्ता उवदिसइ	=	गुरु छात्रों को उपदेश देता है।
आयरिओ सीसा खमइ	=	आचार्य शिष्यों को क्षमा करता है।
भूवई णरा बंधइ	=	राजा मनुष्यों को बाँधता है।
निवो सुधिणो जाणइ	=	नृप विद्वानों को जानता है।
सो कविणो पासइ	=	वह कवियों को देखता है।
कुलवइणो को ण जाणइ	=	कुलपतियों को कौन नहीं जानता है?
माआ सिसुणो गिण्हइ	=	माता बच्चों को लेती है।
बुहा साहुणो पुच्छन्ति	=	विद्वान् साधुओं को पूछते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं बालक को जानता हूँ। वह आदमियों को देखता है। साधु शिष्यों को उपदेश देता है। राजा मनुष्यों को बाँधते हैं। कन्यायें देवताओं को नमन करती हैं। शत्रु योद्धाओं को जीतता है। वे कुलपतियों को जानते हैं। राजा कवियों को पूछता है। माता शिशुओं को पालती है। विद्वानों को कौन नहीं जानता है?

शब्दकोष (पु.) :

उवज्झाय	=	उपाध्याय	पुत्त	=	पुत्र
इंद	=	इन्द्र	चाइ	=	त्यागी
अज्ज	=	सज्जन	मंति	=	मंत्री
समण	=	श्रमण	गुरु	=	गुरु
जीव	=	जीव	बंधु	=	भाई

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम उपाध्याय को नमन करो। वह इन्द्र को देखे। तुम सब सज्जन को नमन करो। वह श्रमण को न छुए। जीव को न मारो। पुत्र को पालो। वे त्यागी को पूछें। तुम मंत्री को न भेजो। वह गुरु को क्रोधित न करे। तुम भाई को क्षमा करो।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों के बहुवचन द्वितीया में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ३२

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : **द्वितीया विभक्ति = क**

शब्द	द्वितीया एकवचन	बहुवचन
बाला	बालं	बालाओ
माआ	माअं	माआओ
सुण्हा	सुण्हं	सुण्हाओ
माला	मालं	मालाओ
जुवइ	जुवइं	जुवईओ
नई	नइं	नईओ
साडी	साडिं	साडीओ
बहू	बहुं	बहूओ
धेणु	धेणुं	धेणूओ
सासू	सासुं	सासूओ

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

माआ बालं इच्छइ = माता बालिका को चाहती है।
धूआ माअं नमइ = पुत्री माता को नमन करती है।
सा सुण्हं जाणइ = वह बहू को जानती है।
इत्थी मालं धारइ = स्त्री माला को धारण करती है।
भूवई जुवइं पासइ = राजा युवती को देखता है।
भडो नइं तरइ = योद्धा नदी को तैरता है।
सुण्हा साडिं इच्छइ = बहू साड़ी को चाहती है।
सो बहुं पुच्छइ = वह बहू को पूछता है।
णरो धणुं गिण्हइ = मनुष्य गाय को ग्रहण करता है।
जुवई सासुं नमइ = युवती सास को नमन करती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं बालिका को देखता हूँ। माता बहू को जानता है। पुत्री माला को धारण करती है। वह साड़ी को चाहती है। सासु बहु को क्षमा करती है। बहू सास को नमन करती है। राजा माला को धारण करता है। युवती गाय को देखती है। साड़ी को कौन नहीं चाहती है? बहू को कौन जानता है?

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री.)

माआ बालाओ पेसइ	=	माता बालिकाओं को भेजती है।
धूआ माआओ नमइ	=	लड़की माताओं को नमन करती है।
ताओ सुण्हाओ जाणन्ति	=	वे बहुओं को जानती हैं।
इत्थीओ मालाओ धारन्ति	=	स्त्रियाँ मालाओं को धारण करती हैं।
भूवई जुवईओ पासइ	=	राजा युवतियों को देखता है।
भडो नईओ तरइ	=	योद्धा नदियों को पार करता है।
सुण्हाओ साडीओ इच्छन्ति	=	बहुएं साड़ियों को चाहती हैं।
सासू बहूओ पुच्छइ	=	सास बहुओं को पूछती है।
णरो धेणूओ गिण्हइ	=	मनुष्य गायों को लेता है।
जुवईओ सासूओ नमन्ति	=	युवतियाँ सासों को नमन करती हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह बालिकाओं को देखती है। मैं कन्याओं को जानता हूँ। माता बहुओं को पूछती है। पुत्रियाँ मालाओं को धारण करती हैं। साड़ियों को कौन नहीं चाहती है? सासें बहुओं को क्षमा करती हैं। बहू सासों को जानती है। युवती गायों को देखती है। योद्धा युवतियों को देखता है। नदियों को कौन पार करता है?

शब्दकोष (पु.) :

निसा	=	रात्रि	तरुणी	=	जवान स्त्री
दिसा	=	दिशा	साहुणी	=	साध्वी
गिरा	=	वाणी	पुहवी	=	पृथ्वी
अच्छरसा	=	अप्सरा	सिप्पी	=	सीपी
आणा	=	आज्ञा	वावी	=	वाणी

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह रात्रि को देखता है। मैं पूर्व दिशा को जाऊंगा। वह वाणी को सुने। हम सब अप्सरा को देखें। तुम उस आज्ञा को मानो। वह तरुणी को वस्त्र देता है। तुम साध्वी को नमन करो। उसने पृथ्वी को देखा। वह सीपी को लेता है। मैं वापी को बाँधता हूँ।

निर्देश : इन वाक्यों का बहुवचन (द्वितीया) में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ३३

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) : **द्वितीया विभक्ति** = को

शब्द	**द्वितीया एकवचन**	**बहुवचन**
णयर	णयरं	णयराणि
फल	फलं	फलाणि
पुप्फ	पुप्फं	पुप्फाणि
कमल	कमलं	कमलाणि
घर	घरं	घराणि
खेत्त	खेत्तं	खेत्ताणि
सत्थ	सत्थं	सत्थाणि
वारि	वारिं	वारीणि
दहि	दहिं	दहीणि
वत्थु	वत्थुं	वत्थूणि

सर्वनाम (नपुं.) :

इमं = इमाणि
तं = ताणि

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

पुरिसो तं णयरं गच्छइ	=	आदमी उस नगर को जाता है।
बालओ इदं फलं इच्छइ	=	बालक इस फल को चाहता है।
अहं पुप्फं पासामि	=	मैं फूल को देखता हूँ।
सो कमलं गिण्हइ	=	वह कमल को लेता है।
सेट्ठी घरं गच्छइ	=	सेठ घर को जाता है।
णरो खेत्तं कस्सइ	=	मनुष्य खेत को जोतता है।
छत्तो सत्थं पढइ	=	छात्र शास्त्र को पढता है।
कन्ना वारिं पबिइ	=	कन्या पानी को पीती है।
सुण्हा दहिं खाइ	=	बहू दही को खाती है।
साहू वत्थुं ण इच्छइ	=	साधु वस्तु को नहीं चाहता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

बालक नगर को जाता है। तुम कल को चाहते हो। पुरुष फूल को देखता है। कन्या दही को खाती हे। विद्वान् घर को जाता है। युवती कमल को लेती है। छात्र खेत को जोतता है। बालिका पानी को पीती है। बहू शास्त्र पढ़ती है। मुनि वस्तु को नहीं चाहता है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (नपुं.)

भूवई इमाणि णयराणि जयइ	=	राजा इन नगरों को जीतता है।
बालओ ताणि पुप्फाणि इच्छइ	=	बालक उन फूलों को चाहता है।
अहं फलाणि भुंजामि	=	मैं फलों को खाता हूँ।
पुरिसो कमलाणि गिण्हइ	=	आदमी कमलों को लेता है।
सो घराणि पासइ	=	वह घरों को देखता है।
णरो खेत्ताणि कस्सइ	=	मनुष्य खेतों को जोतता है।
सीसो सत्थाणि पढइ	=	शिष्य शास्त्रों को पढ़ता है।
नई वारीणि गिण्हइ	=	नदी पानी को ग्रहण करती है।
कन्ना दहीणि पासइ	=	कन्या दही को देखती है।
वत्थूणि को ण इच्छइ	=	वस्तुओं को कौन नहीं चाहता है?

प्राकृत में अनुवाद करो :

मनुष्य नगरों को देखता है। वह फलों को खाता है। मैं फूलों को ग्रहण करता हूँ। बालिका कमलों को देखती है। युवतियाँ घरों को जाती हैं। आदमी खेतों को जोतते हैं। छात्र शास्त्रों को पढ़ते हैं। स्त्रियाँ पानी को लाती हैं। कन्याएं दही को देखती हैं। साधु वस्तुओं को नहीं चाहता है।

शब्दकोष (नपुं.) :

नयण	=	आँख	कुल	=	वंश
हियय	=	हृदय	अमिअ	=	अमृत
मित्त	=	मित्र	विस	=	विष
चारित्त	=	चारित्र	अट्ठि	=	हड्डी
पाव	=	पाप	अंसु	=	आंसू

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह आँख को खोलता है। मैं हृदय को जानता हूँ। वह मित्र को सन्तुष्ट करे। हम सब चारित्र को पालें। तुम सब पाप मत करो। पिता कुल को पूछता है। कौन अमृत को नहीं चाहता है? शिव विष को पीता है। वह हड्डी को त्यागता है। वह आंसू को गिराता है।

निर्देश : इन वाक्यों का बहुवचन (द्वितीया) में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ३४

नियम : द्वितीया (पु., स्त्री., नपुं.)

सर्वनाम :

नि. २७ : (क) द्वितीया विभक्ति के एक वचन में अम्ह का **ममं** तथा तुम्ह का **तुमं** रूप बनता है। बहुवचन में प्रथम विभक्ति के समान **अम्हे** और **तुम्हे** रूप बनता है।

(ख) पुल्लिंग सर्वनाम त, इम, एवं क में द्वितीया विभक्ति के एकवचन में अनुस्वार (ं) लग जाता है। बहुवचन में प्रथम विभक्ति के समान रूप बनते हैं।

(ग) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा, का द्वितीया विभक्ति एकवचन में ह्रस्व हो जाते हैं तब उनमें अनुस्वार (ं) लगता है और उनके रूप पुल्लिंग सर्वनामों के समान बनते हैं। यथा- **तं, इमं, कं**। बहुवचन में इन स्त्री, सर्वनामों के रूप प्रथम विभक्ति के समान बनते हैं। यथा - **ताओ, इमाओ, काओ**।

पुल्लिंग शब्द :

नि. २८ : पुल्लिंग 'अ', 'इ' एवं उकारान्त शब्दों के आगे द्वितीया विभक्ति में -

(क) एकवचन में अनुस्वार (ं) प्रत्यय लगता है। जैसे -
बालअ = **बालअं**, सुधि = **सुधिं**, सिसु = **सिसुं** आदि।

(ख) बहुवचन में अकारान्त शब्दों के आगे दीर्घ '**आ**' लग जाता है।
जैसे - बालअ = **बालआ**, पुरिसं = **पुरिसा** आदि।

(ग) इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों के आगे '**णो**' प्रत्यय लग जाता है।
जैसे - सुधि = **सुधिणो**, सिसु = **सिसुणो**, आदि।

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. २९ : स्त्रीलिंग आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त शब्दों के आगे द्वितीया विभक्ति में -

(क) एकवचन में (ं) प्रत्यय लगता है एवं शब्द के अन्त में आ, ई, तथा ऊ ह्रस्व हो जाते हैं। जैसे - बाला = **बालं**, नई = **नइं**, बहू = **बहुं** आदि।

(ख) बहुवचन में आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त शब्दों के आगे 'ओ' प्रत्यय लगता है। जैसे- बाला = **बालाओ**, नई = **नईओ**, बहू = **बहूओ**, आदि।

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. ३० : नपुसंकलिंग अ, इ एवं ऊकारान्त शब्दों एवं सर्वनामों के रूप द्वितीया विभक्ति के एकवचन एवं बहुवचन में प्रथमा विभक्ति के समान ही होते हैं। यथा -

ए. व. - णयरं, वारिं, वत्थुं, इमं, तं,
ब. व. - णयराणि, वारीणि, वत्थूणि, इमाणि, ताणि

पाठ ३५

सर्वनाम (पु., स्त्री.) : **तृतीया** = के द्वारा, साथ, से

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	मए	=	मेरे द्वारा	अम्हेहि	=	हमारे/हम दोनों के द्वारा
	तुमए	=	तेरे द्वारा	तुम्हेहि	=	तुम्हारे/तुम दोनों के द्वारा
(पु.)	तेण	=	उसके द्वारा	तेहि	=	उनके/उन दोनों के द्वारा
(स्त्री.)	ताए	=	उसके द्वारा	ताहि	=	उसके/ उन दोनों के द्वारा
(पु.)	इमेण	=	इसके द्वारा	इमेहि	=	इन सबके द्वारा
(स्त्री.)	इमाए	=	इसके द्वारा	इमाहि	=	इन सबके द्वारा
(पु.)	केण	=	किसके द्वारा	केहि	=	किन सबके द्वारा
(स्त्री.)	काए	=	किसके द्वारा	काहि	=	किन सबके द्वारा

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

इमं कज्जं मए होइ	=	यह कार्य मेरे द्वारा होता है।
त कज्जं तुमए होइ	=	वह कार्य तेरे द्वारा होता है।
इमं कज्जं तेण होइ	=	यह कार्य उसके द्वारा होता है।
तं कज्जं ताए होइ	=	वह कार्य उस (स्त्री) द्वारा होता है।
तं कज्जं इमेण होइ	=	वह कार्य इसके द्वारा होता है।
इमं कज्जं काए होइ	=	यह कार्य किस (स्त्री) द्वारा होता है।

बहुवचन

इमाणि कज्जाणि अम्हेहि होन्ति	=	ये कार्य हमारे द्वारा होते हैं।
ताणि कज्जाणि तुम्हेहि होन्ति	=	वे कार्य तुम्हारे द्वारा होते हैं।
इदं दुक्खं तेहि होइ	=	यह दु:ख उनके द्वारा होता है।
तं सुक्खं ताहि होइ	=	वह सुख उन स्त्रियों के द्वारा होता है।
तं कज्जं इमेहि होइ	=	वह कार्य इन सबके द्वारा होता है।
तं दुक्खं काहि होइ	=	वह दु:ख किन स्त्रियों के द्वारा होता है?

प्राकृत बनाओ :

यह सुख मेरे द्वारा होता है। यह कार्य तेरे द्वारा होता है। यह कार्य उसके द्वारा होता है। वे कार्य हमारे द्वारा होते हैं। यह कार्य तुम दोनों के द्वारा होता है। यह कार्य उन दोनों के द्वारा होता है। ये कार्य उन स्त्रियों के द्वारा होते हैं। यह दु:ख उस स्त्री के द्वारा होता है। यह कार्य उन दोनों स्त्रियों के द्वारा होता है। वे कार्य तुम सबके द्वारा होते हैं। ये कार्य किन सबके द्वारा होते हैं?

पाठ ३६

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु.) : **तृतीया** = के द्वारा, साथ से

शब्द	तृतीया एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालएण	बालएहि
पुरिस	पुरिसेण	पुरिसेहि
छत्त	छत्तेण	छत्तेहि
सीस	सीसेण	सीसेहि
णर	णरेण	णरेहि
सुधि	सुधिणा	सुधीहि
कवि	कविणा	कवीहि
कुलवइ	कुलवइणा	कुलवईहि
सिसु	सिसुणा	सिसूहि
साहू	साहुणा	साहूहि

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

अहं बालएण सह गच्छामि	=	मैं बालक के साथ जाता हूँ।
बालओ पुरिसेण सह वसइ	=	बालक आदमी के साथ रहता है।
इमं कज्जं छत्तेण होइ	=	यह कार्य छात्र के द्वारा होता है।
साहू सीसेण सह भुंजइ	=	साधु शिष्य के साथ भोजन करता है।
ताणि कज्जाणि नरेण होन्ति	=	वे कार्य मनुष्य के द्वारा होते हैं।
तं कज्जं सुधिणा होइ	=	वह कार्य विद्वान् के द्वारा होता है।
कविणा कज्जं होइ	=	कवि के द्वारा कार्य होता है।
निवो कुलवइणा सह गच्छइ	=	राजा कुलपति के साथ जाता है।
माआ सिसुणा सह वसइ	=	माता बच्चे के साथ रहती है।
सीसो साहुणा सह पढइ	=	शिष्य साधु के साथ पढ़ता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह बालक के साथ रहता है। मैं आदमी के साथ जाता हूँ। ये कार्य शिष्य के द्वारा होते हैं। साधु छात्र के साथ भोजन करता है। वह कार्य मनुष्य के द्वारा होता है। वे कार्य विद्वान के द्वारा होते हैं। राजा कवि के साथ रहता है। कुलपति के द्वारा वह कार्य होता है। माता बच्चे के साथ जाती है। वे साधु के साथ जाते हैं।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (नपुं.)

अहं बालएहि सह गच्छामि	=	मैं बालकों के साथ जाता हूँ।
बालओ पुरिसेहि सह वसइ	=	बालक आदमियों के साथ रहता है।
इमाणि कज्जाणि छत्तेहि होन्ति	=	ये कार्य छात्रों के द्वारा होते हैं।
साहू सीसेहि सह भुंजइ	=	साधु शिष्यों के साथ भोजन करता है।
ताणि कज्जाणि णरेहि होन्ति	=	वे कार्य मनुष्यों के द्वारा होते हैं।
तं कज्जं सुधीहि होइ	=	वह कार्य विद्वानों के द्वारा होता है।
कवीहि कज्जं होइ	=	कवियों के द्वारा कार्य होता है।
निवो कुलवईहि सह गच्छइ	=	राजा कुलपतियों के साथ जाता है।
माआ सिसूहि सह वसइ	=	माता बच्चों के साथ रहती है।
सीसो साहूहि सह पढइ	=	शिष्य साधुओं के साथ पढ़ता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह बालकों के साथ रहता है। मैं आदमियों के साथ हाता हूँ। ये कार्य शिष्यों के द्वारा होते हैं। साधु छात्रों के साथ भोजन करता है। वह कार्य मनुष्यों के द्वारा होता है। वे कार्य विद्वानों के द्वारा होते हैं। राजा कवियों के साथ रहता है। यह कार्य कुलपतियों के द्वारा होता है। माता बच्चों के साथ जाती है। वे साधुओं के साथ रहते हैं।

शब्दकोष (पु.) :

कर	=	हाथ	केसरि	=	सिंह
कण्ण	=	कान	मणि	=	रत्न
दंत	=	दाँत	फणि	=	साँप
कुन्त	=	भाला	चक्खु	=	आँख
दंड	=	लाठी	केउ	=	ध्वजा

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह हाथ से पुस्तक लेता है। मैंने कान से शब्द सुना। तुमने दाँत से रोटी खायी। उसने भाले से साँप को मारा। हम लाठी से लड़ेंगे। सिंह के साथ कौन रहेगा? मणि से प्रकाश होता है। साँप के साथ वह नहीं रहेगा। वह आँख से चित्र देखता है। ध्वजा से घर शोभित होता है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (तृतीया) में प्राकृत में अनुवाद करो।

□□

पाठ ३७

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : तृतीया = के द्वारा, साथ, से

शब्द	तृतीया एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाए	बालाहि
माआ	माआए	माआहि
सुण्हा	सुण्हाए	सुण्हाहि
माला	मालाए	मालाहि
जुवइ	जुवईए	जुवईहि
नई	नईए	नईहि
साडी	साडीए	साडीहि
बहू	बहूए	बहूहि
धेणु	धेणुए	धेणूहि
सासू	सासूए	सासूहि

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

सा बालाए सह गच्छइ	=	वह बालिका के साथ जाती है।
अहं माआए विणा ण भुंजामि	=	मैं माता के बिना नहीं खाता हूँ।
इमाणि कज्जाणि सुण्हाए होन्ति	=	ये कार्य बहू के द्वारा होते हैं।
मालाए परिणाओ होइ	=	माला से विवाह होता है।
पुरिसो जुवईए सह बसइ	=	आदमी युवती के साथ रहता है।
णयरं नईए विणा ण सोहइ	=	नगर नदी के बिना अच्छा नहीं लगता है।
इत्थी साडीए सोहइ	=	स्त्री साड़ी के द्वारा शोभित होती है।
सासू बहूए सह कलहइ	=	सास बहू के साथ झगड़ती है।
धेणूए सह निवो गच्छइ	=	गाय के साथ राजा जाता है।
सासूए सह सुण्हा वसइ	=	सास के साथ बहू रहती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं बालिका के साथ भोजन करता हूँ। वह माता के बिना नहीं खाता है। यह कार्य बहू के द्वारा होता है। बहू सास के साथ झगड़ती है। मैं गाय के साथ जाता हूँ। बहू साड़ी के बिना अच्छ नहीं लगती है। स्त्री माला से शोभित होती है। नदी के साथ नगर होता है। युवती के साथ राजा जाता है। उसे बहू से सुख होता है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री.)

सा बालाहि सह गच्छइ	=	वह बालिकाओं के साथ जाती है।
बालओ माआहि विणा ण भुंजइ	=	बालक माताओं के बिना नहीं खाता है।
ताणि कज्जाणि सुण्हाहि होन्ति	=	वे कार्य बहुओं के द्वारा होते हैं।
परिणाओ मालाहि होइ	=	विवाह मालाओं से होता है।
सो जुवईहि सह ण वसइ	=	वह युवतियों के साथ नहीं रहता है।
णयरं नईहि विणा ण सोहइ	=	नगर नदियों के बिना शोभित नहीं होता है।
इत्थी साडीहि सोहइ	=	स्त्री साड़ियों से अच्छी लगती है।
सासू बहूहि सह कलहइ	=	सा बहुओं के साथ झगड़ती है।
सो धेणूहि सह गच्छइ	=	वह गायों के साथ जाता है।
सुण्हा सासूहि विणा ण वसइ	=	बहू सासों के बिना नहीं रहती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह बालिकाओं के साथ नाचती है। हम माताओं से क्या सुनते हैं? बहुओं से घर शोभित होता है। माताओं से बच्चे खेलते हैं। युवतियों के साथ राजा जाता है। देश नदियों से समृद्ध होता है। साड़ियों से स्त्रियाँ शोभित होती है। सासों के बिना घर अच्छा नहीं लगता है।

शब्दकोष (स्त्री.) :

णासा	=	नाक	अंगुली	=	उंगली
जीहा	=	जीभ	असी	=	तलवार
कला	=	कला	मेंहदी	=	मेंहदी
ससा	=	बहिन	पसाहणी	=	कंघी
णणंदा	=	ननद	चंचु	=	चोंच

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह नाक से फूल सूँघे। तुम जीभ से फल चखते हो। स्त्री कला के साथ शोभित होती है। वह बहिन के साथ आज जोयगा। युवती ननद के बिना नहीं रहती है। वह उंगली से फूल को छूती है। हम तलवार से हिंसा नहीं करेंगे। स्त्रियाँ मेंहदी से पैर रंगती हैं। मैं कंघी से केश सम्हारता हूँ। पक्षी चोंच से अन्न चुगता है।

निर्देश : इन वाक्यों का बहुवचन (तृतीया) में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ३८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) : **तृतीया** = के द्वारा, साथ, से

शब्द	तृतीया एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरेण	णयरेहि
फल	फलेण	फलेहि
पुप्फ	पुप्फेण	पुप्फेहि
कमल	कमलेण	कमलेहि
घर	घरेण	घरेहि
खेत्त	खेत्तेण	खेत्तेहि
सत्थ	सत्थेण	सत्थेहि
वारि	वारिणा	वारीहि
दहि	दहिणा	दहीहि
वत्थु	वत्थुणा	वत्थूहि

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

णयरेण विणा समिद्धी ण होइ	=	नगर के बिना समृद्धि नहीं होती है।
सो फलेण विणा ण भुंजइ	=	वह फल के बिना भोजन नहीं करता है।
पुप्फेण अच्चा होइ	=	फूल के द्वारा पूजा होती है।
कमलेण सरं सोहइ	=	कमल से तालाब शोभित होता है।
घरेण विणा सुहं णत्थि	=	घर के बिना सुख नहीं है।
खेत्तेण विणा सस्सो ण होइ	=	खेत के बिना फसल नहीं होती है।
सत्थेण पंडिओ होइ	=	शास्त्र से पंडित होता है।
वारिणा विणा जीवणं णत्थि	=	पानी के बिना जीवन नहीं है।
अहं दहिणा सह भुंजामि	=	मैं दही के साथ भोजन करता हूँ।
वत्थुणा परिग्गहो होइ	=	वस्तु से परिग्रह होता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

राजा नगर से शोभित होता है। मैं फल के साथ भोजन करता हूँ। फूल से लता अच्छी लगती है। कमल के बिना सरोवर अच्छा नहीं लगता है। शास्त्र के बिना आदमी मूर्ख होता है। खेत से घर शोभित होता है। वह पानी के बिना भोजन नहीं करता है। वे दही के साथ भोजन करते हैं। वस्तु के बिना समृद्धि नहीं होती है। घर के बिना जीवन नहीं है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (नपुं.)

णयरेहि विणा समिद्धी ण होइ	=	नगरों के बिना समृद्धि नहीं होती
फलेहि विणा सो ण भुंजइ	=	फलों के बिना वह नहीं खाता है।
पुप्फेहि अच्चा होइ	=	फूलों से पूजा होती है।
कमलेहि सरोवरो सोहइ	=	कमलों से सरोवर शोभित होता है।
घरेहि रक्खा होइ	=	घरों से रक्षा होती है।
खेत्तेहि विणा सस्सो ण होइ	=	खेतों के बिना फसल नहीं होती है।
सत्थेहि को पंडिओ होइ	=	शास्त्रों से कौन पंडित होता है?
वारीहि वाहीओ होन्ति	=	पानी से बीमारियाँ होती हैं।
दहीहि सह अम्हे भुंजामो	=	दही के साथ हम भोजन करते हैं।
वत्थूहि सुहं ण होइ	=	वस्तुओं से सुख नहीं होता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

नगरों में व्यापार होता है। वह फलों के साथ भोजन करता है। फूलों से माला बनती है। घरों के बिना जीवन नहीं है। फूलों से लता अच्छी लगती है। कमलों से पूजा होती है। शास्त्रों के बिना ज्ञान नहीं होता है। खेतों से किसान समृद्ध होता है। वस्तुओं के बिना घर नहीं बनता है।

शब्दकोष (नपुं.) :

कुंडल	=	कुण्डल	बीअ	=	बीज
दुग्ग	=	किला	तण	=	तृण (घास)
भायण	=	बर्तन	अक्खि	=	आंख
कट्ठ	=	लकड़ी	जाणु	=	घुटना
आउह	=	शस्त्र	महु	=	शहद

प्राकृत में अनुवाद करो :

बहू कुण्डल से शोभित होती है। नगर किले से अच्छा लगता है। वह बर्तन के बिना भोजन नहीं करता है। मैं लकड़ी से तैरता हूँ। वह शस्त्र से युद्ध करता है। किसान बीज से खेती करता है। बगीचा घास से शोभित होता है। आंख के बिना जीवन नहीं है। बालक घुटनों से चलता है। वह शहद के साथ रोटी खाता है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (तृतीया) में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ३९

नियम : तृतीया (पु., स्त्री., नपुं.)

सर्वनाम :

नि. ३१ : (क) तृतीया के एक वचन में **अम्ह** का **मए** तथा **तुम्ह** का **तुमए** रूप बनता है। बहुवचन में इनमें एकार तथा **हि** प्रत्यय जुड़ जाता है।
यथा - **अम्हेहि, तुम्हेहि।**

(ख) पुल्लिंग सर्वनाम त, इम, एवं क में तृतीया विभक्ति के एकवचन में एकार तथा **ण** प्रत्यय जुड़कर **तेण, इमेण** एवं **केण** रूप बनते हैं। बहुवचन में एकार एवं **हि** प्रत्यय जुड़कर **तेहि, इमेहि** एवं **केहि** रूप बनते हैं।

(ग) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा, का तृतीया विभक्ति एकवचन में **ए** प्रत्यय तथा बहुवचन में **हि** प्रत्यय जुड़कर इस प्रकार रूप बनते हैं -
ए.व. : **ताए, इमाए, काए**। ब.व. : **ताहि, इमाहि, काहि।**

पुल्लिंग शब्द :

नि. ३२ : पुल्लिंग आकारान्त शब्दों के आगे तृतीया विभक्ति में -

(क) एकवचन में **ण** प्रत्यय लगता है तथा शब्द के **अ** को **ए** हो जाता है।
जैसे - बालअ > बालए + ण = **बालएण**, पुरिस > **पुरिसेण**, आदि।

(ख) इकारान्त एवं उकारान्त पु. शब्दों के आगे **'णा'** प्रत्यय लगता है।
जैसे - सुधि = **सुधिणा**, सिसु = **सिसुणा**, आदि।

(ग) बहुवचन में अकारान्त शब्दों के **'आ'** का **'ए'** होता है तथा **'हि'** प्रत्यय लगता है। जैसे - बालअ = बालए + हि = **बालएहि**, पुरिस = **पुरिसेहि।**

(घ) बहुवचन में इकारान्त एवं उकारान्त पु. शब्दों के **'इ'** एवं **'उ'** दीर्घ **'ई'**, **'ऊ'** हो जाते हैं तथा **'हि'** प्रत्यय लगता है।
जैसे - सुधि = सुधी + हि = **सुधीहि**, सिसु = **सिसूहि**, आदि।

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. ३३ : स्त्रीलिंग के 'आ', 'इ', ऊकारान्त शब्दों के आगे तृतीया विभक्ति में -

(क) एकवचन में **'ए'** प्रत्यय लगता है।
जैसे - बाला = **बालए**, नई = **नईए**, बहू = **बहूए** आदि।

(ख) बहुवचन में 'आ', 'ई', ऊकारान्त शब्दों में 'हि' प्रत्यय लगता है।
जैसे - बाला = **बालाहि**, नई = **नईहि**, बहू = **बहूहि**, आदि।

(ग) इ एवं उकारान्त शब्द दीर्घ हो जाते हैं तब उनमें 'ए' या 'हि' प्रत्यय लगता है।

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. ३० : नपुसंकलिंग के अ, इ एवं ऊकारान्त शब्दों के रूप में तृतीया विभक्ति के एकवचन एवं बहुवचन में पुल्लिंग शब्दों के समान ही बनते हैं।

नि. ३० : नपुसंक सर्वनामों (इदं, तं) के तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक के रूप पुल्लिंग सर्वनामों के समान बनते हैं।

पाठ ४०

सर्वनाम : **चतुर्थी विभक्ति** = के लिए

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	मज्झ	=	मेरे लिए	अम्हाण	=	हम सब/हम दोनों के लिए
	तुज्झ	=	तुम्हारे लिए	तुम्हाण	=	तुम सब/तुम दोनों के लिए
	तस्स	=	उसके लिए	ताण	=	उनके/उन दोनों के लिए
	ताअ	=	उसके लिए	ताण	=	उस/उन दोनों (स्त्री) के लिए
(पु.)	इमस्स	=	इसके लिए	इमाण	=	इनके लिए
(स्त्री.)	इमाअं	=	इसके लिए	इमाण	=	इनके लिए
(पु.)	कस्स	=	किसके लिए	काण	=	किनके लिए
(स्त्री.)	काअ	=	किसके लिए	काण	=	किनके लिए

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

इदं कमलं मज्झ अत्थि = यह कमल मेरे लिए है।
तं पुप्फं तुज्झ अत्थि = वह फूल तेरे लिए है।
तं फलं तस्स अत्थि = वह फल उसके लिए है।
इदं घरं ताअ अत्थि = यह घर उस (स्त्री) के लिए है।
इदं चित्तं इमस्स अत्थि = यह चित्र इसके लिए है।
तं वत्थं काअ अत्थि = वह वस्त्र किसके (स्त्री) लिए है।

बहुवचन

इमाणि सत्थाणि अम्हाण सन्ति = ये शास्त्र हमारे लिए हैं।
ताणि फलाणि तुम्हाण सन्ति = वे फल तुम सबके लिए हैं।
इदं दुद्धं ताण अत्थि = यह दूध उनके लिए है।
इमाणि वत्थूणि ताण सन्ति = ये वस्तुएं उन स्त्रियों के लिए हैं।
इमाणि चित्ताणि इमाण सन्ति = ये चित्र इनके लिए हैं।
ताणि वत्थाणि काण सन्ति = ये वस्त्र किनके (स्त्रियों) लिए हैं?

प्राकृत बनाओ :

यह वस्तु मेरे लिए है। वह घर उसके लिए है। यह दूध तुम्हारे लिए है। वे फल हम सबके लिए हैं। यह फूल उस स्त्री के लिए है। ये वस्तुएं हम दोनों के लिए हैं। ये कमल तुम सबके लिए हैं। यह घर उन दोनों स्त्रियों के लिए है। ये शास्त्र इन सबके लिए हैं। यह फल तुम दोनों के लिए है। यह जल उन सब स्त्रियों के लिए है। यह वस्तु किन दोनों के लिए है?

पाठ ४१

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पुं.) : चतुर्थी = के लिए

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअस्स	बालआण
पुरिस	पुरिसस्स	पुरिसाण
छत्त	छत्तस्स	छत्ताण
सीस	सीसस्स	सीसाण
णर	णरस्स	णराण
सुधि	सुधिणो	सुधीण
कवि	कविणो	कवीण
कुलवइ	कुलवइणो	कुलवईण
सिसु	सिसुणो	सिसूण
साहु	साहुणो	साहूण

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

अहं बालअस्स फलं दामि	=	मैं बालक के लिए फल देता हूँ।
इदं पुप्फं पुरिसस्स अत्थि	=	यह फूल आदमी के लिए है।
तं सत्थं छत्तस्स अत्थि	=	यह शास्त्र छात्र के लिए है।
इदं घरं सीसस्स अत्थि	=	यह घर शिष्य के लिए है।
सो णरस्स वत्थूणि दाइ	=	वह मनुष्य के लिए वस्तुएं देता है।
निवो सुधिणो धणं दाइ	=	राजा विद्वान् के लिए धन देता है।
सा कविणो कमलं दाइ	=	वह कवि के लिए कमल देती है।
ते कुलवइणो नमन्ति	=	वे कुलपति को नमन करते हैं।
इदं दुद्धं सिसुणो अत्थि	=	यह दूध बच्चे के लिए है।
ते साहुणो भोअणं दंति	=	वे साधु के लिए भोजन देते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह दूध बाल के लिए है। मैं आदमी के लिए फूल देता हूँ। वह घर छात्र के लिए हैद्ध वह बच्चे के लिए फल देता है। मैं शिष्य के लिए शास्त्र देता हूँ। यह वस्तु मनुष्य के लिए है। वह धन विद्वान् के लिए है। राजा कवि के लिए धन देता है। यह कमल कुलपति के लिए है। हम साधु के लिए नमन करते हैं।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (पुं.)

अहं बालआण फलाणि दामि	=	मैं बालकों के लिए फल देता हूँ।
इमाणि पुप्फाणि पुरिसाण सन्ति	=	ये फूल आदमियों के लिए हैं।
ताणि सत्थाणि छत्ताण सन्ति	=	वे शास्त्र छात्रों के लिए हैं।
इदं घरं सीसाण अत्थि	=	यह घर शिष्यों के लिए है।
सो णराण वत्थूणि दाइ	=	वह मनुष्यों के लिए वस्तुएं देता है।
निवो सुधीरण धणं दाइ	=	राजा विद्वानों के लिए धन देता है।
सा कवीण कमलाणि दाइ	=	वह कवियों के लिए कमल देती है।
ते कुलवईण नमन्ति	=	वे कुलपतियों को नमन करते हैं।
इदं दुद्धं सिसूण अत्थि	=	यह दूध बच्चों के लिए है।
ते साहूण भोअणं दान्ति	=	वे साधुओं के लिए भोजन देते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह दूध बालकों के लिए है। मैं आदमियों के लिए फूल देता हूँ। यह वस्तु छात्रों के लिए है। वह बच्चों के लिए फल देता है। मैं शिष्यों के लिए शास्त्र देता हूँ। यह घर मनुष्यों के लिए है। वह धन विद्वानों के लिए है। ये चित्र कवियों के लिए हैं। तुम सब कुलपतियों के लिए नमन करते हो। वह साधुओं के लिए नमन करता है।

शब्दकोष (पु.) :

वणिअ	=	बनिया	किसाण	=	किसान
गोव	=	ग्वाला	वानर	=	बन्दर
सेवअ	=	नौकर	हंस	=	हंस
समिय	=	मजदूर	जोगि	=	योगी
वेज्ज	=	वैद्य	जंतु	=	प्राणी

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह धन बनिये के लिए है। यह रोटी ग्वाले के लिए है। यह दही नौकर के लिए है। यह पानी मजदूर के लिए है। यह फल वैद्य के लिए है। यह खेत किसान के लि है। वह जल बन्दर के लिए है। वह दूध हंस के लिए है। यह शास्त्र योगी के लिए है। यह फूल प्राणी के लिए है।

निर्देश : इन वाक्यों का बहुवचन (चतुर्थी पु.) में भी प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ४२

आ, इ, ई उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) :

चतुर्थी = के लिए

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाअ	बालाण
माआ	माआअ	माआण
सुण्हा	सुण्हाअ	सुण्हाण
माला	मलाअ	मालाण
जुवइ	जुवईआ	जुवईण
नई	नईआ	नईण
साडी	साडीआ	साडीण
बहू	बहूए	बहूण
धेणु	धेणूए	धेणूण
सासू	सासूए	सासूण

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

सो बालाअ फलं दाइ	=	वह बालिका को फल देता है।
अहं माआअ धणं दामि	=	मैं माता के लिए धन देता हूँ।
सासू सुण्हाअ साडिं दाइ	=	सास बहू के लिए साड़ी देती है।
सिसू मालाअ कन्दइ	=	बच्चा माला के लिए रोता है।
जुवईआ साडी रोयइ	=	युवती के लिए साड़ी अच्छी लगती है।
नईआ जलं वहइ	=	नदी के लिए पानी बहता है।
पुरिसो साडीआ धणं दाइ	=	आदमी साडी के लिए धन देता है।
सासू बहूए उवदिसइ	=	सास बहू के लिए उपदेश देती है।
सो धेणूए धणं दाइ	=	वह गाय के लिए धन देता है।
इदं वत्थुं सासूए अत्थि	=	यह वस्तु सास के लिए है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह फूल बालिका के लिए है। यह कमल माता के लिए है। मैं बहू के लिए साड़ी देता हूँ। तुम माला के लिए रोते हो। यह साड़ी युवती के लिए है। राजा नदी के लिए धन देता है। वह स्त्री साड़ी के लिए रोती है। यह माला बहू के लिए है। वह घर गाय के लिए है। बहू सासू को नमन करती है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री.)

अहं बालाण फलाणि दामि	=	मैं बालिकाओं के लिए फल देता हूँ।
ते माआण पुप्फाणि दांति	=	वे माताओं के लिए फूल देते हैं।
सासू सुण्हाण साडीओ दाइ	=	सास बहूओं के लिए साड़ियाँ देती है।
सिसू मालाण कन्दइ	=	बच्चा मालाओं के लिए रोता है।
साडी जुवईण रोयइ	=	साड़ी युवतियों के लिए अच्छी लगती है।
जलं नईण वहइ	=	पानी नदियों के लिए बहता है।
पुरिसो साडीण धणं दाइ	=	आदमी साड़ियों के लिए धन देता है।
सासू बहूण उवदिसइ	=	सास बहूओं के लिए उपदेश देती है।
सो धेणूण धणं दाइ	=	वह गायों के लिए धन देता है।
इदं वत्थुं सासूण अत्थि	=	यह वस्तु सासों के लिए है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

ये चित्र बालिकओं के लिए हैं। वे कमल माताओं के लिए हैं। मैं बहूओं के लिए वस्त्र देता हूँ। तुम मालाओं के लिए क्यों रोते हो? वे साड़ियाँ युवतियों के लिए हैं। राजा नदियों के लिए धन देता है। साड़ियों के लिए कौन स्त्री रोती है? यह घर बहूओं के लिए है। गायों के लिए कौन पानी देता है? तुम सब सासों के लिए नमन करते हो।

शब्दकोष (स्त्री.) :

मेहला	=	करधनी	जणणी	=	माता
जत्ता	=	यात्रा	खिड्डुकी	=	खिड़की
सहा	=	सभा	भित्ती	=	दीवाल
चडआ	=	चिड़िया	समणी	=	साध्वी
फलिहा	=	खाई	गउ	=	गाय

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह फूल करधनी के लिए है। यह पुस्तक यात्रा के लिए है। यह वस्त्र सभा के लिए है। वह फल चिड़िया के लिए है। यह पानी खाई के लिए है। यह साड़ी माता के लिए है। वह धन खिड़की के लिए है। यह वस्तु दीवाल के लिए है। वह वस्त्र साध्वी के लिए है। यह पानी गाय के लिए है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (चतुर्थी स्त्री.) में भी प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ४३

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) : **चतुर्थी** = के लिए

शब्द	चतुर्थी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरस्स	णयराण
फल	फलस्स	फलाण
पुप्फ	पुप्फस्स	पुप्फाण
कमल	कमलस्स	कमलाण
घर	घरस्स	घराण
खेत्त	खेत्तस्स	खेत्ताण
सत्थ	सत्थस्स	सत्थाण
वारि	वारिणो	वारीण
दहि	दहिणो	दहीण
वत्थु	वत्थुणो	वत्थूण

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

णिवो णयरस्स धणं दाइ	=	राजा नगर के लिए धन देता है।
सिसू फलस्स कंदइ	=	बच्चा फल के लिए रोता है।
सा पुप्फस्स सिहइ	=	वह फूल की चाहना करती है।
तं जलं कमलस्स अत्थि	=	वह जल कमल के लिए है।
इदं वत्थं घरस्स अत्थि	=	यह वस्तु घर के लिए है।
इदं वारिं खेत्तस्स अत्थि	=	यह पानी खेत के लिए है।
अहं सत्थस्स सिहामि	=	मैं शस्त्र की चाहना करता हूँ।
इमो तडाओ वारिणो अत्थि	=	यह तालाब पानी के लिए है।
इदं पत्तं दहिणो अत्थि	=	यह पात्र (बर्तन) दही के लिए है।
सो वत्थुणो धणं दाइ	=	यह वस्तु के लिए धन देता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह धन नगर के लिए है। वह फल के लिए धन देता है। मैं फूल की चाहना करता हूँ। बच्चा कमल के लिए रोता है। यह पानी घर के लिए है। राजा खेत के लिए धन देता है। यह बर्तन दही के लिए है। वह दही की चाहना करता है। यह घर शास्त्र के लिए है। यह धन वस्तु के लिए है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (नपुं.)

णिवो णयराण धणं दाइ	=	राजा नगरों के लिए धन देता है।
सिसू फलाण कंदइ	=	बच्चा फलों के लिए रोता है।
सा पुप्फाण सिहइ	=	वह फूलों की चाहना करती है।
तं जलं कमलाण अत्थि	=	वह जल कमलों के लिए है।
इमाणि वत्थूणि घराण सन्ति	=	ये वस्तुएं घरों के लिए हैं।
इदं वारिं खेत्ताण अत्थि	=	यह पानी खेतों के लिए है।
सो सत्थण सिहइ	=	वह शास्त्रों को चाहता है।
इमो तडाओ वारीण अत्थि	=	यह तालाब पानी के लिए है।
इदं पत्तं दहीण अत्थि	=	यह बर्तन दही के लिए है।
ते वत्थूण धणं दांति	=	वे वस्तुओं के लिए धन देते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह धन नगरों के लिए है। वह फलों के लिए धन देता है। मैं फूलों को चाहता हूँ। बच्चे कमलों के लिए रोते हैं। यह पानी घरों के लिए है। राजा खेतों के लिए धन देता है। वे बर्तन पानी के लिए हैं। यह घर शास्त्रों के लिए है। वह धन वस्तुओं के लिए है।

शब्दकोष (नपुं.) :

अन्न	=	अनाज	कंचण	=	कँगना
लोण	=	नमक	कंवाड़	=	किंवाड़
वसन	=	वस्त्र	छत्त	=	छाता
उत्तरीय	=	दुपट्टा	तिण	=	घास
कंचुअ	=	कुरता	सिर	=	सिर

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह पानी अनाज के लिए है। वह नमक के लिए झगड़ता है। वह वस्त्र के लिए वहाँ जायेगा। ये स्त्रियाँ दुपट्टे के लिए वस्त्र खरीदती हैं। मैं कुरते के लिए धन माँगता हूँ। वह कँगना के लिए क्रोध करती है। यह किंवाड़ के लिए लकड़ी है। तुम छाते के लिए क्यों रोते हो? यह खेत घास के लिए है। यह छाता सिर के लिए है।

निर्देश : इन वाक्यों का बहुवचन (चतुर्थी नपुं.) में प्राकृत में अनुवाद कीजिए।

पाठ ४४

नियम : चतुर्थी (पु., स्त्री., नपुं.)

सर्वनाम :

नि. ३६ : (क) चतुर्थी विभक्ति के एकवचन में **अम्ह** का **मज्झ** तथा **तुम्ह** का **तुज्झ** रूप बनता है। बहुवचन में आकार एवं 'ण' प्रत्यय जुड़कर **अम्हाण** एवं **तुम्हाण** रूप बनते हैं।

(ख) पुल्लिंग सर्वनाम त, इम, एवं क में चतुर्थी एकवचन में **स्स** प्रत्यय जुड़कर **तस्स, इमस्स** एवं **कस्स** रूप बनते हैं। बहुवचन में आकार एवं **ण** प्रत्यय जुड़कर **ताण, इमाण** एवं **काण** रूप बनते हैं।

(ग) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा, का में चतुर्थी विभक्ति एकवचन में **अ** प्रत्यय तथा बहुवचन में **ण** प्रत्यय जुड़कर इस प्रकार रूप बनते हैं –

ए.व. च. : **ताअ, इमाअ, काअ**। ब.व. : **ताण, इमाण, काण**।

पुल्लिंग शब्द :

नि. ३७ : (क) पुल्लिंग आकारान्त संज्ञा शब्दों के आगे चतुर्थी विभक्ति एकवचन में **स्स** प्रत्यय लगता है। जैस – पुरिस = **पुरिसस्स,** णर = **णरस्स,** छत्त = **छत्तस्स** आदि।

(ख) पु. इकारान्त एवं उकारान्त शब्दों के आगे '**णो**' प्रत्यय लगता है।

जैसे – सुधि = **सुधिणो**, कवि = **कविणो**, सिसु = **सिसुणो**, आदि।

नि. ३८ : बहुवचन में चतुर्थी के पुल्लिंग शब्दों के 'अ', 'इ', 'उ' दीर्घ हो जाते हैं तथा अन्त में 'ण' प्रत्यय लगता है। जैसे –

पुरिस = **पुरिसाण,** सुधि = **सुधीण,** सिसु = **सिसूण** आदि।

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. ३९ : (क) स्त्री. आकारान्त शब्दों के आगे चतुर्थी विभक्ति में एकवचन में 'अ' प्रत्यय लगता है। जैसे – बाला = **बालाअ,** सुण्हा = **सुण्हाअ,** माला = **मालाअ**।

(ख) स्त्री. इ, ईकारान्त शब्दों के आगे 'आ' प्रत्यय लगता है। यथा –

जुवइ = **जुवईआ**, नई = **नईआ**, साड़ी = **साडीआ**, आदि।

(ग) स्त्री., उ उकारान्त शब्दों के आगे 'ए' प्रत्यय लगता है। यथा –

धेणु = **धेणुए**, बहू = **बहूए**, सासू = **सासूए**, आदि।

नि. ४० : स्त्री. सभी शब्दों के आगे चतुर्थी विभक्ति में बहुवचन में **ण** प्रत्यय लगता है।

जैसे – बाला = **बालाण,** जुवइ = **जुवईण,** धेणु = **धेणूण**, आदि।

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. ४१ : नपुसंकलिंग के शब्द के रूप चतुर्थी विभक्ति के एकवचन एवं बहुवचन में पुल्लिंग शब्दों जैसे बनते हैं।

जैसे – ए.व. : णयरस्स, वारिणो, वत्थुणो। ब.व. : णयराण, वारीण, वत्थूण।

पाठ ४५

सर्वनाम : **पंचमी** = से

	एकवचन		अर्थ	बुहवचन		अर्थ
	ममओ	=	मुझसे	अम्हाहिंतो	=	हम से/हम दोनों से
	तुमाओ	=	तुझसे	तुम्हाहिंतो	=	तुम से/तुम दोनों से
(पु.)	ताओ	=	उससे	ताहिंतो	=	उन से /उन दोनों से
(स्त्री.)	तत्तो	=	उससे	ताहिंतो	=	उन सब / उन दोनों से
(पु.)	इमाओ	=	इससे	इमाहिंतो	=	इनसे
(स्त्री.)	इमत्तो	=	इससे	इमाहिंतो	=	इनसे
(पु.)	काओ	=	किससे	केहिंतो	=	किनसे
(स्त्री.)	कत्तो	=	किससे	काहिंतो	=	किनसे

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

सो ममाओ फलं गिण्हइ	=	वह मुझसे फल ग्रहण करता है।
अहं तुमाओ कमलं गिण्हामि	=	मैं तुझसे कमल लेता हूँ।
तुमं ताओ बीहसि	=	तुम उससे डरते हो।
अहं तत्तो दुगुञ्छामि	=	मैं उस स्त्री से घृणा करता हूँ।
सो इमाओ धणं गिण्हइ	=	वह इससे धन ग्रहण करता है।
तुमं काओ बीहसि	=	तुम किससे डरते हो?

बहुवचन

सो अम्हाहिंतो विरमइ	=	वह हमसे दूर होता है।
अहं तुम्हाहिंतो धणं गिण्हामि	=	मैं तुम लोगों से धन लेता हूँ।
सिसू ताहिंतो बीहइ	=	बच्चा उनसे डरता है।
सासू ताहिंतो दुगुञ्छइ	=	सास उन स्त्रियों से घृणा करती है।
सो इमाहिंतो फलं गिण्हइ	=	वह इनसे फल लेता है।
ते केहिंतो विरमंति	=	वे किनसे दूर होते हैं?

प्राकृत बनाओ :

युवती मुझसे घृणा करती है। वह तुमसे डरता है। मैं उससे धन लेता हूँ। बच्चा उस स्त्री से फल लेता है। वह पुरुष हम दोनों से दूर होता है। मैं तुम सबसे डरता हूँ। तुम उन दोनों से घृणा करते हो। मैं उन स्त्रियों से कमलों को ग्रहण करता हूँ।

पाठ ४६

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु.) : **पंचमी = से**

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअत्तो	बालआहिंतो
पुरिस	पुरिसत्तो	पुरिसाहिंतो
छत्त	छत्तत्तो	छत्ताहिंतो
सीस	सीसत्तो	सीसाहिंतो
णर	णरत्तो	णराहिंतो
सुधि	सुधित्तो	सुधीहिंतो
कवि	कवित्तो	कवीहिंतो
कुवलइ	कुलवइत्तो	कुलवईहिंतो
सिसु	सिसुत्तो	सिसूहिंतो
साहु	साहुत्तो	साहूहिंतो

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

पुरिसो बालअत्तो पोत्थअं मग्गइ	=	आदमी बालक से पुस्तक माँगता है।
सो पुरिसत्तो धणं गिण्हइ	=	वह आदमी से धन लेता है।
अहं छत्तत्तो फलं णेमि	=	मैं छात्र से फल ले जाता हूँ।
साहू सीसत्तो सत्थं मग्गइ	=	साधु शिष्य से शास्त्र माँगता है।
णिवो णरत्तो चित्तं गिण्हइ	=	राजा मनुष्य से चित्र ग्रहण करता है।
मुक्खो सुधित्तो बीहइ	=	मूर्ख विद्वान् से डरता है।
छत्तो कुलवइत्तो पोत्थअं गिण्हइ	=	छात्र कुलपति से पुस्तक लेता है।
कवित्तो कव्वं उप्पनइ	=	कवि से काव्य उत्पन्न होता है।
जणओ सिसुत्तो विरमइ	=	पिता बच्चे से दूर होता है।
सीसो साधुत्तो पढइ	=	शिष्य साधु से पढ़ता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह बालक से फल लेता है। बच्चा आदमी से डरता है। गुरु छात्र से पराजित होता है (पराजयइ)। राजा शिष्य से पुस्तक माँगता है। वह मनुष्य से धन लेता है। बच्चा विद्वान् से फल लेता है। वे कुलपति से डरते हैं। मूर्ख कवि से घृणा करता है। वह बच्चे से फूल लेता है। हम साधु से पढ़ते हैं।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (पुं.)

सो बालआहिंतो पुप्फाणि मग्गइ	=	वह बालकों से फूल माँगता है।
अहं पुरिसाहिंतो धणं गिण्हामि	=	मैं आदमियों से धन लेता हूँ।
पुरिसो छत्ताहिंतो पोत्थआणि णेइ	=	आदमी छात्रों से पुस्तकें ले जाता है।
साहू सीसाहिंतो सत्थं मग्गइ	=	साधु शिष्यों से शस्त्र माँगता है।
णिवो णराहिंतो चित्ताणि गिण्हइ	=	राजा मनुष्यों से चित्रों को लेता है।
मुक्खो सुधीहिंतो ण बीहइ	=	मूर्ख विद्वानों से नहीं डरता है।
छत्ता कुलवईहिंतो बीहन्ति	=	छात्र कुलपतियों से डरते हैं।
कव्वाणि कवीहिंतो उप्पन्नंति	=	काव्य कवियों से उत्पन्न होते हैं।
पिऊ सिसूहिंतो विरमइ	=	पिता बच्चों से दूर होता है।
सीसा साहूहिंतो पढन्ति	=	शिष्य साधुओं से पढ़ते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं बालकों से गेंद माँगता हूँ। वह आदमियों से डरता है। गरु छात्रों से पराजित होता है। वे शिष्यों से पुस्तकें लेते हैं। पशु मनुष्यों से डरता है। मूर्ख विद्वानों से घृणा करते हैं। कुलपतियों से कौन नहीं डरता है? राजा कवियों से धन माँगता है। माता बच्चों से दूर नहीं होती है। वे साधुओं से उपदेश सुनते हैं।

शब्दकोष (पु.) :

रुक्ख	=	पेड़	थण	=	स्तन
तंडुल	=	चांवल	ओट्ठ	=	ओठ
णेउर	=	नूपुर	गाम	=	गाँव
पाडल	=	गुलाब	घड	=	घड़ा
पुत्त	=	बेटा	दीवअ	=	दीपक

प्राकृत में अनुवाद करो :

पेड़ से पत्ता गिरता है। चांवल से पानी बहता है। नूपुर से शब्द निकलता है। गुलाब से सुगन्ध आती है। पुत्र से पिता पराजित होता है। स्तन से दूध झरता है। ओठ से खून गिरता है। गाँव से आदमी आता है। घड़े से पानी गिरता है। दीपक से क्या गिरता है?

निर्देश : इन वाक्यों का बहुवचन (पंचमी पु.) में प्राकृत में अनुवाद कीजिए।

❑❑

पाठ ४७

आ, इ, ई उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : पंचमी = से

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालत्तो	बालाहिंतो
माआ	माअत्तो	माआहिंतो
सुण्हा	सुण्हत्तो	सुण्हाहिंतो
माला	मालत्तो	मालाहिंतो
जुवइ	जुवइत्तो	जुवईहिंतो
नई	नइत्तो	नईहिंतो
साडी	साडित्तो	साडीहिंतो
बहू	बहुत्तो	बहूहिंतो
धेणु	धेणुत्तो	धेणूहिंतो
सासू	सासुत्तो	सासूहिंतो

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

सो बालत्तो मालं गिण्हइ	=	वह बालिका से माला लेता है।
माअत्तो सिसू उप्पन्नइ	=	माता से बच्चा उत्पन्न होता है।
सासू सुण्हत्तो धणं मग्गइ	=	सास बहू से धन माँगती है।
मालत्तो सुयंधो आयइ	=	माला से सुगन्ध आती है।
सो जुवइत्तो दुगुञ्छइ	=	वह युवती से घृणा करता है।
नइत्तो वारिं णेमि	=	मैं नदी से पानी ले जाता हूँ।
साडित्तो वारिं पडइ	=	साड़ी से पानी गिरता है।
सा बहुत्तो पढइ	=	वह बहू से पढ़ती है।
तुमं धेणुत्तो दुद्धं दुहसि	=	तुम गाय से दूध दुहते हो।
सा सासुत्तो साडिं मग्गइ	=	वह सास से साड़ी माँगती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

माता बालिका से फूल माँगती है। वह माता से डरता है। बहू से बच्चा उत्पन्न होता है। मैं युवती से पढ़ती हूँ। वह नदी से पानी ले जाता है। माला से पानी गिरता है। साड़ी से सुगन्ध आती है। वह सास से घृणा करती है। मैं गाय से दूध दुहता हूँ। बहू सास से धन लेती है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री.)

अहं बालाहिंतो मालाओ गिण्हामि	=	मैं बालिकाओं से मालाएँ लेता हूँ।
सिसुणो माआहिंतो उप्पनंति	=	बच्चे माताओं से पैदा होते हैं।
मालाहिंतो सुयंधो आयइ	=	मालाओं से सुगन्ध आती है।
सासू सुण्हाहिंतो धणं मग्गइ	=	सास बहुओं से धन माँगती है।
ते जवईहिंतो ण दुगुच्छन्ति	=	वे युवतियों से घृणा नहीं करते हैं।
अहं नईहिंतो वारिं णेमि	=	मैं नदियों से पानी लाता हूँ।
साडीहिंतो जलं पडइ	=	साड़ियों से पानी गिरता है।
ताओ बहूहिंतो पढन्ति	=	वे (स्त्रियाँ) बहुओं से पढ़ती हैं।
सो धेणूहिंतो दुद्धं दुहइ	=	वह गायों से दूध दुहता है।
सा सासूहिंतो वत्थं मग्गइ	=	वह सासों से वस्त्र माँगती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह बालिकाओं से फूल माँगती है। बच्चे माताओं से नहीं डरते हैं। सास बहुओं से घृणा नहीं करती है। वे स्त्रियाँ नदियों से पानी लाती हैं। बहुओं से बच्चे पैदा होते हैं। बच्चे युवतियों से पढ़ते हैं। मालाओं से पानी गिरता है। साड़ियों से सुगन्ध आती है। बहुएँ सासों से डरती हैं। ग्वाला गायों से दूध नहीं दुहता है। सास बहुओं से धन ग्रहण करती है।

शब्दकोष (स्त्री.) :

भाउजाया	=	भौजाई	कयली	=	केला
माउसिआ	=	मौसी	जाई	=	चमेली
पेडिआ	=	पेटी	पुत्ति	=	पुत्री
रच्छा	=	गली	धूलि	=	धूल
महुमक्खिया	=	मधुमक्खी	सिप्पि	=	सीपी

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह भौजाई से रोटी माँगता है। वे मौसी से धन लेते हैं। तुम पेटी से वस्त्र निकालते हो। उस गली से कौन जाता है? धूल से क्या पैदा होता है? केले से पत्ते गिरते हैं। चमेली से सुगन्ध आती है। वह पुत्री से क्या लेता है? वे मधुमक्खी से डरते हैं। सीपी से मोती पैदा होता है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (पंचमी स्त्री.) में प्राकृत में अनुवाद करो।

□□

पाठ ४८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) : **पंचमी** = से

शब्द	पंचमी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरत्तो	णयराहिंतो
फल	फलत्तो	फलाहिंतो
पुप्फ	पुप्फत्तो	पुप्फाहिंतो
कमल	कमलत्तो	कमलाहिंतो
घर	घरत्तो	घराहिंतो
खेत्त	खेत्तत्तो	खेत्ताहिंतो
सत्थ	सत्थत्तो	सत्थाहिंतो
वारि	वारित्तो	वारीहिंतो
दहि	दहित्तो	दहीहिंतो
वत्थु	वत्थुत्तो	वत्थूहिंतो

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

बालओ णयरत्तो दूरं गच्छइ	=	बालक नगर से दूर जाता है।
फलत्तो रसं उप्पन्नइ	=	फल से रस उत्पन्न होता है।
पुप्फत्तो सुयंधो आयइ	=	फूल से सुगन्ध आती है।
कमलत्तो वारिं पडइ	=	कमल से पानी गिरता है।
सो घरत्तो धणं णेइ	=	वह घर से धन ले जाता है।
खेत्तत्तो धन्नं उप्पन्नइ	=	खेत से धान्य उत्पन्न होता है।
सो सत्थत्तो विरमइ	=	वह शास्त्र से दूर रहता है।
वारित्तो कमलं णिस्सरइ	=	पानी से कमल निकलता है।
दहित्तो घयं जायइ	=	दही से घी बनता है।
अहं तत्तो वत्थुत्तो दुगुञ्छामि	=	मैं उस वस्तु से घृणा करता हूँ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह आदमी नगर से जाता है। मैं पानी से डरता हूँ। तुम दही से घृणा करते हो। फल से सुगन्ध आती है। वह खेत से धन प्राप्त करता है। मैं घर से वस्तु ले जाता हूँ। वह उस वस्तु से दूर रहता है। कमल से सुगन्ध नहीं आती है। बच्चा पानी से नहीं निकलता है। वह दही से घी निकालता है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (नपुं.)

णयराहिंतो गामं दूरं अत्थि	=	नगरों से गाँव दूर है।
फलाहिंतो रसो जायइ	=	फलो से रस पैदा होता है।
पुप्फाहिंतो सुयंधो आयइ	=	फूलों से सुगन्ध आती है।
कमलाहिंतो जलं पडइ	=	कमलों से पानी गिरता है।
घराहिंतो सो अन्नं मग्गइ	=	घरों से वह अन्न माँगता है।
खेत्ताहिंतो धन्नं उप्पन्नइ	=	खेतों से धान्य उत्पन्न होता है।
सत्थाहिंतो सो विरमइ	=	शास्त्रों से वह अलग रहता है।
वारीहिंतो कमलाणि णिस्सरंति	=	पानी से कमल निकलते हैं।
दहीहिंतो घयं जायइ	=	दही से घी पैदा होता है।
वत्थूहिंतो ते सया विरमंति	=	वस्तुओं से वे सदा दूर रहते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वे आदमी नगरों से दूर आते हैं। ये पानी से डरते हैं। फलों से सुगन्ध आती है। वे खेतों से अन्न प्राप्त करते हैं। हम घरों से वस्तुएँ ले जाते हैं। कमलों से कौन डरता है? फूलों से धूलि गिरती है। वह शास्त्रों से पत्र खींचता है। मैं वस्तुओं से घृणा नहीं करता हूँ। वे दही से घी निकालते हैं।

शब्दकोष (नपुं.) :

काणण	=	जंगल	पंजर	=	पिंजड़ा
कप्पास	=	कपास	तेल्ल	=	तेल
विजण	=	पंखा	णेड्डु	=	घौंसला
चंदण	=	चंदन	जाण	=	वाहन (गाड़ी)
चम्म	=	चमड़ा	छिद्दय	=	छेद (बिल)

प्राकृत में अनुवाद करो :

जंगल से कौन जाता है? कपास से धागा निकलता है। पंखे से हवा आती है। चंदन से सुगन्ध आती है। चमड़े से दुर्गन्ध निकलती है। पिंजरे से पक्षी उड़ता है। तेल से सुगन्ध नहीं आती है। घोंसले से पक्षी नहीं जाता है। वाहन से कौन उतरता है? छेद से साँप निकलता है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (पंचमी नपुं.) में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ४१

नियम : पंचमी (पु., स्त्री., नपुं.)

सर्वनाम :

नि. ४२ : (क) पंचमी विभक्ति के एकवचन में **अम्ह** का **ममाओ** तथा **तुम्ह** का **तुमाओ** रूप बनता है। बहुवचन में आकार एवं '**हिंतो**' प्रत्यय जुड़कर **अम्हाहिंतो** एवं **तुम्हाहिंतो** रूप बनते हैं।

(ख) पुल्लिंग सर्वनाम त, इम, एवं क में पंचमी के एकवचन में इन शब्दों के दीर्घ होने के बाद **ओ** प्रत्यय जुड़ता है। यथा – **ताओ, इमाओ, काओ।** बहुवचन में **हिंतो** प्रत्यय जुड़कर है। यथा – **ताहिंतो, इमाहिंतो, काहिंतो।**

(ग) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा, का में पंचमी विभक्ति एकवचन में ह्रस्व हो जाते हैं तथा उनमें **त्तो** प्रत्यय जुडता है। यथा – **तत्तो, इमत्तो, कत्तो।** बहुवचन में **हिंतो** जुड़कर पुल्लिंग के समान रूप बन जाते हैं। यथा – **ताहिंतो, इमाहिंतो, काहिंतो।**

पुल्लिंग शब्द :

नि. ४३ : (क) सभी अ, इ एवं उकारान्त पुल्लिंग शब्दों के आगे पंचमी विभक्ति एकवचन में **त्तो** प्रत्यय लगता है। जैसे –
पुरिस = **पुरिसत्तो,** सुधि = **सुधित्तो,** सिसु = **सिसुत्तो** आदि।

(ख) पंचमी बहुवचन में सभी पुल्लिंग शब्द के अ, इ एवं उ दीर्घ हो जाते हैं। उसके बाद **हिंतो** प्रत्यय लगता है। जैसे –
पुरिस = **पुरिसाहिंतो,** सुधि = **सुधीहिंतो,** सिसु = **सिसूहिंतो।**

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. ४४ : (क) सभी आ, ई, ऊकारान्त स्त्री. शब्द पंचमी एकवचन में ह्रस्व हो जाते हैं। उसके बाद **त्तो** प्रत्यय लगता है। जैसे –
बाला = **बालत्तो,** नई = **नइत्तो,** बहू = **बहुत्तो।**

(ख) पंचमी बहुवचन में सभी स्त्री. शब्द दीर्घ होते हैं तथा उनमें **हिंतो** प्रत्यय लगता है। जैसे = **बालाहिंतो, नईहिंतो, बहूहिंतो** आदि

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. ४५ : पंचमी के एकवचन एवं बहुवचन में नपुंसकलिंग शब्दों के रूप उपर्युक्त पुल्लिंग शब्दों के समान ही बनते हैं जैसे –

ए.व. .	–	णयरस्स	वारित्तो	वत्थुत्तो।
ब.व.	–	णयराहिंतो	वारीहिंतो	वत्थूहिंतो।

पाठ ५०

सर्वनाम : **षष्ठी** = का, के, की

(एकवचन-बहुवचन)

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	मज्झ	=	मेरा	अम्हाण	=	हमारा/हम दोनों का
	तुज्झ	=	तेरा	तुम्हाण	=	तुम्हारा/तुम दोनों का
(पु.)	तस्स	=	उसका	ताण	=	उनका /उन दोनों का
(स्त्री.)	ताअ	=	उसका	ताण	=	उन सब / उन दोनों का
(पु.)	इमस्स	=	इसका	इमाण	=	इन सबका
(स्त्री.)	इमाअ	=	इसका	इमाण	=	इन सबका
(पु.)	कस्स	=	किसका	काण	=	किनका
(स्त्री.)	काअ	=	किसका	काण	=	किनका

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

तं मज्झ पोत्थअं अत्थि = वह मेरी पुस्तक है।
इदं तुज्झ कमलं अत्थि = यह तेरा कमल है।
सो तस्स भायरो गच्छइ = वह उसका भाई जाता है।
सा ताअ धूआ अत्थि = वह उस स्त्री की लड़की है।
सा इमस्स पुत्तो अत्थि = वह इसका पुत्र है।
इमा काअ साडी अत्थि = यह किस स्त्री की साड़ी है?

बहुवचन

ताणि पोत्थआणि अम्हाण सन्ति = वे पुस्तकें हमारी हैं।
इमाणि खेत्ताणि तुम्हाण सन्ति = ये खेत तुम सबके हैं।
सो ताण जणओ अत्थि = वह उन सबका पिता है।
सा ताण बहिणी अत्थि = वह उन सब (स्त्रियों) की बहिन है।
ते इमाण पुत्ता सन्ति = वे इनके पुत्र हैं।
इमाणि पोत्थआणि काण सन्ति = ये पुस्तकें किन स्त्रियों की हैं?

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह मेरा भाई है। वह तेरी पुस्तक है। यह उसकी बहिन है। यह साड़ी उस स्त्री की है। वे दोनों खेत किसके हैं? ये पुस्तकें तुम दोनों की हैं। यह लड़की किनकी बहिन है? यह घर उनका है। यह उस स्त्री की सास है। ये मालाएँ इन दोनों स्त्रियों की हैं। यह हम दोनों की माता है। यह तुम सबका धन है।

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु.) : **षष्ठी** = का, के, की

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालअस्स	बालआण
पुरिस	पुरिसस्स	पुरिसाण
छत्त	छत्तस्स	छत्ताण
सीस	सीसस्स	सीसाण
णर	णरस्स	णराण
सुधि	सुधिणो	सुधीण
कवि	कविणो	कवीण
कुलवइ	कुलवइणो	कुलवईण
सिसु	सिसुणो	सिसूण
साहु	साहुणो	साहूण

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

इमं पोत्थअं बालअस्स अत्थि	=	यह पुस्तक बालक की है।
इमो पुरिसस्स सिसू अत्थि	=	यह आदमी का बच्चा है।
इमं छत्तस्स घरं अत्थि	=	यह छात्र का घर है।
तं सत्थं सीसस्स अत्थि	=	वह शास्त्र शिष्य का है।
णरस्स जमो सेट्ठो अत्थि	=	मनुष्य का जन्म श्रेष्ठ है।
सुधिणो णाणं वड्ढइ	=	विद्वान् का ज्ञान बढ़ता है।
सो कविणो सम्माणं करइ	=	वह कवि का आदर करता है।
अत्थ कुलवइणो सासणं अत्थि	=	यहाँ कुलपति का शासन है।
सिसुणो जणओ गच्छइ	=	बच्चे का पिता जाता है।
इमो साहुणो सीसो अत्थि	=	यह साधु का शिष्य है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

बालक का पिता जाता है। यह पुस्तक आदमी की है। यह छात्र का कार्य है। वह शिष्य का घर है। यह मनुष्य का मित्र है। वह विद्वान् की पुत्री है। कवि का काव्य उत्तम है। हम कुलपति का सम्मान करते हैं। बच्चे की माता जाती है। यह साधु का शास्त्र है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (पु.)

इमाणि पोत्थआणि बालआण सन्ति	=	ये पुस्तकें बालकों की हैं।
इमं घरं पुरिसाण अत्थि	=	यह घर आदमियों का है।
तं विज्जालयं छत्ताण	=	वह विद्यालय छात्रों का है।
ताणि सत्थाणि सीसाण सन्ति	=	वे शास्त्र शिष्यों के हैं।
णराण जम्मो सेट्ठो अत्थि	=	मनुष्यों का जन्म श्रेष्ठ है।
सुधीण णाणं बड्ढइ	=	विद्वानों का ज्ञान बढ़ता है।
सो कवीण सम्माणं करइ	=	वह कवियों का सम्मान करता है।
इमे कुलवईण पुत्ता सन्ति	=	ये कुलपतियों के पुत्र हैं।
इमं सिसूण उववणं अत्थि	=	यह बच्चों का उपवन है।
साहूण के सीसा सन्ति	=	साधुओं के कौन शिष्य हैं?

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह बालकों का पिता जाता है। उन आदमियों की ये पुस्तकें हैं। यह कार्य छात्रों का है। वह शिष्यों का घर है। इन मनुष्यों का कौन मित्र है? वह विद्वानों की सभा है। कवियों के काव्य कौन पढ़ता है? हम कुलपतियों के शिष्य हैं। इन बच्चों की माता वहाँ रहती है। यह साधुओं का शास्त्र है।

शब्दकोष (पु.) :

वसह	=	बैल	खत्ति	=	क्षत्रिय
मूसिअ	=	चूहा	नाणि	=	ज्ञानी
कबोअ	=	कबूतर	करेणु	=	हाथी
पाचअ	=	रसोइआ	मच्चु	=	मृत्यु
हट्ट	=	बाजार	बिच्छु	=	बिच्छू

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह बैल की रस्सी है। वह चूहे का बिल है। यह कबूतर का पिंजड़ा है। यह रसोइए का पुत्र है। वह बाजार का मार्ग है। यहाँ क्षत्रिय का राज्य है। वह ज्ञानी का घर है। इस हाथी का कौन मालिक है? उसकी मृत्यु का विश्वास मत करो। यह बिच्छू का बिल है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (षष्ठी पुं.) में भी प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ५२

अ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : **षष्ठी** = का, के, की

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाअ	बालाण
माआ	माआअ	माआण
सुण्हा	सुण्हाअ	सुण्हाण
माला	मालाअ	मालाण
जुवइ	जुवईआ	जुवईण
नई	नईआ	नईण
साडी	साडीआ	साडीण
बहू	बहूए	बहूण
धेणु	धेणूए	धेणूण
सासू	सासूए	सासूण

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

इमं वत्थं बालाअ अत्थि	=	यह वस्त्र बालिका का है।
इमो पुत्तो माआअ अत्थि	=	यह पुत्र माता का है।
सुण्हाअ अभिहाणो कमला अत्थि	=	बहू का नाम कमला है।
मालाअ रंगं पीअं अत्थि	=	माला का रंग पीला है।
सो जुवईआ भायरो अत्थि	=	वह युवती का भाई है।
मदं नईआ वारिं अत्थि	=	यह नदी का पानी है।
इमो साडीआ आवणो अत्थि	=	यह साड़ी की दुकान है।
इमं बहुए घरं अत्थि	=	यह बहू का घर है।
धेणूए दुद्धं महुरं होइ	=	गाय का दूध मीठा होता है।
इमं वत्थू सासूए अत्थि	=	यह वस्तु सास की है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

बालिका का नाम मधु है। यह माता की पुत्री है। यह साड़ी बहू की है। वह माला की दुकान है। यह युवती का पति है। यह नदी का तट है। सड़ी का रंग पीला है। यह सास का घर है। यह गाय का मालिक (स्वामी) है। यह पुस्तक बहू की है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री.)

इमाणि वत्थाणि बालाण सन्ति	=	ये वस्त्र बालिकाओं के हैं।
इमाण माआण पुत्ता कत्थ सन्ति	=	इन माताओं के पुत्र कहाँ हैं?
इमाण बहूण किं घरं अत्थि	=	इन बहुओं का कौन घर है?
ताण मालाण किं मोल्लं अत्थि	=	उन मालाओं का क्या मोल है?
सो जुवईण भायरो अत्थि	=	वह युवतियों का भाई है।
इमं नईण वारिं अत्थि	=	यह नदियों का पानी है।
इमो साडीण आवणो अत्थि	=	साड़ियों का दुकान है।
बहूण तं घरं अत्थि	=	बहुओं का वह घर है।
धेणुण दुद्धं महुरं होइ	=	गायों का दूध मीठा होता है।
इमाण सासूण बहूओ कत्थ सन्ति	=	इन सासों की बहुएँ कहाँ हैं?

प्राकृत में अनुवाद करो :

उन बालिकाओं का नाम क्या है? उन माताओं के वस्त्र कहाँ है? ये बहुओं की साड़ियाँ हैं। वह मालाओं की दुकान है। इन युवतियों के पति यहाँ नहीं हैं। नदियों का पानी स्वच्छ होता है। उन साड़ियों का मालिक कौन है? बहुओं के पिता वहाँ जाते हैं। गायों का घर कहाँ है? हमारी सासों के पुत्र कहाँ हैं?

शब्दकोष (स्त्री.) :

हलिद्दा	=	हल्दी	दिट्ठि	=	दृष्टि
मट्टिआ	=	मिट्टी	नीइ	=	नीति
कीडिया	=	चींटी	रस्सि	=	डेरी
कुंचिया	=	चाबी	डाली	=	शाखा
भासा	:	भाषा	सही	=	सखी

प्राकृत में अनुवाद करो :

हल्दी का रंग पीला होता है। मिट्टी का घड़ा अच्छा होता है। यह चींटी का बिल है। यह चाबी का रंग कैसा है? यह प्राकृत भाषा की पुस्तक है। यह उसकी दृष्टि का दोष है। यह हमारी नीति का फल है। उन डोरी का रंग लाल है। इस डाली का पत्ता पीला है। मेरी सखी का घर वहाँ है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (षष्ठी स्त्री.) में भी प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ५३

अ, इ, एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) : षष्ठी = का, के, की

शब्द	षष्ठी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरस्स	णयराण
फल	फलस्स	फलाण
पुप्फ	पुप्फस्स	पुंप्फाण
कमल	कमलस्स	कमलाण
घर	घरस्स	घराण
खेत्त	खेत्तस्स	खेत्ताण
सत्थ	सत्थस्स	सत्थाण
वारि	वारिणो	वारीण
दहि	दहिणो	दहीण
वत्थु	वत्थुणो	वत्थूणा

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

सो णयरस्स णिवो अत्थि	=	वह नगर का राजा है।
इमो फलस्स रुक्खो अत्थि	=	यह फल का वृक्ष है।
इमा पुप्फस्स लआ अत्थि	=	यह फूल की लता है।
इदं कमलस्स पुप्फं अत्थि	=	यह कमल का फूल है।
सो घरस्स सामी अत्थि	=	वह घर का स्वामी है।
तं खेत्तस्स वारिं अत्थि	=	वह खेत का पानी है।
सो सत्थस्स पंडिओ अत्थि	=	वह शास्त्र का पण्डित है।
इमा वारिणो नई अत्थि	=	यह पानी की नदी है।
इदं दहिणो पत्तं अत्थि	=	यह दही का बर्तन है।
सो वत्थुणो वावारं करइ	=	वह वस्तु का व्यापार करता है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह नगर का आदमी है। वह फल की दुकान है। यह फूल की शोभा है। वह कमल का सरोवर है। वह घर का नौकर है। मैं खेत का मालिक हूँ। वहाँ शास्त्र का मंदिर है। वहाँ पानी की नदी नहीं है। दही का मूल्य क्या है? वस्तु का संग्रह अच्छा नहीं है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (नपुं.)

ताण णयराण णिवो को अत्थि	=	उन नगरों का राजा कौन है?
इमो फलाण रसो अत्थि	=	यह फलों का रस है।
इमा पुप्फाण लआ अत्थि	=	यह फूलों की लता है।
इमा कमलाण माला अत्थि	=	यह कमलों की माला है।
ताण घराण को सामी अत्थि	=	उन घरों का कौन मालिक है?
खेत्ताण वारिं वहइ	=	खेतों का पानी बहता है।
सो सत्थाण पंडिओ णत्थि	=	वह शास्त्रों का पण्डित नहीं है।
इमा वारीण नई अत्थि	=	यह पानी की नदी है।
तं दहीण पत्तं अत्थि	=	वह दही का बर्तन है।
इमो वत्थूण आवणो अत्थि	=	यह वस्तुओं की दुकान है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

नगरों की शोभा राजा है। फलों की दुकान यहाँ नहीं है। वह फूलों की माला गूँथती है। यह कमलों का तालाब है। वह उन घरों का नौकर है। तुम इन खेतों के स्वामी हो। वहाँ शास्त्रों का भण्डार है। पानी का रंग विचित्र है। इन दहियों का घी कौन बेचेगा? उन वस्तुओं का संग्रह मत करो।

शब्दकोष (नपुं.) :

चिन्तण	=	विचार	महाणस	=	रसोइघर
आयास	=	आकाश	उवहाण	=	तकिया
हिम	=	बर्फ	तंबोल	=	पान
हेम	=	स्वर्ण	मोत्तिय	=	मोती
हिरण्ण	=	चाँदी, सोना	जउ	=	लाख

प्राकृत में अनुवाद करो :

यह विचार का अन्तर है। वे आकाश के तारे हैं। यह बर्फ का पहाड़ है7 वह सोने का कंगना है। यह चाँदी का नूपुर है। यह रसोईघर का बर्तन है। वह तकिया का कपास है। यह पान की दुकान है। वह मोती की माला है। यह लाख का भवन है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (षष्ठी नपुं.) में भी प्राकृत में अनुवाद करो।

पाठ ५४

नियम : षष्ठी (पु., स्त्री., नपुं.)

नि. ४६ : प्राकृत में षष्ठी विभक्ति में सभी सर्वनाम तथा संज्ञा शब्द चतुर्थी विभक्ति के समान ही प्रयुक्त होते हैं। यथा -

सर्वनाम :

ए.व.-मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स
ब.व.-अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण
(स्त्रीलिंग) ए.व.-		ताअ	इमाअ	काअ
ब.व.-		ताण	इमाण	काण

पुल्लिंग शब्द :

नि. ४७ : (क) पु. अकारान्त संज्ञा शब्दों के आगे षष्ठी विभक्ति एकवचन में **स्स** प्रत्यय लगता है। जैसे -

पुरिस = **पुरिसस्स**, णर = **णरस्स**, छत्त = **छत्तस्स** आदि।

(ख) पु. इकारान्त एवं उकारान्त शब्दों के आगे **णो** प्रत्यय लगता है।

जैसे - सुधि = **सुणिणो**, कवि = **कविणो**, सिसु = **सिसुणो**।

(ग) बहुवचन में षष्ठी के पुल्लिंग शब्दों के 'अ', 'इ', 'उ' दीर्घ हो जाते हैं तथा अन्त में 'ण' प्रत्यय लगता है। जैसे -

पुरिस = **पुरिसाण**, सुधि = **सुधीण**, सिसु = **सिसूण**, आदि।

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. ४८ : (क) स्त्री. अकारान्त शब्दों के आगे षष्ठी विभक्ति में एकवचन में **अ** प्रत्यय लगता है। जैसे - बाला = **बालअ**, सुण्हा = **सुण्हाअ**, माला = **मालाअ**।

(ख) स्त्री. इ, ईकारान्त शब्दों के आगे **आ** प्रत्यय लगता है। यथा -

जुवइ = **जुवईआ**, नई = **नईआ**, साडी = **साडीआ** आदि।

(ग) स्त्री. उ, ऊकारान्त शब्दों के आगे **ए** प्रत्यय लगता है। यथा -

धेणु = **धेणूए**, बहू = **बहूए**, सासू = **सासूए** आदि।

(घ) स्त्री. सभी शब्दों के आगे षष्ठी विभक्ति में बहुवचन में **ण** प्रत्यय लगता है।

जैसे - बाला = **बालाण**, जुवइ = **जुवईण**, धेणू = **धेणूण** आदि।

नि. ४९ : स्त्री. इकारान्त एवं उकारान्त शब्दों में दीर्घ होने के बाद प्रत्यय लगता है।

यथा = जुवइ = **जुवई + आ, धेणू + ए, आदि।**

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. ५० : नंपु. के सभी शब्दों के रूप षष्ठी विभक्ति में एकवचन एवं बहुवचन में पुल्लिंग शब्दों जैसे बनते है।

❑❑

पाठ ५५

सर्वनाम : **सप्तमी** = में, पर

	एकवचन		अर्थ	बहुवचन		अर्थ
	अम्हम्मि	=	मुझ में	अम्हेसु	=	हस सबमें/हम दोनों में
	तुम्हम्मि	=	तुझ में	तुम्हेसु	=	तुम सबमें/तुम दोनों में
(पु.)	तम्मि	=	उसमें	तेसु	=	उनमें /उन दोनों में
(स्त्री.)	ताए	=	उसमें	तासु	=	उनमें / उन दोनों में
(पु.)	इमम्मि	=	इस में	इमेसु	=	इन सब में
(स्त्री.)	इमाए	=	इस में	इमासु	=	इन सब में
(पु.)	कम्मि	=	किस में	केसु	=	किन में
(स्त्री.)	काए	=	किस में	कासु	=	किन में

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

अम्हम्मि जीवणं अत्थि	=	मुझ में जीवन है।
तुम्हम्मि पाणा सन्ति	=	तुझ में प्राण है।
तम्मि सत्ति अत्थि	=	उसमें शक्ति है।
ताए लावण्णं अत्थि	=	उस स्त्री में सौन्दर्य है।
इमम्मि वाउ नत्थि	=	इसमें हवा नहीं है।
काए लज्जा अत्थि	=	किस (स्त्री) में लज्जा है?

बहुवचन

अम्हेसु पाणा सन्ति	=	हम सबमें प्राण हैं।
तुम्हेसु अवगुणा सन्ति	=	तुम दोनों में अवगुण हैं।
तेसु खमा वसइ	=	उनमें क्षमा रहती है।
तासु सद्धा निवसइ	=	उनमें (स्त्रियों में) श्रद्धा निवास करती है।
इमेसु पाणा ण सन्ति	=	इनमें प्राण नहीं हैं।
कासु लज्जा ण अत्थि	=	किन स्त्रियों में लज्जा नहीं है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मुझ में शक्ति है। तुझ में सौन्दर्य है। उनमें जीवन है। इस स्त्री में क्षमा रहती है। हम सब में अवगुण हैं। तुम दोनों में प्राण हैं। उन सब में शक्ति है। किन दोनों स्त्रियों में सौन्दर्य है? हम दोनों में जीवन है। तुम सब में क्षमा रहती है। उन सब स्त्रियों में लज्जा है। उन दोनों में शक्ति है।

पाठ ५६

अ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (पु.) : **सप्तमी** = में, पर

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालए	बालएसु
पुरिस	पुरिसे	पुरिसेसु
छत्त	छत्ते	छत्तेसु
सीस	सीसे	सीसेसु
णर	णरे	णरेसु
सुधि	सुधिम्मि	सुधीसु
कवि	कविम्मि	कवीसु
कुलवइ	कुलवइम्मि	कुलवईसु
सिसु	सिसुम्मि	सिसूसु
साहु	साहुम्मि	साहूसु

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

बालए सच्चं अत्थि	=	बालक में सत्य है।
पुरिसे सढुं अत्थि	=	आदमी में शठता है।
छत्ते विनयं नत्थि	=	छात्र में विनय नहीं है।
सीसे विनयं अत्थि	=	शिष्य में विनय है।
णरे सत्ती अत्थि	=	मनुष्य में शक्ति है।
सुधिम्मि बुद्धी अत्थि	=	विद्वान् में बुद्धि है।
कविम्मि संवेयणं अत्थि	=	कवि में संवेदन है।
कुलवइम्मि सद्धा अत्थि	=	कुलपति में श्रद्धा है।
सिसुम्मि अण्णाणं अत्थि	=	बच्चे में अज्ञान है।
साहुम्मि तेओ अत्थि	=	साधु में तेज है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

विनय बालक में है। सत्य छात्र में है। शिष्य में श्रद्धा है। मनुष्य में जीवन है। आदमी में अवगुण है। कवि में बुद्धि है। कुलपति में ज्ञान है। विद्वान् में क्षमा है। साधु में शक्ति है। बच्चे में प्राण है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (पु.)

केसु बालएसु सच्चं अत्थि	=	किन बालकों में सत्य है?
इमेसु पुरिसेसु सट्टं णत्थि	=	इन आदमियों में शठता नहीं है।
तेसु छत्तेसु विनयं अत्थि	=	उन छात्रों में विनय है।
सीसेसु णाणं अत्थि	=	शिष्यों में ज्ञान है।
इमेसु णरेसु सत्ती अत्थि	=	इन मनुष्यों में शक्ति है।
सुधीसु सया बुद्धी वसइ	=	विद्वानों में सदा बुद्धि रहती है।
तेसु कवीसु संवेयणां अत्थि	=	उन कवियों में संवेदन है।
कुलवईसु संजमो अत्थि	=	कुलपतियों में संयम है।
तेसु सिसूसु अण्णाणं अत्थि	=	उन बच्चों में अज्ञान है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

बालकों में विनय है। उन छात्रों में सत्य है। किन मनुष्यों में जीवन है? उन आदमियों में अवगुण है। कवियों में सदा बुद्धि नहीं रहती है। कुलपतियों में हमारी श्रद्धा है। उन विद्वानों में क्षमा है। किन साधुओं में तुम सबकी भक्ति है। उन बच्चों में प्राण हैं।

शब्दकोष (पु.) :

तिल	=	तिल	बंभयारि	=	ब्रह्मचारी
गब्भ	=	गर्भ	आहार	=	भोजन
बंसअ	=	बाँसुरी	उदहि	=	समुद्र
उट्ट	=	ऊँट	भाणु	=	सूर्य
जर	=	बुखार	सव्वण्णु	=	सर्वज्ञ
काय	=	शरीर	मठ	=	मठ
पोक्खर	=	तालाब	कोस	=	खजाना
अंक	=	गोद	पासाय	=	महल

प्राकृत में अनुवाद करो :

तिलों में तेल है। गर्भ में प्राणी है। बाँसुरी में छेद है। माँ की गोद में बच्चा है। ब्रह्मचारी में शक्ति है। नदियों का पानी समुद्र में एकत्र होता है। सूर्य में अग्नि होती है। सर्वज्ञ में ज्ञान है। महल में राजा रहता है। ऊँट पर योद्धा बैठता है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (सप्तमी) में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ५७

अ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : सप्तमी = में, पर

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
बाला	बालाए	बालासु
माआ	माआए	माआसु
सुण्हा	सुण्हाए	सुण्हासु
माला	मालाए	मालासु
जुवइ	जुवईए	जुवईसु
नई	नईए	नईसु
साडी	साडीए	साडीसु
बहू	बहूए	बहूसु
धेणु	धेणूए	धेणूसु
सासू	सासूए	सासूसु

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

बालाए लज्जा अत्थि	=	बालिका में लज्जा है।
माआए समप्पणं अत्थि	=	माता में समर्पण है।
सुण्हाए विनयं अत्थि	=	बहू में विनय है।
मालाए पुप्फाणि सन्ति	=	माला में फूल हैं।
जुवईए लावण्णं अत्थि	=	युवती में सौन्दर्य है।
नईए नावा सन्ति	=	नदी में नावें हैं।
साडीए पुप्फाणि सन्ति	=	साड़ी में फूल हैं।
बहूए सद्धा अत्थि	=	बहू में श्रद्धा है।
धेणूए दुद्धं अत्थि	=	गाय में दूध है।
सासूए गुणा सन्ति	=	सास में गुण हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

नदी में पानी है। साड़ी में फूल हैं। माला में सुगन्ध है। बहू में गुण हैं। युवती में लज्जा है। बालिका में अज्ञान है। माता में धैर्य है। सास में ज्ञान है। गाय में प्राण हैं। बहू में जीवन है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (स्त्री.)

तासु बालासु लज्जा अत्थि	=	उन बालिकाओं में लज्जा है।
सुण्हासु विनयं हवइ	=	बहुओं में विनय होती है।
इमासु मालासु पुप्फाणि सन्ति	=	इन मालाओं में फूल हैं।
कासु जुवईसु लावण्णं णत्थि	=	किन युवतियों में सौन्दर्य नहीं है?
नईसु नावा तरन्ति	=	नदियों में नावें तैरती हैं।
साडीसु पुप्फाणि ण सन्ति	=	साड़ियों में फूल नहीं हैं।
बहूसु सया लज्जा वसइ	=	बहुओं में सदा लज्जा रहती है।
कासु धेणूसु दुद्धं अत्थि	=	किन गायों में दूध है?
सासूसु गुणा हवन्ति	=	सासों में गुण होते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

उन नदियों में आज पानी है। किनकी साड़ियों में फूल हैं? इन मालाओं में गुलाब के फूल हैं। उनकी बहुओं में सौन्दर्य है। उन बालिकाओं में अज्ञान है। बच्चों की माताओं में लज्जा नहीं होती है। सास की गायों में दूध नहीं है। बहुओं की श्रद्धा सासों में है।

शब्दकोष (स्त्री.) :

भुक्खा	=	भूख	कलिआ	=	कली
तिसा	=	प्यास	चंदिया	=	चाँदनी
संझा	=	संध्या	सति	=	स्मृति
निसा	=	रात्रि	पंति	=	कतार
वाया	=	वाणी	पुहवी	=	पृथ्वी

प्राकृत में अनुवाद करो :

भूट में रोटी अच्छी लगती है। प्यास में नदी का पानी भी अच्छा लगता है। संध्या में आकाश में लालिमा होती है। रात्रि में आकाश में तारे होते हैं। किनकी वाणी में अमृत है? उन कलियों में सुगन्ध नहीं है। वे चाँदनी में सदा बाहर घूमते हैं। हमने पिता की स्मृति में विद्यालय स्थापित किया। विद्यालय में बच्चे कतार में खड़े होकर प्रार्थना करते हैं। इस पृथ्वी पर अनेक वस्तुएँ हैं।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (सप्तमी) में प्राकृत में अनुवाद करो।

□□

पाठ ५८

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) : सप्तमी = में, पर

शब्द	सप्तमी एकवचन	बहुवचन
णयर	णयरे	णयरेसु
फल	फले	फलेसु
पुप्फ	पुप्फे	पुप्फेसु
कमल	कमले	कमलेसु
घर	घरे	घरेसु
खेत्त	खेत्ते	खेत्तेसु
सत्थ	सत्थे	सत्थेसु
वारि	वारिम्मि	वारीसु
दहि	दहिम्मि	दहीसु
वत्थु	वत्थुम्मि	वत्थूसु

उदाहरण वाक्य :

एक वचन

अहं णयरे वसामि	=	मैं नगर में रहता हूँ।
फले रसं अत्थि	=	फल में रस है।
पुप्फे सुयंधो णत्थि	=	फूल में सुगन्ध नहीं है।
कमले भमरो अत्थि	=	कमल पर भौंरा है।
घरे जणा णिवसन्ति	=	घर में लोग रहते हैं।
खेत्ते धेणू अत्थि	=	खेत में गाय है।
सत्थे विज्जा वसइ	=	शास्त्र में विद्या रहती है।
वारिम्मि नावा चलन्ति	=	पानी पर नावें चलती हैं।
दहिम्मि घअं अत्थि	=	दही में घी है।
वत्थुम्मि पाणा ण सन्ति	=	वस्तु में प्राण नहीं हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

राजा नगर में रहता है। फूल में रस है। फल में सुगन्ध नहीं है। घर में गाय है। खेत में आदमी है। पानी में जीव है। शास्त्र में ज्ञान है। दही में पानी है। कमल में पत्ते हैं। वस्तु में मेरी आसक्ति नहीं है।

उदाहरण वाक्य :

बहुवचन (नपुं.)

अम्हे तेसु णयरेसु वसामो	=	हम उन नगरों में रहते हैं।
इमेसु फलेसु रसं णत्थि	=	इन फलों में रस नहीं है।
केसु पुप्फेसु सुयंधो अत्थि	=	किन फूलों में सुगन्ध है?
तेसु कमलेसु भमरा सन्ति	=	उन कमलों पर भौंरे हैं।
इमेसु घरेसु णरा निवसन्ति	=	इन घरों में मनुष्य रहते हैं।
ताण खेत्तेसु जलं णत्थि	=	उनके खेतों में पानी नहीं है।
सत्थेसु णाणं होइ	=	शास्त्रों में ज्ञान होता है।
नईण वारीसु नावा तरन्ति	=	नदियों के पानी में नावें तैरती हैं।
ताण पत्ताण दहीसु घअं अत्थि	=	उन बर्तनों के दही में घी है।
इमेसु वत्थूसु पाणा ण सन्ति	=	इन वस्तुओं में प्राण नहीं हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

राजा उन नगरों में घूमता है। उपवन के फूलों में सुगन्ध होती है। उनके घरों में गायें हैं। तालाब के कमलों में रस है। जंगल के खेतों में घास उत्पन्न होती है। शास्त्रों में इस संसार का वर्णन है। उन वस्तुओं में किसकी आसक्ति है?

शब्दकोष (नपुं.) :

भाल	=	ललाट	विहाण	=	प्रभात
पगरक्ख	=	जूता	मसाण	=	मरघट
आभरण	=	गहना	वेसम्म	=	विषमता
रुव	=	रूप	सागय	=	स्वागत
अंडय	=	अंडा	साहस	=	साहस

प्राकृत में अनुवाद करो :

उसके ललाट पर तिलक है। मेरे जूते में मिट्टी है। उसके गहने में मोती है। किसके रूप में आकर्षण है? उस अंडे में प्राणी है। प्रभात में चिड़िया उड़ती है। मरघट में शांति होती है। विषमता में देश सुख प्राप्त नहीं करता है। हम उनके स्वागत में यहाँ हैं। साहस में शक्ति होती है।

निर्देश : इन्हीं वाक्यों का बहुवचन (सप्तमी) में प्राकृत में अनुवाद करो।

❑❑

पाठ ५१

नियम : सप्तमी (पु., स्त्री., नपुं.)

सर्वनाम :

नि. ५१ : (क) सप्तमी विभक्ति में एकवचन में अम्ह एवं तुम्ह में तथा पुल्लिंग त, इम, क सर्वनामें **म्मि** प्रत्यय लगता है। बहुवचन में इनमें एकार होकर **सु** प्रत्यय लगता है। यथा–

ए.व. : अम्हम्मि, तुम्हम्मि, तम्मि, इमम्मि, कम्मि।

ब.व. : अम्हेसु, तुम्हेसु, तेसु, इमेसु, केसु।

(ख) स्त्रीलिंग सर्वनाम ता, इमा एवं का में सप्तमी के एकवचन में **ए** प्रत्यय तथा बहुत वचन में **सु** प्रत्यय लगता है। यथा –

ए.व. : ताए, इमाए, काए। ब.व. : तासु, इमासु, कासु।

पुल्लिंग शब्द :

नि. ५२ : (क) अकारान्त पुल्लिंग शब्दों में आगे सप्तमी विभक्ति एकवचन में **ए** प्रत्यय लगता है जो शब्द 'ए' की मात्रा के रूप में (े) प्रयुक्त होता है। जैसे – पुरसि = **पुरिसे,** छत्त = **छत्ते,** सीस = **सीसे,** आदि।

(ख) बालअ शब्द में 'ए' प्रत्यय लगने के बालए रूप बनता है।

(ग) इ एवं उकारान्त पु. शब्दों में '**म्मि**' प्रत्यय लगने से इस प्रकार रूप बनते हैं– सुधि = **सुधिम्मि,** सिसु = **सिसुम्मि,** आदि।

नि. ५३ : (क) अकारान्त पु. शब्दों के 'अ' को बहुवचन में 'ए' हो जाता है तथा उसके बाद **सु** प्रत्यय लगता है। जैसे – पुरिस = **पुरिसेसु,** छत्त = **छत्तेसु,** आदि।

(ख) इ एवं उकारानत पु. शब्द बहुवचन में दीर्घ हो जाते हैं फिर उनमें **सु** प्रत्यय लगता है। जैसे – सुधि – सुधी + सु = **सुधीसु,** सिसु = **सिसूसु।**

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. ५४ : (क) आ, ई, ऊकारान्त स्त्री. शब्दों के आगे सप्तमी एकवचन में **ए** प्रत्यय लगता है। जैसे – बाला = **बालाए,** साडी = **साडीए,** बहु = **बहूए।**

(ख) इ एवं उकारान्त स्त्री. शब्द दीर्घ हो जाते हैं तब उनमें 'ए' प्रत्यय लगता है। जैसे – जुवइ = **जुवईए,** धेणु = **धेणूए** आदि।

नि. ५५ : स्त्री. सभी शब्द सप्तमी बहुवचन में दीर्घ आ, ई, ऊ वाले होते हैं, जिनके आगे **सु** प्रत्यय लगता है। जैसे – बाला = **बालासु,** जुवइ = **जुवईसु,** धेणु = **धेणूसु,** सासू = **सासूसु** आदि।

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. ५६ : सप्तमी एकवचन और बहुवचन में नपुं. शब्दों के रूप पु. शब्दों की तरह बनते हैं।

□□

विभक्ति अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो :

सो ममं पासइ। अहं ताओ नमामि। तुमं इन्दं नमहि। जीवा मा हणउ। ते बंधुणो खमन्तु। सो अज्ज अच्छरसं पासिहिइ। तुम्हे पावाणि मा करह। तं दुक्खं ताहि होइ। अहं हत्थेण पत्तं लिहामि। सा जीहाए फलं चक्खउ। पक्खी चंचुए अन्नं चिणिहिइ। तं वत्थं काण अत्थि। सेवआण किं अत्थि? अहं समणीण वत्थाणि दाहिमि। सो अन्नस्स धणं मग्गइ। अहं कवाडस्स कट्ठं संचामि। सिसू ममओ बीहइ। अहं ताहिंतो पुप्फाणि गिण्हामि। रुक्खहिंतो पत्ताणि पडन्ति। सिप्पिहिंतो मोत्तिआणि जायन्ति। सा पेडिआहिंतो वत्थाणि गिण्हइ। ते मज्झ भायरा सन्ति। तानि पोत्थआणि काण सन्ति। अत्थ खत्तीण रज्जं अत्थि। तं मोत्तिआण माला काअ अत्थि? तेसु कायेसु पाण सन्ति। मढेसु छत्ता वसन्ति। अम्हे चंदआए निसाए भमामो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वे किसको पूछते हैं? मंत्रियों को कौन देखता है? वह वाणी को सुनता है। वे आँसुओं को गिराती हैं? यह कार्य किसके द्वारा होता है? वे आँखों से पुस्तक को देखते हैं? वह कुण्डलों से शोभित होती है। बच्चे घुटनों से चलेंगे। वह तलवार से हिंसा नहीं करेगा। ये कमल हमारे लिए हैं। प्राणियों के लिए अन्न है। यात्रा के लिए धन कहाँ है? यह धन सभा के लिए है। ये फल वैद्य के लिए हैं। मैं उन स्त्रियों से फूल लेता हूँ। गाय के थनों से दूध झरता है। गलियों से कौन नहीं जाता है? वे चूहों के छेद हैं। हम मिट्टी की गाड़ी देखते हैं7 तकिये की रुई कौन निकालता है? सोने के मृग को किसने मारा? तुम इन खेतों के स्वामी हो। समुद्रों में जल है। तुम्हारी वाणी में अमृत है। कलि में सुगन्ध नहीं होती है। विषमता में सुख नहीं होता है। उसकी गहनों में आसक्ति नहीं है।

❑❑

पाठ ६०

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (पु.) : सम्बोधन = हे!

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
बालअ	बालओ	बालआ
पुरिस	पुरिसो	पुरिसा
छत्त	छत्तो	छत्ता
सीस	सीसो	सीसा
णर	णरो	णरा
सुधि	सुधी	सुधिणो
कवि	कवी	कविणो
कुलवइ	कुलवई	कुलवइणो
सिसु	सिसू	सिसुणो
साहु	साहू	साहुणो

उदाहरण वाक्य :

बालओ! पोत्थअं पढहि	=	हे बालक, पुस्तक पढ़ो।
छत्ता! विज्जालयं गच्छइ	=	हे छात्रों, विद्यालय जाओ।
सुधी! तत्थ उपदिसहि	=	हे विद्वान्, वहाँ उपदेश दो।
कविणो! अत्थ कव्वं पढह	=	हे कवियों, यहाँ काव्य पढ़ो।
सिसू! मा कन्दहि	=	हे बच्चे, मत रोओ।
साहुणो! दाणं गिण्हह	=	हे साधुओं, दान ग्रहण करो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हे आदमी, पाप मत करो। हे शिष्यों, शस्त्र लिखो। हे मनुष्य, धन की इच्छा मत करो। हे कवि, गीत गाओ। हे बच्चों, वहाँ नाचो। हे साधु, वस्तुओं को संचित मत करो।

शब्दकोष (पु.) :

निव	=	राजा	तवस्सि	=	तपस्वी
बुह	=	बुद्धिमान	गहवइ	=	मुखिया
भड	=	योद्धा	रिसि	=	ऋषि
आयरिअ	=	आचार्य	गुरु	=	गुरु
मेह	=	बादल	रिउ	=	शत्रु

निर्देश : इन शब्दों के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन में रूप लिख कर प्राकृत में उनके वाक्य बनाओ।

□□

पाठ ६१

आ, इ, ई, उ एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्री.) : सम्बोधन = हे!

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
बाला	बाला	बालाओ
माआ	माआ	माआओ
सुण्हा	सुण्हा	सुण्हाओ
माला	माला	मालाओ
जुवइ	जुवइ	जुवईओ
नई	नइ	नईओ
साडी	साडि	साडीओ
बहू	बहु	बहूओ
धेणु	धेणु	धेणूओ
सासू	सासु	सासूओ

उदाहरण वाक्य :

बाला! विज्जालयं गच्छहि	=	हे बालिके, विद्यालय जाओ।
सुण्हाओ! ते नमह	=	हे बहुओं, उनको नमन करो।
जुवइ! कज्जं झत्ति करहि	=	हे युवती, कार्य शीघ्र करो।
माआओ! सिसुणो पालह	=	हे माताओं, बचचों को पालो।
सासु! ममं वत्थं दाहि	=	हे सास, मुझे वस्त्र दो।
बालाओ! तत्थ खेलह	=	हे बालिकाओं, वहाँ खेलो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हे बहू, उसको भोजन दो। हे युवतियों, वहाँ नृत्य करो। हे माता, इनकी रक्षा करो। हे सासो, बहुओं की निन्दा मत करो। हे बहुओं, उनकी सेवा करो।

शब्दकोष (स्त्री.) :

धूआ	=	पुत्री	इत्थी	=	स्त्री
गोवा	=	ग्वालिन	दासी	=	नौकरानी
भारिया	=	पत्नी	धाई	=	धाय
कुमारी	=	कुँआरी	नडी	=	नटी
बहिणी	=	बहिन	माउसिआ	=	मौसी

निर्देश : इन शब्दों (स्त्री.) के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन में रूप लिख कर प्राकृत में उनके वाक्य बनाओ।

पाठ ६२

अ, इ एवं उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुं.) :

सम्बोधन = हे

शब्द	सम्बोधन एकवचन	बहुवचन
णयर	णयर	णयराणि
फल	फल	फलाणि
पुप्फ	पुप्फ	पुप्फाणि
कमल	कमल	कमलाणि
घर	घर	घराणि
खेत्त	खेत्त	खेत्ताणि
सत्थ	सत्थ	सत्थाणि
वारि	वारि	वारीणि
दहि	दहि	दहीणि
वत्थु	वत्थु	वत्थूणि

उदाहरण वाक्य :

णयर! अहं तुमं नमामि = हे नगर, मैं, तुम्हें प्रणाम करता हूँ।
पुप्फ! तुमं मज्झ मित्तं असि = हे फूल, तुम मेरे मित्र हो।
कमलाणि! सरं तुम्हाण घरं अत्थि = हे कमलो, सरोवर तुम्हारा घर है।
खेत्ताणि! तुम्हे अम्हाण पालआ थ = हे खेतो, तुम हमारे पालक हो।
सत्थ! तुमं तस्स गुरु असि = हे शास्त्र, तुम उसके गुरु हो।
वारि! तुमं संसारस्स जीवणं असि = हे पानी, तुम संसार का जीवन हो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हे नगरो, तुम्हें आज हम छोड़ रहे हैं। हे फलों, तुम रोगी का जीवन हो। हे कमल, तुम तालाब की शोभा हो। हे फूलों, तुम कवि की प्रेरणा हो। हे घर, तुम प्राणियों की शरण हो। हे वस्तु, तुममें प्राण नहीं हैं।

शब्दकोष (पु.) :

वण	=	जंगल	पिंजर	=	पिंजड़ा
हियय	=	हृदय	चंदण	=	चंदन
मित्त	=	मित्र	आयास	=	आकाश
नयण	=	आँख	हेम	=	स्वर्ण
चारित्त	=	चारित्र	मोत्तिय	=	मोती

निर्देश : इन शब्दों (नपुं.) के सम्बोधन एकवचन और बहुवचन में रूप लिख कर प्राकृत में उनके वाक्य बनाओ।

पाठ ६३

नियम : सम्बोधन (पु., स्त्री., नपुं.)

पुल्लिंग शब्द

नि. ५७ : पुल्लिंग अ, इ एवं उकारान्त शब्दों के सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति के समान रूप बनते हैं जैसे -

ए.व. :	बालओ	सुधी	सिसू
ब.व. :	बालआ	सुधिणो	सिसुणो

स्त्रीलिंग शब्द :

नि. ५८ : (क) आकारान्त स्त्री. शब्दों के सम्बोधन में प्रथम विभक्ति के समान रूप बनते हैं। जैसे -

ए.व. :	बाला	सुण्हा	माला
ब.व. :	बालाओ	सुण्हाओ	मालाओ

(ख) ईकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्री. शब्द सम्बोधन के एकवचन में ह्रस्व हो जाते हैं।

(ग) बहुवचन में प्रथम विभक्ति में बहुवचन जैसे ही उनके रूप बनते हैं। जैसे-

ए.व. :	नई = नइ,	बहू = बहु,	सासू = सासु
ब.व. :	नईओ	बहूओ	सासूओ

नपुंसकलिंग शब्द :

नि. ५९ : (अ) अ, इ एवं उकारान्त नपुं. शब्द सम्बोधन के एकवचन में मूल शब्द के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं। जैसे -

ए.व. : णयर = णयर, वारि = वारि, वत्थु = वत्थु

(ब) सम्बोधन बहुवचन में उनके प्रथमा विभक्ति के बहुवचन वाले रूप प्रयुक्त होते हैं। जैसे -

ब.व. : णयराणि वारीणि वत्थूणि

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो :

निवो, अम्हाण रक्खं करहि। भडा, तत्थ जुज्झं मा करह। रिसी, ते णाणं दाहि। गुरुणो, तुम्हाण अम्हे सीसा सन्ति। गोवा, मज्झं दुद्धं दाहि। दासि, इदं कज्जं करहि। बहिणीओ, अम्हाण कहं सुणह। हियय, दाणिं तुमं सन्तं होहि। मित्ताणि, पावकम्माणि मा करह। चारित्त, तुमं मज्झ, धणं असि।

□□

सर्वनाम												
एकवचन :	पु.	स्त्री.	पुल्लिंग			स्त्रीलिंग			नपुंसकलिंग		
शब्द	अम्ह	तुम्ह	त	इम	क	ता	इमा	का	त	इम	क
प्र.	अहं	तुमं	सो	इमो	को	सा	इमा	का	तं	इमं	किं
द्वि.	ममं	तुमं	तं	इमं	कं	तं	इमं	कं	तं	इमं	किं
तृ.	मए	तुमए	तेण	इमेण	केण	ताए	इमाए	काए	तेण	इमेण	केण
च.	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स	ताअ	इमाअ	काअ	तस्स	इमस्स	कस्स
पं.	ममओ	तुमाओ	ताओ	इमाओ	काओ	तत्तो	इमत्तो	कत्तो	ताओ	इमाओ	काओ
ष.	मज्झ	तुज्झ	तस्स	इमस्स	कस्स	ताअ	इमाअ	काअ	तस्स	इमस्स	कस्स
स.	अम्हम्मि	तुम्हम्मि	तम्मि	इमम्मि	कम्मि	ताए	इमाए	काए	तम्मि	इमम्मि	कम्मि
बहुवचन											
प्र.	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	के	ताओ	इमाओ	काओ	ताणि	इमाणि	काणि
द्वि.	अम्हे	तुम्हे	ते	इमे	के	ताओ	इमाओ	काओ	ताणि	इमाणि	काणि
तृ.	अम्हेहि	तुम्हेहि	तेहि	इमेहि	केहि	ताहि	इमाहि	काहि	तेहि	इमेहि	केहि
च.	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण
पं.	अम्हाहिंतो	तुम्हाहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	काहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	काहिंतो	ताहिंतो	इमाहिंतो	काहिंतो
ष.	अम्हाण	तुम्हाण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण	ताण	इमाण	काण
स.	अम्हेसु	तुम्हेसु	तेसु	इमेसु	केसु	तासु	इमासु	कासु	तेसु	इमेसु	केसु

संज्ञाशब्द											
एकवचन :	पुल्लिंग			स्त्रीलिंग शब्द					नपुंसकलिंग		
शब्द	पुरिस	सुधि	साहु	बाला	जुवई	नई	धेणु	बहू	णयर	वारि	वत्थु
प्र.	पुरिसों	सुधी	साहू	बाला	जुवई	नई	धेणू	बहू	णयरं	वारिं	वत्थुं
द्वि.	पुरिसं	सुधिं	साहुं	बालं	जुवइं	नइं	धेणुं	बहुं	णयरं	वारिं	वत्थुं
तृ.	पुरिसेण	सुधिणा	साहुणा	बालाए	जुवईए	नईए	धेणूए	बहूए	णयरेण	वारिणा	वत्थुणा
च.	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईआ	नईआ	धेणूए	बहूए	णयरस्स	वारिणो	वत्थुणो
पं.	पुरिसत्तो	सुधित्तो	साहुत्तो	बालत्तो	जुवइत्तो	नइत्तो	धेणुत्तो	बहुत्तो	णयरत्तो	वारित्तो	वत्थुत्तो
ष.	पुरिसस्स	सुधिणो	साहुणो	बालाअ	जुवईआ	नईआ	धेणूए	बहूए	णयरस्स	वारिणो	वत्थुणा
स.	पुरिसे	सुधिम्मि	साहुम्मि	बालाए	जुवईए	नईए	धेणुए	बहूए	णयरे	वारिम्मि	वत्थुम्मि
सं.	पुरिसो	सुधी	साहू	बाला	जुवइ	नइ	धेणु	बहु	णयर	वारि	वत्थु
बहुवचन											
प्र.	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि
द्वि.	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि
तृ.	पुरिसेहि	सुधीहि	साहूहि	बालाहि	जुवईहि	नईहि	धेणूहि	बहूहि	णयरेहि	वारीहि	वत्थूहि
च.	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण	णयराण	वारीण	वत्थूण
पं.	पुरिसाहिंतो	सुधीहिंतो	साहूहिंतो	बालाहिंतो	जुवईहिंतो	नईहिंतो	धेणूहिंतो	बहूहिंतो	णयराहिंतो	वारीहिंतो	वत्थूहिंतो
ष.	पुरिसाण	सुधीण	साहूण	बालाण	जुवईण	नईण	धेणूण	बहूण	णयराण	वारीण	वत्थूण
स.	पुरिसेसु	सुधीसु	साहूसु	बालासु	जुवईसु	नईसु	धेणूसु	बहूसु	णयरेसु	वारीसु	वत्थूसु
सं.	पुरिसा	सुधिणो	साहुणो	बालाओ	जुवईओ	नईओ	धेणूओ	बहूओ	णयराणि	वारीणि	वत्थूणि

6. विभक्ति एवं कारक
पाठ

(६४)

विभक्ति एवं कारक (पु., स्त्री., नपुं.) :

संस्कृत, प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं में विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग आवश्यक है। विभक्ति से ही पता चलता है कि शब्द की संख्या क्या है, उसका कारक क्या है। प्राकृत में छह कारक एवं छह विभक्तियाँ होती हैं। चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्ति को एक मानने से सात के स्थान पर छह विभक्तियों के प्रत्यय ही प्रयुक्त होते हैं, जबकि अर्थ सात विभक्तियों के ग्रहण किये जाते हैं। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दों में लगने वाले प्रत्यय **विभक्ति** कहलाते हैं। क्रिया का जो उत्पादक हो, क्रिया से जिसका सम्बन्ध हो अथवा क्रिया की उत्पत्ति में जो सहायक हो उसे **कारक** कहा गया है। जो क्रिया का निवर्तक है वह कारक है - **किरियाए णिव्वट्टगं कारगं।** प्राकृत में प्रयोग के अनुसार कारक और विभक्तियों के क्रम बदलते रहते हैं। फिर भी सामान्यतया कारक और विभक्ति के सम्बन्ध इस प्रकार हैं :-

कारक	विभक्ति	चिन्ह
१ - कर्ता	प्रथमा	है, ने
२ - कर्म	द्वितिया	को, (को रहित भी)
३ - साधन (करण)	तृतीया	से, के द्वारा आदि
४ - सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए
५ - अपादान	पंचमी	से (विलग होने में)
६ - सम्बन्ध	षष्ठी	का, के, की
७ - अधिकरण	सप्तमी	में, पर

१ - कर्ता कारक प्रथमा = है, ने

शब्द के अर्थ, लिंग, परिमाण, वचन मात्र को बतलाने के लिए शब्द संज्ञा, सर्वनाम आदि में प्रथमा विभक्ति होती है।[1] प्रथमा विभक्ति वाला शब्द वाक्य में प्रयुक्त क्रिया का कर्ता होता है। उसके बिना क्रिया का कोई प्रयोजन नहीं रह जाता। अत: कर्ता कारक शब्द क्रिया की सार्थकता बताता है। जैसे : **महावीरो गामं गच्छदि, पोग्गलो अचेयणो अत्थि।** यहाँ गच्छ क्रिया का कर्ता महावीर है, अत्थि क्रिया का मूल सम्बन्ध पोग्गल से है। महावीरो प्रथमा विभक्ति में होने से सूचित करता है कि महावीर पुल्लिंग संज्ञा शब्द है और एक वचन है।

२ - कर्म कारक द्वितीया = को

जो कर्ता को अभीष्ट कार्य हो, क्रिया से जिसका सीधा सम्बन्ध हो उसको व्यक्त करने वाले शब्द में कर्म संज्ञा होती है। कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। सामान्यतया किसी भी कर्ता-क्रिया वाले वाक्य के अन्त में 'किसको' प्रश्न क्रिया से जोड़ने पर कर्म की पहिचान हो

जाती है। जैसे – 'राम फल खाता है' यहाँ किसको खाता है? प्रश्न करने पर उत्तर में फल शब्द सामने आता है। अत: फल कर्मसंज्ञक है। इसका द्वितीया का रूप 'फलं' वाक्य में प्रयुक्त होगा। इस तरह के प्राकृत वाक्य हैं –

जीवो घडं करइ	=	जीव घड़ा बनाता है।
सो पडं ण करइ	=	वह पट (कपड़ा) नहीं बनाता है।
णाणी तवं धरयइ	=	ज्ञानी तप धारण करता है।
सावगो वदं गिण्हइ	=	श्रावक व्रत को ग्रहण करता है।

सामान्य कर्म में द्वितीया विभक्ति के प्रयोग होने के साथ प्राकृत में इन प्रसंगों में भी द्वितीया विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है।

(१) 'विना' के साथ – **अणज्जो आणज्जभासं विणा गाहेदुं ण सक्कदि**
= अनार्य अनार्य भाषा के बिना ग्रहण करने में समर्थ नहीं होता।

(२) 'गमन' के अर्थ में – **सो उम्मगं गच्छंतं मग्गे ठवेदि**
= वह उन्मार्ग में जाते हुए को मार्ग में स्थापित करता है

(३) 'श्रद्धा' के योग में – **मोक्खं असद्धहंतो पाठो गुणं ण करेदि**
= मुक्त आत्मा पर अश्रद्धा करता हुआ कोई (शास्त्र) पाठ लाभ नहीं करता।

(४) कभी-कभी प्रथमा के स्थान पर द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है –
अप्पाणं हवदि सद्दव्वं = आत्मा स्व द्रव्य है।

(५) कभी-कभी सप्तमी के स्थान पर द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है।
असुहं कम्मं संसारं पवेसेदि = अशुभ कर्म संसार में प्रवेश कराता है।

३ – करण कारक **तृतीया = के द्वारा, साथ, से**

क्रिया-फल की निष्पत्ति में सबसे अधिक निकट सम्पर्क रखने वाले साधन को करण कहते हैं। कार्य की सिद्धि में कई सहायक साधन होते हैं। अधिक सहायक साधन में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होगा। प्राचीन साहित्य में विभिन्न अर्थों में तृतीया विभक्ति का प्रयोग देखने को मिलता है। यथा –

१. प्रकृति अर्थ में	–	**सहावेण सुंदरो लोओ**	=	स्वभाव से सुंदर लोक।
२. अंग विकार में	–	**सोणेत्तेण हीणो अत्थि**	=	वह नेत्र से हीन है।
३. हेतु अर्थ में	–	**पुण्णेण दंसणं हवइ**	=	पुण्य से दर्शन होता है।
४. सह अर्थ में	–	**सा पिउणा सह गच्छइ**	=	वह पिता के साथ जाता है।

अन्य उदाहरण वाक्य :

जिणेण कहिदं धम्मं सुणह	=	जिनेन्द्र के द्वारा कथित धर्म सुनो।
तं कज्जं मुणिणा हवइ	=	वह कार्य मुनि के द्वारा होता है।
सीसो साहुणा सह पढइ	=	शिष्य साधु के साथ पढ़ता है।
सा मादाए सह गच्छइ	=	वह माता के साथ जाती है।

पुरिसो जुवईए सह वसइ = आदमी युवती के साथ रहता है।
णयरेण सामिद्धी हवइ = नगर से समृद्धि होती है।
सत्थेण पंडिओ होदि = ग्रन्थ से पंडित होता है।

विशेष प्रयोग

तृतीया विभक्ति का उपयोग कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के प्रयोगों में भी होता है। इसे कुछ उदाहरणों से समझा जा सकता है।

कर्तवाच्य	कर्मवाच्य/भाववाच्य
समणो गंथं पढइ (श्रमण ग्रन्थ को पढ़ता है।)	**समणेण गंथं पढिअं** (श्रमण के द्वारा ग्रन्थ पढ़ा गया)
मुणी झायइ (मुनि ध्यान करता है।)	**मुणिणा झाइज्जइ** (मुनि के द्वारा ध्यान किया जाता है)
अहं हसामि (मैं हंसता हूँ)	**मए हसीअइ/हसिज्जइ** (मेरे द्वारा हंसा जाता है)

अनियमित प्रयोग

आगम ग्रन्थों में तृतीया विभक्ति के कतिपय अनियमित प्रयोग भी प्राप्त होते हैं, उन्हें अभ्यास से समझना चाहिए। जैसे –

तवसा अप्पा भावेदव्वा = तप के द्वारा आत्मा को जानना चाहिए।
तं णत्थि जं तपसा ण लब्भइ = वह कोई वस्तु नहीं है जो तप के द्वारा प्राप्त न होती हो।
जीवा कम्मणा वज्झंति = जीव कर्मों के द्वारा बंधते हैं।

यहाँ पर **तपसा** संस्कृत रूप तृतीया का यथावत प्रयोग कर लिया गया है। इसी प्रकार **कम्माण** भी संस्कृत रूप का अनुसरण है।

४ - सम्प्रदान कारक **चतुर्थी = के लिए, को**

जिसके लिए कोई कार्य किया जाए या कोई वस्तु दी जाय तो उस व्यक्ति या वस्तु संज्ञा/सर्वनाम में सम्प्रदान कारक होता है। सम्प्रदान कारक वाले शब्दों में चतुर्थी विभक्ति के प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जैसे –

सावगो समणस्स आहारं देइ = श्रावक श्रमण के लिए आहार देता है।
निवो माहणस्स धणं देइ = राजा ब्राह्मण को धन देता है।
गुरू बालअस्स पोत्थअं देइ = गुरु बालक के लिए पुस्तक देता है।

इस प्रकार की वस्तु देने में श्रद्धा, कीर्ति, उपकार आदि का भाव दाता के मन में होता है। सम्प्रदान कारक अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। यथा –

णमो अरिहंताणं = अरिहंतों को नमस्कार।
पुत्तस्स दुद्धं रोयइ = पुत्र को दूध अच्छा लगता है।
जणओ पुत्तस्स कुज्झइ = पिता पुत्र पर क्रोधित होता है।

साहू णाणस्स झाइ	=	साधू ज्ञान के लिए ध्यान करता है।
ते जिणाणं अच्चंति	=	वे जिनों को पूजते है।
सावगा समणाण नमंति	=	श्रावक श्रमणों को नमन करते हैं।
निवो कवीणं धणं देइ	=	राजा कवियों को धन देता है।
साहूण णाणं हिअं अत्थि	=	साधुओं के लिए ज्ञान हितकर है।
माआणं णमो	=	माताओं के लिए नमस्कार है।

५ - अपादान कारक **पंचमी = से (विलग)**

एक दूसरे से अलग होने को अपाय कहते हैं। जैसे = मोहन घोड़े से गिरता है, पेड़ से पत्ता गिरता है आदि। इस वलिग होने की क्रिया को अपादान कहते हैं। अपादान काकर में पंचमी विभक्ति के प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। यथा -

मोहणो अस्सत्तो पडदि, **रुक्खत्तो पत्तं पडइ** आदि।

पंचमी विभक्ति का प्रयोग कतिपय धातुओं, अर्थों एवं प्रसंगों में भी किया जाता है। उनमें से कुछ प्रमुख हैं :-

सो चोरओ बीहइ	=	वह चोर से डरता है।
जोद्धा चोरत्तो रक्खइ	=	योद्धा चोर से रक्षा करता है।
मुणी उवज्झायदो भणइ	=	मुनि उपाध्याय से पढ़ता है।
बीजत्तो अंकुरो जायइ	=	बीज से अंकुर उत्पन्न होता है।
धणत्तो विज्जा सेट्ठा	=	धन से विद्या श्रेष्ठ है।

६ - सम्बन्ध कारक **षष्ठी = का, के, की**

जहाँ सम्बन्ध व्यक्त करना हों वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ ही अन्य प्रसंगों में, विभिन्न शब्दों के योग में भी षष्ठी होती है। यथा -

इंमं जिणस्स उवदेसं अत्थि	=	यह जिन का उपदेश है।
मुण्णिो णाणं वड्ढइ	=	मुनि का ज्ञान बढ़ता है।
ते साहुस्स सम्माणं करंति	=	वे साधु का सम्मान करते हैं।
पुत्तो माआअ सुमरइ	=	पुत्र माता को स्मरण करता है।

विशिष्ट प्रयोग उदाहरण वाक्य : षष्ठी प्रयोग

प्राकृत के सिद्धान्त ग्रन्थों में विभिन्न विभक्तियों में षष्ठी प्रयोग के कुछ उदाहरण वाक्य इस प्रकार हैं :-

सो सव्वधम्माणं उवगूहणगो	=	वह सब धर्मों को ढकने वाला
ववहारस्स दु आदा	=	व्यवहार नय से आत्मा
हेऊण सो अप्पा तिपयारो	=	(इन) हेतुओं से आत्मा तीन प्रकार का है

सो मोक्खमग्गस्स ण चुक्कदि	=	वह मोक्षमार्ग से नहीं चूकता है।
णाणं पुरिसस्स हवदि	=	ज्ञान आत्मा में होता है।

७ - अधिकरण कारक **सप्तमी = में, पर**

वार्तालाप का वाक्य प्रयोग में कर्ता एवं कर्म के माध्यम से क्रिया का जो आधार होता है, उसे अधिकरण कहते हैं। यह आधार अनेक प्रकार का हो सकता है। सभी आधारों में सप्तमी विभक्ति के प्रत्ययों का प्रयोग शब्द के साथ किया जाता है, इसलिए इसको अधिकरण कारक कहते हैं। सामान्यतया निम्न आधारों में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है -

रुक्खे पक्खिणो वसंति	=	वृक्ष पर पक्षी वसते हैं।
आसणे उवरि पोत्थअं अत्थि	=	आसन के ऊपर पुस्तक है।
तिलेसु तेलं अत्थि	=	तिलों में तेल है।
हियए करुणा अत्थि	=	हृदय में करुणा है।
धम्मे अहिलासा अत्थि	=	धर्म में अभिलाषा है।
मोक्खे इच्छा अत्थि	=	मोक्ष में इच्छा है।
छत्तेसु जयकुमारो णिउणो	=	छात्रों में जयकुमार निपुण है।
मम समणेसु आयरो अत्थि	=	मेरा श्रमणों में आदर है।

प्राकृत में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग अन्य विभक्तियों के लिए भी कभी-कभी किया जाता है। कतिपय उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य हैं -

सुत्तं/सुत्तम्मि जाणमाणो	=	सूत्रों को जानने वाला
सुदाणि/सुदेसु वेदेऊण	=	श्रुतों को जानकर
जीवे (जीवेण) कम्मं बद्धं	=	जीव के द्वारा कर्म बांधा जाता है
सुत्ते सह सूई ण णासदि	=	सूत्र (धागे) के साथ सुई नष्ट नहीं होता।
जे दंसणेसु भट्ठा	=	जो सम्यग्दर्शन से वंचित हैं।
जे णाणे भट्ठा	=	जो ज्ञान से रहित हैं।

निर्देश : यहाँ अधिकांश उदाहरण वाक्य शौरसेनी सिद्धान्त ग्रन्थों से दिये गये हैं। अत: उनकी भाषा भी शौरसेनी प्राकृत है। महाराष्ट्री प्राकृत के इस प्रकार के वाक्य खोजकर शिक्षक अभ्यास करायें।

□□

7. संज्ञार्थक क्रियाएँ

पाठ ६५

संज्ञार्थक क्रियाएँ : (पुल्लिंग संज्ञा)

(क)		(ख)	
शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
आयार	आचार	उवदेसअ	उपदेशक
उवदेस	उपदेश	उवासअ	उपासक
कोव	क्रोध	किसअ	कृषक
पाढ	पाठ	गायअ	गायक
णास	नाश	सासअ	शासक
लेह	लेख	नत्तअ	नर्त्तक
तव	तप	सावअ	श्रावक
हरिस	हर्ष	सेवअ	सेवक
फास	स्पर्श	भारवह	मजदूर
खय	क्षय	रक्खअं	रक्षक

नि. ६०: इन शब्दों के रूप अकारान्त पुल्लिंग शब्दों की तरह सभी विभक्तियों में चलते हैं।

उदाहरण वाक्य : (क)

इमो महावीरस्स उवदेसो अत्थि	=	यह महावीर का उपदेश है।
सो कोवं जिणइ	=	वह क्रोध को जीतता है।
मुणी तवेण झायइ	=	मुनि तप के द्वारा ध्यान करता है।
सो कम्मस्स खयस्स तवइ	=	वह कर्म के क्षय के लिए तप करता है।
बालओ कोवत्तो बीहइ	=	बालक क्रोध से डरता है।
साहू कोवस्स णासं कुणइ	=	साधु क्रोध का नाश करता है।
सो तवे लीणो अत्थि	=	वह तप में लीन है।

(ख)

उवदेसओ आगच्छइ	=	उपदेशक आता है।
सो सेवअं धणं देह	=	वह सेवक को धन देता है।
अहं रक्खएण सह गच्छामि	=	मैं रक्षक के साथ जाता हूँ।
सो सासअस्स नमइ	=	वह शासक के लिए नमन करता है।
मुणि उवासअत्तो भोअणं मग्गइ	=	मुनि उपासक से भोजन माँगता है।
सो नत्तअस्स पुत्तो अत्थि	=	वह नर्त्तक का पुत्र है।
सावए भत्ती अत्थि	=	श्रावक में भक्ति है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

उसका आचार अच्छा है। वह किस पुस्तक का पाठ है? उसके लेख में शक्ति है। पापों का नाश कब होगा। नारी के स्पर्श में क्षणिक सुख है। तप में कर्मों का क्षय होता है। वह महावीर का उपासक है। तुम किस देश के शासक हो। वह राजा का सेवक है। मजदूरों के द्वारा महल बनता है। किसान अन्न पैदा करता है।

□□

पाठ ६६

संज्ञार्थक क्रियाएँ : (स्त्रीलिंग संज्ञा)

(क)		(ख)	
शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
उवलद्धि	उपलब्धि	मुत्ति	मुक्ति
गइ	गति	थुइ	स्तुति
दिट्ठि	दृष्टि	संति	शान्ति
बुद्धि	बुद्धि	सिद्धि	सिद्धि
भत्ति	भक्ति	कित्ति	कीर्ति

नि. ६१: इन शब्दों के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों की तरह सभी विभक्तियों में चलते हैं।

उदाहरण वाक्य :

मज्झ कज्जस्स इमा उवलद्धि अत्थि	=	मेरे कार्य की यह उपलब्धि है।
जणा तस्स भत्तिं पासन्ति	=	लोग उसकी भक्ति को देखते हैं।
बुद्धीए कज्जाणि सिज्झन्ति	=	बुद्धि से कार्य सिद्ध होते हैं।
मुत्तीआ सो तवं कुणइ	=	मुक्ति के लिए वह तप करता है।
सो कित्तित्तो बीहइ	=	वह कीर्ति से डरता है।
इदं खंतीए दारं अत्थि	=	यह शान्ति का द्वार है।

शब्दकोश (स्त्री.)

सति	=	स्मृति	कंति	=	कान्ति
पंति	=	पंक्ति	सिद्धि	=	सिद्धि
मइ	=	मति	दित्ति	=	दीप्ति
रइ	=	रति	धिइ	=	धैर्य

प्राकृत में अनुवाद करो :

उस तरुणी की गति धीमी है। उनकी दृष्टि तेज है। इस कार्य की सिद्धि कब होगी? तुम सब ईश्वर की भक्ति करो। स्तुति से देवता प्रसन्न नहीं होते हैं। शांति से जीवन में सुख होता है। कवि काव्य लिख कर कीर्ति प्राप्त करता है।

निर्देश : इन संज्ञार्थक क्रियाओं (स्त्रीलिंग) के सभी विभक्तियों में रूप लिखकर अभ्यास कीजिए।

पाठ ६७

संज्ञार्थक क्रियाएँ : (नपुंसकलिंग)

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अज्झयण	अध्ययन	रक्खण	रक्षा करना
आयरण	आचरण	लेहण	लिखना
कहण	कथन	सयण	सोना
गज्जण	गर्जना	सवण	सुनना
गहण	ग्रहण करना	गमण	जाना
चयन	चुनना	जीवण	जीवन
धावण	दौड़ना	मरण	मरण
नमण	नमन करना	पोसण	पालन करना
पढण	पढ़ना	कंपण	कंपन
पूयण	पूजन	आसण	बैठना

नि. ६२: इन शब्दों के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों की तरह सभी विभक्तियों में चलते हैं।

उदाहरण वाक्य :

पच्चूसे अज्झयणं वरं अत्थि	=	प्रात:काल में अध्ययन करना अच्छा है।
सो तस्स आयरणं पासइ	=	वह उसके आचरण को देखता है।
केवलं कहणेण किं होइ	=	केवल कहने से क्या होता है?
सो पढणस्स गच्छइ	=	वह पढ़ने के लिए जाता है।
सो पूयणत्तो विरमइ	=	वह पूजन करने से अलग होता है।
जीवणस्स किं उद्देस्सो अत्थि	=	जीवन का क्या उद्देश्य है?
तस्स कहणे सच्चं अत्थि	=	उसके कहने में सत्य है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

उसने बादल की गर्जना सुनी। युवती पति का चयन करती है। तुम्हारा दौड़ना अच्छा नहीं है। दिन में पूजन करना अच्छा है। वह लेखन से धन इकट्ठा करता है। प्रात:काल में सेना हानिकारक है। शास्त्रों का सुनना हितकारी है।

निर्देश : इन संज्ञार्थक क्रियाओं (नपुंसलिंग) के सभी विभक्तियों में रूप लिखकर अभ्यास कीजिए।

पाठ ६८

कुछ अन्य पुल्लिंग संज्ञा शब्द :

शब्द	अर्थ	एकवचन (प्रथमा)	बहुवचन
भगवंत	भगवान्	भगवंतो	भगवंता
गुणवंत	गुणवान	गणवंतो	गुणवंता
णाणवंत	ज्ञानवान	णाणवंतो	णाणवंता
जुवाण	युवक	जुवाणो	जुवाणा
अप्पाण	आत्मा	अप्पाणो	अप्पाणा
राय	राजा	रायो	राया
जम्म	जन्म	जम्मो	जम्मा
चंदम	चन्द्रमा	चंदमो	चंदमा

नि. ६३: इन शब्दों के रूप आकारान्त पुल्लिंग शब्दों की भांति प्रयुक्त किये जाते हैं। यद्यपि विकल्प से इनके अन्य रूप भी बनते हैं।

उदाहरण वाक्य :

एकवचन

भगवंतो वीयराओ होइ	=	भगवान् वीतराग होता है।
सो भगवंतं पणमइ	=	वह भगवान् को प्रणाम करता है।
भगवंतेण विणा धम्मो नत्थि	=	भगवान् के बिना धर्म नहीं है।
अहं भगवंतस्स नमामि	=	मैं भगवान् के लिए नमन करता हूँ।
ते भगवंतत्तो किं मग्गन्ति	=	वे भगवान् से क्या माँगते हैं?
भगवंतस्स णाणो सेट्ठो अत्थि	=	भगवान् का ज्ञान श्रेष्ठ है।
भगवंते अवगुणा ण सन्ति	=	भगवान् में अवगुण नहीं हैं।
भगवंतो !अम्हे उवदिसहि	=	हे भगवान्! हमें उपदेश दो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह भगवान् को पूजता है। गुणवान राजा लोगों का कल्याण करता है। ज्ञानवान साधु के साथ हम रहते हैं। राजा युवक से डरता है। आत्मा का कल्याण कब होगा? राजा का पुत्र नगर में घूमता है। वह पूर्व जन्म में मृग था। बालक चन्द्रमा को देखता है। हे ज्ञानवान! उन्हें शिक्षा दो।

बहुवचन (पु.)

उदाहरण वाक्य :

भगवंता वीयराआ होन्ति	=	भगवान् वीतराग होते हैं।
अम्हे भगवंता पणमामो	=	हम भगवानों को प्रणाम करते हैं।
भगवंतेहि विणा भत्ती ण होइ	=	भगवानों के बिना भक्ति नहीं होती है।
इमो जिणालयो भगवंताण अत्थि	=	यह जिनालय भगवानों के लिए है।
भगवंताहिंतो जणा किं मग्गन्ति	=	भगवानों से लोग क्या माँगते हैं?
इमे भगवंताण सावआ सन्ति	=	ये भगवानों के श्रावक हैं।
भगवंतेसु राअदोसो ण होइ	=	भगवानों में रागद्वेष नहीं होता है।
भगवंता! अम्हे उपदिसह	=	हे भगवानो! हमें उपदेश दो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

भगवान् यहाँ कब आयेंगे? राजा गुणवानों का सम्मान करता है। ज्ञानवान साधुओं के साथ वह नहीं रहता है। बालक युवकों से डरते हैं। तुम संसार की आत्माओं का कल्याण करो। वहाँ राजाओं की सभा है। वे पूर्व-जन्मों में कहाँ थे? चन्द्रमाओं में किसका चित्र है?

निर्देश : (क) उपर्युक्त भगवंत आदि शब्दों के सभी विभक्तियों में रूप लिखिए।

(ख) राय (राजा) शब्द के विकल्प वाले ये रूप भी याद करे लें।

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	राया	राइणो
द्वि.	राइणं	राइणो
तृ.	राइणा	राईहि
च.	राइणो	राईण
पं.	राइणो	राईहिंतो
ष.	राइणो	राईण
स.	राइम्मि	राईसु
सं.	राया	राइणो

नि. ६४ : राय शबद के वे उपर्युक्त रूप पुल्लिंग इकारान्त शब्द की तरह हैं। किन्तु प्रथमा, द्वितीया एवं पंचमी एकवचन में राया, राइणं, राइणो ये रूप उससे भिन्न हैं।

❑❑

8. विशेषण

पाठ ६१

विशेषण शब्द (पु., स्त्री., नपुं.) :

गुणवाचक

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उत्तम	श्रेष्ठ(अच्छा)	गंभीर	गंभीर
अहम	नीच	चवल	चंचल
निट्ठुर	कठोर	सीयल	ठंडा
दयालु	दयावान	उण्ह	गरम
किसण	काला	णाणि	ज्ञानी
धवल	सफेद	मुक्ख	मूर्ख
बलिट्ठ	बलशाली	रुग्ग	रोगी
निब्बल	कमजोर	णीरोग	स्वस्थ
चाइ	त्यागी	पमाइ	आलसी
लुद्ध	लोभी	उज्जमसील	उद्यमशील

नि. ६५: इन विशेषण शब्दों के रूप एवं लिंग विशेष्य के अनुसार बनते हैं।

उदाहरण वाक्य :

	प्रथमा-एकवचन	**प्रथमा-बहुवचन**
(पु.)	उत्तमो साहू झाइ	उत्तमा साहुणो झायन्ति
(स्त्री.)	उत्तमा जुवई पढइ	उत्तमाओ जुवईओ पढन्ति
(नपुं.)	उत्तमं मित्तं पच्चाअइ	उत्तमाणि मित्ताणि पच्चाअन्ति
	द्वितीया-एकवचन	**द्वितीया-बहुवचन**
(पु.)	उत्तमं कविं सो नमइ	उत्तमू कविणो ते नमन्ति
(स्त्री.)	उत्तमं साडिं सा इच्छइ	उत्तमाओ साडीओ ताओ इच्छन्ति
(नपुं.)	उत्तमं सत्थं सा पढइ	उत्तमाणि सत्थाणि सा पढइ
	तृतीया-एकवचन	**तृतीया-बहुवचन**
(पु.)	उत्तमेण सुधिणा सह सो पढइ	उत्तमेहि सुधीहिं सह सो पढइ
(स्त्री.)	उत्तमाए सासूए सह सुण्हा वसइ	उत्तमाहि सासूहि सह कलहं ण होइ
(नपुं.)	उत्तमेण घरेण बिणा सुहं नत्थि	उत्तमेहि पुप्फेहि सोहा होइ
	चतुर्थी-एकवचन	**चतुर्थी-बहुवचन**
(पु.)	उत्तमस्स छत्तस्स इदं फलं अत्थि	उत्तमाण छत्ताण इमाणि फलाणि सन्ति
(स्त्री.)	उत्तमाअ बालाअ तं पुप्फं अत्थि	उत्तमाण बालाण ताणि पुप्फाणि संति
(नपुं.)	उत्तमस्स वत्थुणो इदं धणं अत्थि	उत्तमाण वत्थूण इदं धणं अत्थि

	पंचमी-एकवचन	पंचमी-बहुवचन
(पु.)	उत्तमत्तो साहुत्तो सो पढइ	उत्तमाहिंतो कवीहिंतो कव्वं उत्पन्नइ
(स्त्री.)	उत्तमत्तो मालत्तो सुअंधो आयइ	उततमाहिंतो मालहिंतो सुअंधो आयइ
(नपुं.)	उत्तमत्तो फलत्तो रसं उप्पन्नइ	उत्तमाहिंतो फलहिंतो रसं उप्पन्नइ
	षष्ठी-एकवचन	**षष्ठी-बहुवचन**
(पु.)	उत्तमस्स पुरिसस्स इमो पुत्तो अत्थि	उत्तमाण पुरिसाण इमे पुत्ता सन्ति
(स्त्री.)	उत्तमाए लताए इदं पुप्फं अत्थि	उत्तमाण लताण इमाणि पुप्फाणि संति
(नपुं.)	उत्तमस्स पुप्फस्स इदं रसं अत्थि	उत्तमाण पुप्फाण इमा माला अत्थि
	सप्तमी-एकवचन	**सप्तमी-बहुवचन**
(पु.)	उत्तमे सीसे विनयं होइ	उत्तमेसु सीसेसु विनयं होइ
(स्त्री.)	उत्तमाए नारीए लज्जा होइ	उत्तमेसु नारीसु लज्जा होइ
(नपुं.)	उत्तमे घरे खन्ती होइ	धत्तमेसु घरेसु खन्ती होइ

निर्देश : उपर्युक्त वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह नीच पुरुष है। उस राजा का कठोर शासन है। यह साधु बहुत दयालु है। लोभी मनुष्य दु:ख प्राप्त करता है। गंभीर नदी बहती है। चंचल युवती लज्जा नहीं रकती है। यह जल शीतल है। अग्नि सदा गरम होती है। ज्ञानी आचार्य का शिष्य आदर करते हैं। मूर्ख आदमियों की सभा में वह निन्दा करता है। आलसी नहीं पढ़ता है। उद्यमशील बलिकाओं की वह प्रशंसा करता है।

हिन्दी में अनुवाद करो :

किसणो सप्पो गच्छइ। धवलो मेहो ण वरसइ। बलिट्ठो पुरिसो धणं अज्जइ। लुद्धा जणा निट्ठुरा होन्ति। मुक्खा बाला चित्तं फाडइ। णीरोगे सरीरे सत्ती होइ। चवलेण वाणरेण सह मिओ ण गच्छइ। उत्तमाण बालाण ताणि पुप्फाणि संति। अहमेसु जणेसु गुणा ण सन्ति।

□□

पाठ ७०

विशेषण शब्द (पु., स्त्री., नपुं.)

तुलनात्मक

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अप्प	छोटा	कणीअस	उससे छोटा	कणिट्ठ	सबसे छोटा
जेट्ठ	बड़ा	जेट्ठयर	उससे बड़ा	जेट्ठयम	सबसे बड़ा
पिअ	प्रिय	पिअअर	उससे प्रिय	पिअअम	सबसे प्रिय
उच्च	ऊँचा	उच्चअर	उससे ऊँचा	उच्चअम	सबसे ऊँचा
सेट्ठ	श्रेष्ठ	सेट्ठअर	उससे श्रेष्ठ	सेट्ठअम	सबसे श्रेष्ठ
बहु	बहुत	भूयस	उससे अधिक	भूयिट्ठ	सबसे अधिक
खुद्द	नीच	खुद्दअर	उससे नीच	खुद्दअम	सबसे नीच

नि. ६६: इन विशेषण शब्दों के सभी विभक्तियों में रूप एवं लिंग विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे - सेट्ठो पुत्तो, सेट्ठा धूआ, सेट्ठं पोत्थअं।

उदाहरण वाक्य :

तुमं ममत्तो कणीअसो अत्थि	=	तुम मुझसे छोटे हो।
मोहणो तस्स कणिट्ठो पुत्तो अत्थि	=	मोहन उसका सबसे छोटा पुत्र है।
सईसु सीया सेट्ठा अत्थि	=	सतियों में सीता श्रेष्ठ है।
नईसु गंगा सेट्ठअमा अत्थि	=	नदियों में गंगा सबसे श्रेष्ठ है।
गिरीसु हिमालयो उच्चअमो अत्थि	=	पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा है।
तस्स पुत्ताणं रामो जेट्ठयमो अत्थि	=	उसके पुत्रों में राम सबसे बड़ा है।
सव्व जन्तूसु गद्दभो खुद्दो होइ	=	सब प्राणियों में गधा नीच होता है।
कणिट्ठा धूआ पियअमा होइ	=	छोटी पुत्री सबसे प्रिय होती है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं तुमसे छोटा हूँ। तुम उसके सबसे बड़े पुत्र हो। साधुओं में काशयप श्रेष्ठ है। वह पेड़ सबसे ऊँचा है। बर्फ सबसे अधिक शीतल होती है। तुम्हें उसकी पुत्री सबसे अधिक प्रिय है। यह पुस्तक मुझे प्रिय है।

हिन्दी में अनुवाद करो :

तुमं ममाओ जेट्ठयरो असि। कणिट्ठो पुत्तो पिअअमो होइ। पावस्स मग्गो पिअअरो ण होइ। सो मज्झ कणिट्ठो भायरा अत्थि। कवीसु कालिआसो सेट्ठो अत्थि। णयरेसु उदयपुरो सेट्ठअमो अत्थि।

पाठ ७१

विशेषण शब्द **संख्यावाचक**

(क) एक

एगो	= एक (पु.)	एगो छत्तो पढइ	=	एक छात्र पढ़ता है।
एगा	= एक (स्त्री.)	एगा बालिका गच्छइ	=	एक बालिका जाती है।
एग	= एक (नपुं.)	इदं एगं फलं अत्थि	=	यह एक फल है।

नि. ६७ : एक शब्द के रूप सातों विभक्तियों में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवम् नपुंसक लिंग के अकारान्त शब्दों के समान चलेंगे। विशेष्य शब्द के अनुरूप ही एक शब्द का प्रयोग होगा। यथा-

एगस्स पुरिसस्स इदं घरं अत्थि	=	एक आदमी का यह घर है।
एगेण बालएण सह अहं गच्छामि	=	एक बालक के साथ मैं जाता हूँ।
एगे खेत्ते वारिं अत्थि	=	एक खेत में पानी है।

(ख) दो

नि. ६८ : एक शब्द को छोड़कर सभी संख्यावाची शब्द प्राकृत में तीनों लिंगों में समान होते हैं। यथा -

(पु.)	दोण्णि बालआ पढन्ति	=	दो बालक पढ़ते हैं।
(स्त्री.)	दोण्णि जुवईओ गच्छन्ति	=	दो युवतियाँ जाती हैं।
(नपुं.)	दोण्णि फलाणि सन्ति	=	दो फल हैं।

(ग) दो से अठारह एवं कई

नि. ६९ : दो (२) से लेकर अठारह (१८) संख्या तक के शब्द तथा कई (कितने) शब्द सभी विभक्तियों में बहुतवचन में ही प्रयुक्त होते हैं -

दोण्णि	=	दो	एगारह	=	ग्यारह
तिण्णि	=	तीन	बारह	=	बारह
चउरो	=	चार	तेरह	=	तेरह
पंच	=	पाँच	चउद्दह	=	चौदह
छ	=	छह	पण्णरह	=	पन्द्रह
सत्त	=	सात	सोलह	=	सोलह
अट्ठ	=	आठ	सत्तरह	=	सत्तरह
णव	=	नौ	अट्ठारह	=	अठारह
दह	=	दस	कइ	=	कितने

तीन शब्द के सात विभक्तियों के रूप :

प्र.	तिण्णि बालआ पढन्ति	=	तीन बालक पढ़ते हैं।
द्वि.	तिण्णि साडीओ सा गिण्हइ	=	तीन साड़ियों को वह लेती है।
तृ.	तीहि कवीहि सह सो गच्छइ	=	तीन कवियों के साथ वह जाता है।
च.	तीण्ह वत्थूण सो धणं दाइ	=	तीन वस्तुओं के लिए वह धन देता है।
पं.	तीहिन्तो कमलाहिंतो वारिं पडइ	=	तीन कमलों से पानी गिरता है।
ष.	तीण्ह पुरिसाण तं घरं अत्थि	=	तीन आदमियों का वह घर है।
स.	तीसु खेत्तेसु वारिं अत्थि	=	तीन खेतों में पानी है।

(घ) उन्नीस से अट्ठावन तक

नि. ७० : उन्नीस (१९) से अट्ठावन (५८) संख्या तक के शब्दों के रूप माला शब्द के समान अकारान्त बनते हैं। अतः उनके रूप माला शब्द के समान सातों विभक्तियों में चलते हैं तथा तीनों लिंगों में समान होते हैं।

एगूणवीसा	=	उन्नीस	छव्वीसा	=	छब्बीस
वीसा	=	बीस	सत्तवीसा	=	सत्ताईस
एगवीसा	=	इक्कीस	अट्ठावीसा	=	अट्ठाईस
दुवीसा	=	बाइस	एगूणतीसा	=	उन्तीस
तेवीसा	=	तेइस	तीसा	=	तीस
चउवीसा	=	चौबीस	एगतीसा	=	इकतीस
पण्णवीसा	=	पच्चीस	चतालीस	=	चालीस

(ङ) उनसठ से निन्नानवे तक

नि. ७१ : उनसठ (५९) से निन्नावने (९९) संख्या तक के शब्दों के रूप इकारान्त स्त्रीलिंग जैसे होते हैं। अतः उनके रूप 'जुवइ' शब्द जैसे चलते हैं। तथा तीनों लिंगों में समान होते हैं।

एगूणसट्ठि	=	उनसठ	एगूणसत्तरि	=	उन्हत्तर
सट्ठि	=	साठ	सत्तरि	=	सत्तर
णगसट्ठि	=	इकसठ	एकहत्तरि	=	इकहत्तर
दोसट्ठि	=	बासठ	एगूणसीइ	=	उन्नासी
तेसट्ठि	=	त्रेसठ	असीइ	=	अस्सी
चउसट्ठि	=	चौसठ	एगासीइ	=	इक्यासी
पणसट्ठि	=	पैंसठ	एगूणनवइ	=	नवासी
छसट्ठि	=	छयासठ	णवइ	=	नव्वे
सत्तसट्ठि	=	सड़सठ	एगणवइ	=	इक्यानवे
अट्ठसट्ठि	=	अड़सठ	नवणवइ	=	निन्नानवे

उदाहरण वाक्य :

वीसा (तीनों लिंगों में समान)

(पु.)	वीसा बालआ पढन्ति	= बीस बालक पढ़ते हैं।
(स्त्री.)	वीसा साडीओ सन्ति	= बीस साड़ियाँ हैं।
(नपुं.)	वीसा खेत्ताणि सन्ति	= बीस खेत हैं।

सट्ठि (तीनों लिंगों में समान)

(पु.)	सट्ठी पुरिसा गच्छन्ति	= साठ आदमी जाते हैं।
(स्त्री.)	सट्ठी जुवईओ गायन्ति	= साठ युवतियाँ गाती हैं।
(नपुं.)	सट्ठी फलाणि सो गेण्हइ	= साठ फलों को वह लेता है।

(च) सौ, हजार, लाख

नि. ७१ : निम्नलिखित संख्या शब्दों के रूप नपुंसलिंग अकारान्त शब्दों के समान चलते हैं :-

सय	= सौ	तिसय	= तीन सौ
दुसय	= दो सो	सहस्स	= (एक) हजार
नवसय	= नौ सो	लक्ख	= (एक) लाख

प्राकृत में अनुवाद करो :

मनुष्य के शरीर में एक आत्मा है। उसकी दो आँखें हैं। तुम्हारी तीन पुत्रियाँ हैं। ये चार पुस्तकें मेरी हैं। महावीर के पाँच शिष्य हैं। इस गाँव में सत्तर लोग रहते हैं। मेरे विद्यालय में नब्बे छात्र हैं। इस नगर में एक हजार पुरुष हैं।

हिन्दी में अनुवाद करो :

इमम्मि नयरे तिण्ण नईओ सन्ति। सत्त उदही सन्ति। चउद्दह भुवणणि सन्ति। पण्णसा जणा तम्मि नयरे वसन्ति। अट्ठारह पुराणा सन्ति। तम्मि खेत्ते तिसयाणि बालआ खेलन्ति। ताए लताए वीसा पुप्फाणि संति। सइम्मि कारायारे चत्तरि चोरा संति। सत्त दीवा होन्ति। सट्ठी बालआ पढमाए पढन्ति।

□□

पाठ ७२

विशेषण शब्द **प्रकार एवं क्रमवाचक**

एगहा	=	एक प्रकार	बहुविह	=	बहुत प्रकार
दुविहा	=	दो प्रकार	अणेगविह	=	अनेक प्रकार
तिविह	=	तीन प्रकार	णणाविह	=	नाना प्रकार
चउहा	=	चार प्रकार	सयहा	=	सैंकड़ों प्रकार
दसविह	=	दस प्रकार	सहस्सहा	=	हजारों प्रकार
पढमो	=	पहला	अट्ठमो	=	आठवां
बीओ	=	दूसरा	नवमो	=	नौवां
तइओ	=	तीसरा	दहमो	=	दसवां
चउत्थो	=	चौथा	वीसइमो	=	बीसवां
पंचमो	=	पाँचवां	चउवीसइमो	=	चौबीसवां
छट्ठो	=	छठवां	सययमो	=	सौवां
सत्तमो	=	सातवां	अणंतयमो	=	अनन्तवां

उदाहरण वाक्य :

दुविहा जीवा	=	दो प्रकार के जीव।
तिविह मोक्ख मग्गं	=	तीन प्रकार का मोक्ष मार्ग।
चउहा गईओ	=	चार प्रकार की गतियाँ।
दसविहो धम्मो	=	दस प्रकार का धर्म।
बहुविहा कम्मा	=	बहुत प्रकार के कर्म।
णाणाविहाणि पोत्थआणि	=	नाना प्रकार की पुस्तकें।
पढमो बालओ निउणो अत्थि	=	पहला बालक निपुण है।
पढमा जुवई नमइ	=	पहली युवती नमन करती है।
पढमं सत्थं आयारो अत्थि	=	पहला शास्त्र आचारांग है।
चउवीसइमो तित्थयरो महावीरो अत्थि	=	चौबीसवें तीर्थंकर महावीर हैं।
चउत्थी बाला मम धूआ अत्थि	=	चौथी बालिका मेरी पुत्री है।
पंचमं घरं मज्झ अत्थि	=	पाँचवाँ घर मेरा है।

प्राकृत में अनुवाद करो :

दूसरा बालक दयालु है। तीसरी पुस्तक काव्य की है। छठी युवती तुम्हारी बहिन है। सातवां फूल गुलाब का है। आठवीं गाय काली है। नौवां वस्त्र सफेद है। दसवां आदमी मूर्ख है। चार प्रकार के फल। तीन प्रकार के वस्त्र। दो प्रकार की पुस्तकें। दस प्रकार के फूल। हजारों प्रकार के प्राणी। नाना प्रकार के जन्म। अनेक प्रकार के घर।

❑❑

पाठ ७३

कृदन्त विशेषण शब्द : वर्तमानकाल

पु. शब्द	अर्थ	पु. शब्द	अर्थ
पढन्तो	पढ़ता हुआ	गज्जन्तो	गर्जता हुआ
धावन्तो	दौड़ता हुआ	रुदन्तो	रोता हुआ
बोलन्तो	बोलता हुआ	अज्झीयमाणो	अध्ययन करता हुआ
णच्चन्तो	नाचता हुआ	हसमाणो	हँसता हुआ
हसन्तो	हँसता हुआ	पलायमाणो	भागता हुआ
गच्छन्तो	जाता हुआ	कंपमाणो	कांपता हुआ
खेलन्तो	खेलता हुआ	लज्जमाणो	लजाता हुआ
नमन्तो	नमन करता हुआ	उड्डमाणो	उड़ता हुआ

नि. ७३: (क) मूल धातु में **न्त** एवं **माण** प्रत्यय लगने पर वर्तमान काल के कृदन्त रूप बनते हैं। जैसे - पढ + न्त = पढन्त पु. में पढन्तो। हस + माण = हसमाण। पु. में हसमाणो।

(ख) इन कृदन्तों में **ई** प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग रूप बन जाते हैं। जैसे - पढन्त + ई = पढन्ती, हसमाण + ई = हसमाणी।

नि. ७४: इन विशेषण शब्दों के रूप तीनों लिंगों में सभी विभक्तियों में विशेष्य के अनुसार बनेंगे।

उदाहरण वाक्य :

	प्रथमा-एकवचन	**प्रथमा-बहुवचन**
(पु.)	पढन्तो बालओ गच्छइ	पढन्ता बालआ गच्छन्ति
(स्त्री.)	पढन्ती जुवई नमइ	पढन्तीओ जुवईओ नमन्ति
(नपुं.)	पढन्तं मित्तं हसइ	पढन्ताणि मित्ताणि हसन्ति
	द्वितीया-एकवचन	**द्वितीया-बहुवचन**
(पु.)	पढन्तं बालअं सो पुच्छइ	पढन्ता बालआ सो पुच्छइ
(स्त्री.)	पढन्ति जुवइं सा कहइ	पढन्तीओ जुवईओ सा कहइ
(नपुं.)	पढन्तं मित्तं अहं पासामि	पढन्ताणि मित्ताणि अहं पासामि
	तृतीया-एकवचन	**तृतीया-बहुवचन**
(पु.)	पढन्तेण बालएण सह सो पढइ	पढन्तेहि बालएहि गामं सोहइ
(स्त्री.)	पढन्तीए जुवईए सह सा वसइ	पढन्तीहि जुवईहि घरं सोहइ
(नपुं.)	पढन्तेण मित्तेण सह अहं पढामि	पढन्तेहि मित्तेहि सह कलहं ण होइ

	चतुर्थी-एकवचन	चतुर्थी-बहुवचन
(पु.)	पढन्तस्स बाल इदं फलं अत्थि	पढन्ताण बालआण इमाणि फलाणि सन्ति
(स्त्री.)	पढन्तीआ जुवईआ तं पुप्फं अत्थि	पढन्तीण जुवईण तानि पुप्फाणि संति
(नपुं.)	पढन्तस्स मित्तस्स इदं पोत्थअं अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि सत्थाणि संति
	पंचमी-एकवचन	पंचमी-बहुवचन
(पु.)	पढन्तत्तो बालअत्तो सो पोत्थअं मग्गइ	पढन्ताहिंतो बालआहिंतो सो पोत्थअं मग्गइ
(स्त्री.)	पढन्तित्तो जुवइत्तो सा कमलं गिण्हइ	पढन्तीहिंतो जुवईहिंतो सा कमलं गेण्हइ
(नपुं.)	पढन्तत्तो मित्तत्तो सद्दो उप्पन्नइ	पढन्ताहिंतो मित्ताहिंतो सद्दो उप्पन्नइ
	षष्ठी-एकवचन	षष्ठी-बहुवचन
(पु.)	पढन्तस्स बालअसस इमो जणओ अत्थि	पढन्ताण बालआण इदं घरं अत्थि
(स्त्री.)	पढन्तीआ जुवईआ इमा माआ अत्थि	पढन्तीण जुवईण मित्ताण इमाणि फलाणि संति
(नपुं.)	पढन्तस्स मित्तस्स इदं कलमं अत्थि	पढन्ताण मित्ताण इमाणि फलाणि संति
	सप्तमी-एकवचन	सप्तमी-बहुवचन
(पु.)	पढन्ते बालए विनयं होइ	पढन्तेसु बालएसु विनयं अत्थि
(स्त्री.)	पढन्तीए जुवईए लज्जा अत्थि	पढन्तेसु जुवईसु लज्जा अत्थि
(नपुं.)	पढन्ते मित्ते खमा अत्थि	पढन्तेसु मित्तेसु खमा अत्थि

निर्देश : उपर्युक्त वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो।

प्राकृत में अनुवाद करो :

दौड़ता हुआ बालक जीतता है। बोलती हुई बहू शोभित नहीं होती है। नाचता हुआ मोर जाता है। हँसती हुई युवती पूछती है। गर्जना हुआ बादल बरसता है। भागता हुआ नौकर यहाँ आया। लजाती हुई बालिका वहाँ गयी। उड़ता हुआ पक्षी भूमि पर गिर पड़ा। कांपता हुआ मृग सिंह के समीप गया। नमन करता हुआ छात्र पुस्तक पढ़ता है।

हिन्दी में अनुवाद करो :

हसन्ती बाला तत्थ गच्छीअ। कंपमाणी जुवई पुच्छइ। अज्झीयमाणेण मित्तेण सह सो ण कलहइ। उड्डुमाणण कवोआण इमं अन्नं अत्थि। गज्जन्तेसु मेहेसु जलं ण होइ।

❑❑

पाठ ७४

पु. शब्द	अर्थ	पु. शब्द	अर्थ
संतुट्ठ	सन्तुष्ट हुआ/हुई	भणिअ	कहा हुआ/हुई
गमिअ	गया हुआ/हुई	पढिअ	पढ़ा हुआ/हुई
अहीअ	पढ़ा हुआ/हुई	रक्खिअ	रक्षित हुआ/हुई
कुविअ	क्रोधित हुआ/हुई	विअसिअ	विकसित हुआ/हुई
चिंतिअ	चिंतित हुआ/हुई	लिहिअ	लिखा हुआ/हुई
णअ	झुका हुआ/हुई	कअ	किया हुआ/हुई
नट्ठ	नष्ट हुआ/हुई	गअ	गया हुआ
पूइअ	पूजित हुआ/हुई	हअ	मरा हुआ/हुई
भीअ	डरा हुआ/हुई	णाअ	जाना हुआ
मुइअ	आनन्दित हुआ/हुई	दिट्ठ	देखा हुआ

नि. ७५: **(क)** मूल धातू में **अ** प्रत्यय लगने पर तथा विकल्प से धातु के अ को इ होने पर भूतकाल के कृदन्त रूप बनते हैं। यथा – गम + इ + अ = गमिअ। ण + अ = णाअ।

नि. ७६: इन विशेषण शब्दों के रूप तीनों लिंगों में सभी विभक्तियों में विशेष्य के अनुसार बनेंगे।

उदाहरण वाक्य :

	प्रथमा-एकवचन	**प्रथमा-बहुवचन**
(पु.)	संतुट्ठो णिवो धणं देइ	संतुट्ठा णिवा धाणं देन्ति
(स्त्री.)	संतुट्ठा णारी लज्जइ	संतुट्ठाओ णारीओ मुअन्ति
(नपुं.)	संतुट्ठं मित्तं किं करइ	संतुट्ठाणि मित्ताणि कज्जं करन्ति
	द्वितीया-एकवचन	**द्वितीया-बहुवचन**
(पु.)	संतुट्ठं णिवं सो नमइ	संतुट्ठा णिवा को ण इच्छइ
(स्त्री.)	संतुट्ठं णारिं सो इच्छइ	संतुट्ठाओ णारीओ ते इच्छन्ति
(नपुं.)	संतुट्ठं मित्तं अहं इच्छामि	संतुट्ठाणि मित्ताणि सो धणं देइ
	तृतीया-एकवचन	**तृतीया-बहुवचन**
(पु.)	संतुट्ठेण णिवेण सह सुहं होइ	संतुट्ठेहि णिवेहि कलहं ण होइ
(स्त्री.)	संतुट्ठाए णारीए विणा सुहं णत्थि	संतुट्ठीहि णारीहि सह सो वसइ
(नपुं.)	संतुट्ठेण मित्तेण सह अहं वसामि	संतुट्ठेहि मित्तेहि सह सो गच्छइ

चतुर्थी-एकवचन		चतुर्थी-बहुवचन
(पु.)	संतुट्ठस्स णिवस्स इमं सम्माणं अत्थि	संतुट्ठाण णिवाण संसारो असारो अत्थि
(स्त्री.)	संतुट्ठाआ णारीआ इमं धणं अत्थि	संतुट्ठाण णारीण इमं घरं अत्थि
(नपुं.)	संतुट्ठस्स मित्तस्स सो फलं देइ	संतुट्ठाण मित्ताण अहं नमामि
	पंचमी-एकवचन	**पंचमी-बहुवचन**
(पु.)	संतुट्ठत्तो णिवत्तो सो धणं मग्गइ	संतुट्ठाहिंतो णिवाहिंतो सो धणं मग्गइ
(स्त्री.)	संतुट्ठत्तो णारित्तो सा सिक्खं लहइ	संतुट्ठाहिंतो णारीहिंतो सा सिक्खं लहइ
(नपुं.)	संतुट्ठत्तो मित्ततो सो फलं गिण्हइ	संतुट्ठाहिंतो मित्ताहिंतो सो फलाणि गिण्हइ
	षष्ठी-एकवचन	**षष्ठी-बहुवचन**
(पु.)	संतुट्ठस्स णिवस्स इमं रज्जं अत्थि	संतुट्ठाण णिवाण इदं कज्जं अत्थि
(स्त्री.)	संतुट्ठाआ णारीआ इदंम काअव्वं अत्थि	संतुट्ठाण णारीण इदं घरं अत्थि
(नपुं.)	संतुट्ठस्स मित्तस्स इमो पुत्तो अत्थि	संतुट्ठाण मित्ताण इदं काअव्वं अत्थि
	सप्तमी-एकवचन	**सप्तमी-बहुवचन**
(पु.)	संतुट्ठे णिवे लच्छी वसइ	संतुट्ठेसु णिवेसु लच्छी वसइ
(स्त्री.)	संतुट्ठाए णारीए लज्जा होइ	संतुट्ठेसु णारीसु लज्जा होइ
(नपुं.)	संतुट्ठे मित्ते णाणं होइ	संतुट्ठेसु मित्तेसु खंतिं होइ

निर्देश : उपर्युक्त वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो।

भविष्यकाल

उदाहरण वाक्य :

पु.	पढिस्संतो गंथो	= पढ़ा जाने वाला ग्रन्थ।
स्त्री.	पढिस्संता गाहा	= पढ़ी जाने वाली गाथा।
नपुं.	पढिस्संतं पत्तं	= पढ़ा जाने वाला पत्र।

नि. ७७: **(क)** मूल क्रिया के अ को इ होने पर **स्संत** प्रत्यय लगने पर भविष्यकाल कृदन्त के रूप बनते हैं। जैसे –

पढ् + इ + स्संत = **पढिस्संत**।

(ख) भविष्य कृदन्त बन जाने पर पु., स्त्री., एवं नपुं. विशेष्य के अनुसार इन कृदन्तों के सभी विभक्तियों के रूप बनते हैं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह जयपुर गया हुआ है। यह पुस्तक पढ़ी हुई है। झुकी हुई लता से फूल तोड़ा। पूजित साधुओं को प्रमाण करो। डरी हुई युवतियों से बात करो। आनन्दित पुरुषों का जीवन अच्छा है। उसके द्वारा यह कहा हुआ है। विकसित कलियों को मत तोड़ो। लिखी हुई पुस्तक यहाँ लाओ। यह देखा हुआ नगर है। लिखा जाने वाला पत्र कहाँ है? सुना जाने वाला शस्त्र वहाँ है।

❑❑

पाठ ७५

कृदन्त विशेषण शब्द : **योग्यतासूचक**

(क)		(ख)	
करणीय	= करने योग्य	होअव्व	= होने योग्य
पढणीअ	= पढ़ने योग्य	मुणेअव्व	= जानने योग्य
हसणीअ	= हंसने योग्य	नच्चेअव्व	= नाचने योग्य
कहणीअ	= कहने योग्य	फासेअव्व	= छूने योग्य
पुज्जणीअ	= पूजनीय	मग्गेअव्व	= माँगने योग्य

नि. ७७: **(क)** मूल धातू में **अणीअ** प्रत्यय लगने पर विध्यर्थ (योग्यता सूचक) कृदन्ता बनते हैं। यथा - कर + अणीअ = करणीअ।

(ख) मूल धातू में **अव्व** प्रत्यय लगने पर धातु के अ को ए होने पर दूसरे प्रकार के योग्यता सूचक कृदन्त बनते हैं। यथा - मुण + ए + अव्वं = मुणे अव्वं।

नि. ७८: इन विशेषण शब्दों के रूप तीनों लिंगों में सभी विभक्तियों में विशेष्य के अनुसार चलेंगे।

उदाहरण वाक्य :

(क)

पु.	कहणीओ वितान्तो अत्थि	=	कहने योग्य वृत्तान्त है।
स्त्री.	कहणीआ कहा अत्थि	=	कहने योग्य कथा है।
नपुं.	कहणीअं चरित्तं अत्थि	=	कहने योग्य चरित है।

(ख)

पु.	मुणेअव्वो धम्मो सुहं दाइ	=	जानने योग्य धर्म सुख देता है।
स्त्री.	मुणेअव्वा आणा किं अत्थि	=	जानने योग्य आज्ञा क्या है?
नपुं.	मुणेअव्वं जीवंण अप्पं अत्थि	=	जानने योग्य जीवन थोड़ा है।

प्राकृत में अनुवाद करो : **(क)**

यह पुस्तक पढ़ने योग्य है। वह आदमी हंसने योग्य है। करने योग्य कार्यों को शीघ्र करो। पूजनीय स्त्रियों को प्रणाम करो। वह कथा पढ़ने योग्य है। यह दृष्टान्त कहने योग्य है। पूजनीय पुस्तकों का संग्रह करो।

(ख)

यह विवाह होने योग्य है। वह माँ होने योग्य नहीं है। ये पुस्तकें जानने योग्य हैं। तुम जानने योग्य कथा कहो। वह युवती नाचने योग्य है। वह आदमी छूने योग्य नहीं है। वह वस्तु छूने योग्य है। वह वस्तु माँगने योग्य है।

पाठ ७६

तद्धित विशेषण शब्द : **योग्यता-वाचक**

तद्धितरूप	अर्थ	तद्धितरूप	अर्थ
रसाल	रसयुक्त	दयालु	दया-युक्त
जडाल	जटाधार	ईसालु	ईर्ष्या-युक्त
सद्दाल	शब्द-युक्त	नेहालु	स्नेह=युक्त
जोण्हाल	चाँदनी-युक्त	लज्जालु	लज्जा-युक्त
गव्विर	गर्व-युक्त	सोहिल्ल	शोभा-युक्त
रेहिर	रेखा-युक्त	छाइल्लल	छाया-युक्त
दप्पुल्ल	दर्प-युक्त	मंसुल्ल	दाढ़ीवाला
धणमण	धन-युक्त	सिरिमंत	श्री-युक्त
सोहामण	शोभा-युक्त	धीमंत	बुद्धि-युक्त
भत्तिवंत	भक्ति-युक्त	गामिल्ल	ग्रामीण
धणवंम	धन-युक्त	घरिल्ल	घरेलु
एकल्ल	अकेला	णयरुल्ल	नागरिक
नवल्ल	नया	अप्पुल्ल	आत्मा में उत्पन्न
नत्थिअ	नास्तिक	अत्थिअ	आस्तिक

उदाहरण वाक्य :

जडालो जणो कत्थ गच्छइ = जटाधारी व्यक्ति कहाँ जाता?
अज्ज जुण्हाला रत्ती अत्थि = आज चाँदनी रात है।
ईसालू पुरिसो दुहं दाइ = ईर्ष्यालु आदमी दु:ख देता है।
गव्विरा जुवई ण सोहइ = घमंडी युवती अच्छी नहीं लगती है।
तं रक्खं छाइल्लं णत्थि = वह वृक्ष छायावाला नहीं है।
धीमंता धणमणा ण होंति = बुद्धिमान् धनवान् नहीं होते हैं।
तस्स घरिल्लं अभिहाणं किं अत्थि = उसका घरेलू नाम क्या है?
नवल्ली बहू लज्जालू होइ = नयी बहू लज्जालु होती है।

नि. ८०: संज्ञा शब्दों से बने ये शब्द तद्धित कहे जाते हैं। इनका प्रयोग विशेषण की तरह होता है। विशेष्य की तरह इनके रूप चलते हैं।

(ख) अन्य अर्थवाचक :

तद्धितरूप	अर्थ	तद्धितरूप	अर्थ
एगहुत्तं	एक बार	एगत्तो	एक ओर से
तिहुत्तं	तीन बार	सवत्तो	सब ओर से
इत्तो	इस ओर से	तत्तो	उस ओर से
कत्तो	किस ओर से	जत्तो	जिस ओर से
अम्हकेर	हमारा	तुम्हकरे	तुम्हारा
परकेर	दूसरे का	अप्पणय	अपना
जहि	जहाँ पर	तहि	वहाँ पर
कहि	कहाँ पर	अन्नहि	अन्य स्थान पर
एत्तिअ	इतना	तेत्तिअ	उतना
केत्तिअ	कितना	जेत्तिअ	जितना
एरिस	ऐसा	तारिस	वैसा
केरिस	कैसा	जारिस	जैसा
अम्हारिस	हमारे जैसा	तुम्हारिस	तुम्हारे जैसा

प्रयोग - वाक्य :

ते तिहुत्तं भुंजुति	=	वे तीन बार भोजन करते हैं।
सो इत्तो गच्छइ	=	वह इस ओर से जाता है।
इदं परकेरं पोत्थअं अत्थि	=	यह दूसरे की पुस्तक है।
सो एकल्लो किं करइ	=	वह अकेला क्या करता है?
एत्तिअं संचयं वरं णत्थि	=	इतना संचय अच्छा नहीं है।
वासुदेवो केरिसं कज्जं करइ	=	वासुदेव कैसा काम करता है?

प्राकृत में अनुवाद करो :

ग्रामीण लोग वहाँ पढ़ते हैं। दयालु आदमी हिंसा नहीं करता है। घमंड करने वाला सदा दु:ख पाता है। आम का फल रसयुक्त है। वह घरेलु पक्षी है। तुम एक बार क्यों भोजन करते हो? तुम्हारा पुत्र कहाँ पर है? साधु आस्तिक है। तुम जितना मांगोगे वह उतना नहीं देगा। हमारे जैसा श्रीमंत अन्य स्थान पर नहीं है।

❑❑

क्रियारूप चार्ट

एकवचन

पुरुष	वर्तमान		भूतकाल		भविष्यकाल		इच्छा या आज्ञा		सम्बन्ध कृदन्त		हेत्वर्थ कृदन्त	
	अ.क्रिया नम	अ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	अ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	अ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	अ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	अ.क्रिया दा	अ.क्रिया नम	अ.क्रिया दा
प्रथम	नमामि	दामि	नमीअ	दाही	नमिहिमि	दाहिमि	नममु	दामु	नमिऊण	दाऊण	नमिउं	दाउं
मध्यम	नमसि	दासि	नमीअ	दाही	नमिहिसि	दाहिसि	नमहि	दाहि	नमिऊण	दाऊण	नमिउं	दाउं
अन्य	नमइ	दाह	नमीअ	दाही	नमिहिइ	दाहिइ	नमउ	दाउ	नमिऊण	दाऊण	नमिउं	दाउं

बहुवचन

प्रथम	नमामो	दामो	नमीअ	दाही	नमिहामो	दाहामो	नममो	दामो	नमिऊण	दाऊण	नमिउं	दाउं
मध्यम	नमित्था	दाइत्था	नमीअ	दाही	नमिहित्था	दाहित्था	नमह	दाह	नमिऊण	दाऊण	नमिउं	दाउं
अन्य	नमन्ति	दान्ति	नमीअ	दाही	नमिहिन्ति	दाहिन्ति	नमन्तु	दान्तु	नमिऊण	दाऊण	नमिउं	दाउं

कृदन्त विशेषण चार्ट

प्रथमा विभक्ति

काल	मूलक्रिया एव प्रत्यय	एकवचन पु.	एकवचन स्त्री.	एकवचन नपु.	बहुवचन पु.	बहुवचन स्त्री.	बहुवचन नपुं.
वर्तमानकाल	पढ + अंत	पढन्तो	पढन्ती	पढन्तं	पढन्ता	पढन्तीओ	पढन्ताणि
वर्तमानकाल	पढ + माण	पढमाणो	पढमाणी	पढमाणं	पढमाणा	पढमाणीओ	पढमाणाणि
भूतकाल	पढ + अ	पढिओ	पढिआ	पढिअं	पढिआ	पढिआओ	पढिआणि
भविष्यकाल	पढ + स्संत	पढिस्संतो	पढिस्संती	पढिस्संतं	पढिस्संता	पढिस्संतीओ	पढिस्संताणि
योग्यतासूचक (क) (विधिकृदन्त)	पढ + अणीअ	पढणीओ	पढ़णीआ	पढणीअं	पढणीआ	पढणीआओ	पढणीआणि
योग्यतासूचक (ख)	पढ + अव्व	पढेअव्वो	पढेअव्वा	पढेअव्वं	पढेअव्वा	पढेअव्वाओ	पढेअव्वाणि

निर्देश : इसी प्रकार सभी विभक्तियों में विशेष्य के अनुसार इन विशेषणों के रूप प्रयुक्त होते हैं। पढ क्रिया के समान अन्य क्रियाओं के सभी कालों में कृदन्त विशेषण बनाकर अभ्यास कीजिए।

९. कर्मणि प्रयोग :

पाठ

(७७)

कर्मवाच्य क्रिया-प्रयोग : **वर्तमानकाल**

तेण अहं पासीअमि/पासिज्जमि	=	उसके द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
निवेण अम्हे पासीअमो/पासिज्जमो	=	राजा के द्वारा हम देखे जाते हैं।
मए तुमं पासीअसि/पासिज्जसि	=	मेरे द्वारा तुम देखे जाते हो।
तुम्हे तेहि पासीअइत्था/पासिज्जित्था	=	तुम सब उनके द्वारा देखे जाते हो।
तुमए सो पीसअइ/पासिज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जाता है।
साहुणा ते पासीअंति/पासिज्जंति	=	साधु के द्वारा वे सब देखे जाते हैं।

उदाहरण वाक्य :

जुवईए बालओ पासीअइ	=	युवती के द्वारा बालक देखा जाता है।
मए घडो करीअइ	=	मेरे द्वारा घड़ा बनाया जाता है।
तेण पोत्थअं पढिज्जइ	=	उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
बहूए देवो अच्चीअइ	=	बहू के द्वारा पूजा जाता है।
पुरिसेण पत्ताणि लिहिज्जंति	=	आदमी के द्वारा पत्र लिखे जाते हैं।
निवेण तुमं पुच्छिज्जसि	=	राजा के द्वारा तुम पूछे जाते हो।
तेहि भिच्चो पेसिज्जइ	=	उनके द्वारा नौकर भेजा जाता है।
बालाए चुण्णं पीसिज्जइ	=	बालिका के द्वारा आटा पीसा जाता है।

हिन्दी में अनुवाद करो :

बालएण फलाणि भुंजीअंति। तुमए किं कज्ज करीअइ। आयरिएण गंथाणि लिहिज्जंति। तेहि पुत्तेण सह बहू ण पेसिज्जइ। साहुणा सया झाणं करिज्जइ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

तुम्हारे द्वारा जल पिया जाता है। उसके द्वारा चित्र देखा जाता है। बालक के द्वारा पुस्तकें पढ़ी जाती हैं। विद्वान् के द्वारा मैं पूछा जाता हूँ। हम सबके द्वारा साधु नमन किया जाता है। उनके द्वारा तुम भेजे जाते हो। विद्या के द्वारा वह जाना जाता है। साधु द्वारा संयम पाला जाता है। राम के द्वारा सेतु बाँधा जाता है। गुरु द्वारा शिष्य ताड़ित किया जाता है। भ्रमर द्वारा फूल सूंघा जाता है।

क्रियाकोश :

अइकम्म	=	उल्लंघन करना	आकंद	=	रोना-चिल्लाना
अक्ख	=	कहना	आयण्ण	=	सुनना
अणुकंप	=	दया करना	अतिकंख	=	इच्छा करना
अणुमण्ण	=	अनुमति देना	अवमण्ण	=	तिरस्कार करना
अवरज्झ	=	अपराध करना	अभिलस	=	चाहना

कर्मवाच्य : **भूतकाल**

तेण अहं पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	उसके द्वारा मैं देखा गया।
निवेण अम्हे पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	राजा के द्वारा हम देखे गये।
मए तुमं पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	मेरे द्वारा तुम देखे गये।
तुम्हे तेहि पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	तुम सब उनके द्वारा देखे गये।
तुमए सो पीसअईअ/पासिज्जीअ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा गया।
साहुणा ते पासीअईअ/पासिज्जीअ	=	साधु के द्वारा वे सब देखे गये।

उदाहरण वाक्य :

मए घडो करीअईअ/करिज्जीअ	=	मेरे द्वारा घड़ा बनाया गया।
तेण पोत्थअं पढीअईअ/पढिज्जीअ	=	उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी गयी।
सासूए बहू तूसीअईअ/तूसिज्जीअ	=	सास के द्वारा बहू संतुष्ट की गयी।
पत्ताणि लिहीअईअ/लिहिज्जीअ	=	पत्र लिखे गये।
तेहि भिच्चो पेसीअईअ/पेसीज्जीअ	=	उनके द्वारा नौकर भेजा गया।

कृदन्त प्रयोग

तेण अहं दिट्ठो	=	उसके द्वारा मैं देखा गया
	या	उसने मुझे देखा।
मए घडो कओ	=	मैंने घड़ा बनाया।
तेण पोत्थअं पढिअं	=	उसने पुस्तक पढ़ी।
सासूए बहू संतुट्ठा	=	सास ने बहु को संतुष्ट किया।
पुरिसेहि पत्ताणि लिहिआणि	=	आदमिओं ने पत्र लिखे।
तेहि भिच्चो पेसिओ	=	उन्होंने नौकर को भेजा।

हिन्दी में अनुवाद करो :

पवणंजएण अंजणा पुच्छिआ। मए तुज्झ अवराहो ण कओ। लंकाहिवेण दूओ पेसिओ। आयरिएण सीसा ण संतुट्ठा। मन्तीहि णिवो भणिओ। बहुए घरस्स कज्जाणि ण करिज्जअ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मेरे द्वारा देव पूजा गया। राजा के द्वारा हम सब पूछे गये। हमारे द्वारा साधु को नमन किया गया। कुलपति द्वारा छात्र ताड़ित किया गया। बालिका द्वारा फूल सूँघा गया। उनके द्वारा फल खाया गया। तपस्वी द्वारा संयम पाला गया।

कर्मवाच्य :

भविष्यकाल

तेण अहं पासिहिमि	=	उसके द्वारा मैं देखा जाऊँगा।
निवेण अम्हे पासिहामो	=	राजा के द्वारा हम देखे जायेंगे।
मए तुमं पासिहिसि	=	मेरे द्वारा तुम देखे जाओगे।
सुधिणा तुम्हे पासिहित्था	=	विद्वान् के द्वारा तुम सब देखे जाओगे।
तुमए सो पासिहिइ	=	तुम्हारे द्वारा वह देखा जायेगा।
साहुणा ते पासिहिंति	=	साधु के द्वारा वे देखे जायेंगे।

निर्देश : पाठ ७६ के उदाहरण वाक्यों एवं अनुवाद वाक्यों में भविष्यकाल की सामान्य क्रियाएँ लगाकर कर्मवाच्य के प्राकृत वाक्य बनाओ।

विधि एवं आज्ञा

तुमए अहं पासीअमु/पासिज्जमु	=	तुम्हारे द्वारा मैं देखा जाउँ।
अम्हे तेहि पासीअमो/पासिज्जमो	=	हम सब उनके द्वारा देखे जायँ।
तेण तुमं पासीअहि/पासिज्जहि	=	उसके द्वारा तुम देखे जाओ।
निवेण तुम्हे पासीअह/पासिज्जह	=	राजा के द्वारा तुम सब देखे जाओ।
मए सो पासीअउ/पासिज्जउ	=	मेरे द्वारा वह देखा जाये।
सुधिणा ते पासीअंतु/पासिज्जंतु	=	विद्वान् के द्वारा वे सब देखे जायँ।

उदाहरण वाक्य :

जुवईए साडी कीणीअउ	=	युवती के द्वारा साड़ी खरीदी जाय।
तेण कंदुओ ण खेलीअउ	=	उसके द्वारा गेंद न खेली जाय।
सीसेहि सत्थाणि सुणीअंतु	=	शिष्यों के द्वारा शास्त्र सुने जायँ।
तेहि सुधिणो नमिज्जंतु	=	उनके द्वारा विद्वानों को नमन किया जाय।
तुमए अहं पुच्छीअमु	=	तुम्हारे द्वारा मैं पूछा जाऊँ।

प्राकृत में अनुवाद करो :

बालिका के द्वारा जल पिया जाय। राजा के द्वारा चित्र देखा जाय। छात्र के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाय। आदमी के द्वारा पत्र न लिखा जाय। कुलपति के द्वारा मैं वहाँ भेजा जाऊं। उनके द्वारा वह ताड़ित न किया जाय। युवती के द्वारा आटा पीसा जाय।

क्रियाकोश :

अणुसंध	=	खोजना	अवधार	=	निश्चय करना
अत्थम	=	अस्त होना	आसा	=	आश्वासन देना
अब्भत्थ	=	सत्कार करना	उवदंस	=	दिखाना
अब्भुट्ठ	=	आदर देना	गरह	=	घृणा करना
अभिणंद	=	प्रशंसा करना	गुंफ	=	गूँथना

❑❑

पाठ ७८

कर्मवाच्य क्रिया-प्रयोग :

वर्तमानकाल

मए हसीअइ/हसिज्जइ	=	मेरे द्वारा हँसा जाता है।
अम्हेहि हसीअइ/हसिज्जइ	=	हमारे द्वारा हँसा जाता है।
तुमए धावीअइ/धाविज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाता है।
तुम्हेहि धावीअइ/धाविज्जइ	=	तुम सबके द्वारा दौड़ा जाता है।
तेण झाईअइ/झाइज्जइ	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाता है।
तेहि झाईअइ/झाइजजइ	=	उनके द्वारा ध्यान किया जाता है।
बालाए णच्चीअइ/णच्चिज्जइ	=	बालिका के द्वारा नाचा जाता है।
मोरेहि णच्चीअइ/णच्चिज्जइ	=	मोरों के द्वारा नाचा जाता है।
छत्तेण भणीअइ/भणिज्जइ	=	छात्र के द्वारा कहा जाता है।
सीसेहि भणीअइ/भणिज्जइ	=	शिष्यों के द्वारा पढ़ा जाता है।

भूतकाल

मए हसीअईअ/हसिज्जीअ	=	मेरे द्वारा हँसा गया/मैं हँसा।
मए हसिअं	=	मेरे द्वारा हँसा गया/ मैं हँसा।
तेण झाईअईअ/झाइज्जीअ	=	उसके द्वारा ध्यान किया गया।
सीसेहि भणीअईअ/भणिज्जीअ	=	शिष्यों के द्वारा कहा गया।
सीसेहि भणिअं	=	शिष्यों के द्वारा/शिष्यों ने कहा।

भविष्यकाल

तेण पासिहि	=	उसके द्वारा देखा जायेगा।
अम्हेहि पासिहिइ	=	हम सबके द्वारा देखा जायेगा।
मए भणिहिइ	=	मेरे द्वारा कहा जायेगा।
बालाए पढिहिइ	=	बालिका के द्वारा पढ़ा जायेगा।

विधि एवं आज्ञा

मए सुणीअउ/सुणिज्जउ	=	मेरे द्वारा सुना जाय।
सीसेहि सुणीअउ/सुणिज्जउ	=	शिष्यों के द्वारा सुना जाय।
तुमए नमीअउ/नमिज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा नमन किया जाय।
बहूहि नमीअउ/नमिज्जउ	=	बहुओं के द्वारा नमन किया जाय।

क्रियाकोश :

उक्खिव	=	फेंकना	रंध	=	पकाना
घेत्त	=	ले जाना	लुक	=	छिपना
ढुक	=	भेंट करना	विअस	=	खिलना
बुड्ड	=	डूबना	निहुण	=	नोंचना
मुस	=	चोरी करना	विण्णव	=	निवेदन करना

□□

पाठ ७९

नियम : कर्मवाच्य-भाववाच्य

नि. ८१ : प्राकृत में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के प्रयोग होते हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। इसके नियम आप पाठ २० में सीख चुके हैं।

कर्मवाच्य :

नि. ८२ : कर्मवाच्य में कर्ता में तृतीया विभक्ति और कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार रहता है।

नि. ८३ : मूल क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने के लिए उसमें **ईअ** अथवा **इज्ज** प्रत्यय लगाया जाता है। उसके बाद वर्तमान, भूतकाल, विधि आज्ञा के प्रत्यय लगाकर क्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे -

मूलक्रिया	**वाच्य-प्रत्यय**	**वर्तमान**	**भू.का.**	**विधि आज्ञा**
पास+ ईअ =	**पासीअ-**	पासीआमि	पासीअईअ	पासीअमु
पास + इज्ज =	**पासज्जि-**	पासिज्जमि	पासिज्जीअ	पासिज्जमु

नि. ८४ : कर्मवाच्य या भाववाच्य में भविष्यकाल के प्रयोगों में **ईअ** या **इज्जा** प्रत्यय मूल क्रिया में नहीं लगते हैं। अत: सामान्य भविष्यकाल के प्रत्यय लगाकर ही क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं। यथा - **पासिहिमि, पासिहामो** इत्यादि।

नि. ८५ : भूतकाल के कर्मवाच्य या भाववाच्य में भूतकाल के कृदन्तों का भी प्रयोग होता है। इनमें **ईअ** या **इज्ज** प्रत्यय नहीं लगते। कृदन्तों का भी प्रयोग कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार होता हैं। यथा -

तेण छत्तो दिट्ठो	=	उसके द्वारा छात्र को देखा गया।
तेण बाला दिट्ठा	=	उसके द्वारा बालिका को देखा गया।
तेण मित्तं दिट्ठं	=	उसके द्वारा मित्र को देखा गया।

नि. ८६ : भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। कर्म नहीं रहता और क्रिया सभी कालों में अन्य पुरुष एकवचन में होती है। जैसे -

तृतीया वि.	**व.का.**	**भू.का.**	**भ.का.**	**विधि-आज्ञा**
अम्हेहि	हसिज्जइ	हसिज्जीअ	हसिहिइ	हसिज्जउ
सीसेहि	भणीअइ	भणीअईअ	भणिहिइ	भणीअउ
तेण	जाणिज्जइ	जाणिज्जीअ	जाणिहिइ	जाणीअउ
मए	पासीअइ	पासीअईअ	पासिहिइ	पासीअउ

पाठ ८०

कर्मवाच्य कृदन्त-प्रयोग :

वर्तमान कृदन्त

मए पढीअंतो/पढीअमाणो गंथो	=	मेरे द्वारा पढ़ा जाता हुआ ग्रंथ।
तुमए पढीअंती/पढीअमाणी गाहा	=	तुम्हारे द्वारा पढ़ी जाती हुई गाथा।
तेण पढीअंतं/पढीअमाणं पोत्थअं	=	उसके द्वारा पढ़ी जाती हुई पुस्तक।

भूतकाल कृदन्त

मए पढियो गंथो	=	मेरे द्वारा पढ़ा हुआ ग्रंथ।
तुमए पढिया गाहा	=	तुम्हारे द्वारा पढ़ी हुई गाथा।
तेण पढिअं पोत्थअं	=	उसके द्वारा पढ़ी हुई पुस्तक।

भविष्य कृदन्त

रामेण पढिस्समाणो गंथो	=	राम के द्वारा पढ़ा जाने वाला ग्रंथ।
बालाए पढिस्समाणी गाहा	=	बालिका के द्वारा पढ़ी जाने वाली गाथा।
छत्तेण पढिस्समाणं पोत्थअं	=	छात्र के द्वारा पढ़ी जाने वाली पुस्तक।

विधि कृदन्त

मए पढणीओ/पढेअव्वो गंथो	=	मेरे द्वारा पढ़ने योग्य ग्रंथ।
बालाए पढणीआ/पढेअव्वा गाहा	=	बालिका के द्वारा पढ़ने योग्य गाथा।
तेण पढणीअं/पढेअव्वं पोत्थअं	=	उसके द्वारा पढ़ने योग्य पुस्तक।

उदाहरण वाक्य :

मए कहीअमाणी कहा अत्थि	= मेरे द्वारा कही जाती हुई कथा है।
तेण नमिआ बाला पढइ	= उसके द्वारा नमन की हुई बालिका पढ़ती है।
तुमए भुंजिस्समाणं फलं णत्थि	= तुम्हारे द्वारा खाये जाने वाला फल नहीं है।
बालाए मुणेअव्वं चरित्तं अत्थि	= बालिका के द्वारा जानने योग्य चरित्र है।

अन्य प्रयोग

मए गंथो पढीअंतो	=	मेरे द्वारा ग्रंथ पढ़ा जाता है।
तुमए गंथो पढिओ	=	तुम्हारे द्वारा ग्रंथ पढ़ा गया।
बालाए गंथो पढिस्समाणो	=	बालिका के द्वारा ग्रंथ पढ़ा जायेगा।
तेण गंथो पढणीओ	=	उसके द्वारा ग्रंथ पढ़ा जाना चाहिए।
जुवईए गाहा पढ़िआ	=	युवती के द्वारा गाथा पढ़ी गयी।
पुरिसेण पत्ताणि लिहिआणि	=	आदमियों के द्वारा पत्र लिखे गये।
निवेण धणं गिण्हिअं	=	राजा के द्वारा धन लिया गया।

भाववाच्य कृदन्त प्रयोग :

वर्तमान कृदन्त

मए हसीअंतं/हसीअमाण	=	मेरे द्वारा हँसा जाता है।
तुमए धावीअंतं/धावीअमाणं	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाता है।
बालाए णच्चीअंतं/णच्चीअमाणं	=	बालिका के द्वारा नाचा जाता है।
तेण झाईअंतं/झाईअमाणं	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाता है।

भूत कृदन्त

मए हसिअ	=	मैं हँसा/मेरे द्वारा हँसा गया।
तुमए धाविअ	=	तुम दौड़े/तुम्हारे द्वारा दौड़ा गया।
बालाए णच्चिअ	=	बालिका नाची/द्वारा नाया गया।
तेण झाईअं	=	उसने ध्यान किया।

भविष्य कृदन्त

मए हसिस्समाण	=	मेरे द्वारा हँसा जाने वाला है।
तुमए धाविस्समाणं	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाने वाला है।
तेण झाइस्समाणं	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाना है।

विधि कृदन्त

मए हसेअव्वं/हसणीअ	=	मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तुमए धावेअव्वं/धावणीअं	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ा जाना चाहिए।
बालाए णच्चेअव्वं/णच्चणीअं	=	बालिका के द्वारा नृत्य किया जाना चाहिए।
तेण झाणअव्वं/झाणीअ	=	उसके द्वारा ध्यान किया जाना चाहिए।

हिन्दी में अनुवाद करो :

सुधिणा हसीअमाणं। पुरिसेहि धावीअंतं। साहुणा अणुकंपीअमाणं। जुवईए णच्चीअंतं। बालाए भणिअं। बहूहि नमिअं। छत्तेहि पढिस्समाणं। साहूहि झाइस्समाणं। अम्हेहि धावणीअं। जुवईहि "ाच्चेअव्वं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

शिष्य के द्वारा पढ़ा जाता है। बालकों के द्वारा दौड़ा जाता है। उनके द्वारा नमन नहीं किया जाता है। विद्वानों के द्वारा कहा गया। तपस्वियों के द्वारा तप किया गया। हमारे द्वारा सुना गया। राजा के द्वारा कहा जाने वाला है। तुम्हारे द्वारा नृत्य किया जाना है। उसके द्वारा आज नहीं हँसा जाना चाहिए। छात्रों के द्वारा ध्यान किया जाना चाहिए।

❑❑

नियम : वाच्य कृदन्त-प्रयोग

नि. ८७ : कर्मवाच्य एवं भाववाच्य में सामान्य क्रियाओं के अतिरिक्त विभिन्न कालों के कृदन्तों का प्रयोग भी क्रिया के रूप में होता है। यथा -

	सा. क्रि. प्रयोग		कृदन्त प्रयोग
(व.)	तेण गंथो पढीअइ	=	तेण गंथो पढीअमाणो।
(भू.)	मए गंथो पढीअईअ	=	मए गंथो पढिओ।
(भ.)	रामेण गंथो पढिहिइ	=	रामेण गंथो पढिस्समाणो।
(वि.)	तुमए गंथो पढीअइ	=	तुमए गंथो पढणीओ।

नि. ८८ : कर्मणि कृदन्त प्रयोगों में सामान्य क्रिया में वाच्य प्रत्यय **ईअ** या **इज्ज** जोड़कर व. कृदन्त प्रत्यय **अंत** या **माण** जोड़े जाते हैं। यथा -

पढ + ईअ = पढीअ + अंत/माण = **पढीअंत, पढीअमाण**

पढ + इज्ज = पढिज्ज + अंत/माण = **पढिज्जंत, पढिज्जमाण**

नि. ८९ : कर्मवाच्य में कृदन्तों का प्रयोग कर्म के अनुसार पु., स्त्री. एवं नपुं. रूपों में होता है। यथा -

पढीअंतो (पु.), **पढीअंती** (स्त्री.), **पढिअंतं** (नपुं.)

नि. ९० : भू. के कृदन्तों में वाच्य का कोई प्रत्यय नहीं लगता है। वे कर्म के लिंग के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। यथा -

पढिओ (पु.), **पढिआ** (स्त्री.), **पढिअं** (नपुं.)

नि. ९१ : निकट भविष्य में होने वाली क्रिया को सूचित करने के लिए भविष्य कृदन्तों का प्रयोग किया जाता है। मूल धातु में कर्मवाच्य प्रयोग के लिए **इस्समाण** प्रत्यय जोड़ा जाता है। यथा -

पढ + इस्समाण = **पढिस्समाण।**

नि. ९२ : विधि कृदन्तों का प्रयोग वाच्य में ही होता है। अतः इसमें वाच्य का कोई प्रत्यय नहीं लगाया जाता। यथा -

पढणीओ, पढणीआ, पढणीअं।

नि. ९३ : भाववाच्य में सभी कालों के कृदन्त कर्म न रहने से नपुं. लिंग एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं। यथा -

व. - **हसीअंतं**, भू. - **हसिअं**, भवि. - **हसिस्समाणं**, वि. - **हसेअव्वं।**

❑❑

कर्मणि-प्रयोग चार्ट

कर्मवाच्य

मूलक्रिया	प्रत्यय	वर्तमान	भूत.	भविष्य	विधि/आज्ञा	व.कृ.	भू.क.	भ.कृ
पास	ईअ	पासीअइ	पासीअईअ	पासिहिइ	पासीअउ	पासीअमाणो	पासिओ	पासिस्समाणो
पास	इज्ज	पासिज्जइ	पासिज्जीअ	पासिहिइ	पासिज्जउ	पासिज्जमाणो	पासिओ	पासिस्समाणो

निर्देश : कर्मवाच्य के प्रत्यय ईअ/इज्ज क्रिया में लगाने के बाद क्रिया के रूप कर्म के अनुसार बनते हैं। विभिन्न क्रियाओं में ये प्रत्यय लगाकर कर्मवाच्य की क्रिया बनाने का अभ्यास करिए।

भाववाच्य

मूलक्रिया	प्रत्यय	वर्तमान	भूत.	भविष्य	विधि/आज्ञा	व.कृ.	भू.क.	भ.कृ
हस	ईअ	हसीअइ	हसीअईअ	हसिहिइ	हसीअउ	हसीअमाणं	हसिअं	हसिस्समाणं
हस	इज्ज	हसिज्जइ	हसिज्जीअ	हसिहिइ	हसिज्जउ	हसिज्जमाणं	हसिअं	हसिस्समाणं

निर्देश : भाववाच्य की क्रिया सभी कालों में अन्य पुरुष एकवचन में ही प्रयुक्त होती है। तथा भाववाच्य कृदन्त नपुंसकलिंग एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

10. प्रेरणार्थक क्रिया :

पाठ ८२

प्रेरणार्थक क्रिया के प्रयोग : **१. प्रेरक सामान्य क्रियाएँ**

क्रियाएँ :

पिलावा	=	पिलाना	सीखाव	=	सिखना
खेलाव	=	खिलाना	जग्गाव	=	जगाना
हसाव	=	हँसना	कराव	=	कराना
लिहाव	=	लिखाना	उट्ठाव	=	उठाना
णच्चाव	=	नचाना	सयाव	=	सुखाना

वर्तमान काल

अहं सीसं पढावेमि	=	मैं शिष्य को पढ़ाता हूँ।
अम्हे बालाओ पढावेमो	=	हम बालिकाओं को पढ़ाते हैं।
तुमं तं पढावेसि	=	तुम उसको पढ़ाते हो।
तुम्हे छत्ता पढावेइत्था	=	तुम सब छात्रों को पढ़ाते हो।
सो ममं पढावेइ	=	वह मुझे पढ़ाता है।
ते जुवईओ पढावेंति	=	वे युवतियों को पढ़ाते हैं।

भूतकाल

अहं सीसं पढावीअ	=	मैंने शिष्य को पढ़ाया।
अम्हे बालाओ पढावीअ	=	हमने बालिकाओं को पढ़ाया।
सो ममं पढावीअ	=	उसने मुझे पढ़ाया।

भविष्य

अहं सीसं पढाविहिमि	=	मैं शिष्यों को पढ़ाऊँगा।
अम्हे बालाओ पढाविहामो	=	हम बालिकाओं को पढ़ायेंगे।
तुमं तं पढाविहिसि	=	तुम उसे पढ़ाओगे।

इच्छा/आज्ञा

अहं सीसं पढावमु	=	मैं शिष्य को पढ़ाऊँ।
तुम तं पढाविह	=	तुम उसे पढ़ाओ।
सो ममं पढावउ	=	वह मुझे पढ़ाये।

प्राकृत में अनुवाद करो :

मैं उसे जल पिलाता हूँ। तुम मुझे पत्र लिखाते हो। उसने शिष्य को क्या सिखाया? तुमने यहाँ बालिका को नचाया। गुरु ने छात्र को पढ़ाया। विद्वान् साधु को उठाते हैं। बहू बच्चे को सुलायेगी। सास बहू को जगायेगी। तुम उसे न हँसाओ। राजा नौकर से कार्य कराये।

सम्बन्ध कृदन्त

पिवाविऊण	=	पिलाकर	लिहाविऊण	=	लिखाकर
खेलाविऊण	=	खिलाकर	जग्गाविऊण	=	जगाकर
हसाविऊण	=	हँसाकर	पढाविऊण	=	पढ़ाकर

हेत्वर्थ कृदन्त

पिवाविउं	=	पिलाने के लिए	लिहाविउं	=	लिखाने के लिए
खेलाविउं	=	खिलाने के लिए	जग्गाविउं	=	जगाने के लिए
हसाविउं	=	हँसाने के लिए	पढाविउं	=	पढ़ाने के लिए

विधि कृदन्त

पिवावणीअ	=	पिलाने योग्य	लिहावणीअ	=	लिखाने योग्य
खेलावणीअ	=	खिलाने योग्य	जग्गावणीअ	=	जगाने योग्य
हसावणीअ	=	हँसाने योग्य	पढावणीअ	=	पढ़ाने योग्य
हसाविअव्वं	=	हँसाने योग्य	पढाविअव्व	=	पढाने योग्य

वर्त. कृदन्त

पिवावमाणो	=	पिलाता हुआ	लिहावंतो	=	लिखाता हुआ
खेलावमाणो	=	खिलाता हुआ	जग्गावंतो	=	जगाता हुआ
हसावमाणो	=	हँसाता हुआ	पढावंतो	=	पढ़ाता हुआ

भूत कृदन्त

पिवाविओ	=	पिलाया हुआ	लिहाविओ	=	लिखाया हुआ
खेलाविओ	=	खिलाया हुआ	जग्गाविओ	=	जगाया हुआ
हसाविओ	=	हँसाया हुआ	पढाविओ	=	पढाया हुआ

भविष्य कृदन्त

पिवाविस्संतो	=	पिलाया ज़ाने वाला	लिहाविस्संतो	=	लिखाया जाने वाला
खेलाविस्संतो	=	खिलाया जाने वाला	जग्गाविस्संतो	=	जगाया जाने वाला
हसाविस्संतो	=	हँसाया जाने वाला	पढाविस्संतो	=	पढ़ाया जाने वाला

प्राकृत में अनुवाद करो :

वह दूध पिला जाये। मैं उसे पढ़ाने के लिए जाऊंगा। यह दूध पिलाने योग्य नहीं है। वह ग्रंथ लिखाने योग्य है। गुरु हँसाता हुआ पढ़ाता है। बालिका जगाती हुई हँसती है। उनके द्वारा लिखाया गया पत्र लाओ। मेरे द्वारा पढ़ायी गयी गाथा कहो। पिलाया जाने वाला जल कहाँ है?

पाठ ८३

३. प्रेरक वाच्य-प्रयोग

(क) प्रेरक कर्मवाच्य सामान्य क्रियाएँ :

पिवावीअ	= पिलाया जाना	सीखविज्जा	= सिखाया जाना
खेलावीअ	= खिलाया जाना	जग्गाविज्ज	= जगाया जाना
हसावीअ	= हँसाया जाना	कराविज्ज	= कराया जाना
लिहावीअ	= लिखाया जाना	उट्ठाविज्ज	= उठाया जाना
णच्चावीअ	= नचाया जाना	सयाविज्ज	= सुलाया जाना
पढावीअ	= पढ़ाया जाना	पासाविज्ज	= दिखाया जाना

वर्तमान काल

जुवईए बालओ पासाविज्जइ = युवती के द्वारा बालक दिखाया जाता है।
मए घडो कराविज्जइ = मेरे द्वारा घड़ा बनवाया जाता है।
तेण बाला सीखाविज्जइ = उसके द्वारा बालिका सिखायी जाती है।
गुरुणा पोत्थअं पढाविज्जइ = गुरु के द्वारा पुस्तक पढ़ायी जाती है।

भूतकाल

मए बाला पासाविज्जीअ = मेरे द्वारा बालिका दिखायी गयी है।
तेण घडो कराविज्जीअ = उसके द्वारा घड़ा बनवाया गया है।
जुवईए बाला णच्चावीअईअ = युवती के द्वारा बालिका नचायी गयी है।

भविष्य

तेण अहं पासाविहिमि = उसके द्वारा मैं दिखाया जाउंगा।
मए तुमं णच्चाविहिसि = मेरे द्वारा तुम नचाये जाओगे।
गुरुणा पोत्थअं पढाविहिइ = गुरु के द्वारा पुस्तक पढ़ायी जायेगी।

विधि/आज्ञा

तेण पत्तं लिहावीअउ = उसके द्वारा पत्र लिखाया जाए।
तुमए कंदुओ खेलावीअउ = तुम्हारे द्वारा गेंद खिलायी जाय।
छत्तेहि सुधिणो नमावीअंतु = छात्रों के द्वारा विद्वानों को नमन कराया जाय।
तेण अहं ण उट्ठाविज्जमु = उसके द्वारा मुझे न उठाया जाय।

प्राकृत में अनुवाद करो :

उसके द्वारा बालिका को जल पिलाया जाय। तुम्हारे द्वारा शिष्य को सिखाया जाय। तुम्हारे द्वारा वह उठाया जाता है। छात्र के द्वारा शास्त्र नहीं पढ़ा जाता है। युवती के द्वारा बालकों को जल पिलाया गया। मेरे द्वारा बालिकाओं को गीत सिखाया गया। माता के द्वारा जगाया जाउंगा। पिता के द्वारा घड़ा बनाया जायेगा। हमारे द्वारा चित्र दिखाये जायेंगे। ❑❑

(ख) प्रेरक कर्मवाच्य कृदन्त क्रियाएँ :

वर्तमान कृदन्त

पढावीअंतो/पढावीअमाणो गंथो	=	पढ़ाया जाता हुआ ग्रंथ।
पढावीअंती/पढावीअमाणी गाहा	=	पढ़ायी जाती हुई गाथा।
पढावीअंतं/पढावीआमाणं पोत्थअं	=	पढ़ायी जाती हुई पुस्तक।

भूत कृदन्त

पढाविओ गंथो	=	पढ़ाया गया ग्रंथ।
पढाविआ गाहा	=	पढ़ायी गयी गाथा।
पढाविअं पोत्थअं	=	पढ़ायी गयी पुस्तक।

भविष्य कृदन्त

पढाविस्समाणो गंथो	=	पढ़ाया जाने वाला ग्रंथ।
पढाविस्समाणी गाहा	=	पढ़ायी जाने वाली गाथा।
पढाविस्समाणं पोत्थअं	=	पढ़ायी जाने वाली पुस्तक।

विधि कृदन्त

पढावणीओ गंथो	=	पढ़ाने योग्य ग्रंथ।
पढावणीआ गाहा	=	पढ़ाने योग्य गाथा।
पढावणीअं पोत्थअं	=	पढ़ाने योग्य पुस्तक।

प्रयोग वाक्य :

मए गंथो पढावीअमाणो	=	मेरे द्वारा ग्रंथ पढ़ाया जाता है।
तेण गाहा पढाविआ	=	उसके द्वारा गाथा पढ़ायी गयी।
तुमए पोत्थअं पढाविस्समाणं	=	तुम्हारे द्वारा पुस्तक पढ़ायी जायेगी।
गुरुणा गंथो पढावणीओ	=	गुरु के द्वारा ग्रंथ पढ़ाया जाना चाहिए।

प्राकृत में अनुवाद करो :

माता के द्वारा बालक जगाया जाता है। गुरु के द्वारा शिष्य पढ़ाये जाते हैं। उनके द्वारा गेंद खिलायी गयी। साधु के द्वारा जल पिलाया गया। राजा के द्वारा पत्र लिखाया गया। मेरे द्वारा शास्त्र पढ़ाया जायेगा। तुम्हारे द्वारा कथा सुनायी जायेगी। उनके द्वारा तुमको नमन किया जायेगा। तुम सबके द्वारा साधु को पानी पिलाया जाना चाहिए। गुरु के द्वारा छात्र को लिखाया जाना चाहिए। तुम्हारे द्वारा कार्य किया जाना चाहिए।

पाठ ८४

(क) प्रेरक भाववाच्य सामान्य क्रियाएँ :

वर्तमान काल

मए हसावीअइ/हसावज्जिइ	=	मेरे द्वारा हँसाया जाता है।
अम्हेहि हसावीअइ/हसाविज्जइ	=	हमारे द्वारा हँसाया जाता है।
तुमए धावाधीअइ/धावाविज्जइ	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जाता है।
तेण झावीअइ/झाविज्जइ	=	उसक द्वारा ध्यान कराया जाता है।
बालाए णच्चावीअइ/णच्चाविज्जइ	=	बालिका के द्वारा नचाया जाता है।
छत्तेण भणवीअइ/भणाविज्जइ	=	छात्र के द्वारा कहा जाता है।

भूतकाल

मए हसावीअईअ/हसाविज्जीअ	=	मरे द्वारा हँसाया गया।
तेण धावावीअईअ/धाविज्जीअ	=	उसके द्वारा दौड़ाया गया।
तुमए णच्चावीअईअ/णच्चाविज्जीअ	=	तुम्हारे द्वारा नचाया गया।
छत्तेण भणावीअईअ/भणाविज्जीअ	=	छात्र के द्वारा कहलाया गया।

भविष्य

तेण हसाविहिइ/हसाविज्जिहिइ	=	उसके द्वारा हँसाया जायेगा।
अम्हेहि पढाविहिइ/पढाविज्जिहिइ	=	हमारे द्वारा पढ़ाया जायेगा।
तुमए धाविहिइ/धावाविज्जिहिइ	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जायेगा।

विधि/आज्ञा

तेहि सुणावीअउ/सुणाविज्जउ	=	उनके द्वारा सुनाया जाय।
तेण पढावीअउ/पढाविज्जउ	=	उसके द्वारा पढ़ाया जाय।
तुमए नमावीअइ/नमाविज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा नमन कराया जाय।

क्रियाकोश :

मोह	= मोहित होना	कूद्द	= कूदना
लुब्भ	= लोभ करना	चव्व	= चबाना
संगह	= संग्रह करना	बुक्क	= भौंकना
सलह	= प्रशंसा करना	थक्क	= थकना
संवर	= रोकना	कंडूअ	= खुजाना
सीअ	= खेद करना	लुण	= काटना
हर	= छीनना	वरिस	= वरसना

(ख) कृदन्त क्रियाएँ :

वर्तमान कृदन्त

मए हसावीअंतं/हसावीअमाणं	=	मेरे द्वारा हँसाया जाता है/हुआ
तुमए धावाधीअंतं/धावावीअमाणं	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जाता है/हुआ
तेण पढावीअंतं/पढावीअमाणं	=	उसके द्वारा पढ़ाया जाता है/हुआ

भूतकाल

मए हसाविअं/हसाविज्जं	=	मेरे द्वारा हँसाया गया/मैंने हँसाया।
तुमए धाविअं/धाविज्जं	=	तुमने दौड़ाया/तुम्हारे द्वारा दौड़ाया गया।
तेण पढाविअं/पढाविज्जं	=	उसके द्वारा पढ़ाया गया/उसने पढ़ा।

भविष्य

मए हसाविस्समाणं	=	मेरे द्वारा हँसाया जायेगा।
तुमए धाविस्समाणं	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जायेगा।
तेण पढाविस्समाणं	=	उसके द्वारा पढ़ाया जायेगा।

विधि/आज्ञा

मए हसावेअव्वं/हसावणीअं	=	मेरे द्वारा हँसाया जाना चाहिए।
तुमए धावावेअव्वं/धावावणीअं	=	तुम्हारे द्वारा दौड़ाया जाना चाहिए।
तुण पढावेअव्वं/पढावणीअं	=	उसके द्वारा पढ़ाया जाना चाहिए।

हिन्दी में अनुवाद करो :

पुरिसेण सिक्खावीअंतं। सुधिणा दरिसावीअमाणं। निवेण ताडाविअं। तेण दिक्खाविज्जं। अम्हे पिवाविस्समाणं। तुमए सुणाविस्समाणं। तेण पेसावणीअं। मए लिहावेअव्वं।

प्राकृत में अनुवाद करो :

कवि द्वारा हँसाया जाता है। गुरु के द्वारा पढ़ाया जाता है। राजा के द्वारा दौड़ाया जाता है। मेरे द्वारा सिखाया गया। साधु के द्वारा दिखाया गया। बालिका द्वारा भेजा जायेगा। नौकर द्वारा कराया जाना चाहिए। उनके द्वारा नहीं हँसाया जाना चाहिए। तुम्हारे द्वारा क्षमा कराया जाना चाहिए। युवती के द्वारा नृत्य कराया जाना चाहिए।

❑❑

पाठ ८५

४. प्रेरणार्थक क्रिया के अन्य प्रयोग :

(क) कर्तृवाच्य

सामान्य क्रियाएँ

अहं सीसेण पढावेमि	=	मैं शिष्य से पढ़वाता हूँ।
तुमं मए पढावेसि	=	तुम मुझसे पढ़वाते हो।
अम्हे तुमए पढावीअ	=	हमने तुमसे पढ़ावाया।
ते बालाहि पढाविहिंति	=	वे बालिकाओं से पढ़वायेंगे।
सो तेण पढावउ	=	वह उससे पढ़वाये।

कृदन्त क्रियाएँ

तेण पढाविऊण	=	उससे पढ़वाकर।
मए लिहाविऊण	=	मुझसे लिखवाकर।
तुमए पढाविउं	=	तुमसे पढ़वाने के लिए।
छत्तेण लिहाविउं	=	छात्र से लिखवाने के लिए।
सीसेण पढावणीअ	=	शिष्य से पढ़वाने योग्य।
बालाए लिहावंतो	=	बालिका से लिखवाता हुआ।
तेण पढावमाणो	=	उससे पढ़वाता हुआ।
मए लिहाविओ	=	मुझसे लिखवाया हुआ।
तुमए पढाविस्संतो	=	तुमसे पढ़वाया जाने वाला।

(ख) कर्म एवं भाववाच्य

मए छत्तेण पोत्थअं पढावीअइ	=	मेरे द्वारा छात्र से पुस्तक पढ़वायी जाती है।
निवेण तेण घडो कराविज्जीअ	=	राजा के द्वारा उससे घड़ा बनवाया गया।
गुरुणा बालाए णच्चाविहिइ	=	गुरु के द्वारा बालिका से नचवाया जायेगा।
तुमए तेण पढाविज्जउ	=	तुम्हारे द्वारा उससे पढ़वाया जाय।

कृदन्त प्रयोग

तेण पढावीअंतो गंथो	=	उससे पढ़वाया जाता हुआ ग्रंथ।
मए लिहाविअं पत्तं	=	मुझसे लिखवाया गया पत्र।
तेण पढाविस्समाणी गाहा	=	उससे पढ़वयी जाने वाली गाथा।
छत्तेण लिहावणीअं पोत्थअं	=	छात्र से लिखवाने योग्य पुस्तक।

प्राकृत में अनुवाद करो :

राजा नौकर से कार्य करवाता है। गुरु शिष्य से लिखवाता है। युवती बालिका से नृत्य करवाती है। तुमने उससे पत्र लिखवाकर भेजा। पुत्र पिता से पुस्तक खरीदवाने के लिए रोता है। यह गाथा शिष्य से पढ़वाने योग्य नहीं है। यह पत्र उसकेद्वारा लिखवाया हुआ है।

पाठ ८६

नियम : प्रेरणार्थक क्रिया-प्रयोग

नि. ९४ : प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग तब होता है जब किसी भी क्रिया को करने में कर्ता स्वतंत्र नहीं होता है। क्रिया करने के लिए (क) कर्ता दूसरे को प्रेरणा देता है अथवा (ख) सवयं दूसरे के लिए वह क्रिया करता है। यथा -

(क)	अहं सीसेण पढावमि	=	मैं शिष्य से पढ़वाता हूँ।
(ख)	अहं सीसं पढावमि	=	मैं शिष्य को पढ़ाता हूँ।

इन दोनों वाक्यों में पढ़ाने की क्रिया में **अहं** (मैं) की प्रेरणा है। अत: **अहं** के साथ सामान्य रूप से प्रयुक्त होने वाले **पढ़ामि** क्रिया रूप में प्रेरणार्थक **आव** प्रत्यय जुड़ जाने से पढ + आव + मि = **पढावमि** रूप बन जाता है।

नि. ९५ : प्राकृत में प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के लिए मूल क्रिया में **आव** प्रत्यय जोड़ने के बाद काल और पुरुष-बोधक प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे -

मू. क्रि.		**प्रे.प्र.**				**ए.व.**		**प्रेरर्णाक क्रियारूप**
पढ	+	आव	-		+	मि	=	**पढावमि** (वर्त.)
पढ	+	आव	+	ईअ	+	-	=	**पढावीअ** (भूत.)
पढ	+	आव	+	इहि	+	मि	=	**पढाविहिमि** (भवि.)
पढ	+	आव	-		+	मु	=	**पढावमु** (इच्छा/आज्ञा)

नि. ९६ : प्रेरणार्थक क्रिया के सामान्य प्रयोगों में जिससे वह क्रिया करायी जाती है उस कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे - अहं **सीसेण** पढावमि। (देखें, पाठ ८५) और जिनके लिए वह क्रिया की जाती है उस कर्ता में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे - अहं **सीसं** पढावमि।

नि. ९७ : प्रेरणार्थक कृदन्त रूपों में मूल क्रिया में **आव** प्रत्यय जोड़ने के बाद विभिन्न कृदन्तों के प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे -

सं.कृ.-	पढ़	+	आव +	इ	+	ऊण	=	**पढाविऊण**
हे.कृ.-	पढ़	+	आव +	इ	+	उं	=	**पढाविउं**
वि.कृ.-	पढ़	+	आव +	अणीअ			=	**पढावणीअ**
वि.कृ.-	पढ़	+	आव +	ए	+	अव्व	=	**पढावेअव्व**
व.कृ.-	पढ़	+	आव +	माण			=	**पढावमाण**
व.कृ.-	पढ़	+	आव +	अंत			=	**पढावंत**
भू.कृ.-	पढ़	+	आव +	इ	+	अ	=	**पढाविअ**
भ.कृ.-	पढ़	+	आव +	इस्सं‍त			=	**पढाविस्संत**

निर्देश : इन सभी प्रेरक कृदन्त रूपों के पु., स्त्री. एवं नपुं. रूप बनाकर विशेषण जैसे प्रयुक्त किये जा सकते हैं। इनके प्रयोग एवं नियम आप कृदन्त विशेषण पाठ में सीख चुके हैं। यथा -

पढावणीअ गाहा	=	पढवाने योग्य गाथा। (स्त्री. वि. कृ.)
पढावंतो पुरिसो	=	पढ़ाता हुआ पुरुष। (पु. व. कृ.)
पढविअं पोत्थअं	=	पढ़वायी हुई पुस्तक। (नपुं. भू. कृ.)
पढास्सिंतो गंथो	=	पढ़ाया जाने वाला ग्रन्थ। (पु.भवि.कृ.)

नि. ९८ : प्रेरक कर्म वाच्य क्रियाएँ बनाने के लिए मूल क्रिया में **आवि** प्रत्यय जोड़कर वाच्य के प्रत्यय जोड़े जाते हैं। उसके बाद विभिन्न कालों के और पुरुष-बोधक प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे -

मू. क्रि.		**प्रे. प्र.**		**वाच्य प्र.**		**पु.बो.प्र.**		**प्रेरकवाच्य रूप**
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	इ	=	**पढावीअइ** (व.का.)
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	ईअ	=	**पढाविज्जीअ** (भू. का.)
पढ	+	आवि	+	-	+	हिइ	=	**पढाविहिइ** (भ. का.)
पढ	+	आवि	+	ईअ/इज्ज	+	उ	=	**पढावीअउ (विधि)**

निर्देश : वाच्य क्रियाओं में भविष्यकाल में वाच्य प्रत्यय **ईअ/इज्ज** नही जुड़ते हैं। (देखें, नि. ८४) अत: पढाविहिइ में इनका प्रयोग नहीं है।

नि. ९९ : (क) प्रेरणार्थक कर्म वाच्य कृदन्तों में वर्तमान कृदन्त में वाच्य प्रत्यय **ईअ** जुड़ता है तथा भविष्य कृदन्त में **इस्समाण** प्रत्यय जुड़ता है। यथा -

व.कृ. - पढ + आव + **ईअ** + माण = **पढावीअमाणो** (पु.)

भ.वृ - पढ + आव - **इस्समाण** = **पढाविस्समाणो** (पु.)

(ख) अन्य प्रेरणार्थक कर्म वाच्य कृदन्त सामान्य प्रेरक कृदन्तों की भांति बनते हें। (देखें, नि. ९७)

नि. १००:(क) प्रेरणक भाववाच्य सामान्य क्रियाएँ प्रेरक कर्मवाच्य क्रियाओं की तरह ही बनती हैं (देखें, नि. ९८)।

(ख) प्रेरक भाववाच्य कृदन्त प्रेरक कर्मवाच्य कृदन्तों के समान ही बनते हैं (देखें, नि. ९९)। ये कृदन्त नपुं. में ही प्रयुक्त होते हैं।

❑❑

प्रेरणार्थक क्रिया चार्ट

क्रिया प्रयोग

	मू.क्रि.	प्रत्यय	व.का.	भू.का.	भ.का.	वि.आ.
सामान्य क्रिया	पढ	आव	पढावइ	पढावीअ	पढाविहिइ	पढावउ
कर्मवाच्य	पढ	आव	पढावीअइ	पढावीअईअ	पढाविहिइ	पढावीअउ
भाववाच्य	हस	आव	हसावीअइ	हसावीअईअ	हसाविहिइ	हसावीअउ

कृदन्त प्रयोग

	मू.क्रि.	प्रत्यय	व.कृ.	भू.कृ.	भ.कृ.	वि.कृ.	स.कृ.	हे.कृ.
सामान्य कृदन्त	पढ	आव	पढावमाणो पढावंतो	पढाविओ	पढाविस्संतो	पढावणीअ/ पढावेअव्वं	पढाविऊण	पढाविउं
कर्मवाच्य	पढ	आव	पढावीअमाणं पढावीअंतो	पढाविओ	पढाविस्समाणो	पढावणीअ/ पढावेअव्वं	पढाविऊण	पढाविउं
भाववाच्य	हस	आव	हसावीअमाणं हसावीअंतं	हसाविअं	हसाविस्समाणं	हसावणीअं/ हसावेअव्वं	हसाविऊण	हंसाविउं

11. क्रियातिपत्ति :

पाठ ८७

क्रियातिपत्ति के प्रयोग :

तुमं झाणेण पढेज्जा अण्णहा सहलं ण होज्जा	=	तुम ध्यान से पढ़ो अन्यथा सफल नही होओगे।
जइ अहं कम्मं ण करेज्जा ता धणं ण लभेज्जा।	=	यदि मैं कर्म नहीं करूँ तो धन नहीं मिलेगा।
जइ समयम्मि वेज्जो ण आगच्छेज्जा ता णिवो अवस्सं मरेज्जा।	=	यदि समय पर वैद्य नहीं आता तो राजा अवश्य मर जाता।
जया दीवो जोज्जा तया अंधयारो नस्सेज्जा।	=	जब दीपक जलता होता है तब अंधकार नष्ट हो जाता है।
आयासे जया विज्जुला चमकेज्जा तया मेहा वरसेज्जा	=	आकाश में जब बिजली चमकती है रतब बादल बरसते हैं।
जइ मग्गम्मि पयासो होन्तो ता अम्हे खड्डम्मि ण पडन्तो।	=	यदि मार्ग में प्रकाश होता तो हम खड्डे में न गिरते।

उ.पु.	- हसेज्ज,	हसेज्जा,	हसन्तो,	हसमाणो	हसेज्ज,	हसेज्जा,	हसन्तो,	हसमाणो
म.पु.	- "	"	"	"	"	"	"	"
अ.पु.	- "	"	"	"	"	"	"	"
	पढेज्ज,	पढेज्जा,	पढन्तो,	पढमाणो,	पढेज्ज,	पढेज्जा,	पढन्तो,	पढमाणो
	करेज्ज	—	—	—	—	—	—	—
	गच्छेज्ज	—	—	—	—	—	—	—
	भणेज्ज	—	—	—	—	—	—	—
	नमेज्ज	—	—	—	—	—	—	—
	जाणेज्ज	—	—	—	—	—	—	—
	होज्ज,	होज्जा,	होन्तो,	होमाणो,	होज्ज,	होज्जा,	होन्तो,	होमाणो
	णेज्ज	—	—	—	—	—	—	—
	झाज्ज	—	—	—	—	—	—	—

प्राकृत में अनुवाद करो :

यदि तुम वहाँ जाते तो सब जान जाते। यदि हम पहले आ जाते तो अवश्य उनको देखते। यदि मेरे पास धन होता तो मैं विदेश यात्रा करता। रावण यदि शील की रक्षा करता तो राम उसकी रक्षा करते। यदि वहाँ तालाब न होता तो गाँव जल जाता।

नि.१०१: क्रियातिपत्ति का प्रयोग प्राय: तब होता है जब पूर्व वाक्य में कोई कारण हो और दूसरे वाक्य में उसका फल।

नि.१०२: क्रियातिपत्ति से तीन पुरुषों, दोनों वचनों और सभी कालों में क्रिया का एक रूप प्रयुक्त होता है। क्रिया में ज्ज, ज्जा, न्त एवम् माण प्रत्यय विकल्प से जुड़ते हैं। जैसे-

पढ + ए + ज्ज	= **पढेज्ज**	पढ + ए + ज्जा	= **पढेज्जा**
पढ + न्त	= **पढन्तो** (पु.)	पढ + माण	= **पढमाणो**(पु.)
हो + ज्ज	= **होज्ज**	हो + ज्ज	= **होज्जा**
हो + न्त	= **होन्तो**	हो + माण	= **होमाणो**

निर्देश : जिन क्रियाओं को आपने सीखा है उनके क्रियातिपत्ति रूप बनाइए और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

हिन्दी में अनुवाद करो :

तुमए ण झाइअं। तुमं तं लिहाविहिसि। सो ममं ण जग्गवउ। जुवईए बाला सयाविज्जइ। पुरिसेण चित्तं पासावीअइ। गुरुणा गाहा ण लिहाविअ्रा। अम्हेहि पत्तं लिहाविज्जइ। तेण तत्थ पढावीअउ। साहू तेण गंथं पढाविऊण सुणइ। जया णाणं होज्जा तया अण्णाणं नस्सेज्जा।

प्राकृत में अनुवाद करो :

हमारे द्वारा नहीं सुना गया। शिष्य साधु को जगाता है। स्वामी नौकर को सिखायेगा। यह पुस्तक पढ़ने योग्य नहीं है। तुम्हारे द्वारा गीत लिखाया जायेगा। विद्वान् के द्वारा ग्रंथ पढ़ाया जाना चाहिए। युवती छात्र से लिखवाती है। यदि मैं नहीं पढूँगा तो ज्ञान नहीं मिलेगा।

❏❏

12. संधि प्रयोग

पाठ ८८

निर्देश : प्राकृत में संधि का प्रयोग प्राय: वैकल्पिक है, अनिवार्य नहीं। प्राकृत साहित्य में सन्धि के कई प्रयोग देखने को मिलते हैं। प्राकृत-वैयाकरणों ने संधि के कुछ नियम भी बतलाये हैं। प्रारम्भिक जानकारी के लिए कुछ प्रमुख नियम एवं उनके उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं।

१. स्वर-संधि

प्रथम शब्द के अन्तिम स्वर एवं द्वितीय शब्द के पहले स्वर मिल जाने पर शब्द में जो परिवर्तन होता है उसे स्वर-सन्धि कहते हैं।

प्राकृत में स्वर-संधि के प्राय: निम्न प्रयोग देखे जाते हैं :-

समान स्वर

(१) अ + अ = **आ**	यथा-	जीव	+	अजीव	= **जीवाजीव**
		णर	+	अहिव	= **णराहिव**
		धम्म	+	अधम्म	= **धम्माधम्म**
(२) इ + इ, ई + इ = **ई**	यथा-	मुणि	+	ईसर	= **मुणीसर**
		मुणि	+	इंद	= **मुणींद**
		रयणी	+	ईस	= **रयणीस**
(३) उ + उ, ऊ + उ = **ऊ**	यथा-	बहु	+	उअयं	= **बहूअयं**
		भाणु	+	उवज्झाय	= **भाणूवज्झाय**

असमान स्वर

(४) अ + इ, अ + ई = **ए**	यथा-	ण	+	इच्छइ	= **णेच्छइ**
		दिण	+	ईस	= **दिणेस**
		महा	+	इसि	= **महेसि**
		राअ	+	इसि	= **राएसि**
(५) अ + आ, आ + अ = **आ**	यथा-	गीअ	+	आइं	= **गीआइं**
		कला	+	अहिवइ	= **कलाहिवइ**
(६) अ + उ, अ + ऊ = **ओ**	यथा-	तस्स	+	उवरि	= **तस्सोवरि**
		समण	+	उवासग	= **समणोवासग**
		पाअ	+	ऊण	= **पाओण**

संयुक्त-व्यंजन के पूर्व स्वर

(७) अ + इ	यथा-	गअ	+	इंद	= **गइंद**
		णर	+	इंद	= **णरिंद**
अ + उ = **उ**	यथा-	णील	+	उप्पल	= **णीलुप्पल**
		रयण	+	उज्जलं	= **रयणुज्जलं**

दीर्घ स्वर के पूर्व स्वर का लोप

(८) अ + इ = **ई**	यथा-	तिअस	+ ईस	= **तिअसीस**
		राय	+ ईसर	= **राईसर**
आ + ऊ = **ऊ**	यथा-	महा	+ ऊसव	= **महूसव**
		एग	+ ऊण	= **एगूण**
अ + ए = **ए**	यथा-	गाम	+ एणी	= **गामणी**
		इह	+ एव	= **इहेव**
		तहा	+ एव	= **तहेव**
अ+ओ, आ+ओ = **ओ**	यथा-	जल	+ ओह	= **जलोह**
		महा	+ ओसहि	= **महोसहि**

अव्यय के पूर्व स्वर का लोप

(९) अपि का **अ** लोप	यथा-	केण	+ अपि	= **केण वि**
		को	+ अपि	= **को वि**
		मरणं	+ अपि	= **मरणं पि**
		तं	+ अपि	= **तं पि**
इति की **इ** लोप	यथा-	तहा	+ इति	= **तह त्ति**
		दीसइ	+ इति	= **दीसइ त्ति**
		पढमं	+ इति	= **पढमं त्ति**
		जं	+ इति	= **जं ति**
इव की **इ** लोप	यथा-	चन्दो	+ इव	= **चन्दो व्व**
		गेहं	+ इव	= **गेहं व**
		जइ	+ इमा	= **जइमा**

२. प्रकृतिभाव संधि

(१०)क्रियापद में यथास्थिति-	होई	+ इह	= **होई इह**
	गच्छइ	+ इह	= **गच्छइ इह**
व्यंजन लोप पर यथास्थिति-	निसा	+ अर	= **गच्छइ इह**
	गंध	+ उडी	= **गंधउडी**
स्वर के बाद यथास्थिति-	एगे	+ आया	= **एगे आया**
	अहो	+ अच्छरियं	= **अहो अच्छरिय**

३. व्यंजन संधि

(११)म् का अनुस्वार	यथा-	जलम्	= **जलं**	
		गिरिम्	= **गिरिं**	
विकल्प से मेल	यथा-	किम्	+ इहं	= **किमिहं**
व्यंजन का अनुस्वार	यथा-	यत्	= **जं**,सम्यक्= **सम्मं**	
विकल्प से मेल	यथा-	यद्	+ अस्ति	= **यदस्थि**
		पुनर्	+ अपि	= **पुणरवि**
		निर्	+ अन्तर	= **निरन्तर**

❑❑

13. समास :

पाठ ८१

समास प्रयोग

निर्देश : थोड़े शब्दों में अधिक अर्थ बतलाने वाली प्रक्रिया को समास कहते हैं। समास के प्रयोग से वाक्य-रचना में सौन्दर्य आ जाता है। प्राकृत में सरल समासों का प्रयोग अधिक हुआ है। प्राकृत वैयाकरणों ने समास के लिए कोई नियम नहीं बनाये हैं। अत: प्रयोग के अनुसार प्राकृत के समासों को समझना चाहिए। समास के छह भेद निम्न प्रकार हैं।

१. अव्ययीभाव समास

जिसमें पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता हो तथा अव्ययों के साथ जिसका प्रयोग हो, वह अव्ययीभाव समास है। यथा -

उवगुरु = गुरुणो समीवं (गुरु के पास)।
अणुभोयणं = भोयणस्स पच्छा (भोजन के बाद)।
पइदिणं = दिणं दिणं पइ (दिन के बाद दिन)।
अणुरूवं = रूवस्स जोग्गं (रूप के समान)।

२. तत्पुरुष समास

जिसमें उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता होती है तथा पूर्वपद से विभक्तियों का लोप होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा -

दि.वि. - **सुहपत्तो** = सुहं पत्तो (सुख को प्राप्त)।
तृ.वि. - **गुणसम्पण्णो** = गुणेहि सम्पण्णो (गुणों से सम्पन्न)।
च.वि. - **बहुजणहितो** = बहुजणस्स हितो (सब जनों के लिए हित)।
पं.वि. - **चोरभयं** = चोरत्तो भीओ (चोर से डरा हुआ)।
ष.वि. - **देवमंदिरं** = देवस्स मंदिरं (देव का मंदिर)।
स.वि. - **कलाकुसलो** = कलासु कुसलो (कलाओं में कुशल)।

३. कर्मधारय समास

विशेषण और विशेष्य के समास कर्मधारय समास कहलाते हैं। यथा -

महावीरो = महन्तो सो वीरो (महान् वीर)।
पीअवत्थं = पीअं तं वत्थं (पीला वस्त्र)।
रत्तपीअं = रत्तं अ पीअं अ (लाल और पीला)।
चन्दमुहं = चंदो व्व मुहं (चंद्र की तरह मुख)।
जिणेंदो = जिणो इंदो इव (जिन इन्द्र की तरह)।
संजमधणं = संजमो एवं धणं (संयम ही है धन)।
असच्चं = ण सच्चं (सत्य नहीं है)।

४. द्विगु समास

प्रथम पद यदि संख्यासूचक हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं। यथा -

तिलोगं	=	तिण्हं लोगाणं समूहो (तीनो लोकों का समूह)।
चउक्कसायं	=	चउण्हं कसायाणं समूहो (चार कषायों का समूह)।
नवतत्तं	=	नवण्हं तत्ताणं समाहारो (नव तत्त्वों का समूह)।

५. द्वन्छ समास

दो या दो से अधिक संज्ञाएँ जब एक साथ जोड़े के रूप में प्रयुक्त हो तो उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। यथा -

पुण्णपावाइं	=	पुण्णं अ पावं अ (पुण्य और पाप)।
पिअरा	=	माअं अ पिआ अ (माता और पिता)।
सुहदुक्खाइं	=	सुहं अ दुक्खं अ (सुख और दुःख)।
णाणदंसणचरित्तं	=	णाणं अ दसणं अ चरित्तं अ (ज्ञान, दर्शन और चारित्र)।

६. बहुव्रीहि समास

जब दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य का विशेषण बनते हों तो उस समास को बहुव्रीहि कहते हैं। यथा -

पीआंबरो	=	पीअं अंबरं जस्स सो (पीला है वस्त्र जिसका, वह)।
अपुत्तो	=	नत्थि पुत्तो जस्स सो (नहीं है पुत्र जिसका, वह)।
सफलं	=	फलेण सह (फल के साथ.....)।
निलज्जो	=	निग्गया लज्जा जस्स सो (निकल गयी हैं लज्जा जिसकी वह)
जिअकामो	=	जिओ कामो जेण सो (जीता है काम को जिसने, वह)।

उदाहरण वाक्य :

अणुभोयणं ते पढन्ति	=	भोजन के बाद वे पढ़ते हैं।
गुणसम्पण्णो णिवो सासइ	=	गुण सम्पन्न राजा शासन करता है।
सो देवमंदिरे ण गच्छइ	=	वह देवता के मंदिर में नहीं जाता है।
रत्तपीअं वत्थं अत्थ नत्थि	=	लाल और पीला वस्त्र यहाँ नहीं है।
चंदमुही कन्ना कस्स घरे अत्थि	=	चंद्रमा के समान मुखवाली कन्या किसके घर में है?
महावीरो तिलोयं जाणइ	=	महावीर तीनों लोकों को जानता है।
पुण्णपावाणि बंधस्स कारणाणि संति	=	पुण्य और पाप बंध के कारण हैं।
पीआंबरो तत्थ णच्चइ	=	पीले वस्त्र वाला वहाँ नाचता है।

❑❑

14. वैकल्पिक प्रयोग :

पाठ ९०

वैकल्पिक प्रयोग

निर्देश : प्राकृत व्याकरण के जिन नियमों का अभ्यास अभी तक आपने किया है उनका प्रयोग आपको आगे दिये गये प्राकृत के पद्य एवं गद्य-संकलन में देखने को मिलेगा। साथ ही कुछ ऐसे प्रयोग भी इस संकलन में हैं, जो आपके लिए नये हैं तथा जिनका विकल्प से प्रयोग होता है। ऐसे वैकल्पिक प्रयोगों का विस्तार से विवेचन प्राकृत अभ्यास की अन्य पुस्तकों में किया गया है। किन्तु सामान्य जानकारी के लिए ऐसे नये प्रयोगों के कुछ नियम एवं उदाहरण यहाँ भी दिये जा रहे हैं। इनके अभ्यास द्वारा इस पुस्तक में संकलित पाठों को सरलता से समझा जा सकेगा।

सर्वनाम

		एकवचन		बहुवचन	
१. उत्तमपुरुष	प्र.वि.	**अहं**	= हं	**अम्हे**	= अम्ह
	द्वि.वि.	**ममं**	= मं	**अम्हे**	= अम्ह
	तृ.वि.	**मए**	= मे, ममए	**अम्हेहि**	= अम्हे
	च.ष.वि.	**मज्झ**	= मह, मम, मे	**अम्हाण**	= मज्झ
	पं.वि.	**ममाओ**	= ममत्तो	**अम्हाहिंतो**	= अम्हत्तो
	स.वि.	**अम्हम्मि**	= महम्मि	**अम्हेसु**	= ममेसु
२. मध्यमपुरुष	प्र.वि.	**तुमं**	= तुं, तुहं	**तुम्हे**	= तुब्भे, तुम्ह
	द्वि.वि.	**तुमं**	= तुमे, तव	**तुम्हे**	= वो
	तृ.वि.	**तुमए**	= तुमे	**तुम्हेहि**	= तुज्झेहि
	च.ष.वि.	**तुज्झ**	= तुह, तुम्ह, तस्स	**तुम्हाण**	= तुमाण
	पं.वि.	**तुमाओ**	= तुम्हत्तो	**तुम्हाहिंतो**	= तुम्हाओ
	स.वि.	**तुम्हम्मि**	= तुमम्मि	**तुम्हेसु**	= तुमेसु
३. अन्यपुरुष	प्र.वि.	**सो**	= से, ण	**ते**	= ते, णे
(पुल्लिंग)	द्वि.वि.	**तं**	= णं	**ते**	= णे
	तृ.वि.	**तेण**	= णेण	**तेहि**	= णेहि
	च.ष.वि.	**तस्स**	= से	**ताण**	= तेसि
	पं.वि.	**तत्तो**	= णत्तो	**ताहिंतो**	= णाओ
	स.वि.	**तम्मि**	= तस्सिं	**तेसु**	= तेसुं

		एकवचन		बहुवचन	
३. अन्यपुरुष	प्र.वि.	**सा**	= णा	**ताओ**	= तीआ
(स्त्रीलिंग)	द्वि.वि.	**तं**	= णं	**ताओ**	= णाओ
	तृ.वि.	**ताए**	= तीए	**ताहि**	= तीहि
	च.ष.वि.	**ताअ**	= तिस्सा	**ताण**	= तेसिं
	पं.वि.	**ताओ**	= णाए	**ताहिंतो**	= णाहिंतो
	स.वि.	**ताए**	= तीए	**तासु**	= तीसु

५. ज = जो सर्वनाम के विभिन्न रूप

	पुल्लिंग रूप		स्त्रीलिंग रूप	
	ए.ब.	ब.व.	ए.ब.	ब.ब.
प्र.	जो	जे	जा	जाओ, जीओ
द्वि.	जं	जे	जं	जाओ, जीओ
तृ.	जेण	जेहि	जीआ, जीए	जाहिं, जीहि
च.	जस्स	जाण	जिस्सा, जाए	जाण, जेसिं
पं.	जम्हा, जत्तो	जाहिंत्तो	जित्तो, जीए	जाहिंत्तो, जीहिंत्तो
षं.	जस्स	जाण	जस्सा, जीए	जाण, जेसिं
स.	जम्मि, जस्सिं	जेसु	जाए, जीए	जासु, जीसु
नपुं. रूप प्र.	**जं**	**जाणि**, जाइं		
द्वि.	**जं**	**जाणि**, जाइं		

(शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिंग के समान होते हैं)

क्रियाएँ :

६. क्रियाओं के अंतिम **अ** अथवा **आ** को वर्तमान काल में विकल्प से **ए** भी होता है तब क्रियाओं के रूप इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं।

अकारान्त क्रियाएँ

	एकवचन			बहुवचन	
उत्तमपुरुष	**जंपामि**	=	जंपेमि	**जंपामो**	= जंपेमो
मध्यमपुरुष	**जंपसि**	=	जंपेसि	**जंपित्था**	= जंपेत्था
अन्यपुरुष	**जंपइ**	=	जंपेइ	**जंपंति**	= जंपेंति
	गमइ	=	गमेइ	**गमंति**	= गमेंति
	कहइ	=	कहेइ	**कहंति**	= कहेंति
	पालइ	=	पालेइ	**पालंति**	= पालेंति
	वअइ	=	वएइ	**वअंति**	= वएन्ति

आकारान्त क्रियाएँ

उ.पु.	**दामि**	= देमि	**दामो**	= देमो
म.पु.	**दासि**	= देसि	**दाइत्था**	= देइत्था
अ.पु.	**दाइ**	= देइ	**दांति**	= देंति

७. भूतकाल में आ, ए, ओकारान्त क्रियाओं में ही प्रत्यय के अतिरिक्त **सी** एवं **हीअ** प्रत्यय भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे –

सभी पुरुषों एवं	**दाही**	= दासी, दाहीअ
सभी वचनों में	**पाही**	= पासी, पाहीअ
	णेही	= णेसी, णेहीअ
	होही	= होसी, होहीअ

८. भविष्यकाल में मूलक्रिया में **स्स** प्रत्यय भी विकल्प से जुड़ता है। जैसे–

मू. क्रि.		**एकवचन**		**बहुवचन**	
पास	उ.पु.	**पासिहिमि**	= पासिस्सामि	**पासिहामो**	= पासिस्सामो
	म.पु.	**पासिहिसि**	= पासिस्ससि	**पासिहित्था**	= पासिस्सह
	अ.पु.	**पासिहिइ**	= पासिस्सइ	**पासिहिंति**	= पासिस्संति
दा	उ.पु.	**दाहिमि**	= दास्सामि	**दाहामो**	= दास्सामो
	म.पु.	**दाहिसि**	= दास्ससि	**दाहित्था**	= दास्सह
	अ.पु.	**दाहिइ**	= दास्सइ	**दाहिंति**	= दास्संति

९. विधि तथा आज्ञार्थक क्रियारूपों में मध्यपुरुष के एकवचन में विकल्प से निम्न रूप भी प्रयुक्त होते हैं। बहुवचन का **ह** प्रत्यय भी एकवचन में प्रयुक्त हो जाता है।

मू.क्रि.	**सीखा हुआ रूप**		**वैकल्पिक रूप**		**अर्थ**
कुण	**कुणहि**	= कुण,	कुणह,	कुणसु	करो
मुंच	**मंचहि**	= मुंच,	मुंचह,	मुंचसु,	छोड़ो
जंप	**जंपहि**	= जंप,	जंपह,	जंपसु	बोलो
जाण	**जाणहि**	= जाण,	जाणह,	जाणसु	जानो
पेस	**पेसहि**	= पेस,	पेसह,	पेससु	भेजो
धार	**धारहि**	= धार,	धारह,	धारसु	धारण करो
सिक्ख	**सिक्खहि**	= सिक्ख,	सिक्खह,	सिक्खसु	सीखो
झा	**झाहि**	= झायह,	झाएह		ध्यान करो
दा	**दाहि**	= दाह,	देहि		दो
मोच	**मोचहिं**	= मोएह,	मोयसु		छोड़ो
निकास	**निक्कासहि**	= निक्कासह	निक्कासय		निकालो

सम्बन्ध कृदन्त :

१०. सम्बन्ध कृदन्तों में मूल क्रिया के साथ **ऊण** प्रत्यय के अतिरिक्त निम्नांकित प्रत्यय भी प्रयुक्त होते हैं।

मू.क्रि.	सीखा हुआ रूप		वैकल्पिक रूप	प्रत्यय
हस	**हसिऊण**	=	हसितुं, हसिउं	तुं (उं)
कर	**करिऊण**	=	करिउं, काउं	,,
सुण	**सुणिऊण**	=	सुणिउं	,,
ठव	**ठविऊण**	=	ठवेउं	,,
झा	**झाइऊण**	=	झाइत्ता	इत्ता
वंद	**वंदिऊण**	=	वंदित्ता	,,
बंध	**बंधऊिण**	=	बंधित्ता	,,
गिण्ह	**गिण्हिऊण**	=	गिण्हित्ता	,,
चिंत	**चिंतिऊण**	=	चिंतित्ता	,,
उट्ठ	**उट्ठिऊण**	=	उट्ठित्ता	,,
नम	**नमिऊण**	=	नमिअ	अ
हस	**हसिऊण**	=	हसिअ	,,
आरुह	**आरुहिऊण**	=	आरुहिय	य/अ
आराह	**आराहिऊण**	=	आराहिय	,,
परिणाव	**परिणाविऊण**	=	परिणाविय	,,

११. **अनियमित सम्बन्ध कृदन्त**

दट्ठ	**दट्ठिऊण**	=	दट्ठुं	=	देखकर
गच्छ	**गच्छिऊण**	=	गच्चा	=	जाकर
कर	**करिऊण**	=	किच्चा	=	करके
जाण	**जाणिऊण**	=	णच्चा	=	जानकर
सुण	**सुणिऊण**	=	सोच्चा	=	सुनकर
दा	**दाऊण**	=	दच्चा	=	देकर
चय	**चयिऊण**	=	चिच्चा	=	छोड़कर
सय	**सयिऊण**	=	सुत्ता	=	सोकर

निर्देश:- सम्बन्ध कृदन्त के ये रूप उच्चारण भेद एवं ध्वनि-परिवर्तन के आधार पर प्रयुक्त होते हैं। इनके लिए कोई निश्चित नियम नहीं है।

१२. प्राकृत के कुछ शब्दों में **अ** के स्थान पर **य** का प्रयोग होता है। जैसे –

वअण	= वयण (वचन)	**पाआल**	= पायाल (पाताल)
नअण	= नयण (आँख)	**पआ**	= पया (प्रजा)
नअर	= नयर (नगर)	**जोअण**	= जोयण (योजन)

संज्ञा शब्द

१३. संज्ञा शब्दों में विभिन्न विभक्तियों में विकल्प से कई रूप बनते हैं। प्रयोग की दृष्टि से कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं :-

पुल्लिंग संज्ञा शब्द

विभक्ति	एकवचन			बहुवचन		
प्र.	**पुरिसो**	=	पुरिसे	**पुरिसा**	=	पुरिसे
द्वि.	–	=	–	**पुरिसा**	=	पुरिसे
तृ.	**पुरिसेण**	=	पुरिसेणं	**पुरिसेहि**	=	पुरिसेहिं
च.	**पुरिसस्स**	=	पुरिसाय	**पुरिसाण**	=	पुरिसाणं
	छुट्टणस्स	=	छुट्टणाय	(छूटने के लिए)		
	सयणस्स	=	सयणाय	(सोने के लिए)		
	भोयणस्स	=	भोयणाय	(भोजन के लिए)		
	वहस्स	=	वहाय	(वध के लिए)		
	परिहाणस्स	=	परिहाणाय	(पहिनने के लिए)		
पं.	**पुरिसत्तो**	=	पुरसाओ	**पुरिसाहिंत्तो**	=	पुरिसाहि
	सीलत्तो	=	सीलाउ	–		–
ष.	–		–	**पुरिसाण**	=	पुरिसाणं
स.	**पुरिसे**	=	पुरसम्मि	**पुरिसेसु**	=	पुरिसेसु

पु. इकारान्त, उकारान्त शब्दों के चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्ति में ये वैकल्पिक रूप बनते हैं :-

सामिणो	=	सामिस्स
पिउणो	=	पिउस्स
गुरुणो	=	गुरुस्स

१४. स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों में निम्नांकित परिवर्तन ध्यान देने योग्य हैं:-

		एकवचन			बहुवचन		
आकारान्त	प्र.	–	=		**मालाओ**	=	मालाउ
	द्वि.	–			**मालाओ**	=	**मालाउ**
	तृ. से स.	**मालाए**	=	मालाइ	**मालाहि**	=	मालाहिं
ईकारान्त एवं	प्र. द्वि.				**नईओ**	=	नईउ
उकारान्त	तृ. से स.	**नईए**	=	नईया	– .		–
	प.	**नईए**	=	नइत्तो	–		–

१५. नपुंसकलिंग संज्ञाशब्दों में प्र. एवं द्वि. विभक्ति के बहुवचन में वैकल्पिक रूप प्रयुक्त होते हैं। यथा

नेत्ताणि	=	नेत्ताइं	**मुहाणि**	=	मुहाइं
वत्थाणि	=	वत्थाइं	**भोगाणि**	=	भोगाइं
कमलाणि	=	कमलाइं	**नयराणि**	=	नयराइं

पाइय-पज्ज-गज्ज संगहो

15. पज्ज-संगहो :

अंजणासुंदरीकहा

ाअ चागो परिवेअणं य

सरिऊण मिस्सकेसी-वयणं पवणंजएण रुट्ठेणं।
चत्ता महिन्दतणया, दुक्खियमणसा अकयदोसा ॥१०॥
विरहाणलतवियंगी, न लभइ विद्दाणलोयणा निद्दं।
वामकरधरियवयणा, वाउकुमारं विचिन्तन्ती ॥२॥
उक्कण्ठिय त्ति गाढं, नयणजलासित्तमलिणथणजुयला।
हरिणी व वाहभीया, अच्छइ मग्गं पलोयन्ती ॥३॥
अइतणुइयसव्वंगी, कडिसुत्तय-कडयसिढिलियाभरणा।
भारेण· अंसुयस्स य, जाइ महन्तं परमखेयं ॥४॥
ववगयदप्पुच्छाहा, दुक्खं धारेइ अंगमंगाइं।
एमेव सुन्नहियया, पलवइ अन्नन्नवयणाइं ॥५॥
पासायतलत्था चिय, मोहं गच्छइ पुणो पुणो बाला।
नवरं आसासिज्जइ, सीयलपवणेण फुसियंगि ॥६॥
मिउ-महुर-मम्मणाए, जंपइ वायाए दीणवयणाइं।
अइतणुओ वि महायस! तुज्झऽवराहो मए न कओ ॥७॥
मुंचसु कोवारम्भं, पसियसु मा एव निट्ठुरो होहि।
पणिवइयवच्छला किल, होन्ति मणुस्सा महिलियाणं ॥८॥
एयाणि य अन्नाणि य, जंपंती तत्थ दीणवयणाइं।
अह सा महिन्दतणया, गमेइ कालं चिय बहुत्तं ॥९॥

रावणस्स वरुणेण सह विरोहो

एत्थन्तरे विरोहो, जाओ अइदारुणो रणाम्भो।
रावण-वरुणाण तओ, दोण्ह वि पुण दिप्पलबलाणं ॥१०॥
लंकाहिवेण दूओ, वरुणस्स य पेसिओ अइतुरन्तो।
गन्तूण पणमिऊण य, कयासणो भणइ वयणाइं ॥११॥
विज्जाहराण सामी, वरुण! तुमं भणइ रावणो रुट्ठो।
कुणह पणामं व फुडं, अह ठाहि रणे सवडहुत्तो ॥१२॥
हसिऊण भणइ वरुणो, दूयाहम! को सि रावणो नाम?।
न य तस्स सिरपणामं, करेमि आणापमाणं वा ॥१३॥
न य सो वेसमणो हं, नेय जमो न य सहस्सकिरणो वा।
जो दिव्वसत्थभीओ, कुणइ पणामं तुहं दीणो ॥१४॥
वरुणेणं उवलद्धो, दूओ जं एव फरुसवयणेहिं।
तो रावणस्स गन्तुं, कहेइ सव्वं जहाभणियं ॥१५॥
सोऊण दूयवयणं, रुट्ठो लंकाहिवो भणइ एवं।
दिव्वत्थेहि विणा मएँ, अवस्स वरुणो जिएयव्वो ॥१६॥
एतथन्तरे पयट्टो, दसाणणो सयलबलकयाडोवो।
संपत्तो वरुणपुरं, मणि-कणयविचित्तपायारं ॥१७॥
सोऊण रावणं सो, समागयं पुत्तबलसमाउत्तो।
रणपरिहत्थुच्छाहो, विणिग्गओ अभिमुहो वरुणो ॥१८॥
राईवपुण्डरीया, पुत्ता बत्तीसइं सहस्साइं।
सन्नद्ध-बद्ध-कवया, अब्भिट्टा रक्खसभडाणं ॥१९॥
अन्नोन्नसत्थभज्जन्त - संकुलं हुयवहुट्ठियफुल्लिंगं।
अइदारुणं पवत्तं, जुज्झं विवडन्तवरसुहडं ॥२०॥
रह-गय-तुरंग-जोहा, समरे जुज्झन्ति अभिमुहावडिया।
सर-सत्ति-खग्ग-तोमर-चक्काउह-मोग्गरकरग्गा ॥२१॥
रक्खसभडेहि भग्गं, वरुणबलं विवडियाऽऽस-गय-जोहं।
दट्ठूण पलायन्तं, जलकन्तो अभिमुहीहूओ ॥२२॥
वरुणेण बलं भग्गं, ओसरियं पेच्छिऊण दहवयणो।
अब्भिडइ रोसपसरिय-सरोहनिवहं विमुंचन्तो ॥२३॥

वरुणस्स रावणस्स य, वट्टन्ते दारुणे महाजुज्झे।
ताव य वरुणसुएहिं, गहिओ खरदूसणो समरे ॥२४॥
दट्ठूण दूसणं सो, गहिओ मन्तीहि रावणो भणिओ।
जुज्झन्तेण पहु! तुमे, अवस्स मारिज्जए कुमरो ॥२५॥
काऊण संपहारं, समयं मन्तीहि रक्खसाहिवई।
खरदूसणजीयत्थे, रणमज्झाओ सामोसरिओ ॥२६॥
पायालपुरवरं सो, पत्तो मेलेइ सव्वसामन्ते।
पल्हायखेयरस्स वि, सिग्घं पुरिसं विसज्जेइ ॥२७॥

पवणवेगस्स रणत्थं गमणं

गन्तूण पणमिऊण य, पल्हायनिवस्स कहइ संबन्धं।
रावण-वरुणाण रणं, दूसणगहणं जहवत्तं ॥२८॥
पडियागओ महप्पा, पायालपुरट्ठियो ससामन्तो।
मेलेइ रक्खसवई, अहमवि वीसज्जिओ तुज्झ ॥२९॥
सोऊण वयणमेयं, पल्हाओ तक्खणे गमणसज्जो।
पवणंजएण धरियो, अच्छ तुमं ताव वीसत्थो ॥३०॥
सन्तेण मए सामिय! कीस तुमं कुणसि गमणआरम्भं?
आलिंगणफलमेयं, देमि अहं तुज्झ साहीणं ॥३१॥
भणिओ य नरवईण, बालोसि तुमं अदिट्ठसंगामो।
अच्छसु पुत्त! घरगओ, कीलन्तो निययकीलाए ॥३२॥
मा ताय! एव जंपसु, बालो त्ति अहं अदिट्ठरणकज्जो।
किं वा मत्तवरगए, सीहकिसोरो न घाएइ? ॥३३॥
पल्हायनरवईणं, ताहे वीसज्जिओ पवणवेगो।
भणिओ य पत्थिवजयं, पुत्तय! पावन्तओ होहि ॥३४॥
तातस्स सिरपणामं, काउं आपुच्छिऊण से जणणिं।
आहरणभूसियंगो, विणिग्गओ सो सभवणाओ ॥३५॥
सहसा पुरम्मि जाओ, उल्लोल्लो निग्गओ पवणवेगो।
सोऊण अंजणा वि य, तं सद्दं निग्गया तुरियं ॥३६॥
अइपसरन्तसिणेहा, थम्भल्लीणा पइं पलोयन्ती।
वरसालिभंजिया इव, दिट्ठा बाला जणवएणं ॥३७॥

पेच्छइ य तं कुमारं, मन्दितणया नरिन्दमग्गम्मि।
पुलयन्ति न य तिप्पइ, कुवलयदलसरिसनयणेहिं ॥३८॥
पवणंजएण वि तओ, पासायतलट्ठिया पलोयन्ती।
दूरं उव्वियणिज्जा, उक्का इव अंजणा दिट्ठा ॥३९॥
तं पेच्छिऊण रुट्ठो, पवणगई रोसपसरियसरीरो।
भणइ य अहो! अलज्जा, जा मज्झ उवट्ठिया पुरओ ॥४०॥
रइऊण अंजलिउडं, चलणपणामं च तस्स काऊण।
भणइ उवालम्भन्ती, दूरपवासो तुमं सामी ॥४१॥
वच्चन्तेण परियणो, सव्वो संभासिओ तुमे सामि।
न य अन्नमणगएण वि, आलत्ता हं अकयपुण्णा ॥४२॥
जीयं मरणं पि तुमे, आयत्तं मज्झ नत्थि संदेहो।
जइ वि हु जासि पवासं, तह वि य अम्हे सरेज्जासु ॥४३॥
एवं पलवन्तीए, पवणगई मत्तगयवरारूढो।
निग्गन्तूण पुराओ, उवट्ठिओ माससरम्मि ॥४४॥
विज्जाबलेण रइयो, तत्थ निवेसो घरा-ऽऽसणाईओ।
ताव च्चिय अत्थगिरिं, कमेण सूरो समल्लीणो ॥४५॥

पवणन्त्रेगेण अंजनाअ सुमरणं

अह सो संझासमए, भवण - गवक्खन्तरेण पवणगई।
पेच्छइ सरं सुरम्मं, निम्मलवरसलिलसंपुण्णं ॥४६॥
मच्छेसु कच्छभेसु य, सारस-हंसेसु पयलियतरंगं।
गुमुगुमुगुमन्तभमरं, सहस्सपत्तेसु संछन्नं ॥४७॥
अइदारुणप्पयावो, लोए काऊण दीहरज्जं सो।
अत्थाओ दिवसयरो, अवसाणो नरवई चेव ॥४८॥
दियहम्मि वियसियाइं, निययं भमरउलछड्डियदलाइं।
मउलेन्ति कुवलयाइं, दिणयरविरहम्मि दुहियाइं ॥४९॥
अह ते हंसाईया, सउणा लीलाइउं सरवरम्मि।
दट्ठुं संझासमयं, गया य निययाइँ ठाणाइं ॥५०॥
तत्थेक्का चक्काई, दिट्ठा पवणंजएण कुव्वन्ती।
अहियं समाउलमणा, अहिणवविरहग्गितवियंगी ॥५१॥

उद्धाइ चलइ वेवइ, विहुणइ पक्खावलिं वयिम्भन्ती।
तडपायवे विलग्गइ, पुणरवि सलिलं समल्लियइ॥५२॥
विहडेइ पउमसण्डं, दइययसंकाएँ चंचुपहरेहिं।
उप्पयइ गयणमग्गं, सहसा पडिसद्दयं सोउं॥५३॥
गरुयपियविरहदुहियं, चक्किं दट्ठूण तग्गयमणेणं।
पवणंजएण सरिया, महिन्दतणया चिरपमुक्का॥५४॥
भणिऊण समाढत्तो, हा! कट्ठं जा मए अकज्जेणं।
मूढेण पावगुरुणा, चत्ता वरिसाणि बावीसं॥५५॥
जह एसा चक्काई, गाढं पियविरहदुक्खिया जाया।
तह सा मज्झ पिययमा, सुदीणवयणा गमइ कालं॥५६॥
जइ नाम अकण्णसुहं, भणियं सहियाएँ तीएँ पावाए।
तो किं मए विमुक्का, पसयच्छी दोसपरिहीणा?॥५७॥
परिचिन्तिऊण एवं वाउकुमारेण पहसिओ भणिओ।
दट्ठूण चक्कवाई, सरिया से अंजणा भज्जा॥५८॥
एन्तेण मए दिट्ठा, पासायतलट्ठिया पलोयन्ती।
ववगयसिरि-सोहग्गा, हिमेण पहया कमलिणि व्व॥५९॥
तं चिय करेहि सुपुरिस!, अज्ज उवायं अकालहीणम्मि।
जेण चिरविरहदुहिया, पेच्छामि अहंजणा बाला॥६०॥
परिमुणिय कज्जनिहसो, पवणगई भणइ पहसिओ मित्तो।
मोत्तूण तत्थ गमणं, अन्नोवायं न पेच्छामि॥६१॥
पवणंजएण तुरियं, सद्दावेऊण मोग्गरामच्चो।
ठवियो य सेन्नरक्खो, भणिओ मेरुं अहं जामि॥६२॥
चन्दणकुसुमविहत्था, दोण्णि वि गयणंगणेण वच्चन्ता।
रयणीए तुरियचवला, संपत्ता अंजणाभवणं॥६३॥
तो पहसिओ ठवेउं घरस्स अग्गीवए पवणवेगं।
अब्भिन्तरं पविठ्ठो, दिट्ठो बालाएँ सहस त्ति॥६४॥
भणिओ य भो! तुमं को? केण व कज्जेण आगओ एत्थं।
तो पणमिऊण साहइ, मित्तो हं पवणवेगस्स॥६५॥
सो तुज्झ पिओ सुन्दरि!, इहागओ तेण पेसिओ तुरियं।
नामेण पहसिओ हं, मा सामिणी! संसयं कुणसु॥६६॥

सोऊण सुमिणसरिसं, बाला पवणंजयस्स आगमणं।
भणइ य किं हससि तुमं?, पहसिय! हसिया कयन्तेण ॥६७॥
अहवा को तुह दोसो?, दोसो च्चिय मज्झ पुव्वकम्माणं।
जा हं पियपरिभूया, परिभूया सव्वलोएणं ॥६८॥
भणिया य पहसएिणं, सामिणि! मा एवं दुक्खिया होहि।
सो तुज्झ हिययइट्ठो एत्थं चिय आगओ भवणे ॥६९॥
कच्छन्तरट्ठिओ सो, वसन्तमालाएँ कयपणााए।
पवणंजओ कुमारो, पवेसिओ वासभवणम्मि ॥७०॥
अब्भुट्ठिया च सहसा, दइयं दट्ठूण अंजणा बाला।
ओणमियउत्तमंगा, तस्स य चलणंजली कुणइ ॥७१॥
पवणंजओवविट्ठो, कुसुमपडोच्छइयरयणपल्लंके।
हरिसवसुब्भिन्नंगी, तस्स ठिया अंजणा पासे ॥७२॥
कच्छन्तरम्मि बीए, वसन्तमाला समं पहसिएणं।
अच्छइ विणोयमुहला, कहासु विविहासु जंपन्ती ॥७३॥

पवणवेगेण सह अंजनाअ समागमं

तो भणइ पवणवेगो, जं सि तुमं सासिया अकज्जेणं।
तं मे खमाहि सुन्दरि!, अवराहसहस्ससंघायं ॥७४॥
भणइ य महिन्दतणया, नाह!, तुमं नत्थि कोइ अवराहो।
सुमरिय मणोरहफलं, संपइ नेहं वहेज्जासु ॥७५॥
भणइ पवणवेगो, सुन्दरि! पम्हुससु सव्व अवराहे।
होहि सुपसन्नहियया, एस पणामो कओ तुज्झं ॥७६॥
आलिंगिया सनेहं, कुवलयदलसरिसकोमलसरीरा।
वयणं पियस्स अणिमिस-नयणेहि व पियइ अणुरायं ॥७७॥
घणनेहनिब्भराणं, दोण्ह वि अणुरायलद्धपसराणं।
आवडियं चिय सुरयं, अणेगचडुकम्मविणिओगं ॥७८॥
आलिंगण-परिचुम्बण-रइउच्छाहणगुणेहि सुसमिद्धं।
निव्ववियविरहदुक्खं, मणतुट्ठियरंजियजहिच्छं ॥७९॥
सुरतूसवे समत्ते, दोण्णि वि खेयालसंगमंगाइं।
अन्नोन्नभुयालिंगण - सुहेण निद्दं पवन्नाइं ॥८०॥

एवं कमेण ताणं, सुरयसुहासायलद्धनिद्दाणं।
किंचावसेससमया, ताव य रयणी खयं पत्ता॥८१॥
रयणीमुहपडिबुद्धो, पवणगई भणइ पहसिओ मित्तो।
उट्ठेहि लहु सुपुरिस! खन्धावारं पगच्छामो॥८२॥
सुणिऊण मित्तवयणं, सयणाओ उट्ठिओ पवणवेगो।
उवगूहिऊण कन्तं, भण्इ य वयणं निसामेहि॥८३॥
अच्छ तुमं वीसत्था, मा उव्वेयस्स देहि अत्ताणं।
जाव अहं दहवयणं, दट्ठूण लहुं नियत्तामि॥८४॥
तो विरहदुक्खभीया, चलणपणामं करेइ विणएणं।
मम्मण-मुहुरुल्लावा, भणइ य पवणंजयं बाला॥८५॥
अज्जं चिय उदुसमओ, सामिय! गब्भो कयाइ उयरम्मि।
होही वयणिज्जयरो, नियमेण तुमे परोक्खेणं॥८६॥
तुम्हा कहेहि गन्तुं गुरूण गब्भस्स संभवं एयं।
होहि बहुदीहपेही, करेही दोसस्स परिहार॥८७॥
अह भणइ पवणवेगो, मह नामामुद्दियं रयणचित्तं।
गेण्हसु मियंकवयणे! एसा दोसं पणासिहिइ॥८८॥
आपुच्छिऊण कान्ता, वसन्तमाला य गयणमग्गेणं।
निययं निवेसभवणं, पहसिय-पवणंजया पत्ता॥८९॥
धम्मा-ऽधम्मविवागं, संजोग-विओग-सोग-सुहभावं।
नाऊण जीवलोए, विमले जिणसासणे समुज्जमह सया॥९०॥

❑❑

[२] लीलावईकहा

मंगलाचरणं

णमह सारोससुयरिसण सच्चवियं कररुहावलीजुयलं।
हिरणक्क्सवियडोरत्थलट्ठिदलगब्भिणं हरिणो ॥१ ॥
तं णमह जस्स तइया तइयवयं तिहुयणं तुलंतस्स।
सायारमणायारे अप्पणमप्प च्चिय णिसण्णं ॥२ ॥
तस्सेय पुणो पणमह णिहुयं हलिणा हसिज्जमाणस्स।
अपहत्त-देहली-लंघणद्धवह-संठियं चलणं ॥३ ॥
सो जयउ जस्स पत्तो कंठे रिट्ठासुरस्स घणकसणो।
उप्पायपवड्ढियकालवासकरणी भुयप्फलिहो ॥४ ॥
रक्खंतु वो महोवहिसयणे सेसस्स फेणमणिमऊहा।
हरिणो सिरिसिहिणोत्थयकोत्थुहकंदंकुरायारा ॥५ ॥
हरिणो जमलज्जुणरिट्ठकेसिकंसासुरिंद-सेलाण।
भंजणवलणवियारणकड्ढणधरणे भुए णमह ॥६ ॥
कक्कसभुयकोप्परपूरियाणणो कढिणकरकयावेसो।
केसि-किसोर-कयत्थण-कउज्जमो जयइ महुमहणो ॥७ ॥
सो जयउ जेण तयलोय-कवलणारंभ-गब्भिय मुहेण।
ओसावणि व्व पीया सत्त वि चुलुय-ट्ठिया उयही ॥८ ॥
गोरीए गुरुभरक्कंतमहिससीसट्ठिभंजणुद्धरियं।
णमह णमंतसुरासुरसिरमसिणियणेउरं चलणं ॥९ ॥
चंडीए कढिणकोयंडकड्ढणायाससेय कलिलुल्लो।
णिंत कुसंभुप्पीलो रक्खउ वो कंचुओ णिच्चं ॥१० ॥
ससहरकरसंवलिया तुम्हं सुरणिण्णयाए पासंतु।
पावं फुरंतरुद्दट्टहासधवला जलुप्पीला ॥११ ॥

सज्जण-दुज्जण सरूवं :

जयंति ते सज्जणभाणुणो सया, वियारिणोजाण सुवण्णसंचया।
अइट्ठदोसा वियसंति संगमे, कहाणुबंधा कमलायरा इव ॥१२॥
सो जयउ सुयणा वि दुज्जणा इह विणिम्मिया भुयणे।
ण तमेण विणा पावंति चंद-किरणा वि परिहावं ॥१३॥
दुज्जाण-सुयणाण णमो णिच्चं पर कज्ज-वावड-मणाणं।
एक्के भसण-सहावा पर-दोस-परम्मुहा अण्णे ॥१४॥
अहवा ण को वि दोसो दीसइ सयलम्मि जीयलोयम्मि।
सव्वो च्चिय सुयण-यणो जं भणिमो तं णिसामेह ॥१५॥
सज्जण-संगेण वि दुज्जणस्स ण हु कलुसिमा समोसरइ।
ससि-मंडल-मज्झ-परिट्ठियो वि कसणो च्चिय कुरंगो ॥१६॥
[दुज्जण-संगेण वि सज्जणस्स णासं ण होइ सीलस्स।
तीए सलोणे वि मुहे वि हु अहरो महुँ सवइ ॥१६१/१॥]
अलमवरेणासंबंधालाव - परिग्गहाणुबंधेण।
बाल-जण-विलसिएण व णिरत्थ-वाया-पसंगेण ॥१७॥

कविउलवण्णणं :

आसि तिवेय-तिहोमग्गि-संग-संजणिय-तियस-परिओसो।
संपत-तिवग्ग-फलो बहुलाइच्चो त्ति णामेण ॥१८॥
अज्ज वि महग्गि-पसरिय-धूम-सिहा-कलुसियं व वच्छयलं।
उव्वहइ मय-कलंकच्छलेण मयलंछणो जस्स ॥१९॥
तस्स य गुण-रयण-महोवहीए एक्को सुओ समुप्पण्णो।
भूसणभट्टो णामेण णियय-कुल-णहयल-मयंको ॥२०॥
जस्स पिय-बंधवेहि व चउवयण-विणिग्गएहि वेएहि।
एक्क-वयणारविंद-ट्ठिएहिं बहु-मण्णिओ अप्पा ॥२१॥
तस्स तणएण एयं असार-मइणा वि विरइयं सुणह।
कोऊहलेण लीलावइ त्ति णामं कहा-रयणं ॥२२॥
तं जह मियंक-केसरि-कर-पहरण-दलिय-तिमिर-करि-कुंभे।
विक्खित्त-रिक्ख-मुत्ताहलुज्जले सरय-रयणीए ॥२३॥

सरअवण्णणं :

जोण्हाऊरिय-कोस-कंति-धवले सव्वंग-गंधुक्कडे।
णिव्विग्घं घर-दीहियाए सुरसं वेवंतओ मासलं।
आसाएइ सुमंजु-गुंजिय-रवो तिंगिच्छि-पाणसवं।
उम्मिल्लंत-दलावली परियओ चंदुज्जुए छप्पओ॥२४॥
इमिणा सरएण ससी सरिणा वि णिसा णिसाए कुमुय-वणं।
कुमुय-वणेण व पुलिणं पुलिणेण व सहइ हंस-उलं॥२५॥
णव-बिस-कसायसंसुद्ध-कंठ-कल-मणोहरो णिसामेह।
सरय-सिरि-चलण-णेउर-राओ इव हंस-संलावो॥२६॥
संचरइ सीयलायंत-सलिल-कल्लोल-संग-णिव्वविओ।
दर-दलिय-मालई-मुद्ध-मउल-गंधुद्धुरो पवणो॥२७॥
एसा वि दस-दिसा-वहु वयण-विसेसावलि व्व सर-सलिले।
विम्बल-तरंग-दोलंत-पायवा सहइ वण-राई॥२८॥
एयाइं दियस-संभावणेक्क-हियाइं पेच्छह घडंति।
आमुक्क-विरह-वयणाइं चक्कवायाइं वावीसु॥२९॥
एयं उय वियसि-सत्तवत्त-परिमल-विलोहविज्जंतं।
अविहाविय-कुसुमासाय-विमुहियं भमइ भमर-उलं॥३०॥
चंदुज्जुयावयंसं पवियंभिय-सुरहि-कुवलयामोयं।
णिम्मल-तारालोयं पियइ व रयणी-मुहं चंदो॥३१॥

ता किं बहुणा पयंपिएण -

अइ-रमणीय रयणी सरओ विमलो तुमं च साहीणो।
अणुकूल-परियणाए मण्णे तं णत्थि जं णत्थि॥३२॥

कहा-सरूवं :

ता किं पि पओस-विणोय-मत्त-सुहयं म्ह मणहरुल्लावं।
साहेह अउव्व-कहं सुरसं महिला-यण-मणोज्जं॥३३॥
तं मुद्धमुहंबुरुहाहि वयणयं णिसुणिऊण णे भणियं।
कुवलय-दलच्छि एत्थं कईहि तिविहा कहा भणिहा॥३४॥

तं जह दिव्वा तह दिव्व-माणुसी माणुसी तह च्चेय।
तत्थ वि पढमेहिं कयं कईहिं किर लक्खणं किं पि॥३५॥
अण्णं सक्कय-पायय-संकिण्ण-विहा सुवण्ण-रइयाओ।
सुव्व तिमहा-कई-पुँगवेहि विविहाउ सुकहाओ॥३६॥
ताणं मज्झे अम्हारिसेहिं अबुहेहिं जाउ सीसंति।
ताउ कहाओ ण लोए मयच्छि पावंति परिहावं॥३७॥
ता किं मं उवहासेसि सुयणु असुएण सद्द-सत्थेण।
उल्लविउं पि ण तोरइ किं पुण वियडो कहा-बंधो॥३८॥
भणियं च पिययमाए पिययमं किं तेण सद्द-सत्थेण।
जेण सुहासिय-मग्गो भग्गो अम्हारिस-जणस्स॥३९॥
उवलब्भइ जेण फुडं अत्थो अकयत्थिएण हियएण।
सो चेय परो सद्दो णिच्चो किं लक्खणेणम्ह॥४०॥
एमेय मुद्ध-जुयई-मणोहरं पाययाए भासाए।
पविरल-देसि-सुलक्खं कहसु कहं दिव्व-माणुसियं॥४१॥
तं तह सोऊण पुणो भणितं उब्बिब-बाल-हरिणच्छि।
जइ एवं ता सुव्वउ सुसंधि-बंधं कहा-वत्थुं॥४२॥

कहारम्भं :

चउ-जलहि-वलय-रसणा-णिवद्ध-वियडोवरोह-सोहाए।
सेसंक-सुप्परिट्ठिय-सव्वंगुव्वूढ-भुवणाए॥४३॥
पलय-वराह-समुद्धरण-सोक्ख-संपत्ति-गरुय-भावाए।
णाणा-विह-रयणालंकियाए भयवईए पुहईए॥४४॥
णीसेस-सस्स-संपत्ति-पमुइयासेस-पामर-जणोहो।
सुव्विसिय-गाम-गोहण-भंभा-रव-मुहलिय-दियंतो॥४५॥
अइ-सुहिय-पाण-आवाण-चच्चरी-रव-रमाउलारामो।
णीसेस-सुह-णिवासो आसय-विसहो त्ति विक्खाओ॥४६॥
जो सो अविउत्तो कय-जुयस्स धम्मस्स संणिवेसो व्व।
सिक्खा-ठाणं व पयावइस्स सुकयाण आवासो॥४७॥
सासणमिव पुण्णाणं जम्मुप्पति व्व सुह-समुहाणं।
आयरिसो आयाराण सइ सुछेत्तं पिव गुणाणं॥४८॥

सुसणिद्ध-घास-संतुट्ठ-गोहणालोय-मुइय-गोयालो।
गेयारव-भरिय-दिसो वर-वल्लइ-वेणु-णिवहेसु ॥४९॥
दुरुण्णय-गरुय-पओहराओ कोमल-मुणाल-वाहीओ।
सइ महुर-वाणियाओ जुवईओ णिण्णयाउ व्व ॥५०॥
अच्छउ ता णिय छेत्तं सेसाइ वि जत्थ पामर-बबूहिं।
रक्खिज्जंति मणोहर-गेयारव-हरिअ-हरिणाहिं ॥५१॥

णयरं :

इय एरिसस्स सुंदरि मज्झम्मि सुजणवयस्स रमणीयं।
णीसेस-सुह-णिवासं णयरं णामं पइट्ठाणं ॥५२॥
तं च पिए वर-णयरं वण्णिज्जइ जा विहाइ ता रयणी।
उद्देसो संखेवेण किं पि वोच्छामि णिसुणेसु ॥५३॥
जत्थ वर-कामिणी-चरण-णेउरारावमणुसरंतेहिं।
पडिराविज्जइ मुह-मुक्क-किसलयं रायहंसेहिं ॥५४॥
जण्णग्गि-धूम-सामालिय-णहयलालोयणेक्क-रसिएहिं।
णच्चिज्जइ ससहर-मणि-सिलायले-घर-मयूरेहिं ॥५५॥
ण तरिज्जइ घर-मणि-किरण-जाल-पडिरुद्ध-तिमिर-णियरम्मि।
अहिसारियाहिं आमुक्क-मंडणाहिं पि संचरिउं ॥५६॥
साणूर-थुहिया-धय-णिरंतरंतरिय-तरणि-करणियरे।
परिसेसियायवत्तं गम्मइ संगीय-विलयहिं ॥५७॥
सरसावराह-परिकुविय-कामिणी-माण-मोह-लंपिक्कं।
कलयंठि-उलं चिय कुणइ जत्थ दोच्चं पियाण सया ॥५८॥
णिद्दयरयरहसकिलंत-कामिणी-सेय जल लवप्फुसणा।
पिज्जंति जत्थ णासंजलीहि उज्जाण-गंधवहा ॥५९॥
घर-सिर-पसुत्त-कामिणि-कवोल-संकंत-ससिकलावलयं।
हंसेहि अहिलसिज्जइ मुणाल-सद्धालुएहि जहिं ॥६०॥
मरहट्ठिया पओहर-हलिद्द-परिपिंजरंबुवाहीए।
धुव्वंति जत्थ गोला-णईए तद्दियसियं पावं ॥६१॥
अह णवर तत्थ दोसो जं गिम्ह-पओस-मल्लियामोओ।
अणुणय-सुहाइं माणंसिणीण भोत्तूं चिय ण देइ ॥६२॥

अह णवर तत्थ दोसो जं फलिह-सिलायलम्मि तरुणीण।
मयण-वियारा दीसंति बाहिर-ठिएहि वि जणेहिं ॥६३॥
अह णवर तत्थ दोसो जं वियसिय-कुसुम-रेणु-पडलेण।
मइलिज्जंति समीरण-वसेण घर-चित्त भित्तीओ ॥६४॥

राया :

तत्थेरिसम्मि णयरे णीसेस-गुणावगूहिय-सरीरो।
भुवण-पवित्थरिय-जसो राया सालाहणो णाम ॥६५॥
जो सो अविग्गहो वि हु सव्वंगावयव-सुंदरो सुहओ।
दुद्दंसणो वि लोयाण लोयणाणंद-संजणणो ॥६६॥
कुवई वि वल्लहो पणइणीण तह णयवरो वि साहसिओ।
परलोय-भीरुओ वि हु वीरेक्क-रसो तह च्चेय ॥६७॥
सूरो वि ण सत्तासो सोमो वि कलंग-वज्जिओ णिच्चं।
भोई वि ण दोजीहो तुंगो वि समीव-दिण्ण-फलो ॥६८॥
बहुलंत-दिणेसु ससि व्व जेण वोच्छिण्ण-मंडल-णिवेसो।
ठविओ तणुयत्तण-दुक्ख-लक्खिओ रिउ-जणो सव्वो ॥६९॥
णिय-तेय-पसाहिय-मंडलस्स ससिणो व्व जस्स लोएण।
अक्कंत-जयस्स जए पट्ठी ण परेहि सच्चविया ॥७०॥
ओसहि-सिहा-पिसंगाण बोलिया गिरि-गुहासु रयणीओ।
जस्स पयावाणल-कंति-कवलियाणं पिव रिऊणं ॥७१॥
आलिहियइ जो वम्मह-णिभेण णिय-वास-भवण भित्तीसु।
लडह-विलयाहिं णह-मणि-किरणारुणियग्ग-हत्थेहिं ॥७२॥
हियए च्चेय विरायंति सुइर-परिचिंतिया वि सुकईण।
जेण विणा दुहियाण व मणोरहा कव्व-विणिवेसा ॥७३॥

वसन्तवण्णयं :

इय तस्स महा-पुहईसरस्स इच्छा-पहुत्त-विहवस्स।
कुसुमसराउह-दूओ व्व आगओ सुयणु महु-मासो ॥७४॥
पत्थाणं पढमागय-मलयाणिल-पिसुणियं वसंतस्स।
बहुलच्छलंत-कोइल-रवेण साहंति व वणाइं ॥७५॥

गहिऊण अंब-मंजरि कीरो परिभमइ पत्तला-हत्थो।
ओसरस सिसिर-णरवइ पुहई लद्धा वसंतेण ॥७६॥
मउलंत-मउसिएसुं वियसिय-वियसंत-कुसुम-णिवहेसु।
सरिसं चिय ठवइ पयं वणेसु लच्छी वसंतस्स ॥७७॥
बहुएहि वि किं परिवड्ढिएहि बाणेहि कुसुम-चावस्स।
एक्केणं चिय अंबंकुरेण कज्जं ण पज्जंत ॥७८॥
घिप्पइ कणयमयं पिव पसाहणं जणिय-तिलय-सोहेण।
अब्भहिय-जणिय-सोहं कणियार-वणं वसंतेण ॥७९॥
वियसंत विविह वणराइ कुसुमसिरिपरिमया महा-तरुणो।
किं पुण वियंभमाणो जं ण कुणइ मल्लियामोआ ॥८०॥
पढमं चिय कामियणस्स कुणइ मउयाइं पाडलामोओ।
हिययाइं सुहं वच्छा विसंति सेसा वि कुसुम-सरा ॥८१॥
पज्जत्त-वियासुव्वेल्ल-गुंदि पब्भर-णूमिय दलाइं।
पहियाण दुरालोयाइं होंति मायंगहणाइं ॥८२॥
अपहुत्त-वियासुड्डीण भमर-विच्छाय-दल उडुब्भेयं।
कुंद लइयाए वियलइ हिम-विरहायासियं कुसुमं ॥८३॥
आबज्झंत-फलुप्पंक-थोय विहडंत संधि-बंधेहिं।
मंद पवणाहएहिं वि परिगलियं सिंदुवारेहिं ॥८४॥
थोऊससंत-पंकय-मुहीए णिव्वण्णिए वसंतम्मि।
वोलीण-तुहिणभरसुत्थियाए हसियं व णलिणीए ॥८५॥
मलय-समीर-समागम-संतोष-पणच्चिराहिं सव्वत्तो।
वाहिप्पइ णव-किसलय-कराहिं साहाहिं महु-लच्छी ॥८६॥
दीसइ पलास-वण-वीहियासु पप्फुल्ल-कुसुमणिवहेण।
रत्तंबर-णेवच्छो णव-वरइत्तो व्व महुमासो ॥८७॥
परिवड्ढइ चूय-वणेसु विसइ णव-माहवी-वियाणेसु।
लुलइ व कंकेलि दलावलीसु मुइउ व्व महुमासो ॥८८॥
अण्णण्ण-वणलया-गहिय-परिमलेणाणिलेण छिप्पंती।
कुसुमंसुएहिं रुयह व परम्मुही तरुण अंब-लया ॥८९॥
वियसिय णीसेस वणंतराल परिसंठिएण कामेण।
विवसिज्जइ कुसुम सरेहिं लद्ध पसरेहिं कामियणो ॥९०॥

[३] सिरिसिरिवालकहा

कहामुहं -

अरिहाइनवपयाइं झाइत्ता हिअयकमलमज्झंमि।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पमुत्तमं किंपि जँपेमि ॥१॥
अत्थित्थ जंबुदीवे, दाहिणभरहद्धमज्झिमे खंडे।
बहुधणधन्नसमिद्धो, मागहदेसो जयपसिद्धो ॥२॥
जत्थुप्पन्नं सिरिवीरनाहतित्थं जयंमि वित्थरियं।
तं देसं सविसेसं, तित्थं भासंति गीयत्था ॥३॥
तत्थ य मागहदेसे, रायगिहं नाम पुरवरं अत्थि।
वेभार - विउल - गिरिवर - समलंकियपरिसरपएसं ॥४॥
तत्थ य सेणियराओ, रज्जं पालेइ तिजयविक्खाओ।
वीरजिणचलणभत्तो, विहिअज्जियतित्थयरगुत्तो ॥५॥
जस्सत्थि पढमपत्ती, नंदा नामेण जीइ वरपुत्तो।
अभयकुमारो बहुगुणसारो चउबुद्धिभंडारो ॥६॥
चेडयनरिंदधूया, बीया जस्सत्थि चिल्लणा देवी।
जीए असोगचंदो, पुत्तो हल्लो विहल्लो अ ॥७॥
अन्नाउ अणेगाओ, धारणीपमुहाउ जस्स देवीओ।
मेहाइणो अणेगे, पुत्ता पियमाइपयभत्ता ॥
सो सेणियनरनाहो, अभयकुमारेण विहियउच्छाहो।
तिहुयणपयडपयावो, पालइ रज्जं च धम्मं च ॥९॥
एयंमि पुणो समए, सुरमहिओ वद्धमाणतित्थयरो।
विहरंतो संपत्तो, रायगिहासन्ननयरंमि ॥१०॥
पेसेइ पढमसीसं, जिट्ठं गणहारिणं गुणगरिट्ठं।
सिरिगोयमं मुणिंदं, रायगिहलोयलाभत्थं ॥११॥
सो लद्धजिणाएसो, संपत्तो रायगिहपुरोज्जाणे।
कइवयमुणिपरियरिओ, गोयमसामी समोसरिओ ॥१२॥

तस्सागमणं सोउं, सयलो नरनाहपमुहपुरलोओ।
नियनियरिद्धिसमेओ, समागओ भत्ति उज्जाणे ॥१३॥
पंचविहं अभिगमणं, काउं तिपयाहिणाउ दाऊणं।
पणमिय गोयमचलणे, उवविट्ठो उचियभूमीए ॥१४॥
भयवंपि सजलजलहर-गंभीरसरेण कहिउमाढत्तो।
धम्मसरूवं सम्मं, परोवयारिक्कतल्लिच्छो ॥१५॥
भो भो महाणुभागा! दुलहं लहिऊण माणुसं जम्मं।
खित्तकुलाइपहाणं, गुरुसामग्गिं व पुण्णवसा ॥१६॥
पंचविहंपि पमायं गुरुयावायं विवज्जिउं झत्ति।
सद्धम्मकम्मविसए, समुज्जमो होइ कायव्वो ॥१७॥
सो धम्मो चउभेओ, उवइट्ठो सयलजिणवरिंदेहिं।
दाणं सीलं च तवो, भावोऽवि अ तस्सिमे भेया ॥१८॥
तत्थवि भावेण विणा, दाणं न हु सिद्धिसाहणं होई।
सीलंपि भाववियलं, विहलं चिय होइ लोगंमि ॥१९॥
भावं विणा तवो विहु, भवोहवित्थारकारणं चेव।
तम्हा नियभावुच्चिय, सुविसुद्धो होइ कायव्वो ॥२०॥
भावोवि मणोविसओ, मणं च अइदुज्जयं निरालंबं।
तो तस्स नियमणत्थं कहियं सालंबाणं झाणं ॥२१॥
आलंबणाणि जइवि हु, बहुप्पयाराणि संति सत्थेसु।
तह वि हु नवपयझाणं सुपहाणं बिंति जगगुरुणो ॥२२॥
अरिहं-सिद्धायरिया, उजझाया साहुणो अ सम्मत्तं।
नाणं चरणं च तवो, इय पयनवगं मुणेयव्वं ॥२३॥
तत्थऽरिहंतेऽट्ठारस-दोसविमुक्के विसुद्धनाणमए।
पयडियतत्ते नयसुरराए झाएह निच्चंपि ॥२४॥
पनरसभेयपसिद्धे सिद्धे घणकम्मबंधणविमुक्के।
सिद्धाणंतचउक्के, झायह तम्मयमणा सययं ॥२५॥
पंचायारपवित्ते, विसुद्धसिद्धंदेसणुज्जुत्ते।
परउवचारिक्कपरे, निच्चं झाएह सूरिवरे ॥२६॥
गणतित्तीसु निउत्ते, सुत्तत्थज्झावणंमि उज्जुत्ते।
सज्झाए लीणमणे, सम्मं झाएह उज्झाए ॥२७॥

सव्वासु कम्मभूमिसु, विहरंते गुणगणेहि संजुत्ते।
गुत्ते मुत्ते झायह, मुणिराए निट्ठियकसाए ॥२८॥
सव्वन्नुपणीयगम-पयडिय-तत्तत्थ सद्दहणरूवं।
दंसणरयणपईवं, निच्चं धारेइ मणभवणे ॥२९॥
जीवाजीवाइपयत्थ सत्थ तत्तावबोहरूवं च।
नाणं सव्वगुणाणं, मूलं सिक्खेह विणएणं ॥३०॥
असुह किरियाण चाओ, सहासुकिरिया जो य अपमाओ।
तं चारित्तं उत्तमगुणजुत्तं पालह निरुत्तं ॥३१॥
घणकम्मतमोभरहरणभाणुभूयं दुवालसंगधरं।
नवरमकसायतावं, चरेह सम्मं तवोकम्मं ॥३२॥
एयाइं नवपयाइं, जिणवरधम्मंमि सारभूयाइं।
कल्लाणकारणाइं, विहिणा आराहियव्वाइं ॥३३॥
अन्नंच-एएहिं नवपएहिं, सिद्धं सिरिसिद्धचक्कमाउत्तो।
आराहंतो संतो, सिरिसिरिपालुव्व लहइ सुहं ॥३४॥
तो पुच्छइ मगहेसो को एसो मुणिवरिंद! सिरिपालो।
कह तेण सिद्धचक्कं, आराहिय पावियं सुक्खं? ॥३५॥
तो भणइ मुणी निसुणसु, नरवर! अक्खाणयं इमं रम्मं।
सिरिसिद्धचक्कमाहप्पसुंदरं परमचुज्जकरं ॥३६॥

कहारंभं

इत्थेव भरहखित्ते, दाहिणखंडंमि अत्थि सुपसिद्धो।
सव्वड्ढिकयपवेसो, मालवनामेण वरदेसो ॥३७॥
पए पए जत्थ सुगुत्तिगुत्ता, जोगप्पवेसा इव संनिवेसा।
पए पए जत्थ अगंजणीया, कुडुंबमेला इव तुंगसेला ॥३८॥
पए पए जत्थ सराउलाओ, पणंगणाओ व्व तरंगिणीओ।
पए पए जत्थ सहंकराओ, गुणावलीओव्व वणावलीओ ॥३९॥
पए पए जत्थ सवाणियाणि, महापुराणीव महासराणी।
पए पए जत्थ सगोरसाणि, सुहीमुहाणीव सुगोउलाणि ॥४०॥
तत्थ य मालवदेसे, अकयपवेसे दुकालडमरेहिं।
अत्थि पुरी पोराणा, उज्जेणी नाम सुपहाणा ॥४१॥

अणेगसो जत्थ पयावईओ, नरुत्तमाणं च न जत्थ संखा।
महेसरा जत्थ गिहे गिहेसु, सचीवरा जत्थ समग्गलोया ॥४२॥
घरे घरे जत्थ रमंति गोरी-गणा सिरीओ अ पए पए अ।
वणे वणे यावि अणेग रंभा, रई अ पीई विय ठाणठाणे ॥४३॥
तीसे पुरीई सुरवरपुरीई अहियाइ वण्णणं काउं।
जइ निउणबुद्धिकलिओ, सक्कगुरु चेव सक्केइ ॥४४॥
तत्थत्थि पुहविपालो, पयपालो नामओ अ गुणओ अ।
जस्स पयावो सोमो, भीमो विय सिट्ठदुट्ठजणे ॥४५॥
तस्सवरोहे बहुदेहसोह अवहरिय गोरिगव्वेवि।
अच्चंतं मणहरणे, निउणाओ दुन्नि देविओ ॥४६॥
सोहग्गलडहदेहा, एगा सोहग्गसुन्दरी नामा।
बीया अ रूवसुन्दरी, नामा रूवेण रइतुल्ला ॥४७॥
पढमा माहेसरकुलसंभूया तेण मिच्छदिट्ठित्ति।
बीया सावअधूया तेणं सा सम्मदिट्ठित्ति ॥४८॥
तओ सरिसवयाओ, समसोहग्गाउ सरिसरूवाओ।
सावत्तेवि हु पायं, परुप्परं पीतिकलिआआ ॥४९॥
नवरं ताण मणट्ठियधम्मसरूवं वियारयंताणं।
दूरेण विसंवाओ, विसपीऊसेहिं सारिच्छो ॥५०॥
तओ अ रमंतीओ, नवनवलीलाहिं नरवरेण समं।
थोवंतरंमि समए, दोवि सगब्भाउ जायाओ ॥५१॥

कन्नगा-सिक्खा

समयंमि पसूयाओ, जायाओ कन्नगाउ दोहिंपि।
नरनाहोवि सहरिसो, वद्धावणयं करावेई ॥५२॥
सोहग्गसुंदरी नंदणाइ सुरसुंदरित्ति वरनामं।
बीयाइ मयणसुंदरि, नामं च ठवेइ नरनाहो ॥५३॥
समये समप्पियाओ, तओ सिवधम्मजिणमयविऊणं।
अज्झावयाण रन्ना, ताओ सिवभूतिसुबुद्धिनामाणं ॥५४॥
सुरसुंदरी अ सिक्खइ, लिहियं गणियं च लक्खणं छंदं।
कव्वमलंकारजुयं, तक्कं च पुराणसमिईओ ॥५५॥

सिक्खेइ भरहसत्थं, गीयं नट्टं च जोइसतिगिच्छं।
विज्जं मंतं तंतं, हरमेहलचित्तकम्माइं ॥५६॥
अन्नाइंपि कुंडलविटलाइं करलाघवाइकम्माइं।
सत्थाइं सिक्खियाइं, तीइ चमुक्कारजणयाइं ॥५७॥
सा कावि कला तं किंपि, कोसलं तं च नत्थि विन्नाणं।
जं सिक्खियं न तीए, पन्नाअभिओगजोगेणं ॥५८॥
सविसेसं गीयाइसु, निउणा वीणाविणीयलीणा सा।
सुरसुन्दरी वियड्ढा, - जाया पत्ता य तारुणणं ॥५९॥
जारिसओ होइ गुरू, तारिसओ होइ सीसगुणजोगो।
इत्तुच्चियसा मिच्छ-दिट्ठि उक्किट्ठदप्पा अ ॥६०॥
तह मयणसुंदरीवि हु, एया उ कलाओ लीलमित्तेण।
सिक्खेइ विमलपन्ना, धन्ना विणएण संपन्ना ॥६१॥
जिणमयनिउणेणज्झावएण मयणसुंदरीबाला।
तह सिक्खविया जह जिणमयंमि कुसलत्तणं पत्ता ॥६२॥
एगा सत्ता दुविहो नओ य कालत्तयं गइचउक्कं।
पंचेव अत्थिकाया, दव्वछक्कं च सत्तं नया ॥६३॥
अट्ठेव य कम्माइं नवतत्ताइं च दसविहो धम्मो।
एगारस पडिमाओ बारस वयाइं गिहीणं च ॥६४॥
इच्चाइ वियाराचारसारकुसलत्तणां च संपत्ता।
अन्ने सुहुमवियारेवि मुणइ सा नियनामं वि ॥६५॥
कम्माणं मूलुत्तरपयडीओ गणइ मुणइ कम्मठिइं।
णाणइ कम्मविवागं, बंधोदयदीणं रसंतं ॥६६॥
जीसे सो उज्झाओ, संतो दंतो जिइंदिओ धीरो।
जिणमयाओ सुबुद्धि, सा किं नहु होइ तस्सीला? ॥६७॥
सयलकलागमकुसला, निम्मलसम्मत्तसीलगुणकलिया।
लज्जासज्जा सा मयणसुंदरी जुव्वणं पत्ता ॥६८॥
अन्नदिणे अब्भितरसहानिविट्ठेण नरवरिंदेण।
अज्झावयसहियाओ, अणविवाओ कुमारीओ ॥६९॥
विणओणयाअ ताओ, सरूवलावन्नखोहिअसहाओ।
विणिवेसिआउ रन्ना, नेहेणं उभयपासेसु ॥७०॥

बुद्धिपरिक्खणं

हरिसवसेणं राया, तासिं बुद्धिपरिक्खणनिमित्तं।
एगं देइ समस्सा - पयं दुविण्हंपि समकालं ॥७१॥
जहा - "पुन्निहिं लब्भइ एहु"...........।
तो तक्कालं अइचंचलाइ अच्चंतगव्वगहिलाए
सुरसुन्दरी भणियं, हुँ हुँ पूरेमि निसुहेण ॥७२॥
जहा - धणजुव्वण सुवियड्ढपण, रोगरहिअ निअ देहु।
मणवल्लह मेलावडउ, पुन्निहिं लब्भइ एहु ॥७३॥
तं सुणिय निवो तुट्ठो, पसंसए साहु साहु उज्झाओ।
जेणेसा सिक्खविआ, परिसावि भणेइ सच्चमिणं ॥७४॥
तो रन्ना आइट्ठा, मयणा वि हु पूरए समस्सं तं।
जिणवयणरया संता दंता ससहावसारिच्छं ॥७५॥
जहा - विणयविवेयपसण्णमणु सीलसुनिम्मलदेहु।
परमप्पहमेलावडउ, पुण्णेहिं लब्भइ एहु ॥७६॥
तो तीए उवज्झाओ, मायावि अ हरिसिया न उण सेसा।
जेण तत्तोवएसो न कुणइ हरिसं कुदिट्ठीणं ॥७७॥

केरिसो वरो

कुरुजंगलंमि देसे, संखपुरीनामपुरवरी अत्थि।
जा पच्छा विक्खाया, जाया अहिछत्तकामेणं ॥७८॥
तत्थत्थि महीपाले कालो इव वेरिआण दमिआरी।
पइवरिसं सो गच्छइ, उज्जेणिनिवस्स सेवाए ॥७९॥
अन्नदिणे तप्पुत्तो, अरिदमनो नाम तारतारुनो।
सम्पत्तो पिअठाणे, उज्जेणिं रायसेवाए ॥८०॥
तं च निवपणमणत्थं समागयं तत्थ दिव्वरूवधरं।
सुरसुन्दरी निरिक्खइ, तिक्खकडक्खेहिं ताडंति ॥८१॥
तत्थेव थिरनिवेसिअदिट्ठि, दिट्ठा निवेण सा बाला।
भणिया य कहसु वच्छे! तुज्झ वरो केरिसो होइ? ॥८२॥
तो तीए हिट्ठाए, धिट्ठाए मुक्कलोअलज्जाए।
भणियं तायपसाया, जइ लब्भइ मग्गियं कहवि ॥८३॥

ता सव्वकलाकुसलो, तरुणो वररूवपुण्णलावण्णो।
एरिसओ होउ वरो, अहवा ताओचिअ पमाण ॥८ ॥।
जेणं ताय तुमं चिय, सेवयजणमणसमीहियत्थाणं।
पूरणपवणो दीसमि, पच्चक्खो कप्परुक्खव्व ॥८५ ॥
तो तुट्ठो नरनाहो, दिट्ठिनिवेसेण नायतीइमणा।
पभणेइ होउ वच्छे! एसऽरिदमणो वरो तुज्झ ॥८६ ॥
तो सयलसभालोओ, पभणइं नरनाह! एस संजोगो।
अइसोहणोऽहिवल्ली-पूणतरूणं व निब्भंतं ॥८७ ॥
अह मयणसुंदरीवि हु, रन्न नेहेण पुच्छिया वच्छे।
केरिसओ तुज्झ वरो कीरउ? मह कहसु अविलंबं ॥८८ ॥
सा पुण जिणवयणवियारसारसंजणियनिम्मलविवेआ।
लज्जागुणिक्कसज्जा, अहोमुही जा न जंपेइ ॥८९ ॥
ताव नरिंदेण पूणो पुट्ठा सा भणइ ईसि हसिऊणं।
ताय विवेयसमेओ, मं पुच्छसि तंसि किमजुत्तं ॥९० ॥
जेण कुलबालिआओ, न कहंति हवेउ एस मज्झ वरो।
जो करि पिऊहिं दिन्नो, सो चेव पमाणियव्वुत्ति ॥९१ ॥
अम्मा पिउणोवि निमित्तमित्तमेवेह वरपयाणंमि।
पायं पुव्वनिबद्धो, सम्बन्धो होइ जीवाणं ॥९२ ॥

कम्म-परिणामो

जं जेण जया जारिसमुवज्जियं होइ कम्म सुहमसुहं।
तं तारिसं तया से, संपज्जइ दोरियनिबद्धं ॥९३ ॥
जा कन्ना बहुपुन्ना, दिन्ना कुकुलेवि सा हवइ सुहिया।
जा होइ हीणपुन्ना, सुकुले दिन्नावि सा दुहिया ॥९४ ॥
ता ताय! नायतत्तस्स, तुज्झ नो जुज्जए इमो गव्वो।
जं मज्झ कयपसायापसायओ सुहदुहे लोए ॥९५ ॥
जो होइ पुन्नबलियो, तस्स तुमं ताय! लहु पसीएसि।
जो पुण पुण्णविहूणो, तस्स तुमं नो पसीएसि ॥९६ ॥
भवियव्वया सहावो, दव्वाइया सहाइणो वावि।
पायं पुव्वोवज्जियकम्माणुगया फलं दिंति ॥९७ ॥

तो दुम्मिओ य राया, भणेइ रे! तंसि मह पसाएण।
वत्थालंकाराइ, पहिरंती कीसिमं भणसि? ॥९८॥
हसिऊण भणइ मयणा, कयसुकयवसेण तुज्झ गेहंमि।
उप्पन्ना तात! अहं, तेणं माणेमि सुक्खाइं ॥९९॥
पुव्वकयं सुकयं चिअ, जीवाणं सुक्खकारणं होइ।
दुकयं च कयं दुक्खाण, कारणं होइ निब्भंतं ॥१००॥
न सुरासुरेहिं, नो नरवरेहिं, नो बुद्धिबलसमिद्धेहिं।
कहवि खलिज्जइ इंतो, सुहासुहो कम्मपरिणामो ॥१०१॥
तो रुट्ठो नरनाहो, अहो अहो अप्पपुनिआ एसा।
मज्झ कयं किंपि गुणं, नो मन्नइ दुव्वियड्ढ़ा य ॥१०२॥
पभणेइ सहांलोओ, सामिय! किमियं मुणेइ मुद्धमई।
तं चेव कप्परुक्खो, तुट्ठो रुट्ठो कयंतो य ॥१०३॥
मयणा भणेइ धिद्धि, धणलवमित्तत्थिणो इमे सव्वे।
जाणंता वि हु अलिअं, मुहप्पियं चेव जंपेति ॥१०४॥
जइ ताय! तुह पसाया, सेवयलोआ हवंति सव्वेवि।
सुहिया ता समसेवानिरया किं दुक्खिया एगे? ॥१०५॥
तम्हा जो तुम्हाणं, रुच्चइ सो ताय! मज्झ होउ वरो।
जइ अत्थि मज्झ पुन्नं, ता होही निग्गुणोवि गुणी ॥१०६॥
जइ पुण पुन्नविहीणा, तात! अहं ताव सुन्दरोवि वरो।
होही असुंदरुच्चिय, नूणं मह कम्मदोसेणं ॥१०७॥
तो गाढयरं राया, रुट्ठो चिंतेइ दुव्वियड्ढाए।
एयाइ कओ लहुओ, अहं तओ वेरिणी एसा ॥१०८॥
रोसेण वियडभिउडीभीसणवयणं पलोइऊण निवं।
दक्खो भणेइ मंती, सामिय रइवाडियासमओ ॥१०९॥
रोसेण धमधमंतो, नरनाहो तुरयरयणमारूढो।
सामंप-मंतिसहिओ, विणिग्गओ रायवाडीए ॥११०॥

कुट्ठाभिभूयो उंबरो

जाव पुराओ बाहिं, निग्गच्छइ नरवरो सपरिवारो।
ता पुरओ जणवंद, पिच्छइ साडंबरमियंतं ॥१११॥

तो विम्हिएणा रन्ना, पुट्ठो संती स नायवुत्तंतो।
विन्नवइ देव निसुणह, कहेमि जणवाद परमत्थं॥११२॥
सामिय! सरूवपुरिसा, सत्तसया नववया ससोंडीरा।
दुट्ठकुट्ठभिभूया सव्वे एगत्थ संमिलिया॥११३॥
एगो य ताणु बालो, मिलिओ ऊंबरयवाहिगहियंगो।
सो तेहिं परिगहिओ ऊंबरराणुत्ति कयनामो॥११४॥
वरवेसरिमारूढो, तयदोसी छत्तधारओ तस्स।
गयनासा चमरधरा, धिणिधिणिसद्दा व अग्गपहा॥११५॥
गयकन्ना घंटकरा, मंडलवइ अंगरक्खगा तस्स।
दद्दुलथइआवत्तो गलिअंगुलि नामओ मंती॥११६॥
केवि पसूइयवाया, कच्छादब्भेहिं केवि विकराला।
के विउंचिअपामा समन्निया सेवगा तस्स॥११७॥
एवं सो कुट्ठिअपेडएण परिवेढिओ महीवीढे।
रायकुलेसु भमंतो, पंजिअदाणं पगिण्हेइ॥११८॥
सो एसो आगच्छइ, नरवर! आडंबरेण संजुत्तो।
ता मग्गमिणं मुत्तुं, गच्छह अन्नं! दिसं तुब्भे॥११९॥
तो वलिओ नरनाहो, अन्नाइ दिसाइ जाव ताव पुरो।
तो पेडयंपि तीए, दीसाइ वलियं तुरिअ तुरितं॥१२०॥
राया भणेइ मंतिं, पुरओ गंतूणिमे निवारेसु।
मुहमग्गियंपि दाउं, जेणेसिं दंसणं न सुहं॥१२१॥
जा तं करेइ मंति, गलिअंगुलिनामओ दुयं ताव।
नरवर पुरओ ठाउं, एवं भणिउं समाढत्तो॥१२२॥
सामिअ! अम्हाण पहू, ऊंबरनामेण राणओ एसो।
सव्वत्थ वि मन्निज्जइ, गरुएहिं दाणमाणेहिं॥१२३॥
तेणऽम्हाणं धणकणयचीरपमुहेहिं कीरइ न किंपि।
एतस्स पसायेणं, अम्हे सव्वेवि अइसुहिणो॥१२४॥
एगो नाह! समत्थि, अम्ह मणचिंतिओ विअप्पुत्ति।
जइ लहइ राणओ राणियंति ता सुन्दरं होइ॥१२५॥
ता नरनाह! पसायं, काऊणं देहि कन्नगं एगं।
अवरेण कणगकप्पणदाणेणं तुम्ह पज्जतं॥१२६॥

तो भणइ रायमंती, आहे अजुत्तं विमग्गिअं तुमए।
को देइ नियं धूयं, कुट्ठकिलिट्ठस्स जाणंतो ॥१२७॥
गलिअंगुलिणा भणियं, अम्हेहिं सुया निवस्सिमा कित्ती।
जं किल मालवराया, करेइ नो पत्थणाभंगं ॥१२८॥
तो सा निम्मलकित्ती, हारिज्जउ अज्ज नरवरिंदस्स।
अहवा दज्जउ कावि हु, धूया कुकुलेवि संभूया ॥१२९॥

मयणसुंदरीविवाहो

पीणेइ नरवरिंदो, दाहिस्सइ तुम्ह कन्नगा एगा।
को फिर हारइ कित्ती, इत्तियमित्तेण कज्जेण? ॥१३०॥
चिंतेइ मणे राया, कोवानलजलियनिम्मलविवेगो।
नियधयं अरिभयं, तं दाहिस्सामि एसस्स ॥१३१॥
सहसा वलिऊण तओ, नियआवासंमि आगओ राया।
बुल्लावइ तं मयणासुन्दरिनामं नियं धूयं ॥१३२॥
हुँ अज्जवि जइ मन्नसि, मज्झ पसायस्स संभवं सुक्खं।
ता उत्तमं वरं ते, परिणाविय देमि भूरि धणं ॥१३३॥
जइ पुण नियकम्मं चिय, मन्नसि ता तुज्झ कम्मणाणीओ।
एसो कुट्ठिअराणो, होउ वरो किं वियप्पेण? ॥१३४॥
हसिऊण भणइ बाला, आणीओ मज्झ कम्मणा जो उ।
सो चेव मह पमाणं, राओ वा रंकजाओ वा ॥१३५॥
कोवंधेणं रन्ना, सो ऊंबरराणओ समाहूओ।
भणिओ य तुममिमीए, कम्माणीओसि होसु वरो ॥१३६॥
तेणुत्तं नो जुत्तं, नरवर! वुत्तंपि तुज्झ इय वयणं।
को कणयरयणमालं, बंधइ कागस्स कंठंमि ॥१३७॥
एगमहं पुव्वकयं, कम्मं भुंजेमि एरिसमणज्जं।
अवरं च कहमिमीए, जम्मं बोलेमि जाणंतो? ॥१३८॥
तो भो नरवर! जइ देसि कावि ता देसु मज्झ अणुरूवं।
दासीविलासिणिधूयं, नो वा ते होउ कल्लाणं ॥१३९॥
तो भणइ नरवरिंदो, भो भो महनंदणी इमा किंपि।
नो मज्झकयं मन्नइ, नियकम्मं चेव मन्नेइ ॥१४०॥

तेणं चिअ कम्मेणं, आणीओ तंसि चेव जीइ वरो।
जइ सा निअकम्मफलं, पावइ ता अम्ह को दोसो? ॥१४१॥
तं सोऊणं बाला, उट्ठित्ता झत्ति ऊंबरस्स करं।
गिण्हइ निययकरेणं, विवाहलग्गं व साहंति ॥१४२॥
सामंतमंतिअंतेउरिउ वारंति तहवि सा बाला।
सरयससिसरिसवयणा, भणइ सई सुच्चिअ पमाणं ॥१४३॥
एगत्तो माउलओ, एगत्तो रुप्पसुन्दरीमाया।
एगत्तोपरिवारो, रुयइ अहो केरिसमुजुत्तं? ॥१४४॥
तहवि न नियकोवाओ, वलेइ राया अईव कठिणमणो।
मयणावि मुणियतत्ता, निअसत्ताओ न पचलेइ ॥१४५॥
तं वेसरिमारोविअ, जा चलिओ ऊंबरो निअयठाणं।
ता भणइ नयरलोओ, अहो अजुत्तं अजुत्तंति ॥१४६॥
एगे भणंति धिद्धी, रायाणं जेणिमं कयमजुत्तं।
अन्ने भणंति धिद्धी, एयं अइदुव्विणीयंति ॥१४७॥
केवि निंदंति जणणिं, तीए निंदंति केवि उवझायं।
केवि निंदंति दिव्वं, जिणधम्मं केवि निंदंति ॥१४८॥
तहवि हु वियसियवयणा, मयणा तेणूंबरेण सह जंति।
न कुणइ मणे विसायं, सम्मं धम्मं वियाणंति ॥१४९॥
ऊंवरपरिवरेणं, मिलिएणं हरिसनिब्भरंगेणं।
निअपहुणो भत्तेणं, विवाहकिच्चाइं विहियाइं ॥१५०॥

सुरसुन्दरीविवाहो

इतो रन्ना सुरसुन्दरी वीवाहणत्थमुज्झाओ।
पुट्ठो सोहणलग्गं, सो पभणइ राय! निसुणेसु ॥१५१॥
अज्जं चिय दिणसुद्धी, अत्थि परं सोहणं गयं लग्गं।
तइया जइया मयणाइ, तीइ कुट्ठिअकरो गहिओ ॥१५२॥
राया भणेइ हूँ हूँ, नाओ लग्गस्स तस्स परमत्थो।
अहुणावि हु निअधूयं, एवं परिणावइस्सामि ॥१५३॥
रायाएसेण तओ, खणमित्तेणावि विहिअसामग्गिं।
मंतीहिं महिड्ढेहिं, विवाहपव्वं समाढत्तं ॥१५४॥

तं च केरिसं :-

ऊसिअतोरणपयडपडायं, वज्जितुरगहीरनिन्नायं।
नच्चिरचारुविलासिणिघट्टं, जयजयसद्करंत सुभट्टं ॥१५५॥
पट्टंसुयघडओज्जिअमालं, कूरकपूरतंबोल-विसालं।
धवलदिअंतसुवासिणिवग्गं, वुड्ढपरंधिकहिअविहिमग्गं ॥१५६॥
मग्गणजणदिज्जंतसुदानं, सयण-सुवासिणिकयसम्माणं।
मद्दलवायचउप्फललोयं, जणजणवयमणि-जणियपमोयं ॥१५७॥
कारिअसुरसुन्दररिसिणगारं, सिंगाकारिअअरिदमनकुमारं।
हथलेवइ मंडलविहिचंगं, करमोयण करिदाणसुरंगं ॥१५८॥
एवं विहिअविवाहो, अरिदमणो लद्धहयगयसणाहो।
सुरसुन्दरीसमेओ, जा निगच्छइ पुरवरीओ ॥१५९॥
ता भणइ सयललोओ, अहोऽणुरूवो इमाण संजोगो।
धन्ना एसा सुरसुंदरी य जीए वरो एसो ॥१६०॥
केवि पसंसंति निवं, वरं केवि सुन्दरिं कन्नं।
केवि तीएँ उज्झायं, केवि पसंसंति सिवधम्मं ॥१६१॥
सुरसुन्दरिसम्माणं, मयणाइ-विडंबणं जणो दट्ठुं।
सिवसासणप्पसंसं, जिणसासणनिंदणं कुणइ ॥१६२।

सीलमहिमा

निअपेडयस्स मज्झे, रयणीए ऊंबरेण सा मयणा।
भणिआ भद्दे! निसुणसु, इमं अजुत्तं कयं रन्ना ॥१६३॥
तहवि न किंपि विणट्ठं, अज्जवि तं गच्छ कमवि नररयणं।
जेण होइ न विहलं, एयं तुह रूवनिम्माणं ॥१६४॥
इअ पेडयस्स मज्झे, तुज्झवि चिट्ठंतिआइ नो कुसलं।
पायं कुसंगजणिअं, मज्झवि जायं इमं कुट्ठं ॥१६५॥
तो तीए मयणाए, नयणंसुयनीरकलुसवयणाए।
पइपाएसु निवेसिअसिराइ भणिअं इमं वयणं ॥१६६॥
सामिअ! सव्वं मह आइसेसु किंचेरिसं पुणो वयणं।
नो भणियव्वं जं दूहवेइ मह माणसं एयं ॥१६७॥

अन्नं च-पढमं महिलाजम्मं, केरिसयं तंपि होइ जइ लोए।
सीलविहूणं नूणं, ता जाणह कंजिअं कुहिअं ॥१६८॥
सीलं चिअ महिलाणं, विभूषणं सीलमेव सव्वस्सं।
सीलं जीवियसरिसं, सीलाउ न सुन्दरं किंपि ॥१६९॥
ता सामिअ! आमरणं, मह सरणं तंसि चेव नो अन्नो।
इअ निच्छियं वियाणह, अवरं जं होइ तं होउ ॥१७०॥
एवं तीए अइनिच्चलाइ दढसत्तपिक्खणनिमित्तं।
सहसा सहस्सकिरणो, उदयाचलचूलिअं पत्तो ॥१७१॥
मयणाए वयणेणं, सो ऊंबरराणओ पभायंमि।
तीए समं तुरंतो, पत्तो सिरिरिसहभवणंमि ॥१७२॥

जिणवरपूआ

आणंदपुलइ अंगेहि, तेहि दोहिवि नमंसिओ सामी।
मयणा जिणमयनिउणा, एवं थोउं समाढत्ता ॥१७३॥
भत्तिब्भरनमिरसुरिंदवंद-वंदिअपयपढमजिणंदचंद।
चंदूज्जलकेवलकित्तिपूर, पूरियभुवणंतरवेरिसूर ॥१७४॥
सूरुव्व हरिअतमतिमिरदेव, देवासुरखेयरविहिअसेव।
सेवागयगयमय-रायपाय, पायडियपणामह कयपसाय ॥१७५॥
सायरसमसमयामयनिवास, वासवगुरुगोयरगुणविकास।
कासुज्जलसंजमसीललील, लीलाइविहिअमोहावहील ॥१७६॥
हीलापरजंतुसु अकयसाव, सावयजणजणिअआणंदभाव।
भावलयअलंकिअ रिसहनाह, नाहत्तणु करिहरिदुक्खदाह ॥१७७॥
इअ रिसहजिणेसर भुवणदिसेसर, तिजयविजयसिरिपालपहो।
मयणाहिअ सामिअ सिवगइगामिअ, मणह मणोरह पूरिमहो ॥१७८॥
एवं समाहिलीणा, मयणा जा थुणइ ताव जिणकंठा।
करठिअफलेण सहिआ, उच्छलिया कुसुमवरमाला ॥१७९॥
मयणावयणाओ उंबरेण सहसत्ति तं फलं गहिअं।
मयणाइ सयं माला-गहिया आंदिअमणाए ॥१८०॥
भणिअं च तीइ सामिअ, फिट्टिस्सइ एस तुम्ह तणुरोगो।
जेणेसो संजोगो, जाओ जिणवरकयपसाओ ॥१८१॥

तत्तो मयणा पइणा, सहिआ मुनिचंदगुरुसमीवंमि।
पत्ता पमुइअचित्ता, भत्तीए नमइ तस्स पए॥१८२॥
गुरुणो य तया करुणापरित्तचित्ता कहंति भवियाणं।
गंभीरसजलजलहरसरेण धम्मस्स फलमेव॥१८३॥
सुमाणुसत्तं सकुलं सुरूवं, साहग्गारुग्गमतुच्छमाउ।
रिद्धिं च विद्धिं च पहुत्त-कित्तिं, पुन्नप्पसाएण लहन्ति सत्ता॥१८४॥

णवंपयाण-आराहणं

इच्चाइ देसणंते, गुरुणो पुच्छंति परिचियं मयणं।
वच्छे कोऽयं धन्नो, वरलक्खणलक्खिअसुपुन्नो!॥१८५॥
मयणाइ रुअंतीए कहिओ सव्वोवि निअयवुत्तंतो।
विन्नतं च न अन्नं, भयवं! मह किंपि अत्थि दुहं॥१८६॥
एयं चिअ मह दुक्खं, जं मिच्छादिट्ठिणो इमे लोआ।
निंदंति जिणहधम्मं, सिवधम्मं चेव पसंसंति॥१८७॥
सा पहु कुणह पसायं, किंपि उवायं कहेह मह पइणो।
जेणेस दुट्ठवाही, जाइ खयं लोअवायं च॥१८८॥
पभणेइ गुरु भद्दे! साहूण न कप्पए हु सावज्जं।
कहिउं किंपि तिगिच्छं, विज्जं मंतं च तंतं च॥१८९॥
तहवि अणवज्जमेगं, समत्थि आराहणं नवपयाणं।
इहलोइअ-परलोइअ-सुहाणमूलं जिणुद्दिट्ठं॥१९०॥
अरिहं सिद्धायरिआ, उज्झाया साहुणो य सम्मत्तं।
नाणं चरणं च तवो, इअ पयनवगं परमतत्तं॥१९१॥
एएहिं नवपएहिं, रइअं अन्नं न अत्थि परमत्थं।
एएसु च्चिअ जिणसासणस्स सव्वस्स अवयारो॥१९२॥
जे किर सिद्धा, सिज्झंति जे अ, जे आवि सिज्झइस्संति।
वे सव्वेवि हु नवपयझाणेणं चेव निब्भंतं॥१९३॥
एएसिं च पयाणं, पयमेगयरं च परमभत्तीए।
आराहिऊण णेगे, संपत्ता तिजयसामित्तं॥१९४॥
एएहिं नवपएहिं, सिद्धं सिरिसिद्धचक्कमेअं जं!।
तस्सुद्धारो एसो, पुव्वायरिएहिं निद्धिट्ठो॥१९५॥

16. पाइअ गज्जसंगहो

[१] गामिल्लओ सागडिओ

अत्थि कोइ कम्हि गामिल्लओ गहवती परिवसइ। सो य अण्णया कयाइं सगडं धण्णभरियं काऊणं, सगडे य तित्तिरिं पंजरगयं बंधेत्ता पट्ठिओ नयरं। नयरगतो य गंधियपुत्तेहि दीसइ। सो य तेहिं पुच्छिओ - "किं एयं ते पंजरए" त्ति।

तेण लवियं - "तित्तिरि" त्ति।

तओ तेहिं लवियं - "किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ"? तेण लवियं- "आमं, विक्कायइ"। तेहिं भणिओ - "किं लब्भइ?" सागडिएण भणियं - 'काहावणेणे' त्ति।

तओ तेहिं कहावणो दिण्णो, सगडं तित्तिरं च घेतुं पयत्ता। तओ तेणं सागडिएण्उं भण्णइ - "कीस एयं सगडं नेहि?" त्ति।

तेहिं भणियं - "माल्लेणं लइययं" त्ति।

तओ ताणं ववहारो जाओ, जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरिए समं।

सो सागडिओ हियसगडोवगरणो जोग-खेम-निमित्तं आणिएल्लियं बइल्लं घेत्तूणं विक्कोसमाणों गंतुं पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएणं दीसइ, पुच्छिओ य - "कीस विक्कोससि?"

तेण लवियं - "सामि! एवं च एवं च अइसंधिओ हं।"

तओ तेण साणुकंपेण भणियं - "वच्च, ताणं चेव गेहं एवं च एवं च भणहि" त्ति।

तओ सो तं वयणं सोऊण गओ, गंतूण य तेण भणिआ - "सामि! तुब्भेहिं मम भंडभरिओ सगडो हिओ ता इमं पि बइल्लं गेण्हह। मम पुण सत्तु यादुपालियं देह, जं घेत्तूण वच्चामि त्ति। न य अहं जस्स व तस्स व हत्थेण गेण्हामि, जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पिययरी सव्वालंकारभूसिया तीए दायव्वा, तओ मे परा तुट्ठी भविस्सइ। जीवलोगब्भंतरं व अप्पणं मन्निस्ससामि।"

तत्तो सक्खी आहूया, भणियं च – ''एवं होउं'' त्ति।

ततो ताणं पुत्तमाया सत्तुयादुपालियं घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया, घेत्तूण य तं पट्ठिओ।

तेहिं वि भणिओ – ''किमेयं करेसि?''

तेणं भणियं – ''सत्तुदोपालियं नेमि।''

ततो ताणं सद्देण महाजणो संगहिओ। पुच्छिया – ''किमेयं?'' त्ति। ततो तेहिं जहावत्तं सव्वं परिकहियं। समागयजणेण य मज्झत्थेणं होऊण ववहारनिच्छओ सुओ, पराजिया य ते गंधियपुत्ता। सो य किलेसेण तं महिलियं भोयाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो।

❑❑

[२] विउसीए पुत्तबहूए कहा

कम्मि वि नयरे लच्छीदासो नाम सेट्ठी वरिवट्टइ। सो बहुधणसंपत्तीए गव्विट्ठो आसी। भोगविलासेसु एवं लग्गो कयावि धम्मं न कुणेइ। तस्स पुते वि एयारिसो अत्थि। जोव्वणे पिउणा धम्मिअस्स धम्मदासस्स जहत्थनामाए सीलवईए कन्नाए सह पाणिग्गहणं पुत्तस्स कारावियं। सा कन्ना जया अट्ठवासा जाया, तया तीए पिउपेरणाए साहुणीसगासाओ जिणेसरधम्मसवेणण सम्मत्तं अणुव्वयाइं च गहियाइं, जिणधम्मे अईव निउणा संजाया।

जया सा ससुरगेहे आगया, तया ससुराइं धम्माओ विमुहं दट्ठूण तीए बहुदुहं संजायं। कहं मम नियवयस्स निव्वाहो होज्जा?, कहं वा देवगुरुविमुहाणं ससुराइणं धम्मोवएसो भवेज्जा? एवं सा वियारेइ एगया 'संसारो असारो, लच्छी वि असारा, देहो वि विणस्सरो, एगो धम्मो च्चिय परलोगपवन्नाणं जीवाणमाहारु' त्ति उवएसदाणेण नियभत्ता जिणिंदधम्मेण वासिओ कओ। एवं सासूमवि कालंतरे बोहेइ। ससुरं पडिबोहिउं सा समयं मग्गेइ।

एगया तीए घरे समणगुणगणालंकिओ महव्वई नाणी जोव्वणत्थो एगो साहू भिक्खत्थं समागओ। जोव्वणे वि गहीयवयं संतं दंतं साहुँ घरंमि आगयं दट्ठूण आहारे विज्जमाणे वि तीए वियारियं - 'जोव्वणे महव्वयं महादुल्लहं, कहं एएण एयंमि जोव्वणे गहीयं? त्ति' परिक्खत्थं समस्साए पुट्ठं - 'अहुणा समओ न संजाओ, किं पुव्वं निग्गया?' तीए हिययगयभावं नाऊण साहुणा उत्तं - समयनाणं - कया मच्चू होस्सइ त्ति नत्थि, तेण समयं विणा निग्गओ।

सा उत्तरं नाऊण तुट्ठा। मुणिणा वि सा पुट्ठा - 'कइ वरिसा तुम्ह संजाया'? मुणिस्स पुच्छाभावं नाऊण वीसवासेसु जाएसु वि तीए 'बारसवास त्ति उत्तं'। पुणरवि 'तं सामिस्स कइ वासा जाय' त्ति? पुट्ठं। तीए पियस्स पणवीसवासेसु जाएसुवि 'पंचवासा' उत्ता, एवं सासूए 'छम्मासा कहिया'। ससुरस्स पुच्छाए सो 'अहुणा न उप्पन्नो अत्थि' त्ति। एवं बहू-साहूणं वट्टा अंतरट्ठिएण ससुरेण सुआ। लद्धभिक्खे साहुँमि गए सो अईव कोहाउलो संजाओ, जओ पुत्तबहू मं उद्दिस्स 'न जाउ' त्ति कहेइ। रुट्ठो सो पुत्तस्स कहणत्थं हट्टं गच्छइ। 'गच्छंतं ससुरं सा

वएइ – भोत्तूणं हे ससुर! तुमं गच्छसु।' ससुरो कहेइ – 'जइ हं न जाओ म्हि, तया कहं भेयणं चव्वेमि – भक्खेमि' इअ कहिऊणं हट्टे गओ।

पुत्तस्स सव्वं वुत्ततं कहेइ – 'तव पत्ती दुरायारा असब्भवयणा अत्थि, अओ तं गिहाओ निक्कासय'। सो पिउणा सह गेहे आगओ। बहुँ पुच्छइ – 'किं माउपिउणं अवमाणं कयं? साहुणा सह वट्टाए किं असच्चमुत्तरं दिण्णं?। तीए उत्तं– 'तुम्हे मुणिं पुच्छह सो सव्वं कहिहिइ'।

ससुरो उवस्सए गंतूण सावमाणं मुणिं पुच्छइ – 'हे मुणे! अज्ज मम गेहे भिक्खत्थं तुम्हे किं आगया?' मुणी कहेइ – 'तुम्हाणं घरं न जाणामि, तुमं कुत्थ वससि?, सेट्ठी वियारेइ 'मुणी असच्चं कहेइ'। पुणरवि पुट्ठं – कस्स वि गेहे बालाए सह वट्टा कया कि? मुणी कहेइ – 'सा बाला जिणमयकुसला, तीए मम वि परिक्खा कया'। तीए हं वुत्तो 'समयं विणा कहं निग्गओ सि।' मए उत्तरं दिण्णं – समयस्स 'मरणसमयस्स' नाणं नत्थि, तेण पुव्ववयंमि निग्गओ म्हि। मए वि परिक्खत्थं सव्वेसिं ससुराईणं वासाइं पुट्ठाइं। तीए सम्मं कहियाइं।

सेट्ठी पुच्छइ –'ससुरो न जाओ इअ तीए कहं कहियं?।' मुणिणां उत्तं– 'सा चिय पुच्छिज्जउ, जओ विउसीए तीए जहत्थो भावो नज्जइ'! ससुरो गेहं गच्चा पुत्तबहुं पुच्छइ – 'तीए मुणिस्स पुरओ किमेवं वुत्तं – 'मे ससुरो जाओ वि न'। तीए उत्तं – ''हे ससुर! धम्महीणमणुसस्स माणवभवो पत्तो वि अपत्तो एव, जओ सद्धम्मकिच्चेहिं सहलो भवो न कओ सो मणुसभवो निपफलो चिय। तओ तुम्ह जीवणं पि धम्महीणं सव्वं गयं'' तेण मए कहिअं – 'मम ससुरस्स उप्पत्ती एव न।' एवं सच्चत्थनाणे तुट्ठो सो सेट्ठी धममाभिमुहो जाओ।

पुणरवि पुट्ठं – 'तुमए सासूए छम्मासा कहं कहिआ?'। तीए उत्तं – 'सासु पुच्छह'। सेट्ठिणा सा पुट्ठा। ताए वि कहिअं – ''पुत्तबहूण वयणं सच्चं, जओ मम जिणधम्मपत्तीए छम्मासा एव जाया। जओ इओ छम्मासाओ पुव्वं कत्थ वि मरणपसंगे अहं गया। तत्थ थीणं विविहगुणदोसवट्टा जाया। एगाए वुड्ढाए उत्तं – 'नारीणं मज्झे इमीए पुत्तबहू सेट्ठा, जोव्वणवए वि सासूभत्तिपरा धम्मकज्जंमि सएव अप्पमत्ता, गिहकज्जेसु वि कुसला, नन्ना एरिसा। इमीए सासू निब्भग्गा, एरिसीए भत्तिवच्छलाए पुत्तबहूए वि धम्मकज्जे पेरिज्जमाणावि धम्मं न कुणेइ। इमं सोऊण व गुणरंजिआ हं तीए मुहाओ धम्मं पावित्था। धम्मपत्तीए धम्मासा जाया, तओ पुत्तबहूए छम्मासा कहिया, तं जुत्त''।

पुत्तो वि पुट्ठो, तेण वि उत्तं – ''रत्तीए सययधम्मोवएसपराए भज्जाए 'संसारासारदंसणेण भोगविलासाणं च परिणामदुहदाइत्तणेण, वासानईपूरतुल्ल-जुव्वणेण य देहस्स खणभंगुरत्तणेण जयंमि धम्मो एव सारुति' उवदिट्ठो हं जिणधम्माराहगो जाओ, अज्ज पंच वासा जाया। तओ बहूए मं उद्दिस्स पंचवासा कहिया, तं सच्चं''। एवं कुडुंबस्स धम्मपत्तीए वट्टाए विउसीए पुत्तबहूए जहत्थ-वयणं सोऊण लच्छीदासो वि पडिबुद्धो वुड्ढत्तणे वि धम्मं आराहिअ सग्गइं पत्तो सपरिवारो।

❑❑

[३] चउजामायराणं कहा

कत्थ वि गामे नरिंदस्स रज्जसंतिकारगो पुरोहिओ आसि। तस्स एगो पुत्तो पंच य कन्नगाओ संति। तेण चउरो कन्नगाओ विउसमाहणपुत्ताणं परिणाविआओ। कयाई पंचमीकन्नाए विवाहमहूसवो पारद्धो। विवाहो चउरो जामाउणो समागया। पुण्णे विवाहे जामायरेहिं विणा सव्वे संबंधिणो नियनियघरेसु गया। जामायरा भोयणलुद्धा गेहे गंतुं न इच्छंति। पुरोहिओ विआरेइ - 'सासूए अईव पिया जामायरा, तेण अहुणा पंच छ दिणाइं एए चिट्ठंतु, पच्छा गच्छेज्जा'।

ते जामायरा खज्जरसलुद्धा तओ गच्छिउं न इच्छेज्जा। परुप्परं ते चिंतेइरे- ''**ससुरगिहनिवासो सग्गतुल्लो नराणं**'' किल एसा सुत्ती सच्चा, एवं चिंतिऊण एगाए भित्तीए एसा सुत्ती लिहिआ। एगया एयं सुत्तिं वाइऊण ससुरेण चिंतिणं- ''एए जामायरा खज्जरसलुद्धा कयावि न गच्छेज्जा, तओ एए बोहियव्वा'' एवं चिंतिऊण तस्स सिलोगपायस्स हिट्ठंमि पायत्तिगं लिहिअं-

''जइ वसइ विवेगी पंच छव्वा दिणाइं।
दहिघयगुडलुद्धो मासमेगं वसेज्जा,
व हवइ खरतुल्लो माणवो माणहीणो'' ॥१॥

ते जामायरा पायत्तिगं वाइऊणं पि खज्जरसलुद्धत्तणेण तओ गंतु नेच्छंति। ससुरो वि चिंतेइ - 'इहं एए नीसारियव्वा?, साउभोयणरया एए खरसमाणा माणहीणा, तेण जुत्तीए निक्कासणिज्जा'। पुरोहिओ नियं भज्जं पुच्छइ - 'एएसिं जामाऊणं भोयणाय किं देसि'?। सा कहेइ 'अइप्पियजामायराण तिकालं दहिघय-गुडमीसिअमन्नं पक्कन्नं च सएव देमि'। पुरोहिओ भज्जं कहेइ - 'अज्जदिणाओ आरब्भ तुमए जामायराणं वज्जकुडो विव थूलो रोट्टगो घयजुत्तो दायव्वो।

पियस्स आणा अइक्कमणीअ त्ति चिंतिऊणं, सा भोयणकाले ताणं थूलं रोट्टगं घयजुत्तं देइ।

तं दट्ठूणं पढमो मणीरामो जामाया मित्ताणं कहेइ - 'अहुणा एत्थ वसणं न जुत्तं, नियधरंमि अओ वि साउभोयणं अत्थि, तओ इओ गमणं चिय सेयं, ससुरस्स पच्चूसे कहिऊण हं गमिस्सामि'। ते कहिंति - ''भो मित्त! विणा मुल्लं

भोयणं कत्थ सिया, एसो वज्जकुडरोट्टगो साउत्ति गणिऊण भोत्तव्वो। जआ-'परन्नं दुल्लहं लोगे' इअ सुई तए किं न सुआ?, तब इच्छा सिया तया गच्छसु, अम्हे उ जया ससुरो कहिही तया गमिस्सामो"। एवं मित्ताणं वयणं सोच्चा पभाए ससुरस्स अग्गे गच्छित्ता सिक्खं आणं च मग्गेइ। ससुरो वि तं सिक्खं दाऊण पुणरवि आगच्छेज्जा, एवं कहिऊण किंचि अणुसरिऊण अणुण्णं देइ। एवं पढमो जामायरो '**वज्जकुडेण मणीरामो**' निस्सारिओ।

पुणरवि भज्जं कहेइ - अज्जप्पभिइं जामायराणं तिलतेल्लेण जुत्तं रोट्टगं दिज्जा। सा भोयणसमए जामाऊणं तेल्लजुत्तं रोट्टगं देइ। दट्ठूण माहवो नाम जामायरो चिंतेइ - घरंमि वि एयं लब्भइ, तओ इओ गमणं सुहं। मित्ताणं पि कहेइ - हं कल्ले गमिस्सं, जओ भोयणे तेल्लं समागय। तया ते मित्ता कहिंति - 'अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि, जेण सीयाले तिलतेल्लं चिअ उयरग्गिदीवणेण सोहणं, न घयं, तेण तेल्लं देइ, अम्हे उ एत्थ ठास्सामो'। तया माहवो नाम जामायरो ससुरपासे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गेइ। तया ससुरो 'गच्छ गच्छ' त्ति अणुण्णं देइ, न **सिक्खं। एवं 'तिलतेल्लेण माहवो'** बीओ वि जामायरो गओ।

तइअ-चउत्थजामायरा न गच्छंति। 'कहं एए निक्कासणिज्जा' इअ चिंतित्ता लद्धुवाओ ससुरो भज्जं पुच्छेइ - 'एए जामाउणो रत्तीण सयणाय कया आगच्छंति?' तया पिया कहेइ - 'कयाइ रत्तीए पहरे गए आगच्छेज्जा, कया दुतिपहरे गए आगच्छति'। पुरोहिओ कहेइ - 'अज्ज रत्तीए तुमए दारं न उग्घाडियव्वं, अहं जागरिस्सं'। ते दोण्णि जामायरा संझाए गामे विलसिउं गया, विविहकीलाओ कुणंता नट्टाइं च पासंता, मज्झरत्तीए गिहद्दारे समागया। पिहिअं दारं दट्ठूण दारुग्घाडणाए उच्चयरेण रविंति - 'दारं उग्घाडेसु' त्ति। तया दारसमीवे सयणत्थो पुरोहिओ जागरंतो कहेइ - 'मज्झरत्तिं जाव कत्थ तुम्हे थिया? अहुणा न उग्घाडिस्सं जत्थ उग्घाडिअद्दारं अत्थि, तत्थ गच्छेह' एवं कहिऊण मोणेण थिओ।

तया ते दुण्णि समीवत्थियाए तुरंगसालाए गया। तत्थ अत्थरणाभावे अइवसीयबाहिया तुरंगमपिट्ठच्छाइअवत्थं गहिऊण भूमीए सुत्ता। तया विजयरामेण चिंतिअं - 'एत्थ सावमाणं ठाउं न उइअं। तओ सो मित्तं कहेइ - 'हे मित्त! कत्थ अम्हं सुहसेज्जा? कत्थ य इमं भूलोट्टणं?, अओ गमणं चिअ वरं'। स मित्तो बोल्लेइ - 'इआरिसदुहे वि परन्नं कत्थ? अहं तु एत्थ ठास्सं। तुमं गंतुमिच्छसि जइ, तया गच्छसु।' तओ सो पच्चूसे पुरोहिय समीवे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च

मग्गीअ। तया पुरोहिओ सुट्ठुत्ति कहेइ। एवं सो तइओ जामाया '**भूसज्जाए विजयरामो**' वि निग्गओ।

अहुणा केवलं केसवो जामायरो तत्थ ठिओ संतो गंतुं नेच्छइ। पुरोहिओ वि केसवजामाउणो निक्कासणत्थं जुत्तिं विआरिऊण नियपुतस्स किंचि वि कहिऊण गओ। जया केसवजामायरो भोयणत्थं उववट्ठो, पुरोहिअस्स य पुत्तो समीवे वट्टइ, तया सो समागओ समाणो पुत्तं पुच्छइ - 'वच्छ! एत्थ मए रूवगो मुक्को सो य केण गहिओ?'। सो कहेइ - 'अहं न जाणामि'। पुरोहिओ बोल्लेइ - 'तुमए च्चिय गहिओ, हे असच्चावाइ! पाव! धिट्ठ! देहि मम तं, अन्नह तं मारइस्सं' ति कहिऊण सो उवाणहं गहिऊण मारिउं धाविओ। पुत्तो वि मुट्ठिं बंधिऊण पिउस्स सम्मुहं गओ। दोण्णि ते जुज्झमाणे दट्ठूण केसवो ताणं मज्झे गंतूण 'मा जुज्झह मा जुज्झह' त्ति कहिऊण ठिओ। तया सो पुरोहिओ 'हे जामायर! अवसरसु अवसरसु' त्ति कहिऊण तं उवाणहाए पहरेइ। पुत्ते वि 'केसव! दूरीभव दूरीभव' त्ति कहिऊण मुट्ठीए तं केसवं पहरेइ। एवं पिअर-पुत्ता केसवं ताडिंति। तओ सो तेहिं धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घं भग्गो। एवं '**धक्का मुक्केण केसवो' सो चउत्थो जामायरो अकहिऊण गओ।**

तद्दिणे पुरोहिओ निवसहाए विलंबेण गओ। नरिंदो तं पुच्छइ - ''किं विलंबेण तुमं आगओ सि।'' सो कहेइ - विवाहमहूसवे जामायरा समागया। ते उ भोयणरसलुद्धा चिरं ठिआवि गतुं न इच्छंति। तओ जुत्तीए सव्वे निक्कासिआ। ते एवं-

''वज्जकुडेण मणीरामो, तिलतेल्लेण माहवो।
भूसज्जाए विजयरामो, धक्कामुक्केण केसवो॥''

तेण सव्वो वुत्तंतो नरिंदस्स अग्गे कहिओ। नरिंदो वि तस्स बुद्धीए अईव तुट्ठो। एवं जे भविआ कामभोगविसयमूढा सयं चिय कामभोगाइं न चएज्जा, ते एवंविहदुहाणं भायणं हुंति।

❑❑

[४] अमंगलियपुरिसस्स कहा

एगंमि नयरे एगो अमंगलिओ मुद्धो पुरिसो आसि। सो एरिसो अत्थि, जो को वि पभायंमि तस्स मुहं पासेइ, सो भोयणं पि न लहेज्जा। पउरा वि पच्चूसे कया वि तस्स मुहं न पिक्खंति। नरवइणावि अमंगलियपुरिसस्स वट्टा सुणिआ। परिक्खत्थं नरिंदेण एगया पभायकाले सो आहूओ, तस्स मुहं दिट्ठं।

जया राया भोयणत्थमुवविसइ, कवलं च मुहे पक्खिवइ, तया अहिलंमि नयरे अकम्हा परचक्कभएण हलबोलो जाओ। तया नरवई वि भोयणं चिच्चा सहसा उत्थाय ससेण्णो नयराओ बहिं निग्गओ। भयकारणमदट्ठूण पुणो पच्छा आगओ समाणो नरिंदो चिंतेइ - "अस्स अमंगलिअस्स सरूवं मए पच्चक्खं दिट्ठं, तओ एसो हंतव्वो" एवं चिंतिऊण अमंगलियं बोल्लाविऊण वहत्थं चंडालस्स अप्पेइ।

जया एसो रुयंतो, सकम्मं निंदंतो चंडालेण सह गच्छेइ। तया एगो कारुणिओ बुद्धिनिहाणो वहाइ नेइज्जमाणं तं दट्ठूणं कारणं णच्चा तस्स रक्खणाय कण्णे किंपि कहिऊण उवायं दंसेइ। हरिसंतो जया वहत्थंभे ठविओ, तया चंडालेण सो पुच्छिओ - 'जीवणं विणा तव कावि इच्छा सिया, तया मग्गसु त्ति'।

सो कहेइ - "मज्झ नरिंदमुहदंसणेच्छा अत्थि"। जया सो नरिंदसमीवमाणीओ तया नरिंदो तं पुच्छइ - "किमेत्थ आगमणपओयणं?"। सो कहेइ - "हे नरिंद! पच्चूसे मम मुहस्स दंसणेण भोयणं न लब्भइ, परंतु तुम्हाणं मुहपेक्खणेण मम वहो भविस्सइ, तया पउरा किं कहिस्संति?। मम मुहाओ सिरिमंताणं मुहदंसणं केरिसफलयं संजायं, नायरा वि पभाए तुम्हाणं मुंहं कहं पासिहिरे"। एवं तस्स वयणजुत्तीए संतुट्ठो नरिंदो वहाएसं निसेहिऊण पारितोसिअं च दच्चा तं अमंगलिअं संतोसीअ।

□□

[५] पुत्तेहिं पराभविअस्स पिउस्स कहा

कंमिवि नयरे एगवुड्ढस्स चउरो पुत्ता संति। से थविरो सव्वे पुत्ते परिणाविऊण नियवित्तस्स चउब्भागं किच्चा पुत्ताणं अप्पेइ। सो धम्माराहणतप्परो निच्चिंतो कालं नइए। कालंतरे ते पुत्ता इत्थीणं वेमणस्सभावेण भिन्नघरा संजाया। वुड्ढस्स पइदिणं पइघरं भोयणाय वारगो निबद्धो। पढमदिणंमि जेट्ठस्स पुत्तस्स गेहे भोयणाय गओ। बीयदिणे बीयपुत्तस्स घरे जाव चउत्थदिणे कणिट्ठस्स पुत्तस्स घरे गओ। एवं तस्स सुहेण कालो गच्छइ।

कालंतरे थेराओ धणस्स अपत्तीए पुत्तवहूहिं सो थेरो अवमाणिज्जइ। पुत्तवहूओ कहिंति - ''हे ससुर! अहिलं दिणं घरंमि किं चिट्ठसि?, अम्हाणं मुहाइं पासिउं किं ठिओ सि?, थीणं समीवे वसणं पुरिसाणं न जुत्तं, तव लज्जावि न आगच्छेज्जा? पुत्ताणं हट्टे गच्छिज्जसु'' एवं पुत्तवऊहिं अवमाणिओ सो पुत्ताणं हट्टे गच्छइ। तया पुत्तावि कहिंति - ''हे वुड्ढ! किमत्थं एत्थ आगओ?, वुड्ढत्तणे घरे वसणमेव सेयं, तुम्ह दंता वि पडिआ, अक्खितयें पि गयं, सरीरं पि कंपिरमत्थि, अत्थ ते किंपि पओयणं नत्थि, तम्हा घरे गच्छाहि'' एवं पुत्तेहिं तिरक्करिओ सो घरं गच्छेइ तत्थ पुत्तवहूओ वि तं तिरक्करंति।

पुत्तपुत्ता वि तस्स थेरस्स कच्छुट्टियं निक्कासेइरे, कयाई मंसु दाढियं च करिसिन्ति। एवं सव्वे विविहप्पगारेहिं तं वुड्ढं उवहसिंति। पुत्तवहूओ भोयणे वि रुक्खं अपक्कं च रोट्टगं दिंति। एवं पराभविज्जमाणो वुड्ढो चिंतेइ - किं करोमि? कहं जीवणं निव्वहिस्सं एवं दुहमणुभवंतो सो नियमित्तसुवण्णगारस्स समीवे गओ। अप्पणे पराभवदुहं तस्स कहेइ, नित्थरणुवायं च पुच्छइ।

सुवण्णगारो बोल्लेइ - ''भोमित्त!'' पुत्ताणं वीसासं करिऊण सव्वं धणमप्पिअं, तेण दुहिओ जाओ, तत्थ किं चोज्जं?। सहत्थेण कम्मं कयं, तं अप्पणा भोत्तव्वं चिअ''। तह वि मित्तत्तेण हं एवं उवायं दंसेमि - तुमए पुत्ताणं एवं कहिअव्वं - ''मम मित्तसवुण्णगारस्स गेहे रूवग-दीणारभूसणेहिं भरिआ एगा मंजूसा मए मुक्का अत्थि, अज्ज जाव तुम्हाणं न कहिअं, अहुणा जराजिण्णो हं, तेण सद्धम्म-कम्मणा सत्तक्खेत्ताईसुं लच्छीए विणिओगं काऊण परलोगपाहेयं गिण्हिस्सं'' एवं कहिऊण पुत्तेहिं एसा मंजूसा गेहे आणावियव्वा। मंजूसाए मज्झे हं रूवगसयं

मोइस्सं, तं तु मज्झरत्तीए पुणो पुणो तुमए सयं च रणरणयारपुव्वं गणेयव्वं जेण पुत्ता मन्निस्संति – 'अज्जावि बहुधणं पिउणो समीवे अत्थि,' तओ धणासाए ते पुव्वमिव भत्तिं करिस्संते। पुत्तवहूओ वि तहेव सक्कारं काहिन्ति। तुमए सव्वेसिं कहियव्वं – 'इमीए मंजूसाए बहुधणमत्थि। पुत्तपुत्तवहूणं नामाइं लिहिऊण ठवियमत्थि। तं तु मम मरणंते तुम्हेहिं नियनियनामेण गहिअव्वं'। धम्मकरणत्थं पुत्तेहिंतो धणं गिणिहऊण सद्धम्मकरणे वावरियव्वं। मम रूवगसयं पि तुमए न विस्सारियव्वं, एयं अवसरे दायव्वं।

सो थेरो मित्तस्स बुद्धीऐ तुट्ठो गेहं गच्च पुत्तेहिं मंजूसं आणाविऊण रत्तीए तं रूवगसयं सय-सहस्स-दससहस्साइगुणणेण पुणो पुणो गणेइ। पुत्ता वि विआरिंति-पिउस्स पासे बहुधणमत्थि त्ति, तओ ते वहूणं पि कहिंति। सव्वे ते थेरं बहुं सक्कारिंति सम्माणिंति य। अईवनिब्बंधेण तं पुत्तवहूआ वि अहमहमिगयाए भोयणाय निंति, साउं सरसं भोयणं दिंति, तस्स वत्थाइं पि स एव पक्खालिंति, परिहाणाय धुविआइं वत्थाइं अप्पिंति, एवं वुड्डस्स सुहेण कालो गच्छइ।

एगया आसन्नमरणो सो पुत्ताणं कहेइ – ''मज्झ धम्मकरणेच्छा वट्टइ, तेण सत्तुखेत्तेसु किंचि वि धणं दाउमिच्छामि''। पुत्तावि मंजूसागयधणासाए अप्पिंति। सो वुड्ढो जिणमंदिरुवस्सयसुपत्ताईसु जहसत्तिं दव्वं देइ। अप्पणो परममित्त-सुवण्णगारस्स वि नियहत्थेण रूवगसयं पच्चप्पइ, एवं सद्धम्मकम्मंमि धणव्वयं किच्चा, मरणकालंमि पुत्ताणं पुत्तवहूणं च बोल्लाविऊण कहेइ – ''इमीए मंजूसाए सव्वेसिं नामग्गहणपुव्वयं मए धणं मुत्तमत्थि। तं तु मम मरणकिच्चं काऊण पच्छा जहनामं तुम्हेहिं गहिअव्वं'' ति कहिऊण समाहिणा सो वुड्ढो कालं पत्तो।

पुत्तावि तस्स मच्चुकिच्चं किच्चा नाइजणं पि जेमाविऊण बहुधणासाइ जया सव्वे मिलिऊण मंजूसं उग्घाडिंति, तया तम्मज्झंमि नियनियनाम-जुत्तपेत्तेहिं वेढिए पाहाणखंडे त च रूवगसयं पासित्ता, अहो वुड्ढेण अम्हे वंचिआ वंचिअ त्ति जंपंति किल अम्हाणं पिउभत्तिपरंमुहाणं अविणयस्स फलं संपत्तं। एवं सव्वे ते दुहिणो जाया।

□□

[६] सिप्पिपुत्तस्स कहा

अवंतीए पुरीए इंददत्तो नाम सिप्पिवरो अहेसि। सो सिप्पकलाहिं सव्वंमि जयंमि पसिद्धो होत्था। इमस्स सरिच्छो अन्ने को वि नत्थि। एयस्स पुत्तो सोमदत्तो नाम। सो पिउस्स सगासंमि सिप्पकलं सिकखंतो कमेण पिअराओ वि अईव सिप्पकलाकुसलो जाओ।

सोमदत्तो जाओ पडिमाओ निम्मवेइ, तासु तासु पिआ कंपि कंपि भुल्लं दंसेइ, कया वि सिलाहं न कुणेइ। तहो सो सुहमदिट्ठीए सुहुमं सुहुमं सिप्पकिरियं कुणेऊण पियरं दंसेइ, पिया तत्थ वि कंपि खलणं दरिसेइ, 'तुमए सोहणयरं सिप्पं कयं' ति न कयाई तं पसंसेइ।

अपसंसमाणे पिउम्मि सो चिंतेइ - 'मम पिआ मज्झ कलां कहं न पसंसेज्जा?, तओ तारिसं उवायं करेमि, जओ पियरो मे कलं पसंसेज्ज। एगया तस्स पिआ कज्जप्पसंगेण गामंतरे गओ, तया सो सोमदत्तो सिरिगणेसस्स सुंदरमयं पडिमं काऊण, तीए हिट्ठंमि गूढं नियनामंकियचिह्नं करिुण, तं मुत्तिं नियमित्तद्दारेण भूमीए अंतो ठवेइ। कालंतरे गामंतराओ पिआ समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एवं कहेइ - 'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए पहावसालिणी गणेसस्स पडिमा अत्थि'। तया लोगेहिं सा पुढवी खणिआ, तीए पुहवीए सुंदरयमा अणुवमा गणेसस्स मुत्ती निग्गया। तद्दंसणत्थं बहवो लोगा समागया, तीए सिप्पकलं अईव पसंसिरे।

तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। सो गणेसपडिमं दट्ठूणं पुत्तं कहेइ - "हे पुत्त! एसच्चिअ सिप्पकला कहिज्जइ। केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मावगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पासेसु, कत्थ वि भुल्लं खुण्णं च अत्थि? जइ तुमं एआरिसिं पडिमं निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्हा"।

पुत्तो वि कहेइ - "हे पियर! एसा गणेसपडिमा मए चिय कया। इमाए हिट्ठंमि गुत्तं मए नामंपि लिहिअमत्थि"। पिआवि लिह्अिनामं वाइऊण खिन्नहियओ पुत्तं कहेइ - "हे पुत्त! अज्जदिणाओ तुमं एरिसं सिप्पकलाजुत्तं सुंदरमयं पडिमं काउं कया वि न तरिस्ससि। जया हं तव सिप्पकलासु भुल्लं दंसंतो, तया तुमं पि

सोहणयरकज्जकरणतल्लिच्छो सण्हं सण्हं सिप्पं कुणंतो आसि, तेण तव सिप्पकलावि वड्ढंती हुवीअ। अहुणा 'मम सिरच्छो नत्रो' इह मंदूसाहेण तुम्हम्मि एआरिसी सिप्पकला न संभविहिए''।

एवं सो सरहस्सं पिउवयणं सोच्चा पाउसु पडिऊण पिउत्तो पसंसाकरावण-सरूवनिआवराहं खामेइ, परन्तु सो सोमदत्तो तओ आरब्भ तारिसिं सिप्पकलं काउं असमत्थो जाओ।

□□

[७] भारियासीलपरिक्खा

अत्थि अवंति नाम जणवओ। जत्थ उज्जेणी नाम नयरी रिद्धित्थिमियसमिद्धा। तत्थ जितसत्तू नाम। तस्स रण्णो धारिणी नाम देवी।

तत्थ य उज्जेणीए नरयरीए दसदिसिपयासो इब्भो सागरचंदो नाम। भज्जा च से चंदसिरी। तस्स पुत्ते चंदसिरीए अत्तओ समुद्दत्तो नाम सुरूवो।

सो य सागरचंदो परमभागवउदिक्खासंपत्तो भगवयगीयासु सुत्ताओ अत्थओ च विदितपरमत्थो। सो य तं समुद्दत्तं दारगं गिरे परिव्वायगस्स कलागहणत्थे ठवइ ''अन्नसालासु सिक्खंतो अण्णपासंडियदिट्ठी हवेज्जा''।

तओ सो समुद्ददत्तो दारगो तस्स परिव्वायगस्स समीवे कलागहणं करेमाणो अण्णया कयाई 'फलगं ठवेमि' त्ति गिहं अणुपविट्ठो। नवरिं च पासइ नियग-जाणणीं तेण परिव्वायगेण सिद्धिं असब्भं आयरमाणीं। ततो सो निग्गओ इत्थीसु विरागसमावण्णो, 'न एयाओ कुलं सीलं वा रक्खंति' ति चिंतिऊण हियएण निब्बधं करेई, जहा न मे वीवाहेयव्वं ति। तओ से समत्तकलस्स जोवणत्थस्स पिया सरिसकुल-रूव-विहवाओ दारियाओ वरेइ। सो य ता पाडिसेहेइ। एवं तस्स कालो वच्चइ।

अण्णया तस्स सम्मएणं पिया सुरट्ठं आगओ ववहारेणं। गिरिनयरे धणसत्थवाहस्स धूयं धणसिरिं पडिरूवेणं सुकेणं समुद्दत्तस्स वरेइ। तस्स य अन्नायं एवं तिहिगहणं काऊण नियनयरं आगओ। तओ तेण भणिओ समुद्दत्तो- ''पुत्त! मम गिरिनयरे भंडं अच्छइ तत्थ तुमं सवयंसो वच्च। तओ तस्स भंडस्स विणिओगं काहामो'' त्ति वोत्तूण वयंसाण य से दारियासंबंधं संविदितं कयं।

तओ ते सविभवाणुरूवेणं निग्गया, कहाविसेसेण य पत्ता गिरिनयरं। बाहिरओ य ठाइऊणं धणस्स सत्थवाहस्स मणुस्सो पेसिओ, जहा ते आगओ वरो त्ति।

तओ तेण सविभवाणुरूवा आवासा कया, तत्थ य आवासिया। रत्तीए आगया भोयणववएसेणं धणसत्थवाहगिहे, धणसिरीए पाणिग्गहणं कारिओ।

तओ सो धणसिरीए वासगिहँ पविट्ठो। तओ णेणं पइरिक्कं जाणिऊण तीसे धणसिरीए चम्मद्दिं दाऊण निग्गमो, वयंसाण च मज्झे सुत्तो। ततो पभायाए रयणाए सरीरावस्सकहेउं सवयंसो चेव निग्गमो बहिया गिरिनयरस्स। तेसिं वयंसाणं अदिट्ठओ चेव नट्ठो।

तयो से वयंसेहिं आगंतूणं [सागरचंदस्स] धणसत्थवाहस्स य परिकहियं 'गओ सो'। तेहिं समंततो मगिओ, न दिट्ठो। तओ ते दीणवयणा कइवयाणि दिवसाणि अच्छिऊण धणसत्थवाहं आपुच्छिऊण गया नियगनयरं।

इयरो वि समुद्दत्तो देसंतराणि हिंडिऊण केणइ कालेण आगओ गिरिनयरं कप्पडियवेसछण्णो परूढनह-केसु-मंसु-रोमो। दिट्ठो णेण धणसत्थवाहो आरामगओ। तओ तेणं पणमिऊणं भणिओ - ''अहं तुब्भं आरामकम्मकरो होमि।''

तेण य भणिओ - ''भणसु, का ते भत्ती दिज्जउ'' त्ति? तओ तेण भणियं - ''न मे भईए कज्जं। अहं तुज्झ पसादाभिकंक्खी। मम तुट्ठिदाणं देज्जह'' त्ति।

एवं पडिस्सुए आरामे कम्मं आरद्धो काउं। तओ सो रुक्खाउव्वेयकुसलो तं आरामं कइवएहिं सव्वोउयपुप्फ-फलसमिद्धं करेइ।

तओ सो धणसत्थवाहो तं आरामसिरिं पासिऊणं परं हरिसमुवगओ चिंतियं च तेणं - ''किमेएणं गुणाइसयभूएण पुरिसेण आरामे अच्छंतेण? वरं मे आवारीए अच्छउ'' त्ति।

तओ ण्हविय-पसाहिओ दिण्णवत्थजुयओ ठविओ आवणे।

तओ तेण आय-वयकुसलेणं गंधजुत्तिणिउणत्तणेणं पुरजणो उम्मत्तिं गाहिओ। तओ पुच्छिओ जणेणं - ''किं ते नामधेयं?''

पभणइ य - ''विणीयओ त्ति मे नामधेयं।''

एवं सो विणीयओ विणयसंपन्नो सव्वनयरस्स वीससणिज्जो जाओ।

तओ तेण सत्थवाहेण चिंतियं - ''न खेमं मे एस आवणे य अच्छंतो। मा एस रायसंविदितो हवेज्ज, ततो राएण हीरइ त्ति। वरमेस गिहे भंडारसालाए अच्छंतो।''

तओ तेण सगिहं नेऊण परियणं च सद्दावेऊण भणियं - ''एस वो विणीयओ जं देइ तं मे पडिच्छियव्वं, न य से आणा कोवेयव्वं त्ति।''

तओ सो विणीयओ घरे अच्छइ, विसेसेओ य धणसिरीए जं चेडीकम्मं तं सयमेव करेइ। तआ धणसिरीए विणीयओ सव्ववीसंभट्ठाणिओ जाओ।

तत्थ य नयरे रायसेवी एक्को डिंडी परिवसइ। इओ व सा धणसिरी पुव्वावरण्हसमए सत्ततले पासाए अट्टालगवरगया सह विणीयगेणं तंबोलं सभाणयंती अच्छइ।

सो य डिंडी ण्हाय - समालद्धो तस्स भवणस्स आसण्णेण गच्छइ। धणसिरीए तंबोलं निच्छूढं पडियं डिंडिस्सुवरि। डिंडिणा निज्झाइया य, दिट्ठा य णेणं देवयभूया। तओ सो अणंगबाणसोसियसरीरो तीए समागमुस्सुओ संवुत्तो। चिंतियं च णेणं - ''एस विणीयओ एएसिं सव्वप्पवेसी, एयं उवतप्पामि। एयस्स पसाएणं एईए सह समागमो भविस्सइ'' त्ति।

तओ अण्णया तेण विणीयओ नियगभवणं नीओ। पूयासक्कारं च काउं पायपडिएण विण्णविओ - ''तहा चेट्ठसु, जेण मे धणसिरीए सह संजोगं करेसि'' त्ति।

तओ सो ''एवं होउ'' त्ति वोतूण धणसिरीए सगासं गओ। पत्थावं च जाणिऊण भणिया णेणं धणसिरी डिंडिवयणं। तओ तीए रोसवसगाए भणिओ-

''केवलं तुमे चेव एवं संलत्तं, अण्णो ममं ण जीवंतो'' त्ति। तओ सो बिइयदिवसे निग्गओ, दिट्ठो य डिंडिणा भणियो णेणं ''किं भो वयंस! कयं कज्जं?'' त्ति।

तओ तेण तव्वयणं गूहमाणेणं भणियं - ''घत्तीहं'' त्ति। तओ पुणरवि तेण दाणमाणेणं संगहियं करेत्ता विसज्जिओ।

तओ सो आगन्तूण धणसिरीए पुरओ विमणो तुण्हिक्को ठिओ अच्छइ। तओ तीए धणसिरीए तस्स मणोगयं जाणिऊण भणिओ -

''किं ते पुणो किंचि भण्इ?''

तेण भणियं - ''आमं'' ति? तीए निवारिओ 'न ते पुणो तस्स दरिसणं दायव्वं।'

पुणो य पुच्छिज्जमाणे तहेव तुण्हिक्को अच्छइ। तओ तीए तस्स चित्तरक्खं करेंतीए भणिओ - ''वच्छ, देहि से संदेसं, जहा - 'असोगवणियाए तुमे अज्ज पओसे आगंतव्वं ति।''

तेण कहा कयं। तओ सा असोगवणिआए सेज्जं पत्थरेऊण जोगमज्जं च गिण्हिऊण विणीयगसहिया अच्छइ सो आगओ। तओ तीए सोवयारं मज्जं से दिण्णं। सो य तं पाऊण अचेयणसरीरो जाओ। ताए तस्सेव य संतियं असिं कड्ढिऊण सीसं छिण्णं। पच्छा विणीयओ भणिओ - ''तुमे अणत्थं कारिया, तुज्झ वि सासं छिंदामि'' त्ति।

तेण पायवडिएण मरिसाविया। विणीयगेणं धणसिरिसंदिट्ठेणं कूवं खणित्ता निहिओ।

तओ अन्नया सुहासणवरगया धणसिरी विणीयगेण पुच्छिआ ''सुन्दरि! तुमं कस्स दिन्ना?''

तीए भणियं - ''उज्जेणिगस्स समुद्ददत्तस्स दिण्णा''

तेण भणियं - ''वच्चामि, अहं तं गवेसित्ता आणेमि'' त्ति भणिउं निग्गओ। संपत्तो य नियगभवणं पविट्ठो, दिट्ठो य अम्मापिऊहिं, तेहिं य कयंसुपाएहि उवगूहिओ। तओ तेहिं धणसत्थवाहस्स लेहो पेसिओ 'आगओ से जामाउओ' त्ति।

तओ सो वयंसपरिग्गहिओ मातापिईहि य सिद्धिं ससुरकुलं गओ। तत्थ य पुणरवि वीवाहो कओ।

तओ सो अप्पाणं गूहेंतो धणसिरीए विणीयगवेसेणं अप्पाणं दरिसेइ। रयणीए य वासघरं गओ दीवं विज्झवेऊण तीए सह भोगं भुंजइ। तओ तीए तस्स रूवदंसणनिमित्तं पच्छण्णदीवं ठवेऊण तस्स रूवोवलद्धी कया। दिट्ठो य णाए विणीयओ। तओ तेण सव्वं संवादितं।

❑❑

[८] नडपुत्तो रोहो

उज्जेणि नामेणं वित्थिण्णसुरभवणा समुद्धरधणोहा मालवमंडलमंडणभूआ नयरी समत्थि। तत्थ जियसत्तूनामा रिउपक्खविक्खोहकारओ नयगुणसणाहो सइ-गुणी सुदढपणओ नरनाहो आसी।

अह उज्जेणिसमीवे सिलागामो गामो। तत्थ य भरहो नडो। सो य तग्गामे पहू, नाडयविज्जाए लद्धपसंसो य। तस्स णामेण रोहओ, गामस्स य सोहओ सुओ।

अन्नया कयाइ वि मया रोहयमाया। तओ भरहो घरकज्जकरणकए अण्णं तज्जणाणिं संठवेइ।

रोहओ य बालो। सा य तस्स हीलापरायणा हवइ। तो तेण सा भणिया - ''अम्मो जं ममं सम्मं न वट्टसि, न तं सुंदरं होही। एत्तो अहं तह काहं जह तं मे पाएसु पडसि।''

एवं कालो वच्चइ। अह अण्णया कयाइ वि ससिपयासधवलाए रयणीए सो एगसज्जाए जणगसहिओ पासुत्तो। तो रयणिमज्झभागे उट्ठित्ता उब्भएण होऊणं उच्चसरेणं जणओ उट्ठाविय भासिओ जहा - ''ताय! पेक्खसु इस कोइ परपुरिसो जाइ!''

स सहमुट्ठिओ जाव निद्दामोक्खं काऊणं लोयणेहि जाएइ ताव तेण न दिट्ठो कोइ पुरिसो।

ततो रोहओ पुट्ठो - ''वच्छा! सो कत्थ परपुरिसो!''

तेण जणओ भणिओ - ''इमेणं दिसाविभागेणं सो तुरियतुरियं गच्छंतो मे दिट्ठो।''

तओ सो महिलं नट्ठसीलं परिकलिय तीए सिढिलायरो जाओ। सा पच्छायावपरिगयां भासइ -

''वच्छ! मा एवं कुणसु।''

रोहओ भणइ - ''कहं मम लट्ठं न वट्टामि?''

सा बेइ – ''अह लट्ठं वट्टिस्सं। तओ तुमं तहा कुणसु जहा एसो तुह जणओ मज्झ आयरं कुणइ।''

इमं रोहेण पडिवन्नं। सा वि तह वट्टिउं लग्गा।

अण्णया कया वि रयणिमज्झे सुत्तुट्ठिओ सो जणगं भणइ – ''ताय! सो एस पुरिसो!''

पिउणा – पुट्ठं – ''सो कहिं'' त्ति।

तओ निययं चेव छायं दंसित्ता भणइ – ''इमं पेच्छह'' त्ति।

स विलक्खमणो जाओ, पुच्छइ – ''किं सो वि एरिसो आसी?'' बालेण 'आमं' ति भणियं।

जणओ चिंतेइ – ''अव्वो! बालाण केरिसुल्लावा!'' इय चिंतिऊण भरहो तीए घणराओ संजाओ।

❑❑

[९] अवियारिआएसे नरिंदस्स कहा

कत्थ वि नयरे एगेण नंरिंदेण नियनयरे आएसो दिण्णो – ''गाममज्झे एगो देवालओ अत्थि। पुरीए माहणा वा वइस्सा वा खत्तिया वा सुद्दा य वा नयरवासिणो जे लोगा संति तेहिं देवालए पविसिअ देवं वंदित्ता गंतव्वं, अन्नहा तस्स वहो भविस्सइ''।

एगो कुंभयारो तमाएसं अजाणिऊण गद्दहमारुहिय हत्थे लगुडं गिणिहत्ता महारायव्व गच्छइ। तेण देवालए सो देवो न वंदिओ। तओ रुट्ठा सुहडा तं गिण्हिऊंण नरिंदग्गओ नएइरे। नरिंदेण सो वहाइ आइट्ठो।

वहथंभे सो नीओ। मरणकाले तत्थ मरणं विणा पत्थणातियं किज्जइ, पत्थणातिगं पूरिऊण वहिज्जइ, एवं नियमो निवेण कओ अत्थि। तदा सो कुंभारो वि पुच्छिज्जइ तए पत्थणातिगे किं जाइज्जइ, तेण उत्तं – ''अहं नरिंदस्स समीवे मग्गिस्सामि। सो तत्थ नीओ।''

नरिंदेण पत्थणातिगं मग्ग त्ति कहिअं। सो कहेइ – ''एगं तु मज्झ गेहे अहुणा कुडुंबभोयणत्थं पन्नहलक्खरुप्पगाई पेसेह। बीअं तु जे जणा बंदीकया ते सव्वे मोएइ। निवेण सव्वं कयं। तइअपत्थणावसरे तेण – 'सहामज्झत्थि-अनरिंदपमुहसव्वजणाणं एएण लगुडेण पहारतिगकरणाय आएसो मग्गिओ'।

रण्णा चिंतिअं – अहं किं करोमि? एसो थूलो, दंडोवि थूलो, एगेण पहारेण अहं मरिस्सामि, तओ 'अजुत्तो एसो आएसो' इअ चिंतित्ता वहाएसो निक्कासिओ, उवरिं दाणमहिअं तस्स अप्पित्ता तस्स बुद्धीए सुतुट्ठेण निवेण समाणं गिहे मोइओ। एवं अविआरिओ आएसो कयावि अप्पवहाय होइ।

□□

[१०] उज्जमस्स फलं

एगया भोयनरिंदस्स सहाए दुण्णि विउसा समागया। तेसु एगो नियइवाई– 'जं भावीजं नन्हा होइ'। अओ सो उज्जमं विणा भावि चिय मन्नेइ। अन्नो पंडिओ– 'उज्जममेव फलदाणे पमाणेइ,' जओ अलसा कं पि फलं न लहंति, जओ वुत्तं –

''उज्जमेण हि सिज्झंति, कज्जाइं, न पमाइणो।
न हि सुत्तस्स सिंघस्स, पविसंति मिगा मुहे॥''

एवं बीओ उज्जमेण फलवाई अत्थि। भोयनरिंदेण ते दोवि आगमणपओयणं पुट्ठा, ते कहिंति – 'विवायनिण्णयत्थं तुम्हाणमंतिए अम्हे आगया'। रण्णा वुत्तं– 'तुम्हाणं जो विवाओ अत्थि तं कहेह॥ तया ते दुण्णि वि नियं मयं जुत्तिपुरस्सरं निवइणो पुरओ ठवेइरे। राया विआरेइ – 'इत्थ किं परमत्थआ सच्चं?, तं च कहं ज़ाणिज्जइ' ? तया निण्णेउमसमत्थो कालीदासपंडिअं पुच्छइ – 'एएसिं नाओ कहं किज्जइ? किं व उत्तरं दिज्जइ?'

कालीदासो कहेइ – ''हे नरिंदे! जह दक्खाए रसो चक्खिज्जमाणो महुरो खट्टो वा नज्जइ, तह य एयाण विवाओ कसिज्जइ, तेण सच्चो असच्चो वा जाणिज्जइ''। राया कहेइ – 'कसणकिरियाए अत्थि को वि उवाओ?, जइ सिया, तया कसिज्जउ'।

कालीदासो तया ते दुण्णि विउसे बोल्लाविऊण तेसिं नेत्ताइं पडेण बंधित्ता, दुवे य हत्थे पिट्ठस्स पच्छा बंधिअ, पाए गाढयरं निअंतिअ अंधयारमए अववरगे ठवेइ, कहेइ य ''जो दइव्ववाई सो दइव्वेण छुट्टउ, जो उज्जमवाइ सो उज्जमेण छुट्टेज्जा'' एवं कहिऊण सो पच्छा नियत्तो। तओ जो नियइवाई सो 'जं भावि तं होहिइ' त्ति मन्नमाणो निचिंतो समाणो सुहेण तत्थ सुत्तो। उज्जमवाइ जो, सो दुट्टणाय बहुं उज्जमं कुणेइ। हत्थे पाए अ भूमीए उवरिं इओ तओ घंसेइ, परन्तु गाढयरबंधणत्तणेण जया सो न छुट्टिओ, तया सो न छुट्टिओ, तया नियइवाई विउसो कहेइ – ''किं मुहा उज्जमकरणेण, एसो निविडो बंधो कया वि न छुट्टिहिइ? निप्फलेण बलहाणिकारणायासेण किं?, खुहापिवासापीलिआणं पि अम्हाणं नियईए सरणं चिअ वरं''।

एवं सोच्चा वि उज्जमवाइपंडिओ छुट्टिणपयासं न चइए। छुट्टणाय अईव पयासं कुणेइ। एवं तेसिं दुवे दिणा अक्कंता। भोयणाभावेण सरीरं पि ताणमईव झीणं संजायं, कज्जकरणे वि असमत्थं जायं, तह वि उज्जमवाई पयासहीणाववरेगे इओ तओ भममाणो बंधमाणो बंधमाओ मोअणाय जत्तं न मुंचेइ। नियइवाई तं वएइ- "अहुणा परमेसरस्स नां गिण्हसु, किमायासकरणेण फलरहिएण?"। तया सो उज्जमवाइ कहेइ - "समावन्ने वि मरणे उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो, सया वि उज्जमसीलेण जणेण होयव्वं"। नियइवाई बोल्लेइ - 'जइ एवं ता अंधारिए एयंमि अववरगे पाए हत्थे अ घसमाणा भमंता चिट्ठेह, उज्जमो फलं दाही?'

तह वि सो उज्जमवाइ पंडिओ खीणसरीरबलो तइअदिणंमि भित्तिनिस्साए भमंतो हत्थे पाए य घसमाणो पडंतो पुणरवि घसंतो भमंतो दइववसाओ अववरगस्स कोणगे तत्थ पडिओ, जत्थ उंदुरस्स बिलं वट्टइ। तस्स हत्था बिलोवरिं समागया। तओ रंधमज्झट्ठिओ मूसओ बाहिरं निग्गंतुमचयंतो दंतेहिं तस्स हत्थबंधणं छिंदेइ, तया सो छुट्टिओ समाणो नेत्तपडं पायबंधणं च अवसारेइ। सो तया अववरगे गाढयरतमेण किमवि न पासेइ। अस्स अववरगस्स दारं कत्थ अत्थि त्ति भित्तिफासणेण निरिक्खंतेण तेण कमेण लद्धं। बाहिरओ पिणद्धं तं पासिऊण कट्ठेण तं दारं मूलाओ उत्तारिअ बाहिरं सो निग्गओ। पच्छा देव्वावाइं पंडिअं पि बंधणाओ मोएइ।

पच्छण्णठाणे ठिओ कालीदासो सव्वं निरूवेइ। जया ते दुवे बाहिरनिग्गए पासेइ, पासित्ता ते घेत्तूण नियघरंमि गओ। सम्मं अन्नपाणेहिं सक्कारित्ता सम्माणित्ता य निवसहाए ते विउसे गहिऊण समागओ। भोयनरिंदं कहेइ - 'उज्जमेण जिअं, नियईए पराइअं' ति, जओ उज्जमवाई पंडिओ उज्जमेण छुट्टिओ अवरो उज्जमाभावाओ न छुट्टिओ। 'जो नियइमेव पहाणं मन्नेइ सो पमाई कहिज्जइ'। जत्थ पमाओ तत्थ खुहा पिवासा दुक्खं मरणं च अवस्सं संभवेइ। जो उज्जमं कुणइ सो कयाइ दुक्खाओ मुंचइ, किं पि य फलं पावेइ। नियइवाई उज्जमेण विणा फलं न लहेज्जा। तओ उज्जमो पहाणो णायव्वो। तओ भोयनरिंदो उज्जमवाइपंडिअं दव्ववत्थाहूसणेहिं सम्माणेइ। नीइसत्थे वि - 'उज्जमे नत्थि दालिद्दं'। अओ उज्जमो कया वि न मोत्तव्वो।

□□

17. शब्दार्थ

पद्य-संकलन

१ : अंजनापवनंजय कथा

(गाथा १ - ३०)

प्राकृत शब्द		अर्थ	प्राकृत शब्द		अर्थ
विद्दाणलोयणा	=	निस्तेज नेत्रवाली	पलवइ	=	प्रलाप करती थी
नवरं	=	बाद में	आसासिज्जइ	=	सान्त्वना प्राप्त करती थी
वायाए	=	वाणी में	अइतणुओ	=	अतिसूक्ष्म
सवडहुत्तो	=	सामने	अब्भिट्टा	=	भिड़ गये
जोह	=	योद्धा	ओसरियं	=	भागती हुई
समय	=	साथ	सिग्घं	=	शीघ्र
पडियागओ	=	वापिस आया हुआ	वीसज्जिओ	=	भेजा गया हूँ
वीसत्थो	=	विश्वस्त	साहणिं	=	समर्थ

(३१-६०)

उल्लोल्लो	=	शोर	थम्भल्लीणा	=	खंभे से टिकी हुई
तिप्पइ	=	तृप्त होती है	उव्वियणिज्जा	=	उद्वेगयुक्त
उवट्ठिया	=	उपस्थित हुई है	चलणपणामं	=	चरण-प्रमाण
आयत्तं	=	अधीन	सरेज्जासु	=	याद किये जाओगे
वियम्भन्ती	=	जंभाई लेती हुई	उद्धाई	=	उंचे जाती है
उप्पयइ	=	उड़ जाती है	सरिया	=	याद की गयी
अकण्णसुहं	=	सुनने में अप्रिय	पसयच्छी	=	विशाल नेत्रवाली

(६१-९०)

अग्गीवए	=	बरामदे में	ओणमिय	=	प्रणाम कर
उब्भिन्नंगो	=	रोमांचित अंगवाली	सासिया	=	दंडित की गयी
वहेज्जासु	=	प्रदान करें	पम्हुससु	=	भूल जाओ
आवडियं	=	सम्बद्ध हुए	निव्वविय	=	व्यतीत किया
पवन्नाइं	=	प्राप्त की	रयणीमुह	=	प्रभात
निसामेहि	=	सुनो	उदुसमओ	=	ऋतु-समय
वयणिज्जअरो	=	निन्दनीय	सम्मुज्जमह	=	उद्यमशील बनो

२ : लीलावती कथा

(गाथा १ - १०)

प्राकृत शब्द		अर्थ	प्राकृत शब्द		अर्थ
हिरणक्स	=	हिरणयाक्षस	वियड-उरत्थल	=	विकट वक्षस्थल की
			अट्ठिदल	=	हड्डियों का समूह
सच्चविय	=	देखे गये	तइय-वयं	=	तीन पैर
तइया	=	उस समय	अणायारे	=	निराकार में (आकाश में)
सायारं	=	स्वयं	अपहुत्त	=	असमर्थ
णिहुयं	=	नि:शब्द	संठियं	=	रखे गए
अद्धवह	=	आधा मार्ग	करणी	=	समान
उप्पाय	=	उत्पत्ति के समय	महोअहि	=	समुद्र
सिहणोत्थय	=	स्तनों से व्याप्त	वलन	=	मर्दन करना
जमलज्जुण	=	दो अर्जुननामकवृक्ष	कयासेसो	=	लपेटने वाले
कोप्पर	=	मध्य	ओसावणि	=	कुल्ला करना
गब्भिय	=	सज्जित	मसिणिय	=	घिसे गये
सीसट्ठि	=	सिर पर स्थित	कुसुंभुप्पीलो	=	केशर का रस
सलिलुल्लो	=	जल से गीला	वो	=	आपकी

(११-२०)

जलुप्पीला	=	जल से भरी हुई	फुरंत	=	चमकीले
वियारणो	=	विचारक (आकाशगामी)	सुवण्ण	=	अच्छे अक्षर (पत्ते)
अइट्ठ	=	रहित (रात्रि)	परिहावं	=	गुणोत्कर्ष
भसण-सहावा	=	प्रलाप करने वाले	परम्मुहा	=	न देखने वाले
सवइ	=	झरता है	महग्गि	=	महा यज्ञ की अग्नि

(२१-३०)

असार-मइणा	=	तुच्छ बुद्धि वाले	रिक्ख	=	आकाश
चंदुज्जए	=	कुमुद में	वेवंतओ	=	झूमता हुआ
छप्पओ	=	भ्रमर	तिगिच्छि	=	मकरन्द
पाणासवं	=	पीने की मद्य	सहइ	=	शोभित होता है

णिव्वविओ	=	शीतल	दर=दलिय	=	थोड़ी खिली हुई
मालई	=	चमेली	उद्धुरो	=	उत्कृष्ट
विसेसावलि	=	तिलक-पंक्ति	विम्वल	=	निर्मल
घडंति	=	मिलते हैं	उय	=	देखो
विलोहविज्जंतं	=	आकर्षित	अविहाविय	=	अज्ञात

(३१-४०)

पवियंभिय	=	उल्लसित	तारालोयं	=	तारों से भरा आकाश (स्नेह से भरी आँखें)
सहीणो	=	स्वाधीन (प्राप्य)	साहेह	=	कहो
णे	=	उसके द्वारा	एत्थं	=	यहाँ
सव्वंति	=	सुनी जाती हैं	विनिहाउ	=	विविध
जाउ	=	जो	ताउ	=	वे
मयच्छि	=	मृगाक्षि	असुएण	=	बिना पढ़े हुए
अल्लविउं	=	कहने के लिए	तीरइ	=	संभव है
वियडो	=	विस्तृत, श्रेष्ठ	भग्गो	=	प्रारम्भ हो
अकयत्थिएण	=	सरलता से	परो	=	श्रेष्ठ

(४१-५०)

उब्बिव	=	डरे हुए	पविरल	=	श्रेष्ठ
सुव्वउ	=	सुनो	वियडोवरोह	=	विस्तृत नितम्ब
पामरजणोहो	=	किसान-समूह	सुव्वसिय	=	बसे हुए
अविउत्तो	=	सहित	सइ	=	सदा
वरवल्लई	=	श्रेष्ठ	वीणादुरुण्णय	=	ऊँचे उठे हुए (दूर तक फैले हुए)
पओहराओ	=	स्तन (पानी से भरी हुई)	वीहीओ	=	बाँहवाली (बहाने वाली)
वाणियाओ	=	वाणी वाली (पानी वाली)	णिण्णाउव्व	=	नदियों की तरह

(५१-६०)

अच्छउ	=	हैं	सेसाइ	=	शेष लोगों के (खेत)
विहाइ	=	बीत जाती है	वोच्छामि	=	कहता हूँ
पडिराविज्जइ	=	प्रतिध्वनि की जाती है	जण्णग्गि	=	यज्ञ की अग्नि

साणूर	= देवघर	थूहिया	= स्तूप
तरणि	= सूर्य	णिरंतरंतरिय	= हमेशा छाये हुए
परिसेसिय	= छोड़कर	आयवत्तं	= छाते को
विलयाहिं	= वनिताओं द्वारा	कलयंठि-उल	= कोकिल-समूह
दोच्चं	= दूत=कर्म	सरसावराह	= ताजे अपराध
लंपिक्कं	= दूर करने वाला	लवुप्फुसणा	= बूँदों को सोखने वाला
णासंजलीहि	= नथुनों के द्वारा	सद्धालुएहि	= रसिकों के द्वारा

(६१-९०)

धुव्वन्ति	= धुल जाते हैं	तद्दियसियं	= उस दिन के
भोत्तुं	= अनुभव करने हेतु	मइलिज्जंति	= मैले हो जाते हैं
अविग्गहो	= शरीर रहित (युद्ध-रहित) विष्णु की तरह शरीर वाला	सव्वंग	= समस्त अंग (राज्य के सात अंगों से युक्त)
दुद्दंसणो	= दुष्ट दर्शनवाला (दुर्लभ दर्शन वाला)	कुवई	= कुपति (पृथ्वीपति)
णयवरो	= नम्र, शत्रुओं को झुकाने वाला, परायेपन से रहित	साहसिओ	= साहसी दान, धर्म करने वाला
सत्तासो	= सात अश्व वाला (निर्भय)	सोमो	= चन्द्रमा, सौम्य
भोई	= सर्प, भोग करने वाला	दोजीहो	= दो जीभवाला (दुर्जन)
तुंगो	= उंचा, स्वाभिमानी	समीव	= पास से (सेवकों को)
बहुलंतदिणेसु	= अमावस्या के दिनों में	वोच्छिण्ण	= रहित
मंडल	= राज्य (घेरा)	तणुयत्तण	= दुर्बल (क्षीण)
पट्ठी	= पीठ (पीछे का भाग)	जए	= जग में
परेहि	= दूसरों (शत्रुओं) के द्वारा	सच्चविया	= देखी गयी है।
पिसंगाण	= पीले रंगे वाले (भय से पीले)	परम्मुही	= पीछे झुकी हुई।

३ : श्री श्रीपाल कथा

(गाथा १ - ४०)

प्राकृत शब्द		अर्थ	प्राकृत शब्द		अर्थ
तिजय	=	तीन जगत	समोसरिओ	=	उपस्थित हुए
अभिगमणं	=	नमस्कार	तिपयाहिणाउ	=	तीन प्रदक्षिणा
परोवयारिक्क-तल्लिच्छो	=	परोपकार में लीन	सव्वन्नु	=	सर्वज्ञ
निरुत्तं	=	वर्णित	चाओ	=	त्याग
नवरं	=	तदनन्तर	अकसायतावं	=	बुरे विचारों से रहित
आउत्ते	=	यत्नपूर्वक	चुज्जकरं	=	आश्चर्यजनक
सव्वड्डि	=	सभी ऋद्धियाँ	सुगुत्तिगुत्ता	=	अच्छे रक्षकों से रक्षित (संयमित)
अगंजणीया	=	पार करने में कठिन	रसाउलाओ	=	जल (प्रेम से परिपूर्ण)
सवाणियाणि	=	पानी (बनियों) से युक्त	सगोसराणि	=	दूध-दही (वाणी) से परिपूर्ण

(४१-५०)

दुकालडमरेहिं	=	अकलारूपी लुटेरे के	अकयपवेसे	=	प्रवेश से रहित
पयापईओ	=	ब्रह्मा, जनक	नरोत्तम	=	कृष्ण, श्रेष्ठ पुरुष
महेसर	=	शिव, धनाढ्य	सचीवरा	=	इन्द्राणी, वस्त्र-युक्त स्त्रियाँ
गोरी	=	पार्वती, किशोरी	सिरिओ	=	लक्ष्मी, सम्पत्ति
रंभा	=	अप्सरा, कदली	रई-पीई	=	रति एवं प्रीति (कामदेव-पत्नियाँ)
लडददेहा	=	सुन्दर शरीर वाली	रइतुल्ला	=	रति के समान
मिच्छादिट्ठि	=	अंध-विश्वासी	सम्मदिट्ठि	=	तत्त्वदर्शी
सावत्तेवि	=	सोत होने परभी	पायं	=	प्राय:

(५१-६१)

थोवंतरंमि	=	थोड़े समय में	सगब्भाउ	=	गर्भयुक्त
विऊणं	=	विद्वानों को	अज्झावयाण	=	अध्यापकों को
समिईओ	=	स्मृति शास्त्र	तिगिच्छं	=	चिकित्साशास्त्र

हर–मेहल	=	चित्रकला के भेद	कुंडलविटलाइं	=	जादू, इन्द्रजाल
करलाघवाइ	=	हस्तकला आदि	चमुक्कार	=	चमत्कार
पन्नाअभिओग	=	प्रज्ञा के संयोग से	वियड्ढा	=	चतुर
अक्किट्ठदप्पा	=	अधिक घमंडी	लीलमित्तेण	=	सरलता से

(९२-१०४)

जीसे	=	जैसा	तस्सीला	=	वैसे आचरण वाली
अणाविआओ	=	बुलवाया	विणओणयाउ	=	विनम्र से नम्र
गव्वगहिलाए	=	घमंड से पूर्ण	मेलवडउ	=	मिलाप
परिसा	=	परिषद्	आइट्ठ	=	आदेश प्राप्त
परमप्पह	=	परम-पथ (मोक्ष)	दमिआरी	=	शत्रु को दमन करने वाला
पूरणपवणो	=	पूर्ण करने में तत्पर	नाय	=	जानकर
अहिवल्ली	=	पान की बेल	पूगतरुणं	=	सुपारी के वृक्ष
ईसि	=	थोड़ा	उवज्जियं	=	उपार्जित
जुज्जए	=	उचित है	पुन्नबलिओ	=	पुण्यशाली
दुम्मिओ	=	नाराज	इंतो	=	आये हुए
खलिज्जइ	=	हटाया जा सकता है	मुहप्पियं	=	मुख पर प्रिय बोलना

(१०५-१२५)

रइवाडिया	=	क्रीड़ा उद्यान	धमधमन्तो	=	जलते हुए
पिच्छइ	=	देखता है	साडंबरमियंतं	=	आडंबरपूर्वक आते हुए
ससोंडीरा	=	पराक्रमपूर्ण	तयदोसी	=	दूषित चमड़ी वाला
मंडलवइ	=	मंडल कोढ़ से पीड़ित	दद्दुल	=	दर्दुर कोढ़ी
थइआइत्तो	=	पानदान धारण करने वाले	पसूइयवाया	=	वातरोग से पीड़ित
कच्छादबबेहिं	=	खुजली रोग से पीड़ित	बिउंचिअपामा	=	पामा खुजली से
समन्निया	=	समन्वित	पेडएण	=	समूह से
महीवीढे	=	पृथ्वी के छोर में	पंजिअदाणं	=	भेंटदान
वलिओ	=	घूमा	विअप्पुत्ति	=	विकल्प (इच्छा)

(१२६-१६७)

इत्तियमित्तेण	=	इतने मात्र से	अरिभुयं	=	शत्रु बनी हुई
बोलेमि	=	नष्ट करुं	रुयइ	=	रोता है
वलेइ	=	लौटता है	जंति	=	जाती हुई
वीवाहणत्थ	=	विवाह के लिए	पहिट्ठेहिं	=	आनन्दित
ऊसिअतोरण	=	तोरण सजाये गये	पयडपडायं	=	ध्वजा लगायी गयी
घट्टं	=	समूह	ओलिज्जमालं	=	मंडप सजाया गया
मद्दलवाय	=	मृदुंग बाजा	उपप्फललोयं	=	लोक को चौगुना कर दिया
हथलेवइ	=	पाणि-ग्रहण	दूहवेइ	=	दुःख देता है

(१६८-१९५)

कंजिअं	=	व्यर्थ (मांड की तरह)	कुहिअं	=	विनष्ट
तंसि	=	तुम ही हो	थोउं	=	स्तुति
मोहावहीलं	=	मोह को त्याग दिया	भावलय	=	प्रभा का घेरा
नाहत्तणु	=	प्रभुता	फिट्टिस्सइ	=	नष्ट हो जावेगा
संसंति	=	प्रशंसा करते हैं	कप्पइ	=	कहते हैं
सावज्जं	=	पाप-युक्त	पयनवगं	=	नौ पद

गद्य-संकलन

१ : ग्रामीण गाड़ीवान

प्राकृत शब्द		अर्थ	प्राकृत शब्द		अर्थ
लविय	=	कहा	विक्कायइ	=	बिकाऊ है
कहावणो	=	मुद्रा (रुपया)	घत्तुंपयत्ता	=	ले जाने लगे
कीस	=	कैसे	ववहारो	=	झगड़ा
आणिएल्लियं	=	लाये हुए	विक्कोसमाणो	=	चिल्लाते (रोते) हुए
अइसंधिओ	=	ठगाया गया	जीवलोगब्भंतरं	=	जीव लोग से भरा हुआ
मन्निस्सामि	=	मानूंगा	सक्खी	=	गवाह
किलेसेण	=	कठिनाई से	महिलियं	=	महिला को

२ : विदुषी पुत्रबहू की कथा

वरिवट्टइ	=	रहता था	सगासाओ	=	पास से
अणुव्वयाइं	=	अणुव्रत	विणस्सरो	=	नाशवान
पवन्नाणं	=	प्राप्त कराने वाला	जीवाणमाहारु	=	जीवों का आधार
वासिओ	=	वश में	मग्गेइ	=	खोजने लगी
महव्वई	=	महाव्रती	समयनाणं	=	आत्मा को जानकर
अंतिट्ठिएण	=	भीतर छुपे हुए	चव्वेमि	=	चबाता हूँ
उवस्सए	=	उपासरे में	पुव्ववयंमि	=	यौवन में
विउसीए	=	विदुषी के	सच्चत्थनाणे	=	सच्चे अर्थ को जानकर
थीणं	=	स्त्रियों की	नन्ना	=	ऐसी दूसरी नहीं है
निब्भग्गा	=	अभागिन	वासानईपूरतुल्ल	=	पीव की नदी से भरे हुए के समान
सारुत्ति	=	सार है	पडिबुद्धो	=	प्रतिबोधित हुआ
उद्दिस्स	=	उद्देश्य करके	वट्टाए	=	वार्ता द्वारा
वुड्डत्तणे	=	बुढ़ापे में	सग्गई	=	सद्गति को

३ : चार दामादों की कथा

पारद्धो	=	प्रारम्भ हुआ	जामाउणो	=	दामाद
खज्जरसलुद्धा	=	भोजन रस के लोभी	बोहियव्वा	=	समझाना चाहिए
हिट्ठंमि	=	नीचे	पायतिगं	=	तीन पाद
नीसारियव्वा	=	निकालना चाहिए	साऊ	=	स्वाद युक्त

भज्जं	=	भार्या	अइप्पिय	=	अत्यन्त प्रिय
मिसिअमन्नं	=	मिश्रित अन्न	पक्कन्नं	=	पकवान
थूलो	=	मोटी	रोट्टगो	=	रोटी
आणा	=	आज्ञा	अओ	=	यहाँ से
सेयं	=	अच्छा	सिक्खं	=	सीख (आशीष)
अणुण्णं	=	अनुमति	अम्हकेरा	=	हमारी
सीयाले	=	शीतकाल में	लद्धुवाओ	=	उपाय प्राप्त कर
जागरिस्सं	=	जागूँगा	विलसिउं	=	मनोरंजन के लिए
पिहिअ	=	बन्द	उच्चसरेण	=	उंचे स्वर में
रविंति	=	चिल्लाते हैं	थिआ	=	ठहरे
मोणेण	=	मौन रूप से	अत्थरणाभावे	=	बिस्तर के अभाव में
तुरंगमपिट्ठ	=	घोड़े की पीठ	छाइअवत्थं	=	बिछाने वाला वस्त्र
सावमाणं	=	अपमानपूर्वक	उइअं	=	उचित
मारइस्सं	=	मारूंगा	मा जुज्झह	=	मत लड़ो
धकामुक्केण	=	धक्का=मुक्के से	ताडिज्जमाणो	=	पीटा जाने पर
चएज्जा	=	त्यागते हैं	हुंति	=	होते हैं

४ : अमांगलिक आदमी की कथा

मुद्धो	=	भोला	लहेज्जा	=	प्राप्त होता था
पउरा	=	नागरिक	वट्टा	=	वार्ता
अकंम्हा	=	अकस्मात्	परचक्कभएण	=	आक्रमण के भय से
समाणो	=	भोजन करता हुआ	नेइज्जमाणं	=	ले जाते हुए
चिच्चा	=	छोड़कर	दच्चा	=	देकर
पासिहिरे	=	देखेंगे	वयणजुत्तीए	=	वचन के उपाय से

५ : पुत्रों से अपमानित पिता की कथा

थविरो	=	बूढा	परिणाविऊण	=	विवाह करके
वेमणस्सभावेण	=	वैमनस्स भाव के कारण	भिन्नघरा	=	अलग-अलग घरवाले (न्यारे)
वारगो	=	वारी	निबद्धो	=	बांध दी गयी
अपत्तीए	=	प्राप्ति न होने से	अहिले	=	अखिल (पूरे)
तव	=	तुम्हें	हट्टे	=	दुकान में
अक्खितेयं	=	आँखों की रोशनी	कंपिरं	=	काँपता है

तिरक्करिओ	=	तिरस्कृत होकर	कच्छुट्टियं	=	लंगोटी
निक्कासेइरे	=	निकाल देते	करिसिन्ति	=	खींचते हैं
उवहसन्ति	=	मजाक बनाते	निव्वहिस्सं	=	व्यतीत करूं
नित्थरणुवायं	=	छुटकारे का उपाय	चोज्जं	=	आश्चर्य
जराजिण्णो	=	बुढ़ापे से कमजोर	सत्तक्खेत्ताइसुं	=	सात क्षेत्र आदि में
पाहेयं	=	पाथेय	आणावियव्वा	=	मंगवा देना चाहिए
मोइस्सं	=	रख दूंगा	रणरणायारपुव्वं	=	झनकार पूर्वक
काहिन्ति	=	करेंगी	वावरियव्वं	=	खर्च कर देना चाहिए
विस्सारियव्वं	=	भूलना	अईवनिब्बंधेण	=	अत्यन्त प्रेम के साथ
निंति	=	ले जाती है	परिहाणाय	=	पहिनने के लिए
धुविआइं	=	धुले हुए	जंहसत्तिं	=	यशाशक्ति
पच्चप्पइ	=	लौटा देता है	मच्चुकिच्चं	=	मृत्यु के कार्य को
नाइजणं	=	रिश्तेदारों को	जेमाविऊण	=	भोजन खिलाकर
वेढिए	=	लिपटे हुए	पाहाणखंडे	=	पत्थर के टुकड़े

६ : शिल्पीपुत्र की कथा

अहेसि	=	था	सरिच्छो	=	समान
सगासंमि	=	पास में	निम्मवेइ	=	निर्माण करना
भल्लं	=	भूल	सिलाहं	=	प्रशंसा
सुहुम	=	सूक्ष्म	खलणं	=	त्रुटि
अमुगाए	=	अमुक	निम्मवगो	=	निर्माता
सलाहणिज्जो	=	प्रशंसनीय	खुण्णं	=	खंडित
नन्नहा	=	अन्यथा नहीं	गुत्तं	=	गुप्त रूप से
वाइऊण	=	बांचकर	न तरिस्ससि	=	समर्थ नहीं होंगे
सोहणयर	=	अच्छे से अच्छे	कज्जकरण	=	कार्य करने में
सण्हं	=	बारीक	तल्लिच्छो	=	तल्लीन होकर
मंदूसाहेण	=	उत्साह कम हो	हुवीअ	=	गयी (हुई)
		जाने से	खामेइ	=	क्षमा मांगता है

७ : भार्या की शील-परीक्षा

इब्भो	=	सेठ	अण्णपासंडियदिट्ठी	=	अन्य पाखंडी मत को मानने वाला
असब्भं	=	अश्लील	ववहारेण	=	व्यापार के कारण

सुंकेण	=	मूल्य	भंडं	=	माल
विणिओगं	=	लेन-देन	वोत्तूण	=	कहकर
वासगिहं	=	शयनकक्ष	पइरिक्कं	=	एकान्त
चम्मादिं	=	भुलावा (?)	मग्गिओ	=	खोजा गया
अच्छिऊण	=	रहकर	कप्पडिय	=	कपट
वेसछण्णो	=	वेष धारण किए किए हुए	भईण	=	मजदूरी से
तुट्ठिदाणुं	=	इनाम, कृपा	पडिस्सुए	=	स्वीकार कर
रुक्खाउव्वेय	=		सव्वोउय	=	सब ऋतुओं के
कुसलो	=	बागवानी में कुशल			
आवारीए	=	दुकान में	उम्मत्तिं	=	प्रशंसा (उन्माद)
वीससणिज्जो	=	विश्वसनीय	हीरइ	=	छुड़ा लिया जायेगा
पडिच्छियव्वं	=	स्वीकार किया जाना चाहिए	डिंडी	=	राज्याधिकारी
निच्छूढं	=	पानी की पीक (थूक)	निज्झाइया	=	देखी गयी
उवतप्पासि	=	संतुष्ट करता हूँ	पत्थावं	=	प्रस्ताव
घत्तीहं	=	तलाश करूंगा	जोगमज्जं	=	मिलावट वाली शराब
मरसाविया	=	क्षमा कर दी गयी	कयंसुपाएहिं	=	आँसू गिराने के साथ

८ : नट पुत्र रोह

हीलापरायणा	=	तिरस्कार करने वाली	काहं	=	करूंगा
उब्भएण	=	खड़े होकर	परिकलिय	=	जानकर
सिढिलायरो	=	कम आदर करने वाला	लट्ठं	=	प्रेम (प्रियवचन)
पडिवन्नं	=	स्वीकार कर लिया	सुत्तुट्ठिओ	=	सोकर उठा हुआ
दंसित्ता	=	दिखाकर	विलक्खमणो	=	लज्जित मन वाला

९ : विचारहीन राजा की कथा

माहण	=	ब्राह्मण	वइस्सा	=	वैश्य
लगुडं	=	लट्ठ (डंडा)	नएइरे	=	ले गये
वहाइ	=	वध के लिए	पत्थणातियं	=	तीन इच्छाएँ

जाइज्जइ	=	माँगता है	मोएह	=	छोड़ दिये जायं
निक्कासिओ	=	खारिज कर दिया	अप्पित्ता	=	अर्पित कर

१० : उद्यम का फल

विउसा	=	विद्वान्	अलसा	=	आलस से
नाओ	=	न्याय	नज्जइ	=	जाना जाता है
कसिज्जइ	=	परखना होगा	निअंतिअ	=	जकड़कर
अववरगे	=	जेल में	छुट्टउ	=	छूट जाओ
नियत्तो	=	लौट गया	घंसेइ	=	घिसता है
मुहा	=	व्यर्थ	पीलिआणं	=	पीड़ितों के लिए
जत्तं	=	यत्न	आयास	=	प्रयास
कोणगे	=	कौन में	रंध	=	छिद्र
अचयंतो	=	न त्यागता हुआ	कट्टेण	=	कष्ट=पूर्वक
पमाई	=	प्रमादी	पहाणो	=	प्रधान

□□

18. हिन्दी अनुवाद

(i) पद्य-कथाएँ

१ : अंजनापवनंजय कथा

अंजना का त्याग और विरह :

१. मिश्रकेशी के वचन को याद करके रुष्ट पवनंजय ने निर्दोष और दु:खित मनवाली महेन्द्र की पुत्री अंजनासुन्दरी का परित्याग किया।

२. विरहाग्नि से तपत शरीरवाली, फीकी आँखोंवाली तथा बाँये हाथ पर सिर थामे हुई वह वायुकुमार के बारे में सोचती हुई नींद नहीं लेती थी।

३. अत्यन्त उत्कण्ठित तथा आँसुओं से सींचे जाने के कारण मलिन स्तनोंवाली वह बाघ से डरी हुई हिरनी की भाँति रास्ता देखती हुई बैठी रहती थी।

४. जिसके सब अंग अत्यन्त क्षीण हो गये थे तथा कटिसूत्र एवं कड़े आदि आभूषण जिसके ढीले पड़ गये थे ऐसी वह अपने वस्त्र के भार से बहुत अधिक खेद अनुभव करती थी।

५. दर्प एवं उत्साह नष्ट होने पर उसके प्रत्यके अंग में पीड़ा हो रही थी। इस प्रकार शून्यहृदया वह असम्बद्ध वचन बोला करती थी।

६. प्रासादतल में रहने पर भी वह स्त्री बार-बार मूर्च्छित हो जाती थी। शीतल पवन का शरीर से स्पर्श होने पर वह बाद में आश्वस्त की जाती थी।

७. मृदु, मधुर एवं अव्यक्त वाणी से वह दीनवचन कहती थी कि, हे महायश! मैंने तुम्हारा स्वल्प भी अपराध नहीं किया है।

८. तुम क्रोध का त्याग करो और मुझपर अनुग्रह करो। ऐसे निष्ठुर मत बनो। विनय करने वाली महिलाओं पर पुरुष तो प्रेम करते हैं।

९. ये तथा दूसरे दीनवचन कहती हुई उस महेन्द्रपुत्री अंजना ने बहुत काल बिताया।

रावण को वरुण के साथ विरोध :

१०. इस बीच बल के कारण दर्पयुक्त रावण और वरुण दोनों में विरोध जगा और बाद में अतिभयंकर लड़ाई शुरू हुई।

११-१२. लंकाधिप रावण ने शीघ्र ही वरुण के पास दूत भेजा। वहाँ जाकर और प्रणाम करके आसन पर बैठे हुए उसने कहा कि विद्याधरों के स्वामी हे वरुण! रुष्ट रावण ने तुमसे कहा है कि या तो तुम स्पष्ट रूप से उसे प्रणाम करो या युद्ध में समक्ष खड़े रहो।

१३. इस पर हँसकर वरुण ने कहा कि, हे अधम दूत! रावण कौन है? न तो मैं उसे सिर से प्रणाम करूँगा औन न उसकी आज्ञा शिरोधार्य करूँगा।

१४. मैं न तो वह वैश्रमण हूँ, न यम और न सहस्रकिरण जो दिव्य शस्त्रों से भयभीत और दीन हो तुझे प्रणाम करूँगा।

१५. इस प्रकार कठोर वचनों द्वारा वरुण से उलहना पाये हुए दूत ने रावण के पास जाकर जैसा वरुण ने कहा था वह सब कह सुनाया।

१६. दूत का वचन सुनकर रुष्ट लंकेश रावण ने ऐसा कहा कि दिव्यास्त्रों के बिना ही मेरे द्वारा वरुण अवश्य जीता जायेगा।

१७. इसके पश्चात् सम्पूर्ण सेना से युक्त हो दशानन ने प्रयाण किया और मणि एवं सुवर्ण से विचित्र प्राकारवाले वरुणपुर के पास आ पहुँचा।

१८. रावण को आया जान युद्ध के लिए परिपूर्ण उत्साहवाला वरुण पुत्र एवं सैन्य के साथ सामना करने के लिए बाहर निकला।

१९. राजीव, पुण्डरीक आदि बत्तीस हजार पुत्र तैयार हो तथा कवच धारण करके राक्षस सुभटों का सामना करने लगे।

२०. एक-दूसरे के तोड़े जाते शस्त्रों से संकुल, अग्नि से उठने वाली चिनगारियों से व्याप्त तथा जिसमें अच्छे-अच्छे सुभट गिर रहे हैं ऐसा अत्यन्त भयंकर युद्ध होने लगा।

२१. बाण, शक्ति, तलवार, तोमर, चक्र, आयुध एवं मुग्दर हाथ में लिए हुए रथ, हाथी एवं घोड़ों पर आरूढ़ योद्धा सामने जाकर युद्ध में जूझने लगे।

२२. गिरे हुए घोड़े, हाथी एवं योद्धाओं वाले वरुणसैन्य को भग्न और भागते देख जल का स्वामी वरुण सामने आया।

२३. वरुण के द्वारा सैन्य का भंग और पीछे हटना देख कर रावण रोषवश बाणों का समूह छोड़ता हुआ आगे बढ़ा।

२४. जब वरुण और रावण का भयंकर महायुद्ध हो रहा था उस समय वरुण के पुत्रों ने खरदूषण को युद्ध में पकड़ लिया।

२५. दूषण पकड़ा गया है ऐसा देखकर मंत्रियों ने उस रावण से कहा कि हे प्रभो! आप लड़ते रहेंगे तो कुमार अवश्य मारा जायेगा।

२६. मंत्रियों के साथ निश्चय करके राक्षसाधिपति रावण खरदूषण के जीवन के लिए रण में से वापस लौटा।

२७. पातालपुर में वह आ पहुँचा और सब सामन्तों को इकट्ठा किया। प्रह्लाद खेचर को बुलाने के लिए भी शीघ्र एक आदमी भेजा।

पवनवेग का रण के लिए गमन :

२८. उसने जा करके और प्रणाम करके प्रह्लाद राजा से रावण का सम्बन्ध, रावण और वरुण का युद्ध तथा दूषण का पकड़ा जाना, जैसा हुआ था वैसा, कह सुनाया।

२९. वापस लौटा हुआ और सामन्तों से युक्त पातालपुर स्थित महात्मा राक्षसपति रावण आपसे मिलना चाहता है और इसीलिए मुझे भी आपके पास भेजा है।

३०. यह वचन सुनकर प्रह्लाद उसी समय जाने के लिए तैयार हुआ। यह देखकर पवनंजय ने उसे रोका और कहा कि आप यहीं पर विश्वस्त होकर ठहरें।

३१. हे स्वामी! मेरे रहते आप जाने की तैयारी क्यों करते है? मैं आपके अधीन हूँ। मुझे यह आलिंगन का फल दें, अर्थात् मुझे आलिंगनपूर्वक जाने की अनुमति दें।

३२. राजा ने कहा कि तुम अभी बच्चे हो। तुमने अब तक कभी लड़ाई नहीं देखी। पुत्र! तुम अपना खेल खेलते हुए घर पर ही रहो।

३३. इस पर पवनंजय ने कहा कि, हे तात! आप ऐसा मत कहें कि मैं बच्चा हूँ और लड़ाई कभी नहीं देखी। क्या मदोन्मत्त हाथी को सिंह का बच्चा नहीं मारता।

३४. तब प्रह्लाद राजा ने पवनवेग को जाने की अनुज्ञा दी और कहा कि, हे पुत्र! तुम राजाओं पर विजय प्राप्त करने वाले होओ।

३५. पिता को सिर से प्रणाम करके तथा माता की अनुमति लेकर आभूषण से भूषित शरीरवाला वह अपने महल में से बाहर निकला।

३६. नगर में एकदम कोलाहल मच गया कि पवनवेग जा रहा है। ऐसा शब्द सुनकर अंजना भी तत्काल बाहर आई।

३७. अत्यन्त स्नेह फैलाती तथा स्तंभ का सहारा लेकर पति को निहारती उस स्त्री अंजनासुन्दरी को लोगों ने सुन्दर शालभंजिका पुतली जैसी देखा।

३८. पुलकित होकर कमलदल के समान नेत्रों द्वारा राजमार्ग में उस कुमार को देखती हुई वह महेन्द्रतनया अंजनासुन्दरी तृप्त नहीं होती थी।

३९. उस समय पवनंजय ने भी प्रासादतल पर खड़ी होकर देखनेवाली उस अंजना को उद्वेगप्रद उल्का की भाँति देखा।

४०. उसे देखकर जिसके शरीर में रोष फैल गया है ऐसे पवनगति ने रुष्ट होकर कहा कि यह कितनी निर्लज्जता है कि तुम मेरे सामने उपस्थित हुई हो।

४१. इस पर हाथ जोड़कर और उसके चरणों में प्रणाम करके उपालम्भ देती हुई वह कहने लगी कि, हे स्वामी! आप प्रवास पर जा रहे हैं। हे नाथ! जाते समय आपने सब परिजनों के साथ सम्भाषण किया। अन्यमनस्क मन से भी आपने मुझ पापिन के साथ तो बात भी नहीं की।

४२-४३. इसमें सन्देह नहीं है कि मेरा जीवन और मरण भी आपके अधीन है। यद्यपि आप प्रवास में जा रहे हैं, फिर भी मैं तो याद करती रहूँगी।

४४. इस प्रकार जब वह प्रलाप कर रही थी तब पवनगति मत्त हाथी के ऊपर सवार होकर नगर में से बाहर निकला और मानसरोवर के पास आ पहुँचा।

४५. विद्या के बल से वहाँ घर तथा शैय्या आदि से युक्त आवासस्थान की रचना की। उस समय सूर्य भी क्रमशः परिभ्रमण करता हुआ अस्ताचल पर आ गया।

पवनवेग द्वारा अंजना का स्मरण :

४६. संध्या के समय भवन के गवाक्ष में स्थित होकर पवनगति ने निर्मल एवं उत्तम जल से परिपूर्ण उस सुन्दर सरोवर को देखा।

४७. मत्स्य, कच्छप, सारस एवं हंसों से उसकी तरगें चंचल हो रही थीं। सहस्त्रदल कमलों में गुंजारव करने वाले भ्रमर से वह छाया हुआ था।

४८. अतिदारुण प्रतापवाले राजा की भाँति दीर्घकाल पर्यन्त राज्य करके वह सूर्य अवसान के समय अस्त हो गया।

४९. दिवस में विकसित और भ्रमरकुल ने जिनके दलों का त्याग किया है ऐसे कमल सूर्य के विरह से दु:खित होकर सकुचा गये।

५०. हंस आदि जो पक्षी उस सरोवर में क्रीड़ा करते थे वे भी संध्याकाल देंखकर अपने-अपने स्थानों में चले गये।

५१. वहाँ पवनंजय ने अत्यन्त व्याकुल मनवाली, ताजे विरहरूपी अग्नि से तपे हुए शरीरवाली तथा अनेक प्रकार की चेष्टा करने वाली एक चकवी को देखा।

५२. वह ऊँचे जाती थी, चलती थी, काँपती थी, जमुहाई खाती हुई पंख फड़फड़ाती थी, तटवर्ती पेड़ पर बैठती थी और फिर पानी में डुबकी मारती थी।

५३. प्रिय की आशंका से चंचुप्रहार करती हुई वह कमलसमूह में से होकर चलती थी और प्रतिध्वनि सुनकर एकदम आकाशमार्ग में उड़ जाती थी।

५४. प्रिय के विरह से अत्यन्त दु:खित उस चकवी को देखकर उसमें लगे हुए मनवाले पवनंजय को चिरकाल से परित्यक्त अजनासुन्दरी की याद आई।

५५. वह कहने लगा कि बहुत खेद है कि मूढ़, अकार्यकारी और पाप से भारी मैंने बाईस साल से उसे छोड़ दिया है।

५६. जैसे यह चकवी अपने प्रिय के विरह से अत्यन्त दु:खी हो गई है वैसे ही मेरी वह अत्यन्त दीनवदना प्रियतमा समय व्यतीत करती होगी।

५७. यदि उसकी दुष्ट सखी ने कानों के लिए असुखकर कहा भी तो मैंने क्यों दोषरहित उस विशाल नेत्रोंवाली को छोड़ दिया।

५८. ऐसा सोचकर पवनकुमार ने प्रहसित से कहा कि चकवी को देखकर मुझे मेरी पत्नी अंजना याद आई है।

५९. आते हुए मैंने पाले से पीड़ित पद्मिनी की भाँति श्री एवं सौभाग्य से रहित उसे महल में खड़ी होकर अवलोकन करती हुई देखा था।

६०. हे सत्पुरुष! समय बिताये बिना ही तुम आज कोई ऐसा उपाय करो जिससे चिरकालीन विरह से दु:खित अंजनाकुमारी को मैं देख पाऊँ।

६१. कार्य के महत्त्व को जानकर मित्र प्रहसित ने पवनगति से कहा कि वहाँ जाने के अलावा दूसरा कोई उपाय मैं नहीं देखता।

६२. पवनंजय ने मुग्दर नामक अमात्य को शीघ्र ही बुलाकर और सेनाधिपति के पद पर स्थापित करके कहा कि मैं मेरुकी और जाता हूँ।

६३. चन्दन एवं पुष्प हाथ में धारण करके वे दोनों मित्र आकाश मार्ग से प्रयाण करते हुए जल्दी ही अंजना के भवन के पास आ पहुँचे।

६४. बाद में पवनवेग को घर के आगे के हिस्से में छोड़कर प्रहसित ने भीतर प्रवेश किया। अजनासुन्दरी ने उसे सहसा देखा।

६५. उसने पूछा कि तुम कौन हो? किसलिए यहाँ आये हो? तब उसने प्रणाम करके कहा कि मैं पवनवेग का मित्र हूँ।

६६. हे सुन्दरी! तुम्हारा वह प्रिय यहाँ आया है। उसने तत्काल ही यहाँ मुझे भेजा है। मेरा नाम प्रहसित है। हे स्वामिनी! तुम सन्देह मत करो।

६७. स्वप्न के समान पवनंजय के आगमन की बात सुनकर अंजना ने कहा कि हे प्रहसित! तुम क्यों मजाक कर रहे हो? मैं कृतान्त (यम, मृत्यु) द्वारा उपहसनीय हुई हूँ।

६८. अथवा तुम्हारा क्या दोष है? मेरे पूर्वकर्मों का ही दोष है कि मैं प्रियसे तिरस्कृत हुई हूँ, सब लोगों से अपमानित हुई हूँ।

६९. इस पर प्रहसित ने कहा कि, हे स्वामिनी! तुम इस तरह दुःखी मत हो। तुम्हारा वह हृदयस्थ प्रियतम इसी भवन में आया हुआ है।

७०. वसन्तमाला ने दूसरे कक्ष में स्थित पवनंजयकुमार को प्रणाम करके उसे शयनगृह में प्रवेश कराया।

७१. प्रिय को देखकर अंजनाकुमारी सहसा खड़ी हो गई और सिर झुकाकर उसके चरणों में प्रणाम किया।

७२. पवनंजय पुष्पों की चादर से आच्छादित रत्नमय पलंग के ऊपर बैठा। हर्षवश रोमांचित शरीरवाली अंजना उसके पास बैठी।

७३. विनोदपूर्ण बातें और विविध प्रकार की कथाएँ कहने वाली वसन्तमाला प्रहसित के साथ दूसरे कक्ष में ठहरी।

पवनवेग के साथ अंजना का समागम :

७४. तब पवनवेग ने कहा कि हे सुन्दरी! अकार्यकारी मैंने जो तुम्हें दुःखित किया है उस मेरे हजारों अपराध के समूह को क्षमा करो।

७५. इस पर महेन्द्रतनया अंजनासुन्दरी ने कहा कि, हे नाथ! इसमें तुम्हारा कोई अपराध नहीं है। मनोरथ के फलको याद करके अब आप स्नेह बहावें।

७६. तब पवनंजय ने कहा कि हे सुन्दरी! अब अपराधों को भूल जाओ और सुप्रसन्न हृदयवाली हो। मैंने तुम्हें यह प्रणाम किया।

७७. कमलदल के समान कोमल शरीरवाली अंजना का पवनंजय ने आलिंगन किया। अनिमेष नयनों से वह प्रिय के मुख का अनुरागपूर्वक पान करने लगी।

७८. प्रगाढ़ स्नेह से भरे हुए तथा अनुराग के कारण प्रसारप्राप्त – खिले हुए उन दोनों में अनेक प्रकार के प्रिय कर्मों का जिनमें विनियोग किया जाता है ऐसा सुरतकर्म हुआ।

७९. आलिंगन, चुम्बन, रति एवं उत्साह गुणों से अतिसमृद्ध, विरह का दुःख जिसमें उपशान्त हो गया है तथा मन को सन्तोष हो इस प्रकार जिसमें यथेच्छ रंजन किया गया है ऐसा वह सुरतोत्सव था।

८०. सुरतोत्सव समाप्त होने पर खेद एवं आलस्य से युक्त अंगवाले वे दोनों एक दूसरे की भुजाओं के आलिंगन सुख में लीन हो कर सो गये।

८१. इस प्रकार सुरतसुख के आस्वाद के बाद सोये हुए उनकी रात, जिसमें थोड़ा ही समय बाकी रहा था, बीत गई।

८२. प्रातःकाल में जगे हुए मित्र प्रहसित ने पवनगति से कहा कि, हे सुपुरुष! जल्दी उठो। छावनी की ओर प्रयाण करें।

८३. मित्र का वचन सुनकर पवनवेग शय्या में से उठ खड़ा हुआ और पत्नी को आलिंगन करके कहा कि मेरा कहना सुनो।

८४. जब तक मैं रावण का दर्शन करके शीघ्र ही वापस आता हूँ तब तक तुम विश्वस्त होकर यहाँ रहो और मन में उद्वेग मत धारण करो।

८५-८६. तब विरहदुःख से भीत उस बाला ने विनयपूर्वक चरणों में प्रणाम करके प्रेमपूर्वक और मधुर स्वर में पवनंजय से कहा कि, हे नाथ! आज ऋतुकाल में शायद उदर में गर्भ रहा हो। निश्चय ही तुम (लोगों की दृष्टि में) परोक्ष हो, अतः वह मेरे लिए निन्दनीय ही होगा।

८७. अतः गुरुजनों के पास जाकर इस गर्भ की सम्भावना के बारे में कहो। बहुत दूर की बात देखने वाले बनो अर्थात् दीर्घदृष्टि बनो और दोष का परिहार करो।

८८. इस पर पवनवेग ने कहा कि, हे चन्द्रमुखी! तुम मेरे नाम से अंकित यह रत्नखचित मुद्रिका लो। यह दोष का नाश करेगी।

८९. पत्नी तथा वसन्तमाला को पूछकर और गगनमार्ग से प्रयाण करके प्रहसित एवं पवनंजय अपने पड़ाव के भवन में आ पहुँचे।

९०. धर्म एवं अधर्म के फलस्वरूप संयोग एवं वियोग तथा सुख एवं दु:ख इस जीवलोक में होते हैं ऐसा जानकर विमल जिनशासन में तुम उद्यमशील बनो।

❑❑

२. लीलावती कथा

मंगलाचरण :

१. हरि के हाथों की उन नख-पंक्तियों को नमन करो, (जिनमें) क्रोधयुक्त सुदर्शनचक्र दिखाई पड़ता है तथा जो हिरण्यकश्यप के विशाल वक्षस्थल की हड्डियों में प्रविष्ट हुई थीं।

२. उन हरि (विष्णु) को नमन करो जिनका उस समय तीसरा पैर तीनों लोकों को नापता हुआ अपने आप ही साकार से अनाकार (आकाश) में स्थित हो गया।

कृष्ण रूप :

३. उस (हरि) के लिए पुनः नमन करो, जिसके तिरछे मार्ग में स्थित देहली लाँघने में असमर्थ चरण हैं तथा (जिन्हें देखकर) चुपचाप हलधर के द्वारा हँसा जा रहा है।

४. वही हरि जयवन्त हो जिसकी बादलों के सदृश काली एवं प्रलयकाल में बढ़े हुए यमराज के पास (बन्धन) की तरह भुजारूपी अर्गला अरिष्ठासुर के गले में पड़ी।

५. (विष्ण के) महासमुद्र के शयन पर लक्ष्मी के स्तनों से व्याप्त कौस्तुभ मणि के कंद के अंकुर रूप शेषनाग की फन-मणि की किरणें हम लोगों की रक्षा करें।

६. यमार्जुन का भंजन, अरिष्ट का बलन, केशि का विदारण, कंस और असुरेन्द्र का आकर्षण (पतन) और शैल (पर्वत) के धारक हरि की भुजा को नमन करो।

७. कर्कश (कठोर) हाथ से पूरित आनन (मुख), कठिन हाथ से दृढ़ बंधन, केशि और किशोर का कदर्थन करने में उद्यत मधुमथन की जय हो।

८. वे जयवंत हैं जिन्होंने तीन लोक के संहार के आरम्भ से सुशोभित मुख से सातों ही समुद्र चुल्लू में स्थित आचमन की तरह पी लिए।

९. गुरुतर भार से आक्रान्त महिषासुर के शिर की हड्डी को भंजन करने के लिए उद्यत प्रणम्यशील सुर-असुर के सिरों से घिसे हुए नुपुर युक्त गोरी के चरणों को नमन करो।

१०. कठोर धनुष खींचने से परिश्रम द्वारा पसीने के जल से भींगे हुए तथा केसर के रस से युक्त चण्डी के कंचुक वस्त्र हम लोगों की सदैव रक्षा करें।

११. चन्द्रमा की किरणों से युक्त तथा प्रकट हुए रुद्र के अट्ठहास की तरह सफेद गंगा का जल-समूह तुम्हारे पापों को नाश करे।

सज्जन वर्णन :

१२. वे विचारशील सज्जन रूपी सूर्य सदा जयवंत हैं, जिनके सुवर्ण (अच्छे शब्द) संचय से एवं जिनके संगम (संगति) से दोष रहित कथानुबन्ध कमलाकर की तरह विकसित होते हैं।

१३. वह (ब्रह्मा) जयवंत हो, जिसने इस संसार में सज्जन और दुर्जन बनाए हैं, क्योंकि हम तम (अन्धकार) के बिना चंद्र किरणें भी परिभाव (गुणोत्कर्ष) को नहीं पाती हैं।

१४. पर-कार्य में व्याप्त मन वाले दुर्जन और सज्जनों को सदैव नमन हो, एक (दुर्जन) भसण-स्वभावी (व्यर्थ का प्रलाप करने वाले) और अन्य (सज्जन) दूसरों के दोषों को कहने से दूर रहने वाले हैं।

१५. अथवा सकल जीव लोक में कोई भी दोष नहीं दिखाई पड़ रहा है। सभी सज्जन जन ही हैं। अत: जो हम कहते हैं उसे सुनो।

१६. सज्जन की संगति से भी दुर्जन की कलुषिमा दूर नहीं होती है। चन्द्रमा के मध्य में परिस्थित कुरंग (मृग) भी काला ही है।

१७. दुर्जन संगति से भी सज्जन के शील का नाश नहीं होता है। स्त्री के सलोने (नमकीन) मुख पर भी उसके अधर (ओंठ) मधु (मधुरता) ही बहाते हैं।

१८. बालजनों की तरह विलसित निरर्थक वचन-प्रसंग, असम्बद्ध प्रलाप के परिग्रह के अनुबन्धन से मुक्त रहा जाए।

कविकुल वर्णन :

१९. तीन वेद, तीन होमाग्नि के सम्पर्क से उत्पादित देव-संतोष तथा त्रिवर्ग-फल प्राप्त बहुलादित्य नामक (ब्राह्मण) था।

२०. आज होमाग्नि (यज्ञ अग्नि) से प्रसरित (फैले हुए) धूम शिखा के कलुषित जिसके वक्षस्थल को भी चन्द्रमा मृग-कलंक के बहाने धारण कर रहा है।

२१. उसकी (बहुलादित्य की) गुण-रत्नों से युक्त महासमुद्र सदृश पत्नी से निजकुल के आकाश के चंद्र की तरह भूषणभट्ट नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

२२. चतुर्मुख (ब्रह्मा) से निकले हुए वेदों को एक मात्र भूषणभट्ट के मुख में स्थित होने से जिनके प्रिय बान्धवों के द्वारा अपने को अधिक धन्य माना जाता था।

२३. उस भूषणभट्ट के पुत्र, तुच्छबुद्धि वाले मुझ **कौतुहल** के द्वारा रचित **लीलावती** नाम इस कथारत्न को सुनो।

शदर-वर्णन :

२४. (अ) जिस तरह चन्द्ररूपी केशरि के कर के प्रहार से दलित तिमिर रूपी हस्तिकुम्भ बिखरे हुए नक्षत्र रूपी मुक्ताफल से उज्जवल शरद ऋतु की रात्रि में -

(ब) चाँदनी से व्याप्त कोश की कान्ति से धवल, (स्वच्छ) सम्पूर्ण गंध युक्त प्रकम्पित पुष्प-पत्र से रस युक्त घर की वापिकाओं में -

(स) अत्यन्त मधुर गुन-गुन आवाज करने वाला भ्रमर चन्द्र के प्रकाश में निर्विघ्नतापूर्वक रसपान कर रहा है।

२५. इस शरद ऋतु से चन्द्रमा, चन्द्रमा से भी रात्रि, रात्रि से कुमुदवन, कुमुदवन से नदी तट और नदी तट से हंसकुल सुशोभित होता है।

२६. (हे प्रिय!) नए कमल नाल के कषैले रंग से विशुद्ध कंठ से निकले हुए अत्यन्त मनोहर शरदऋतु रूपी लक्ष्मी के चरणों के नूपूर की आवाज वाले हंसों का संभाषण सुनो।

२७. शीतलता से युक्त जल की तरंग के सम्पर्क से ठंडी हुई अर्ध विकसित मालती की मुग्ध (सुन्दर) कलिका की सुगंध से उत्कृष्ट पवन चल रहा है।

२८. दश-दिशा रूपी बधुओं के मुख के तिलक की पंक्ति की तरह तालाब के जल में स्वच्छ तरंगों से हिलते हुए वृक्षों की यह वनरात्रि सुशोभित हो रही है।

२९. दिन की संभावना से एक हृदय वाले विरह वेदना से रहित वापियों में मिल रहे इन चक्रवाक पक्षियों को देखो।

३०. देखो! विकसित सप्तच्छद की सुगन्ध से आकृष्ट हुए अचिंतित कुसुम के आस्वाद से पराङ्मुख यह भ्रमर-समूह (शरद ऋतु) में घूम रहा है।

३१. हे प्रिय! प्रफुल्लित सुगन्ध युक्त नील कमल के आमोद वाले चन्द्रमा के उजले कर्णाभूषण वाले एवं निर्मल ताराओं के प्रकाश जैसी आँखों वाले इस रात्रि के मुख को चन्द्रमा मानों पी रहा है।

३२. अत्यन्त रमणीय रात्रि (है), निर्मल शरद ऋतु (है), तुम मेरे अधीन (हो) और परिजन अनुकूल (हैं) अतः मैं ऐसा मानता हूँ कि ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो मेरे पास नहीं है।

कथा-स्वरूप :

३३. 'हे स्वामी! सायंकाल के विनोद के लिए, मदयुक्त, सुखकारी (आनंदजनक), मनोहर रचना (कथन), हम महिला जन के मनोज्ञ, रसयुक्त कोई भी अपूर्व कथा कहिए।'

३४. (तब) सुन्दर मुख-कमल से उत्पन्न विशेषता वाली के उस वचन को सुनकर उसने (कौतूहल ने) कहा कि हे नीलकमलों जैसे नेत्रों वाली! यहाँ पर कवियों ने तीन प्रकार की कथा कही है।

३५. जैसे दिव्या, दिव्यमानुषी और मानुषी। उसने भी वास्तव में सर्वप्रथम कवियों ने क्या लक्षण किया? वह इस प्रकार है -

३६. दूसरी (कथा) श्रेष्ठ महाकवियों के द्वारा संस्कृत-प्राकृत की संकीर्ण (मिश्रित) विद्यावाली, अच्छे वर्णों में रची गई अनेक अच्छी कथाएँ सुनी जाती हैं।

३७. हे मृगाक्षि! उनके (महाकवियों के) बीच में हम जैसे अज्ञानियों के द्वारा जो कथाएँ कही जाती हैं, वे कथाएँ लोक में गुणोत्कर्ष को नहीं पा सकेंगी।

३८. हे सुन्दरी! शब्द-शास्त्र के ज्ञान विशेष से रहित मेरा उनसे क्यों उपहास करवाती हो? क्योंकि उनके सामने मैं बोलने में भी समर्थ नहीं हूँ, फिर विस्तृत कथाबंध कहने की तो बात ही कठिन है।

३९. और तब प्रियतमा ने कहा - 'हे प्रियतम! हमारे जैसे लोगों के लिए उस शब्दशास्त्र से क्या प्रयोजन, जिसके द्वारा सुभाषित मार्ग खण्डित हो।'

४०. (अत: हे प्रिय!) बिना विशेष प्रयत्न के हृदय से अर्थ स्पष्ट होता है, वही शब्द सदैव श्रेष्ठ है। हमारे लिए लक्षण से क्या प्रयोजन?

४१. इस तरह मुग्ध युवती की तरह मनोहर, देशी शब्दों से युक्त एवं उत्तम लक्षणों वाली कोई दिव्यामानुषी कथा प्राकृत भाषा में कहिए।

४२. उसे वैसा सुनकर कौतुहल कवि ने कहा - 'हे चंचल बालमृग की तरह आँखों वाली। यदि ऐसा है तो अच्छी सन्धियों से युक्त कथावस्तु को सुनो।'

कथा प्रारम्भ :

४३. चारों समुद्ररूपी गोलाकार करधनी से बंधी हुई विशाल नितम्ब की शोभा वाली, शेष नागराज के अंक में सभी अंगों को छिपाए हुए तीनों लोकों में अच्छी तरह स्थित-

४४. प्रलयकाल में वराह से उद्धार की गयी, सुख-सम्पत्ति एवं महान् वस्तुओं से युक्त नाना प्रकार के रत्न से अलंकृत भगवती पृथ्वी में -

४५. धान्य-सम्पत्ति से पूर्ण, खेतीहर प्रसन्न नागरिकों से युक्त और सु-व्यवस्थित गाँवों के गोधन के रंभाने की आवाज से दिशाओं को गुंजाने वाला-

४६. अतिसुखद पेय, दुकानों एवं बाजारों से युक्त चर्चरी की आवाज और सुन्दरियों के समूह को सुशोभित ऐसा सम्पूर्ण सुखकर निवास आसव नामक विख्यात जिला था।

४७. वह जो प्रदेश है, वह कृतयुग से जुड़ा हुआ, धर्म के निवास-स्थान की तरह, ब्रह्मा का मानों शिक्षा-स्थान और पुण्य का आवास था।

४८. उस प्रदेश में मानों पुण्य का शासन था, सुख-समूह का मानों वह जन्म-स्थल था, वह आचारण का आदर्श था, तथा गुणों के लिए अच्छे क्षेत्र (खेत) की तरह था।

४९. उस जनपद में कोमल घास से संतुष्ट गोधन एवं गोधन से आनंदित समूह था। सर्वोतम बाँस समूह में वीणा की पूर्ण व्याप्त गीत की आवाज से दिशाएँ गूँजती रहती थीं।

५०. **युवतीपक्ष** - अति उन्नत और भारी पयोधरवाली, कोमल मृणाल की तरह बाँहों वाली तथा सदा मधुर बोलनेवाली युवतियाँ नदियों की तरह थीं।

नदीपक्ष - दूर तक फैली हुई, गहरे जल से भरी हुई, कोमल मृणाल रंद्र को बहाने वाली तथा मीठे पानी से युक्त नदियों की तरह मानों वहाँ की युवतियाँ थीं।

५१. जिस जनपद में मनोहर गीतों की आवाज हरिणों (मृगों) को हरण करने वाली पामर वधुओं के द्वारा अपने खेत के साथ अन्य शेष खेतों की फसलें भी रक्षित की जाती थीं, वह प्रदेश सुस्थित रहे।

५२. इस प्रकार के ऐसे मनोहर जनपद के मध्य में हे सुन्दरी, अत्यन्त रमणीक, सभी प्रकार के सुखों को निवास, **प्रतिष्ठान** नामक एक नगर है।

५३. और, हे प्रिये, उस श्रेष्ठ नगर का यदि वर्णन किया जाए तब रात्रि ही बीत जायगी। इसलिए (उसका) संकेत मात्र में वर्णन संक्षेप में यहाँ करता हूँ। उसे सुनो।

५४. जहाँ पर उत्तम कामनियों के चरणों के नूपुरों की ध्वनि का अनुसरण करते हुए राजहंसों के द्वारा अपने मुख से किसलय छोड़कर (नूपुरों की) प्रतिध्वनि की जाती है।

५५. जहाँ यज्ञाग्नि से उठे हुए धुएँ से श्यामल हुए नभस्तल को देखने में एकरस हुए गृहमयूर चन्द्रकान्त मणि के शिलापट्ट पर नाच उठते हैं।

५६. घरों में जड़े हुए मणियों की किरणों के जाल से समस्त रात्रि के अंधकार का अवरोध हो जाने के कारण रत्नजटित आभूषणों के त्याग देने पर भी अभिसारिकाओं के द्वारा गमन संभव नहीं हो पाता था।

५७. (और) जहाँ पर देवालयों के स्तूपों पर लहराती हुई ध्वजाओं से सदैव ही सूर्य के किरण-जाल-का निवारण होता रहता था। इस कारण वहाँ गायिका-महिलाएँ बिना छत्र लगाए ही आती-जाती रहती थीं।

५८. (और) जहाँ पर नवीन अपराध-दोष से परिकुपित, कामिनी के मान और मोह को हरण करने वाली कोकिलाओं का संगीत प्रिय लोगों का दौत्य-कर्म किया करता है।

५९. जहाँ निर्दय रति क्रीड़ा के वेग से क्लान्त हुई कामिनियों के कपोलों के पसीने के बिन्दुओं को उद्यान की सुगन्धित वायु; उसे अपनी नासिका रूपी अंजलियों से पान किया करती है।

६०. और, जहाँ पर मृणाल के श्रद्धालु हंसकुल गृह-शिखरों के ऊपर (छज्जों) सोई हुई कामिनियों के कपोलों में प्रतिबिम्बित चन्द्रकलाओं के समूह को प्राप्त करने की इच्छा किया करते हैं।

६१. जहाँ महाराष्ट्र की नारियों के स्तनों के हल्दी के लेप के धोये जाने से हुए पीत-वर्ण के जल-प्रवाह वाली गोदावरी नदी में लोग प्रतिदिन (स्नान करके) अपने पाप धोया करते हैं।

६२. किन्तु उस नगर में केवल एक ही दोष था कि ग्रीष्म के प्रदोष-काल में चमेली की सुगन्ध मनस्विनी रमणियों को (पतियों के) अनुनय का सुख भोगने ही नहीं देती थी।

६३. और, वहाँ पर एक दोष यह भी था कि स्फटिक-शिला पर बैठी हुई तरुणियों का मदन-विकार बाहर स्थित जनों के द्वारा भी देख लिया जाता था।

६४. और, वहाँ एक दोष यह भी था कि विकसित पुष्पों की धुलि-पटल से वायु के द्वारा गृह की चित्र-भित्तियाँ भी मैली हो जाती हैं।

राजा वर्णन :

६५. पूर्वोक्त सभी गुणों से समृद्ध उस प्रतिष्ठान नगर में समस्त गुणों से अलंकृत शरीर वाला तथा पृथिवी-मण्डल पर विस्तृत यशवाला शालिवाहन नामक राजा हुआ।

६६. जो अशरीरी होने पर भी सर्वांग सुन्दर था। यह विरोध हुआ अत: जो अविग्रही अर्थात् युद्धादि कलह पसन्द नहीं करता था तथा सुभग था। और दुदर्शन (कुरूप) होने पर भी लोगों को आनन्ददायक था। यह विरोध हुआ। परिहार रूप में अर्थात् राजा होने के कारण जिसका दर्शन लोगों को कठिन था अथवा जिसके प्रताप के कारण लोगों का उसे देख सकना कठिन था। (विरोधाभास-अलंकार)

६७. कुत्सित पति होने पर भी जो अपनी पत्नियों को प्यारा था। यह विरोध हुआ। अर्थात् पृथिवी का प्यारा होने पर भी वह अपनी पत्नियों का प्यारा था तथा नम्रीभूत होने पर भी साहसी था। यह विरोध हुआ। अर्थात् जो नीतिवानों में श्रेष्ठ अथवा जिसे दूसरे नमस्कार करते हैं, ऐसा (कर्मधारय या बहुब्रीहि समास) वह साहसी था। दूसरे लोगों से भयभीत एवं वीररस का अनुगामी था। यह विरोध हुआ। परिहार रूप में अर्थात् जो स्वर्ग-नरक की दृष्टि से परलोक भीरु (धार्मिक) तथा वीररस का अनुयायी था। (विरोधाभास-अलंकार)

६८. जो सूर्य होते हुए भी सप्ताश्व न था। विरोध परिहार - जो शूर था जड़-संताप करता सूर्य नहीं - वह सोम (चन्द्रमा) था किन्तु कलंक रहित। विरोध परिहार - अर्थात् वह भद्र प्रकृति एवं दुर्व्यसनादि से रहित था। वह भोगी (सर्प) था किन्तु दो जीभों वाला नहीं। विरोध परिहार- वह ऐश्वर्यवान् था, कुटिल नहीं। जो बहुत ऊँचा था फिर भी फल समीप

में गिरता था अर्थात् जो उच्च पदाधिकारी होने पर भी दानादि फल लोगों को दिया करता था। (विरोधाभास-अलंकार)

६९. कृष्णपक्ष के दिनों में अपने मण्डल के क्षीण हो जाने पर चन्द्रमा जिस प्रकार दुर्लक्ष्य हो जाता है, उसी प्रकार उस राजा शालिवाहन ने अपने सभी शत्रुओं को इतना दुर्बल बनाकर रखा था कि वे कठिनाई से दिखलाई पड़ते थे।

७०. अपने तेज से संसार को प्रकाशित करने वाले चन्द्रमा की पीठ को जिस प्रकार लोगों ने नहीं देखा उसी के समान समस्त जगत् को अपने पराक्रम से जीत लेने पर भी शत्रुओं के द्वारा उस चक्रवर्ती राजा की पीठ कभी नहीं देखी गयी।

७१. और, जिसके शत्रुओं की रात्रियाँ पर्वत की कन्दराओं में औषधियों की शिखा (ज्वाला) से रक्तवर्ण होकर व्यतीत होती थीं, मानों वे उसकी प्रतापाग्नि की कान्ति से ग्रस्त थे।

(उपमा अलंकार, उत्प्रेक्षा अलंकार)

७२. और, जिस राजा का चित्र प्रेमिल स्त्रियों के द्वारा अपने निवास-गृह की भित्तियों पर अपने नख रूपी मणियों की किरणों से रक्ताभ हाथों के अग्रभाग द्वारा लिखा जाता था, जैसे कि वह मन्मथ का चित्र ही हो।

७३. जिस राजा के बिना सुकवियों के दीर्घकाल तक चिन्तनशीलता के साथ रचे हुए काव्य, उनके हृदयों में वैसे ही रह जाते हैं, जैसे कि दु:खी पुरुषों के मनोरथ।

७४. इस प्रकार यथेच्छ वैभव-प्राप्त उस महापृथिवीश्वर के लिए हे सुन्दरि, मदन के दूत के समान वसन्त-मास आ गया।

७५. जिस वसन्त का आगमन पूर्व में आए हुए मलयानिल ने सूचित किया, उसे अब खूब चहकते हुए कोकिल के कोलाहल के बहाने वन के वन चिल्लाने लगे (कि अब वसन्त राजा साहब पधार गए)

७६. आम्रमंजरी को लेकर तोता मानों पत्रल (राजा का मुद्रांकित घोषणापत्र) अपने हाथ में लिए हुए, यह घोषणा करता हुआ परिभ्रमण कर रहा था

कि हे शिशिर काल के राजन्, अब तुम हट जाओ। अब इस पृथ्वी को बसन्त ने जीत लिया है।

७७. वनों में जो बौंड़ियाँ (कलियाँ) लग चुकी थीं तथा जो अब लग रही थीं, जो पुष्प-कुञ्ज फूल चुके थे या अब फूल रहे थे, उनमें वसन्त की समृद्धि समान रूप से अपने पैर रख रही थी (अर्थात् कुछ फूल शिशिर-काल में भी फल-फूल चुके थे। वे भले ही शिशिर-काल में फूल गए थे लेकिन उनमें शोभा वसन्त में ही आ सकी थी।)

७८. कामदेव के बहुत से चढ़ाए हुए वाणों (पंचवाणों) से क्या लाभ? क्या एक आम्रमञ्जरी मात्र से ही उसका काम नहीं चला?

७९. अब वसन्त ने तिलक की शोभा धारण करने के पश्चात् और भी अधिक शोभा उत्पन्न करने वाले कर्णकार-वन को स्वर्णमय अलंकार के समान धारण कर लिया है।

८०. बड़े-बड़े वृक्ष विविध वन-पंक्तियों की शोभा से युक्त होकर भले ही विकसित हों (अर्थात् हंसते रहें), किन्तु ऐसी कौन सी बात है, जिसे (कि बड़े-बड़े वृक्ष तो कर सकें किन्तु) फूली हुई (बेचारी) मल्लिका की सुगन्धि न साध सके?

८१. पाटलों की सुगन्धि कामीजनों के हृदय को पहले से ही मृदु बना देती है और फिर बाद में कामदेव के शेष बाण भी सरलता से उनके हृदय में चुभ जाते हैं (सुखपूर्वक प्रवेश कर जाते हैं)।

८२. आम्र के सघन कुञ्ज, जिनके कि पत्र पूर्ण विकास को प्राप्त हुए पुष्पमञ्जरी के गुच्छों के भार से आच्छादित हो रहे थे, वे पथिकों को दिखाई भी नहीं पड़ते थे (मञ्जरियाँ इतनी लद गई थीं कि पत्ते दिखाई ही नहीं पड़ते थे)।

८३. अर्ध विकसित एवं हिम विरह से दग्ध होने के कारण, जिनके कान्ति हीन दल का उद्भेदन उड़ते हुए भ्रमरों के द्वारा किया जा रहा है ऐसी कुन्दलतिका के पुष्प गिराए जा रहे हैं (कुन्दपुष्प हेमन्त में लगकर वसन्त में झड़ने लगते हैं) तथा भ्रमर को भी वापिस लौटना पड़ता है।

८४. फलों के गुच्छे लद जाने के कारण जिनके सन्धि-बंध थोड़े-थोड़े विघटित हुए हैं, ऐसे सिन्दुवार वृक्षों के पुष्प मंद पवन के आघात से गिराए जा रहे हैं।

८५. हिम के भार के समाप्त हो जाने पर तथा वसन्त के आने पर स्वस्थ होकर (प्रसन्न होकर) कुछ-कुछ विकसित हुई कमलमुखा नलिनी मानों हंसती हुई दिखाई देती है।

८६. (और) मलयानिल के समागम से संतोष को प्राप्त होकर (वृक्षों की) नवीन किसलय रूपी हाथों सहित नाचती हुई शाखाएँ वसन्त लक्ष्मी का आह्वान कर रही थीं। अथवा नवीन किसलय हवा में डुल रहे थे मानों वे वसन्त श्री को बुला रहे हैं।

८७. वन वीथियों में विकसित पलाशपुष्पों के कारण यह मधुमास रक्ताम्बरधारी नवीन वर के समान दिखाई दे रहा हे।

८८. यह मधुमास मानों हर्ष के वशीभूत होकर आम्र-निकुञ्जों में घूम रहा है। नवीन माधवी-लता-वितान में विकसित हो रहा है तथा कंकेली (अशोक) पत्रों की माला पर लोट-पोट हो रहा है।

८९. परिपुष्ट (तरुण) हुई आम्र वृक्ष की लता (कोमल-शाखा) जब वह दूसरी-दूसरी वन की लताओं की गन्ध को ग्रहण करके आई हुई वायु से छुई जाती है तब वह पीछे झुककर अपने पुष्प रूपी आंसुओं से मानों रोती है।

९०. कामीजन (शृंगार रस के वशीभूत होकर) कामदेव के द्वारा जो कि प्रफुल्लित हुए समस्त वनान्तर में प्रविष्ट (प्रतिष्ठित) हो चुका है, अपने पुष्पवाणों द्वारा प्रसार प्राप्त करके विवश किए जाते हैं। अर्थात् लोग अपने मन को बहुत सम्हालते हैं किन्तु सम्हलता नहीं (मधुमास में उत्तरोत्तर प्रेम भावना बढ़ती जाती है)।

❑❑

(ii) गद्य-कथाएँ

१ : ग्रामीण गाड़ीवान

कहीं कोई ग्रामीण गृहपति था रहता था। और उसने किसी समय कभी एक बार धन से भरी हुई गाड़ी को लेकर, और गाड़ी में पिंजरे में रखे हुए तीतर को बांधकर नगर को प्रस्थान किया। नगर में गया और गंधी पुत्रों द्वारा देखा गया। उसके द्वारा वह पूछा गया - तुम्हारे पिंजरे में यह क्या है?

उसके द्वारा कहा गया - 'तीतर'।

तब उनके द्वारा कहा गया - क्या यह गाड़ी में रखा हुआ तीतर बेचा जाएगा? उसके द्वारा गया कहा गया - 'हाँ, बेचा जाएगा'। उनके द्वारा कहा गया - 'क्या लिया जाएगा?' गाड़ीवाले द्वारा कहा गया - 'एक रुपये (कहापण) द्वारा'।

तब उनके द्वारा एक रुपया (कहापण) दिया गया। वे गाड़ी और तीतर को ग्रहण करने के लिए प्रवृत्त हुए। तब उस गाड़ीवाले के द्वारा कहा जाता है - (तुम) यह गाड़ी क्यों ले जाते हो?

उनके द्वारा कहा गया - 'मोल से ली गई है'

तब उनका फैसला हुआ। (उसमें) वह गाड़ीवाला जीत लिया गया। और वह गाड़ी तीतर के साथ उनके द्वारा ले जाई गई।

(जिसका) गाड़ीरूपी साधन ले जाया गया (है) (ऐसा) वह गाड़ीवाला योगक्षेम के लिए लाए गए बैल को लेकर रोता-चिल्लाता हुआ जाने के लिए प्रवृत्त हुआ। दूसरे कुलपुत्र के द्वारा देखा गया, (वह) पूछा गया - क्यों रोते हो?

उसके द्वारा कहा गया - हे स्वामी! इस प्रकार और इस प्रकार मैं ठग लिया गया हूँ।

तब उसके द्वारा दयासहित कहा गया - उन गंधी पुत्रों के ही घर जाओ और इस प्रकार, इस प्रकार कहो।

तब वह उस वचन को सुनकर (वहाँ) गया और जाकर उसके द्वारा कहा गया - हे स्वामी! तुम सबके द्वारा मेरी वस्तुओं से भरी हुई गाड़ी ली गई है, तो यह बैल भी ले लो। और मेरे लिए (तुम) दो पालि (कटोरी) सत्तु दे दो। जिसको लेकर मैं जाऊँगा। और (वह सत्तु) मैं जिस किसके हाथ से ग्रहण नहीं करूँगा। सब अलंकारों से भूषित प्राणों से भी अधिक प्यारी जो तुम्हारी पत्नी है, उसके द्वारा दिया जाना चाहिए। तब मेरी उत्तम सन्तुष्टि होगी। (मैं) अपने को जीवलोक के अन्दर (भाग्यशाली) मानूँगा।

तब उनके द्वारा गवाही (सक्खि वि) बुलाई गई और वह कहा गया- इसी प्रकार होवे। तब उनके पुत्रों की माता दो पालि सत्तु लेकर निकली - उस गाड़ींवान के द्वारा वह हाथ पर पकड़ ली गई, उसको लेकर (उसने) प्रस्थान किया।

उन (ठगों) द्वारा ही कहा गया - 'यह क्या करते हो?'

उसके द्वारा कहा गया - 'दो पालि सत्तु को ले जा रहा हूँ।'

तब उनके शब्द से महाजन एकत्र हुआ, पूछा गया - यह क्या है? तब उनके द्वारा जैसा हुआ वैसा सब कह दिया गया। आये हुए मनुष्यों द्वारा मध्यस्थता से बनकर न्यास का निश्चय सुना गया। वे गंधी पराजित हुए। कठिनाईपूर्वक उस महिला को उससे छुड़वाया। अच्छी तरह प्रचुर धन के साथ गाड़ी (ग्रामीण गाड़ीवान को) दे दी गई।

❑❑

२. विदुषी पुत्रवधू की कथा

किसी नगर में लक्ष्मीदास सेठ भली प्रकार से रहता था। वह बहुत धन-सम्पत्ति के कारण अत्यन्त घमण्डी था। भोगविलासों में ही (वह) लगा हुआ (था) (और) कभी भी धर्म नहीं करता था। उसका पुत्र भी ऐसा ही था। यौवन में पिता द्वारा धार्मिक धर्मदास की यथानाम शीलवती कन्या के साथ पुत्र का विवाह करवा दिया गया। जब वह कन्या आठ वर्ष की हुई, तब उसके द्वारा पिता की प्रेरणा से (एक) साध्वी के पास जिनेश्वर के धर्म के श्रवण से सम्यकत्व और अणुव्रत ग्रहण किए गए। जिन धर्म में वह बहुत निपुण हुई।

जब वह ससुर के घर में आ गई, तब ससुर आदि को धर्म से विमुख देखकर, उसके द्वारा बहुत दुःख प्राप्त किया गया। मेरे निजव्रत का निर्वाह कैसे होगा? अथवा देव-गुरु से विमुख ससुर आदि के लिए धर्मोपदेश कैसे सम्भव होगा? इस प्रकार वह एक बार विचार करती है। संसार असार है, लक्ष्मी भी असार है, देह भी विनाशशील है, एक धर्म ही परलोक जाने वाले जीव के लिए आधार है, इस प्रकार एक बार उपदेश देने से निज पति को जिनेन्द्र के धर्म में संस्कारित किया गया। कुछ समय पश्चात् (वह) इस प्रकार सास को भी समझाती है। ससुर को समझाने के लिए वह समय खोजने लगी।

एक बार उसके घर में श्रमण-गुण-समूह के अलंकृत महाव्रती, ज्ञानी, यौवन में स्थित एक साधु भिक्षा के लिए आए। यौवन में ही व्रत को ग्रहण किए हुए शान्त और जितेन्द्रिय साधु को घर में आया देखकर आहार को प्राप्त करते हुए होने पर ही उसके द्वारा विचार किया गया - यौवन में महाव्रत अत्यन्त दुर्लभ (है)। इनके द्वारा इस यौवन अवस्था में (महाव्रत) कैसे ग्रहण किए गए? इस प्रकार परीक्षा के लिए समस्या द्वारा उत्तर पूछा गया - अभी समय नहीं हुआ, पहिले ही (आप) क्यों निकल गए? उसके हृदय में उत्पन्न भाव को जानकर साधु के द्वारा कहा गया - समय का ज्ञान (है) कब मृत्यु होगी, ऐसा ज्ञान किसी को भी नहीं है। इसलिए समय के बिना निकल गया।

वह उत्तर को समझकर सन्तुष्ट हुई। मुनि के द्वारा वह भी पूछी गई- तुम्हें उत्पन्न हुए कितने वर्ष हुए? मुनि के प्रश्न के आशय को जानकर बीस वर्ष हो जोन पर भी उसके द्वारा बारह वर्ष कहे गये। फिर, तुम्हारे स्वामि (का जन्म हुए) कितने वर्ष हुए? इस प्रकार (यह) पूछा गया। उसके द्वारा पति का (जन्म हुए) पच्चीस वर्ष हो जाने पर भी पाँच वर्ष कहा गया। इस प्रकार सासू का छः माह कहा गया, ससुर के लिए पूछने पर 'वह अभी उत्पन्न नहीं हुआ है' इस प्रकार शब्द कहे गए। इस प्रकार बहू और साधु की वार्ता भीतर बैठे हुए ससुर के द्वारा सुनी गई। भिक्षा को प्राप्त साधु के चले जाने पर वह ससुर अत्यन्त क्रोध से व्याकुल हुआ, क्योंकि पुत्रवधु मुझको लक्ष्य करके कहती है कि (मैं) उत्पन्न नहीं हुआ। वह रूठ गया, (और) पुत्र को कहने के लिए दुकान पर गया। जाते हुए ससुर को वह कहती है - हे ससुर! आप भोजन करके जाएं। ससुर कहता है - 'यदि मैं अभी उत्पन्न ही नहीं हुआ हूँ तो कैसे भोजन चबाऊँगा? खाऊँगा?' इस (बात) को कहकर वह दुकान पर गया।

पुत्र को वह सब वार्ता कहता है - तेरी पत्नी दुराचारिणी है और अशिष्ट बोलने वाली है, इसलिए (तुम) उसको घर से निकालो। वह पिता के साथ घर में आया। (वह) बहू को पूछता है (तुम्हारे द्वारा) माता-पिता का अपमान क्यों किया गया? साधु के साथ वार्ता में असत्य उत्तर क्यों दिए गए? उसके द्वारा कहा गया - तुम्ही मुनि को पूछो, वह सब कह देंगे।

ससुर उपासरे में जाकर अपमानपूर्वक मुनि को पूछता है - हे मुनि! आज मेरे घर पर भिक्षा के लिए तुम क्यों आए? मुनि ने कहा - तुम्हारे घर को नहीं जानता हूँ, तुम कहां रहते हो? सेठ विचारता है कि मुनि असत्य कहता है। फिर पूछा गया - क्या किसी भी घर में बाला के साथ वार्ता की गई? मुनि ने कहा - वह बाला अत्यन्त कुशल है। उसके द्वारा मेरी भी परीक्षा की गई। उसके द्वारा मैं कहा गया - समय के बिना तुम कैसे निकले हो? मेरे द्वारा उत्तर दिया गया - समय का मरण समय का ज्ञान नहीं है, इसलिए आयु के पूर्व में ही निकल गया हूँ। मेरे द्वारा भी परीक्षा के लिए ससुर आदि सभी के वर्ष (आयु) पूछे गए (तो) उसके द्वारा (बाला के द्वारा) उचित प्रकार से उत्तर कहे गये।

सेठ ने पूछा - ससुर उत्पन्न नहीं हुआ, यह उसके द्वारा क्यों कहा गया? मुनि के द्वारा कहा गया - वह ही पूछी जाए, क्योंकि उस विदुषी के द्वारा

यथार्थ भाव जाने जायेंगे। ससुर घर जाकर पुत्रवधू से पूछता है - तुम्हारे द्वारा मुनि के समक्ष इस प्रकार से क्यों कहा गया (कि) मेरा ससुर उत्पन्न ही नहीं (हुआ) है। उस बहू के द्वारा कहा गया - हे ससुर! धर्महीन मनुष्य का मुनष्यभव प्राप्त किया हुआ भी प्राप्त नहीं किया हुआ (अप्राप्त) ही है, क्योंकि सत् धर्म की क्रिया के द्वारा (मनुष्य) भव सफल नहीं किया गया (है) (तो) वह मनुष्य जन्म निरर्थक ही है। उस कारण से तुम्हारा सारा जीवन धर्महीन ही गया, इसलिए मेरे द्वारा कहा गया - मेरे ससुर की उत्पत्ति ही नहीं है। इस प्रकार सत्य अर्थ के ज्ञान से वह श्रेष्ठि सन्तुष्ट हुआ और धर्माभिमुख हुआ।

फिर पूछा गया - तुम्हारे द्वारा सासू की (उम्र) छः मास कैसे कही गई? उसके द्वारा उत्तर दिया गया - सासू को पूछो। सेठ के द्वारा वह पूछी गई। उस सास के द्वारा भी कहा गया - पुत्र की बहू के वचन सत्य हैं, क्योंकि मेरी जिन धर्म की प्राप्ति में छः माह ही हुए हैं, क्योंकि इधर छः मास पूर्व मैं किसी (की) मृत्यु प्रसंग में गई थी। वहाँ उस स्त्रियों के विविध गुण-दोषों की वार्ता हुई। (वहाँ) एक वृद्धा के द्वारा कहा गया - स्त्रियों के मध्य में इसकी पुत्रवधु श्रेष्ठ है। यौवन की अवस्था में भी वह सासू की भक्ति में लीन (तथा) धर्म कार्यों में भी अप्रमादी है, गृहकार्यों में भी कुशल (उसके) समान दूसरी नहीं है। इसकी सासू अभागी है ऐसी भक्ति-प्रेमी पुत्रवधु द्वारा धर्म-कार्य में प्रेरित किए जाते हुए भी धर्म नहीं करती है। इसको सुनकर बहू के गुणों से प्रसन्न हुई (मेरे द्वारा) बहू के मुख से धर्म प्राप्त किया गया। धर्म-लाभ में छः मास हुए। इसलिए पुत्रवधु के द्वारा छः मास कहे गये, वह युक्त है।

पुत्र को भी पूछा गया, उसके द्वारा भी कहा गया - ''रात्रि में सिद्धान्त और धर्म के उपदेश में लीन पत्नी के द्वारा संसार में असार के दर्शन से और भोगविलास के परिणाम के दु:खदाई होने से, वर्षा नदी के जल-प्रवाह के समान यौवनावस्था के कारण और देह की क्षणभंगुरता से, जगत में धर्म ही सार (है), इस प्रकार के उपदेश से मैं जिन के धर्म का आराधक बना, आज पांच वर्ष पूरे हुए। इसीलिए बहू के द्वारा मुझको लक्ष्य करके जो पांच वर्ष कहे गए, वह सत्य है। इस प्रकार कुटुम्ब के लिए धर्म-लाभ की वार्ता से विदुषी पुत्रवधु के यथार्थ वचन को सुनकर लक्ष्मीदास भी ज्ञानी (हुआ) और बुढ़ापे में (उसके द्वारा) भी धर्म पाला गया। उसने सपरिवार सन्मार्ग प्राप्त किया। ❑❑

३. चार दामादों की कथा

किसी ग्राम में राजा के राज्य में शान्ति स्थापित करने वाला पुरोहित रहता था। उसके एक पुत्र और पांच कन्याएँ थीं (कन्नगा)। उसने द्वारा चार कन्याएँ विज्ञ ब्राह्मण पुत्रों के साथ विवाह करवा दी गई। किसी समय पांचवीं कन्या का विवाह महोत्सव प्रारम्भ हुआ। विवाह में चारों दामाद आये। विवाह के पूर्ण होने पर दामादों के अलावा सब सम्बन्धी अपने-अपने घर चले गये। भोजन के लोभी दामाद अपने घरों को जाने के लिए इच्छुक नहीं थे। पुरोहित ने विचार किया - (ये) दामाद सासू के अत्यन्त प्रिय हैं। इसलिए ये पांच छः दिन ठहरे (रुके) हैं, पीछे चले जायेंगे।

वे भोजन-रस लोभी दामाद बाद में भी जाने के लिए इच्छुक नहीं हुए। आपस में उन्होंने विचार किया - ससुर का गृह मनुष्यों के लिए स्वर्गतुल्य (होता है)। निश्चय ही यह सूक्ति सच्ची है। इस प्रकार विचारकर उनके द्वारा एक दीवाल पर यह सूक्ति लिखी गई। एक बार इस सूक्ति को पढ़कर ससुर के द्वारा विचार किया गया - ये भोजनरस लोभी दामाद कभी भी नहीं जायेंगे, तब ये समझाए जाने चाहिए। इस प्रकार सोचकर उस श्लोक के चरण के नीचे उसके द्वारा तीन चरण लिखे गये -

विवेकीजन पाँच-छः दिन ही रहते हैं,
यदि दही, घी एवं गुड़ का लोभी एक माह ठहरता है,
तो वह गधे के समान मनुष्य मानहीन ही होता है।

उन दामादों के द्वारा (यद्यपि) तीनों पाद पढ़े गए तब भी भोजनरस के लालची होने के कारण उन्होंने जाने की इच्छा नहीं की। ससुर ने भी विचार किया- ये कैसे निकाले जाने चाहिए? स्वादिष्ट भोजन में लीन ये गधे के समान मानहीन हैं, इसलिए (ये) युक्तिपूर्वक निकाले जाने चाहिए। पुरोहित अपनी पत्नी को पूछता है - (तुम) इन दामादों को भोजन के लिए क्या देती हो? उसने कहा- अतिप्रिय दामादों के लिए तीन बार दही, घी, गुड़ से मिश्रित

अन्न और पकवान सदैव देती हूँ। पुरोहित ने पत्नी से कहा - आज के दिन से तुम्हारे द्वारा दामादों के लिए घी लगी हुई वज्रकूट की तरह मोटी रोटी दी जानी चाहिए।

पति की आज्ञा टाली नहीं जानी चाहिए। इस प्रकार विचारकर वह भोजन के समय उनके लिए मोटी रोटी घी लगी हुई देती है।

उसको देखकर प्रथम मणीराम (नामक) दामाद ने मित्रों को कहा - अब यहाँ रहना ठीक नहीं है। निज घर में इसकी अपेक्षा स्वादिष्ट भोजन है, इसलिए यहां से गमन ही उत्तम (है)। ससुर को प्रभात में कहकर मैं जाऊंगा। उन्होंने (मित्रों ने) कहा - हे मित्र! बिना मूल्य भोजन कहां है (इसलिए) यह कठोर की हुई रोटी स्वादवाली गिनकर खाई जानी चाहिए। क्योंकि लोक में दूसरे का भोजन दुर्लभ है। यह कहावत तुम्हारे द्वारा क्या नहीं सुनी गई? तुम्हारी इच्छा है तो जाओ, हमारे लिए तो ससुर कहेंगे तो (हम) जायेंगे। इस प्रकार मित्रों के वचन को सुनकर प्रभात ने ससुर के आगे जाकर सीख और आज्ञा माँगी। ससुर भी उसको विदाई देकर 'फिर भी आना' इस प्रकार कहकर कुछ दूर तक पहुँचाकर जाने की आज्ञा दी। इस प्रकार प्रथम दामाद **मणीराम, बज्रकूट रोटी** से निकाल दिया गया।

(वह पुरोहित) फिर पत्नी को कहता है - अब दामादों के लिए तिल के तेल से युक्त रोटी दी जानी चाहिए। वह भोजन के समय दामादो के लिए तिल के तेल से युक्त रोटी देती है। उसको देखकर माधव नामक दामाद विचार करता है। घर में भी यह प्राप्त किया जाता है इसलिए यहाँ से गमन सुखकारी है। मित्रों को भी वह कहता है - मैं कल जाऊँगा, क्योंकि भोजन में (अब) तेल आ गया (है)। तब उन मित्रों ने कहा - हमारी सासु विदुषी हैं, क्योंकि ठंड में तिलों का तेल ही उदर की अग्नि का उद्दीपक होने के कारण सुन्दर है, घी नहीं, इसलिए तेल देती है। हम सब तो यहाँ ठहरेंगे। तब माधव नामक दामाद ससुर के पास जाकर सीख व अनुज्ञा मांगता है। तब ससुर ने जाओ, जाओ (कहा), इस प्रकार आज्ञा दी, विदाई नहीं दी। इस प्रकार **तिल के तेल के कारण** माधव नामक दूसरा दामाद गया।

तीसरे चौथे दामाद फिर भी नहीं जाते हैं। किस प्रकार ये निकाले

जाने चाहिए, इस प्रकार विचार करके उपाय प्राप्त किया हुआ ससुर पत्नी को पूछता है - ये दामाद रात्रि में सोने के लिए घर कब आते हैं? तब पत्नी ने कहा - कभी रात्रि में एक पहर गये आते हैं, कभी दो-तीन पहर गये आते हैं। पुरोहित ने कहा - आज रात्रि में तुम्हारे द्वारा द्वार नहीं खोला जाना चाहिए, मैं जागूंगा। वे दोनों दामाद सायंकाल ग्राम में मनोरंजन के लिए गए विविध क्रीडाएँ करते हुए और नाटक देखते हुए मध्यरात्रि में घर के द्वार पर आए। घर को बन्द हुआ देखकर द्वार खोलने के लिए उन्होंने स्वर से पुकारा - द्वार खोलो। तब द्वार के समीप विस्तर पर स्थित जागते हए पुरोहित ने कहा - मध्यरात्रि को भी तुम कहाँ रुक गये। अब नहीं खेलूंगा। जहां द्वार खुला हो, वहाँ जाओ। इस प्रकार कह कर वह चुप हो गया।

तब वे दोनों समीप में स्थित घुड़साल में गए। वहाँ बिस्तर के अभाव में अत्यन्त ठण्ड से पीड़ित घोड़े की पीठ पर ढकनेवाले वस्त्र को ग्रहण करके भूमि पर सोए। तब विजयराम दामाद के द्वारा विचारा गया - यहाँ अपमानसहित ठहरने के लिए उचित नहीं है। तब उसने मित्र को कहा - हे मित्र! हमारी सुख शय्या कहाँ? और कहाँ यह जमीन पर लोटना? अत: यहाँ से गमन ही श्रेष्ठ है। उस मित्र ने कहा इस जैसे दु:ख में भी दूसरे का अन्न कहाँ? मैं तो यहाँ ठहरूंगा। यदि तुम जाने की इच्छा रखते हो तो जाओ। तब उसने प्रभात में पुरोहित के समीप जाकर सीख व अनुज्ञा माँगी। तब पुरोहित ने कहा, अच्छा। इस प्रकार वह तीसरा दामाद, **भूशय्यावाला विजयराम** भी निकाला गया।

अब केवल वहाँ ठहरा हुआ केशव दामाद जाने की इच्छा ही नहीं करता। पुरोहित भी केशव दामाद को निकालने के लिए युक्ति विचारता है। एक बार निज पुत्र के कान में कुछ कहकर वह चला गया। जब केशव दामाद भोजन के लिए बैठा तब पुरोहित का पुत्र भी समीप बैठा, तब वह पुरोहित आया (और) पुत्र को पूछा - हे पुत्र! यहाँ मेरे द्वारा रुपया छोड़ा गया था वह किसके द्वारा लिया गया है? उसने कहा - मैं नहीं जानता हूँ। पुरोहित कहता है - तुम्हारे द्वारा ही लिया गया है, हे असत्यवादी! हे पापी! हे धीठ! वह रुपया मुझे दो। अन्यथा मैं तुमको मारूँगा। इस प्रकार कहकर वह जूता लेकर मारने के लिए दौड़ा। पुत्र भी मुट्ठी को बांधकर पिता के सम्मुख हो गया। उन दोनों को लड़ते हुए देखकर केशव उनके मध्य में जाकर, मत लड़ो, मत लड़ो इस

प्रकार कहकर खड़ा हो गया। तब वह पुरोहित, हे दामाद! हटो, हटो, कहकर उसको जूते से पीटता है। पुत्र भी हे केशव! दूर हो, दूर हो इस प्रकार कहकर मुट्ठी से उस केशव को पीटता है। इस प्रकार पिता-पुत्र **दोनों केशव** को मारते हैं। तब उनके द्वारा धक्का-मुक्की से ताड़ा जाता हुआ वह **केश   शीघ्र** भाग गया, इस प्रकार **धक्का-मुक्के से केशव** वह चौथा दामाद बिना कहकर गया।

उस दिन पुरोहित राजसभा में देर से गया। राजा ने उसको पूछा - तुम देर से क्यों आए हो। उसने कहा - विवाह महोत्सव में चार दामाद आए थे। वे भोजनरस के लोभी चिरकाल तक ठहरे और जाने के लिए इच्छा नहीं करते थे। तब युक्तिपूर्वक वे सभी प्रकार निकाले गये -

वज्रकूट रोटी से मणीराम, तिलों के तेल से माधव, भूशय्या से विजयराम (और) धक्का-मुक्के से केशव।

इस प्रकार उस पुरोहित द्वारा सभी वृतान्त राजा के सामने कहा गया। राजा भी उसकी बुद्धि से अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ। इसी प्रकार काम-भोग के विषयों से आसक्त जो व्यक्ति स्वयं ही काम-भोगों को नहीं छोड़ते हैं वे इसी प्रकार विभिन्न दु:खों के पात्र होते हैं।

❑❑

४. अमांगलिक आदमी की कथा

एक नगर में एक अमांगलिक मूर्ख पुरुष था। वह ऐसा था जो कोई भी प्रभात में उसके मुंह को देखता वह भोजन भी नहीं पाता (उसे भोजन भी नहीं मिलता)। नगर के निवासी भी प्रातःकाल में कभी भी उसके मुंह को नहीं देखते थे। राजा के द्वारा भी अमांगलिक पुरुष की बात सुनी गई। परीक्षा के लिए राजा के द्वारा एक बार प्रभातकाल में वह बुलाया गया, उसका मुख देखा गया।

ज्योंहि राजा भोजन के लिए बैठा और मुंह में (रोटी का) ग्रास रखा त्योंहि समस्त नगर में अकस्मात् शत्रु के द्वारा आक्रमण के भय से शोरगुल हुआ। तब राजा भी भोजन को छोड़कर (और) शीघ्र उठकर सेना-सहित नगर से बाहर गया और भय के कारण को न देखकर बाद में आया। अहंकारी राजा ने सोचा - इस अमांगलिक के स्वरूप को मेरे द्वारा प्रत्यक्ष देखा गया, इसलिए यह मारा जाना चाहिए। इस प्रकार विचारकर अमांगलिक को बुलवाकर वध के लिए चांडाल को सौंप दिया।

जब यह अमांगलिक रोता हुआ स्व-कर्म की (को) निन्दा करता हुआ चाण्डाल के साथ जा रहा था, तब एक दयावान, बुद्धिमान ने वध के लिए ले जाए जाते हुए उसको देखकर, कारण को जानकर उसकी रक्षा के लिए उसके कान में कुछ कहकर उपाय दिखलाया। (इसके फलस्वरूप वह) प्रसन्न होते हुए (चला)। जब (वह) वध के खम्भे पर खड़ा किया गया तब चाण्डाल ने उसको पूछा- जीवन के अलावा तुम्हारी कोई भी, (वस्तु की) इच्छा हो, तो (तुम्हारे द्वारा) (वह वस्तु) मांगी जानी चाहिए।

उसने कहा - मेरी इच्छा राजा के मुख-दर्शन की है। तब वह राजा के सामने लाया गया। राजा ने उसको पूछा - यहाँ आने का प्रयोजन क्या है? उसने कहा - हे राजन! प्रातःकाल में मेरे मुख के दर्शन से (तुम्हारे द्वारा) भोजन ग्रहण नहीं किया गया, परन्तु तुम्हारा मुख देखने से मेरा वध होगा तब

नगर के निवासी क्या कहेंगे? मेरे मुंह (दर्शन) की तुलना में श्रीमान् का मुख-दर्शन कैसा फल उत्पन्न करता है? नागरिक भी प्रभात में तुम्हारे मुख को कैसे देखेंगे? इस प्रकार उसकी वचन की युक्ति से सन्तुष्ट हुए राजा ने वध के आदेश को रद्द करके और उसको पारितोषिक देकर उस अमांगलिक को सन्तुष्ट किया।

❑❑

५. पुत्रों द्वारा अपमानित पिता की कथा

किसी नगर में एक वृद्ध के चार पुत्र थे। उस वृद्ध ने सभी पुत्रों का विवाह करवाकर, अपनी धन-सम्पत्ति को चार भागों में विभक्त कर पुत्रों को (धन)बाँट दिया। वह धर्म-आराधना में संलग्न निश्चिन्त (होकर) समय व्यतीत करने लगा। कुछ समय बाद वे पुत्र स्त्रियों के पारस्परिक वैमनस्य के कारण अलग-अलग घर में रहने लगे। वृद्ध का प्रतिदिन प्रत्येक के घर में भोजन के लिए बारी-बारी से जाने का नियम (क्रम) बनाया गया। प्रथम दिन (वह) ज्येष्ट पुत्र के घर पर भोजन के लिए गया। दूसरे दिन दूसरे पुत्र के घर पर यावत् (इसीप्रकार) चौथे दिन छोटे पुत्र के घर पर गया। इसीप्रकार उसका समय सुखपूर्वक व्यतीत होने लगा।

कुछ दिनों के बाद (उस) वृद्ध से धन की प्राप्ति न होने पर पुत्र-वधुओं के द्वारा वह वृद्ध अपमानित किया जाता है। पुत्र-वधुएँ कहती हैं - हे ससुर! (आप) पूरे दिन घर में (ही) क्यों बैठे रहना चाहते हो? क्या हम लोगों का चेहरा देखने के लिए (ही) बैठे रहते हो? स्त्रियों के समीप पुरुषों का रहना उचित नहीं (है)। तुम्हें लज्जा भी नहीं आती, पुत्रों की दुकान पर जाओ। इस प्रकार पुत्र-वधुओं द्वारा अपमानित वह (वृद्ध) पुत्रों की दुकान पर जाता है। तब पुत्र भी (उसको) कहते हैं - हे वृद्ध! किस प्रयोजन से यहाँ पर (तुम) आये (हो)? वृद्धावस्था में तो घर पर रहना ही श्रेष्ठ है। तुम्हारे दाँत भी गिर गये हैं, आँखों की रोशनी भी चली गई हैं, शरीर भी काँपता रहता है, यहाँ (दुकान में) तुम्हारा कोई भी प्रयोजन (पूरा) नहीं होता है, इसलिए घर पर ही जाओ। इस प्रकार पुत्रों से तिरस्कृत वह घर जाता है, वहाँ पुत्र-वधुएँ भी उसका तिरस्कार करती हैं।

पोते-पोतियाँ भी (कभी) उस वृद्ध की लँगोटी खोल देते, कभी (उसकी) मूँछ-दाढ़ी नोचने लगते। इसप्रकार विविध रूपों से उस वृद्ध की हँसी उड़ायी जाने लगी। पुत्र-वधुएँ भी भोजन में रूखी-सूखी और कच्ची रोटियाँ देने लगीं। इस

प्रकार अपमानित किया जाता हुआ (वह) वृद्ध विचार करता है - क्या करूँ? कैसे (मैं) जीवन को चलाऊँगा? इस प्रकार दुःख का अनुभव करता हुआ वह अपने मित्र स्वर्णकार के पास गया। (वह) उसको अपने अपमान का दुःख बताता है तथा (उसके) निवारण का उपाय पूछता है।

स्वर्णकार बोलता है - हे मित्र! पुत्रों में विश्वास करके (तुमने अपना) समस्त धन (उन्हें) दे दिया, इसी से (तुम्हें) (यह) दुःख भोगना पड़ा (है)। इसमें आश्चर्य ही क्या है? अपने हाथ से अर्थात् अपनी भूल से (तुम्हारे द्वारा) यह कार्य किया गया, तो फिर वह (कार्य) स्वयं के द्वारा भोगा जाना ही चाहिए। फिर भी मित्रता के कारण वह (उसे) यह उपाय बताता है - ''तुम्हारे द्वारा पुत्रों को इस प्रकार कहा जाना चाहिए - मेरे मित्र स्वर्णकार के घर पर रुपयों, सोने के सिक्कों और आभूषणों से भरी हुई एक पेटी मेरे द्वारा छोड़ी गयी है, अब तक तुम सबको (यह बात) नहीं बतायी गयी, (किन्तु) अब मैं बुढ़ापे से थक गया (हूँ)। इसलिए धार्मिक कार्य से तथा सप्त-क्षेत्रों आदि में (अपनी) लक्ष्मी का उपयोग करके परलोक के मार्ग को ग्रहण करूँगा। इस प्रकार कहकर पुत्रों द्वारा यह पेटी घर पर मंगवायी जानी चाहिए। पेटी के मध्य में मैं उसमें सौ रूपये को रख दूँगा, वह रुपये अवश्य ही मध्य-रात्रि में तुम्हारे द्वारा सौ, हजार बार बजाकर बार-बार गिना जावे, जिससे (तुम्हारे) पुत्र समझेंगे कि आज भी (मेरे) पिता के पास बहुत सारा धन है। तब (इसी) धन की आशा से वे (तुम्हारी) पहले जैसी ही भक्ति करने लगेंगे। पुत्र-वधूएँ भी पहले के समान ही (तुम्हारा) सत्कार करने लगेंगी। तुम्हारे द्वारा सभी को (यह) कहा जाना चाहिए - इस पेटी में बहुत सारा धन है, (जिसे अलग-अलग) पुत्र एवं पुत्रवधुओं के नाम लिखकर रख दिया गया है। मेरे मरने के बाद तुम्हारे द्वारा अपने-अपने नाम के अनुसार वह (धन) (निकालकर) ग्रहण किया जावे। धार्मिक कार्य करने के लिए (तुम्हारे द्वारा) पुत्रों से धन लेकर धार्मिक कार्य में खर्च किया जाना चाहिए। मेरे सौ रुपये भी तुम्हारे द्वारा नहीं भुलाया जाना चाहिए, यह समय आने पर (वापस) दिया जावे।''

वह वृद्ध मित्र की बुद्धि से संतुष्ट हुआ (और) घर जाकर रात्रि में पुत्रों से पेटी मंगवाकर रात्रि में (ही) उस सौ रुपये को सो, हजार, दस हजार बार (ठोक-ठोक कर) उसको ही (बार-बार) गिनता है। पुत्र भी विचार करते

हैं - (अभी भी) पिता के पास बहुत सा धन है, वे (अपनी-अपनी) पत्नियों से भी (यह बात) कहते हैं। वे सभी (उस) वृद्ध का सत्कार, सम्मान करते हैं तथा बहुत अधिक स्नेह के कारण पहले मैं भोजन कराऊँगी, पहले मैं भोजन कराऊँगी (इस प्रकार कहकर) उसे भोजन के लिए (अपने-अपने) (घर) ले जाती हैं, स्वादिष्ट (एवं) सरस भोजन देती हैं तथा उसके वस्त्रों को भी (वे) स्वयं ही धोती हैं और पहनने के लिए धुले हुए स्वच्छ वस्त्रों को देती हैं। इस प्रकार (उस) वृद्ध का समय (फिर से) सुख पूर्वक बीतने लगा।

किसी एक दिन (जब) वह मरणासन्न हो गया, तब वह (अपने) पुत्रों से कहता है - मेरी धर्म (पुण्य) करने की इच्छा है, इसलिए (मैं) सातों तीर्थ-क्षेत्रों में थोड़ा-थोड़ा धन देना चाहता हूँ। पुत्र भी पेटी में रखे हुए धन (प्राप्ति) की आशा से (पिता को धन) दे देते हैं। वह वृद्ध भी जिन-मंदिर के (जीर्णोद्धार के लिए) जैन-साधुओं के निवास-स्थान उपाश्रय के लिए (एवं) सद्पात्रों में यथाशक्ति (दान) देता है। अपने परम-मित्र स्वर्णकार को भी अपने हाथ से सौ रुपये वापस लौटा देता है। इस प्रकार धार्मिक कार्य में धन का व्यय करके मृत्यु के समीपस्थ पुत्र और पुत्रवधुओं को बुलवाकर (उसने) (यह) कहा - इस पेटी में सभी के लिए पहले से ही (अलग-अलग) नाम लिखकर (मेरे द्वारा) धन छोड़ा गया है। वह (धन) अवश्य ही मेरे मरणोत्तर कृत्यों को (पूरा) करने के पश्चात् यथानाम अर्थात् अपने-अपने नामानुसार तुम्हारे द्वारा ग्रहण किया जावे। इस प्रकार कहकर वह वृद्ध समाधि-पूर्वक मृत्यु को प्राप्त हुआ।

पुत्र भी उसके मरणोपरान्त क्रिया-कर्म करके, स्वजन (बंधु-बांधव) को मृत्यु-भोज करवाकर प्रचुर धन-प्राप्ति की आशा से जब सभी मिलकर पेटी को खोलते हैं, तब उस (पेटी) के बीच में अपने-अपने नाम से युक्त पत्रों के साथ (एक-एक वस्त्र खण्ड में) बंधे हुए पत्थर के टुकड़ों और उन सौ रुपये को देखकर (उन्होंने) (चिल्लाकर कहा) - अरे! वृद्ध के द्वारा हम ठग लिए गये हैं, इस प्रकर (हम) ठग लिये गये। किन्तु यह ठीक ही है कि पितृ-भक्ति से उदासीन हमारे लिए अविनय की (यह दुःखद) सीख मिली। इसप्रकार (यह सोचकर) वे सभी दुःखी हुए।

❑❑

६. शिल्पी-पुत्र की कथा

अवंती नगरी में इन्द्रदत्त नाम का श्रेष्ठ शिल्पकार रहता था। वह शिल्पकलाओं में समस्त जगत् में प्रसिद्ध हो गया। इसके समान कोई भी अन्य न था। उसके सोमदत्त नामक एक पुत्र था। वह पिता के पास में शिल्प-कला को सीखता हुआ क्रमशः पिता से भी अधिक शिल्प-कलाओं में कुशल हो गया।

सोमदत्त जिन-जिन प्रतिमाओं का निर्माण करता, उन-उन में पिता कोई न कोई भूल दिखा देता, कभी भी प्रशंसा नहीं करता है। फिर भी वह सूक्ष्म-दृष्टि से सूक्ष्मातिसूक्ष्म शिल्प-क्रिया करके (अपने) पिता को दिखाता है, (उसके) पिता भी उसमें भी कुछ न कुछ दोष दिखा देते, (और कहते कि) तुम्हारे द्वारा बनायी गयी शिल्पक्रिया इससे सुन्दर हो, तो (वह) उस (कला) की प्रशंसा करता।

पिता से प्रशंसा न मिलने पर वह विचार करता है - मेरे पिता मेरी कला की क्यों नहीं प्रशंसा करते हैं? अतः (अब) (मैं) (कोई) ऐसा उपाय करूँ, जिससे पिता (भी) मेरी कला की प्रशंसा करने लगे। एक बार उसके पिता (किसी) कार्य के प्रयोजन से अन्य गाँव गये, तब वह सोमदत्त श्रीगणेशजी की सुन्दरतम प्रतिमा का निर्माण करके, (उस) प्रतिमा के निचले भाग में छोटे-छोटे अक्षरों में अपना नाम अंकित करके, वह मूर्ति अपने मित्र के दरबान द्वारा भूमि के नीचे स्थापित करवाई गई। कुछ दिनों बाद दूसरे गाँव से (उसके) पिता (भी) वापस आ गये। एक बार वह मित्र लोगों के सामने इस प्रकार कहता है - आज मुझको (एक) स्वप्न आया (है) कि इस अमुक भूमि में गणेशजी की प्रभाव-शालिनी प्रतिमा (गड़ी हुई) है। तब लोगों द्वारा वह पृथ्वी खोदी गई, उस पृथ्वी में से गणेशजी की सुन्दतम अनुपम मूर्ति निकली। उसके दर्शन के लिए बहुत सारे लोग (वहाँ) आये, उस (मूर्ति) की शिल्पकला की अत्यधिक प्रशंसा करने लगे।

तब वह इन्द्रदत्त भी पुत्र के साथ वहाँ पहुँचा। उस गणेश-प्रतिमा को देखकर पुत्र से कहता है- हे पुत्र! शिल्प-कला ऐसी ही कही जाती है। कितनी (सुन्दर) प्रतिमा निर्मित की गई (है), इसका निर्माता निश्चय ही धन्य है और प्रशंसा करने योग्य है। देखा, (क्या इसमें) कहीं पर भी भूल और कमी (दिखायी देती) है? यदि तुम इसी प्रकार की प्रतिमा का निर्माण करोगे, तभी (मैं) तुम्हारी शिल्प-कला की प्रशंसा करूँगा, अन्यथा नहीं।

पुत्र भी कहता है - हे पिता! यह गणेश-प्रतिमा मेरे द्वारा ही बनायी गयी (है)। इस (प्रतिमा) के निचले भाग में सूक्ष्म रूप से मेरे द्वारा नाम भी लिखा गया है। पिता भी लिखे हुए नाम को पढ़कर दुःखी हुये मन से पुत्र को कहता है -हे पुत्र! अब आज से तुम ऐसी शिल्प-कला से युक्त सुन्दरतम प्रतिमा का (निर्माण) कभी भी नहीं कर सकोगे, क्योंकि मैं (जब-जब) तुम्हारी शिल्प-कलाओं में भूल दिखाता, तब-तब तुम भी सुन्दरतम (शिल्प-कला के) कार्य करने में तल्लीन (होकर) सूक्ष्मातिसूक्ष्म (श्रेष्ठ) शिल्प-क्रिया करते रहते थे, इसलिए तुम्हारी शिल्प-कला भी बढ़ती हुई (ऐसी सुन्दर) हुई। अब मेरे समान (कोई) दूसरा नहीं है, इस प्रकार के (चिन्तन से) उत्साह-मन्द होने के कारण तुम्हारे लिए ऐसी शिल्प-कला संभव नहीं होगी।

इस प्रकार वह पिता के सारगर्भित वचन को सुनकर (उनके) चरणों में गिरकर पिता से (छलपूर्वक) अपनी प्रशंसा कराने के अपराध के लिए क्षमा मांगता है, लेकिन वह सोमदत्त उसके बाद से पहले जैसी शिल्प-क्रिया करने के लिए (सदैव) असमर्थ हो गया।

❑❑

१९. सहायक-ग्रंथ

१. सिद्धहेमशब्दानुशासन - आचार्य हेमचंद्र
२. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण - डॉ० पिशेल
३. प्राकृतमार्गोपदेशिका - पं० बेचरदास दोशी
४. प्राकृत-प्रबोध - डॉ० नेमिचंद्र शास्त्री
५. पउमचरियं - सं० हर्मन जैकोबी
६. सिरिसिरिवालकहा - सं० वाडीलाल जीवाभाई चौकसी
७. लीलावईकहा - सं० डॉ० ए० एन० उपाध्ये
८. पाइअविन्नाणकहा - श्री विजयकस्तूरसूरि
९. जिनागमकथासंग्रह - पं० बेचरदास दोशी
१०. पाइय-गज्ज-संगहो - सं० डॉ० राजाराम जैन
११. तुलनात्मक भाषा विज्ञान - डॉ० पी० डी० गुणे
१२. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
१३. द ईस्टर्न स्कूल आफ प्राकृत ग्रामेरियन्स - डॉ० एस० आर० बनर्जी
१४. प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण - डॉ० के० आर० चन्द्रा
१५. प्राकृत रचना सौरभ - प्रो० के० सी० सोगानी
१६. प्रौढ़ प्राकृत रचना सौरभ भाग १-२ - प्रो० के० सी० सोगानी
१७. शौरसेनी प्राकृत भाषा और और व्याकरण - प्रो० प्रेम सुमन जैन
१८. प्राकृत साहित्य का इतिहास - डॉ० जगदीश चन्द्र जैन
१९. प्राकृत भारती (उदयपुर) - डॉ० प्रेम सुमन जैन एवं अन्य विद्वान्

◆ ◆ ◆